Quran Sikhiye Hissa Awwal (Hindi)

इस्लामी भाइयों के मद्रसतुल मदीना में पढ़ने पढ़ाने वालो के लिये 38 अस्बाक़ पर मुश्तमिल निसाब

क़ुरआन सीखिये

(हिस्सए अव्वल)

पेशकश :

मज्लिस इस्लामी भाईयों के मद्रसतुल मदीना

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी इन्डिया)

DAWATEISLAMI INDIA

येही है आरज़ू ता'लीमे क़ुरआं आ़म हो जाए
हर इक परचम से ऊंचा परचमे इस्लाम हो जाए

इस्लामी भाइयों के मद्रसतुल मदीना का निसाब

(ह़िस्सए अव्वल)

क़ुरआन सीखिये

पेशकश

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

मजलिस इस्लामी भाइयों के मद्रसतुल मदीना

(दा'वते इस्लामी)

नाशिर

मक्तबतुल मदीना

www.dawateislamiindia.org

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَاحَبِيْبَ اللّٰه

नाम किताब : **कुरआन सीखिये** (हिस्सए अव्वल)

पेशकश : मजलिस इस्लामी भाइयों के मद्रसतुल मदीना

अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो'बा दीनी कामों की तह़रीरात व रसाइल)

पहली बार : रजबुल मुरज्जब **1445** हि., जनवरी **2024** ई.

ता'दाद : **2100**

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 11 रमज़ानुल मुबारक, 1442 हि. — ह़वाला नम्बर : **256**

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ

तस्दीक़ की जाती है कि किताब "**कुरआन सीखिये**" (मत़्बूआ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़्रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इ़बारात, अख़्लाक़ियात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़रबी इ़बारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दा'वते इस्लामी)

24-04-2021

بسم اللہ الرحمن الرحیم
شعبہ
تفتیش کتب و رسائل
فیضان مدینہ

Web: www.maktabatulmadina.in / Email: feedbackmmhind@gmail.com

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह किताब "**क़ुरआन सीखिये**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब कीया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ھ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی / ئی	इ = اِ	ऐ = اے	ए = ے	य = ی

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

याद दाश्त

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा

इज्माली फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
किताब पढ़ने की निय्यतें	6	सबक़ नम्बर 18	134
अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का तआ़रुफ़	7	सबक़ नम्बर 19	141
पहले इसे पढ़िये	9	सबक़ नम्बर 20	148
तज्वीद की अहम्मिय्यत	14	सबक़ नम्बर 21	154
सबक़ नम्बर 1	18	सबक़ नम्बर 22	161
सबक़ नम्बर 2	24	सबक़ नम्बर 23	169
सबक़ नम्बर 3	31	सबक़ नम्बर 24	175
सबक़ नम्बर 4	38	सबक़ नम्बर 25	181
सबक़ नम्बर 5	43	सबक़ नम्बर 26	187
सबक़ नम्बर 6	50	सबक़ नम्बर 27	195
सबक़ नम्बर 7	58	सबक़ नम्बर 28	202
सबक़ नम्बर 8	66	सबक़ नम्बर 29	208
सबक़ नम्बर 9	74	सबक़ नम्बर 30	215
सबक़ नम्बर 10	80	सबक़ नम्बर 31	221
सबक़ नम्बर 11	86	सबक़ नम्बर 32	227
सबक़ नम्बर 12	94	सबक़ नम्बर 33	234
सबक़ नम्बर 13	100	सबक़ नम्बर 34	240
सबक़ नम्बर 14	106	सबक़ नम्बर 35	247
सबक़ नम्बर 15	112	सबक़ नम्बर 36	254
सबक़ नम्बर 16	119	सबक़ नम्बर 37	260
सबक़ नम्बर 17	126	सबक़ नम्बर 38	267

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

''कुरआन सीखिये और सिखाइये'' के बीस हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 20 निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।[1]

मदनी फूल : जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार ह़म्द व **(2)** सलात और **(3)** तअ़व्वुज़ व **(4)** तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा)। **(5)** रिज़ाए इलाही के लिये येह निसाब अव्वल ता आख़िर पढ़ूंगा। **(6)** दीनी किताब की ता'ज़ीम के पेशे नज़र जहां तक हो सका बा वुज़ू और **(7)** क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा। **(8)** कुरआनी आयात व अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा। **(9)** उन में बयान कर्दा अह़कामात पर अ़मल की कोशिश करूंगा। **(10)** जहां जहां **''अल्लाह''** का इस्मे मुबारक आएगा वहां पाक या करीम और **(11)** जहां जहां ''सरकार'' का कोई भी ज़ाती या सिफ़ाती इस्मे मुबारक आएगा वहां ''صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم'' और **(12)** जहां किसी सहा़बिये रसूल का नाम आएगा वहां رَضِیَ اللهُ عَنْه और **(13)** जहां किसी ग़ैरे सहा़बी बुज़ुर्ग का नाम आएगा वहां رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पढ़ूंगा। **(14)** रिज़ाए इलाही के लिये कुरआने करीम की ता'लीम और इ़ल्मे दीन ह़ासिल करूंगा। **(15)** पढ़ने के दौरान कोई भी ऐसा काम नहीं करूंगा जो किताब में बयान कर्दा बात के मफ़्हूम को समझने में मुख़िल (या'नी ख़लल अन्दाज़) हो। **(16)** इ़ल्मे दीन की नश्रो इशाअ़त के लिये दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। **(17)** ह़दीसे पाक ''एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी[2]'' पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा। **(18)** किताब पढ़ने पर जो सवाब ह़ासिल होगा वोह सारी उम्मत को ईसाल करूंगा। **(19)** अपनी ज़ाती किताब पर याद दाश्त वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा। **(20)** किताब वग़ैरा में शर्ई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा। اِنْ شَآءَ الله

(नाशिरीन को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बता देना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता।)

1 ...معجم کبیر، 3/525، حدیث:5809

2 ...موطا امام مالك، کتاب حسن الخلق، باب ما جاء فی المهاجرة، ص483، حدیث:1731

अल मदीनतुल इल्मिय्या

आ़लमे इस्लाम की अ़ज़ीम दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी ने मुसलमानों को दुरुस्त इस्लामी लिट्रेचर पहुंचाने और इस के ज़रीए़ इस्लाहे़ फ़र्दो मुआ़शरा के अ़ज़ीम मक़्सद के लिये 1421 हि. मुत़ाबिक़ 2001 ई. को जामिअ़तुल मदीना में अल मदीनतुल इल्मिय्या के नाम से एक तह़क़ीक़ी इदारा क़ाइम किया जिस का बुन्यादी मक़्सद आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की कुतुब को दौरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ शाएअ़ करवाना था। 1425 हि. मुत़ाबिक़ 2005 में इसे मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में मुन्तक़िल कर दिया गया। अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी अ़ल्लामा मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के नेकी की दा'वत, एह़्याए सुन्नत और इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त का अ़ज़्म पेशे नज़र रखते हुए येह इदारा छे[6] शो'बाजात में तक़्सीम किया गया। फिर इन में ब तदरीज इज़ाफ़ा होता रहा। फ़िलह़ाल इस की दो शाख़ें क़ाइम हैं, दोनों शाख़ों में 120 से ज़ाइद उ़लमा तस्नीफ़ो तालीफ़ या तरजमा व तह़क़ीक़ वग़ैरा के काम में मसरूफ़ हैं और 2021 ई. तक इस के 23 शो'बे क़ाइम किये जा चुके हैं :

(1) शो'बा फ़ैज़ाने क़ुरआन (2) शो'बा फ़ैज़ाने ह़दीस (3) शो'बए फ़िक़्ह (फ़िक़्हे ह़न्फ़ी व शाफ़ेई) (4) शो'बा सीरते मुस्त़फ़ा (5) शो'बा फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत (6) शो'बा फ़ैज़ाने सह़ाबियात व सालिह़ात (7) शो'बा फ़ैज़ाने औलिया व उ़लमा (8) शो'बा कुतुबे आ'ला ह़ज़रत (9) शो'बए तख़्रीज (10) शो'बा दर्सी कुतुब (11) शो'बा इस्लाह़ी कुतुब (12) शो'बा हफ़्तावार रिसाला (13) शो'बा बयानाते दा'वते इस्लामी (14) शो'बा तराजिमे कुतुब (15) शो'बा फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (16) माहनामा फ़ैज़ाने मदीना (17) शो'बा दीनी कामों की तह़रीरात व रसाइल (18) दा'वते इस्लामी के शबो रोज़ (19) शो'बा बच्चों की दुन्या (20) शो'बा रसाइले दा'वते इस्लामी (21) शो'बा ग्राफ़िक्स डीज़ाइनिंग (22) शो'बा राबित़ा बराए मुसन्निफ़ीन व मुह़क़्क़िक़ीन (23) शो'बा इन्तिज़ामी उमूर क़ाइम हैं।

अल मदीनतुल इल्मिय्या के अग़राज़ो मक़ासिद येह हैं : ❀ बा सलाह़िय्यत उ़लमाए किराम को तह़क़ीक़, तस्नीफ़ो तालीफ़ के लिये प्लेट फ़ोर्म मुहय्या करना और उन की सलाह़िय्यतों में इज़ाफ़ा करना। ❀ क़ुरआनी ता'लीमात को अ़स्री तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ मन्ज़रे आ़म पर लाना। ❀ इफ़ादए ख़वास व अ़वाम के लिये उ़लूमे ह़दीस और बिल ख़ुसूस शर्हे ह़दीस पर मुश्तमिल कुतुब तह़रीर करना। ❀ सीरते नबवी, अ़ह्दे नबवी, क़वानीने नबवी, त़िब्बे नबवी वग़ैरा पर

मुश्तमिल तहरीरें शाएअ करना। ❀ अहले बैत व सहाबए किराम और उलमा व बुजुर्गाने दीन की हयात व ख़िदमात से आगाह करना। ❀ बुजुर्गों की कुतुबो रसाइल जदीद मन्हजो उस्लूब के मुताबिक़ मन्ज़रे आम पर लाना बिल ख़ुसूस अरबी मख़्तूतात (ग़ैर मत्बूअ) कुतुबो रसाइल को दौरे जदीद से हम आहंग तहक़ीक़ी मन्हज पर शाएअ करवाना। ❀ नेकी की दा'वत का जज़्बा रखने वालों को मुस्तनद मवाद फ़राहम करना। ❀ दीनी व दुन्यावी ता'लीमी इदारों के तलबा को मुस्तनद सिह्हत मन्द मवाद की फ़राहमी नीज़ दर्से निज़ामी के तुलबा व असातिज़ा के लिये निसाबी कुतुब उम्दा शुरूहात व हवाशी के साथ शाएअ कर के इन की ज़रूरत को पूरा करना।

اَلْحَمْدُلِلّٰه ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शफ़्क़तो इनायत, तरबियत और अता कर्दा उसूलों पर अमल पैरा होने का ही नतीजा है कि दुन्या व आख़िरत में काम्याबी पाने, नई नस्ल को इस्लाम की हक़्क़ानिय्यत से आगाह करने, उन्हें बा अमल मुसल्मान और एक सिह्हत मन्द मुआशरे का बेहतरीन फ़र्द बनाने, वालिदैन व असातिज़ा और सरपरस्त हज़रात को अन्दाज़े तरबियत के दुरुस्त तरीक़ों से आगाह करने और इस्लाम की नज़रिय्याती सरहदों और दीनो ईमान की हिफ़ाज़त के लिये अल मदीनतुल इल्मिय्या ने अपने आग़ाज़ से ले कर अब तक जो काम किया वोह अपनी मिसाल आप है। **अल्लाह** पाक अपने फ़ज़्लो करम से ब शुमूल अल मदीनतुल इल्मिय्या दा'वते इस्लामी के दीनी कामों, इदारों और शो'बों को मज़ीद तरक़्क़ी अता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तारीख़ : 15 शव्वालुल मुकर्रम 1442 हि./27 मई 2021 ई.

इस्लामी भाइयों के मद्रसतुल मदीना में पढ़ने की दा'वत

اَلْحَمْدُلِلّٰه दा'वते इस्लामी का येह मक़्सद है कि क़ुरआने करीम की ता'लीमात घर घर आम हो जाएं, इसी मक़्सद के तहत आप के अलाक़े की........... मस्जिद में........... की नमाज़ के बा'द इस्लामी भाइयों को मदनी क़ाइदा और क़ुरआने पाक दुरुस्त पढ़ना सिखाया जाता है, इस के साथ साथ वुज़ू, ग़ुस्ल, नमाज़ और नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नतें व आदाब सिखाए जाते हैं। आप से अर्ज़ है कि आप भी इस्लामी भाइयों के मद्रसतुल मदीना में पढ़ने की सआदत हासिल करें, اِنْ شَآءَاللّٰه इस की बरकत से दुन्या व आख़िरत में काम्याबी मिलेगी।

अल्लाह पाक आप को दुन्या व आख़िरत की भलाइयां नसीब फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

पहले इसे पढ़िये

क़ुरआने पाक **अल्लाह** पाक की वोह लारैब किताब है जिस का पढ़ना पढ़ाना, सुनना सुनाना, छूना अल ग़रज़ कि इस की त़रफ़ देखना भी अज्रो सवाब का बाइ़स है, इस अ़ज़ीम किताब के एक ह़र्फ़ पढ़ने वाले को दस नेकियों के बराबर नेकी की बिशारत दी गई है। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जो शख़्स किताबुल्लाह में से एक ह़र्फ़ पढ़ेगा तो उसे एक नेकी मिलेगी और येह एक नेकी दस नेकियों के बराबर होगी, मैं नहीं कहता الٓمّٓ एक ह़र्फ़ है बल्कि अलिफ़ एक ह़र्फ़, लाम एक ह़र्फ़ और मीम एक ह़र्फ़ है।[1] एक मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स क़ुरआने करीम को देखते हुए तिलावत करे उसे 2000 नेकियां मिलेंगी और जो ज़बानी पढ़े उस को 1000 नेकियां मिलेंगी।[2]

याद रहे ! दर्जे बाला दोनों फ़ज़ीलतें और इन के इ़लावा क़ुरआने करीम पढ़ने के ह़वाले से जो भी फ़ज़ाइल मरवी हैं वोह उसी सूरत में ह़ासिल होंगे जब क़ुरआने करीम को तज्वीद की रिआ़यत करते हुए दुरुस्त पढ़ा जाए। ब सूरते दीगर अज्रो सवाब तो क्या बल्कि गुनाह के ह़क़दार क़रार पाएंगे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी जहां बच्चों में क़ुरआने पाक की ता'लीम आ़म करने में मसरूफ़े अ़मल है वहीं उन नौ जवानों और बड़ी उ़म्र के लोगों को भी दुरुस्त त़रीक़े से क़ुरआने पाक पढ़ना सिखाने में कोशां है जो किसी वज्ह से बचपन में न सीख पाए। इस दीनी काम के लिये दा'वते इस्लामी का एक शो'बा क़ाइम है जिस का नाम "इस्लामी भाइयों के मद्रसतुल मदीना" है। इस शो'बे में इस्लामी भाइयों को दुरुस्त क़ुरआने करीम पढ़ना सिखाने के साथ साथ पढ़ने वालों को शरीअ़ते मुत़ह्हरा का पाबन्द बनाने, नमाज़ और इस के ज़रूरी मसाइल सिखाने, दुआ़एं याद करवाने और इन की अख़्लाक़ी तरबियत करने को अव्वलीन तरजीह़ ह़ासिल है, चुनान्चे इस मक़्सद के लिये तीन ह़िस्सों पर मुश्तमिल एक निसाब तरतीब दिया गया है। इस का पहला ह़िस्सा आप के हाथों में है जिस के मुतअ़ल्लिक़ हिदायात और तफ़्सील कुछ यूं है :

1 ... ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ما جاء فی من قرأ ... الخ، ص676، حدیث:2910

2 ... کنز العمال، کتاب الاذکار، الباب السابع ... الخ، الجزء1، 269/1، حدیث:2402

◄ येह निसाब आ़म इस्लामी भाइयों की ज़ेह्नी कैफ़िय्यत को मद्दे नज़र रखते हुए तय्यार किया गया है।

◄ हर सबक़ तक़रीबन 6 मौज़ूआ़त पर मुश्तमिल है : (1) मदनी क़ाइ़दा (2) अज़्कारे नमाज़ (3) तफ़्सीरे क़ुरआन (4) नमाज़ के अह़काम (5) सुन्नतें व आदाब (6) इस्लाह़े आ'माल। मुअ़ल्लिमीन या'नी पढ़ाने वालों को इन मौज़ूआ़त की तय्यारी के लिये मुख़्तलिफ़ कुतुबो रसाइल मसलन मदनी क़ाइ़दा, फ़ैज़ाने नमाज़, तफ़्सीरे सिरातु़ल जिनान, नमाज़ के अह़काम, सुन्नतें और आदाब और फ़ैज़ाने सुन्नत वग़ैरा की त़रफ़ रुजूअ़ करना पड़ता था, इस के इ़लावा कब क्या पढ़ाना है इस का इन्तिख़ाब भी मुअ़ल्लिमीन ख़ुद ही करते थे जिस में बसा अवक़ात मुश्किलात का सामना करना पड़ता था, चुनान्चे इन की सहूलत के पेशे नज़र अस्बाक़ की सूरत में तमाम मवाद को यक्जा कर दिया गया है।

◄ मदनी क़ाइ़दे से ऐसे क़वाइ़द व अस्बाक़ शामिल किये गए हैं जो क़ुरआने पाक दुरुस्त पढ़ने में मददगार हैं और जिन की मदद से लह़्ने जली (क़ुरआने पाक को तज्वीद के ख़िलाफ़ पढ़ने में बड़ी और वाज़ेह़ ग़लती़) से बचा जा सकता है।

◄ मदनी क़ाइ़दे के आख़िरी अस्बाक़ में क़ुरआने पाक की आख़िरी सूरतों को शामिल किया गया है। इन्हें पढ़ाते वक़्त जो क़वाइ़द व मख़ारिज इस ह़िस्से में शामिल किये गए हैं उन के इजरा पर ख़ुसूसी तवज्जोह दी जाए।

◄ अस्बाक़ की मश्क़ें दो ह़िस्सों में तक़्सीम की गई हैं, एक ह़िस्से में कलर कोडिंग के साथ मिसालें मौजूद हैं ताकि पढ़ने वाले इस्लामी भाइयों को समझने और पढ़ाने वालों को समझाने में आसानी हो। दूसरे ह़िस्से में दी गई मिसालें बिग़ैर कलर कोडिंग के हैं, उस में इस्लामी भाइयों को ख़ुद पहचान करने का कहा जाए कि कौन सा क़ाइ़दा कहां लग रहा है ताकि साथ साथ क़वाइ़द की पहचान मज़बूत़ हो जाए।

◄ यहां जो अज़्कारे नमाज़ और दुआ़ए मासूरा वग़ैरा शामिल की गई हैं उन्हें भी याद करवाते वक़्त क़वाइ़दे तज्वीद का ज़रूर ख़याल रखा जाए।

◄ अस्बाक़ को इस्लामी भाइयों की ज़ेह्नी कैफ़िय्यत के मुत़ाबिक़ दो या तीन दिन पर तक़्सीम कर के भी पढ़ाया जा सकता है।

- मख़ारिजे हुरूफ़ की अदाएगी पहले कर के दिखाई जाए फिर पढ़ने वाले इस्लामी भाइयों से करवाई जाए।
- तफ़्सीरे कुरआन के तह़्त चन्द मुन्तख़ब आयात की तफ़्सीर शामिल की गई है ताकि कुरआने पाक पढ़ने के साथ इसे समझने और समझ कर अ़मल करने का शौक़ पैदा हो।
- नमाज़ के अह़्काम के तह़्त वुज़ू, गुस्ल और नमाज़ वग़ैरा के अहम मसाइल शामिल किये गए हैं ताकि इस्लामी भाइयों को फ़र्ज़ अह़्काम सीखने और नमाज़ें दुरुस्त करने का मौक़अ़ मिले। मसाइल को सादा अल्फ़ाज़ में लिखने की कोशिश की गई है ताकि समझने में आसानी हो। यहां जो भी मसाइल लिखे गए हैं सिर्फ़ उन्ही को पढ़ कर सुनाया जाए, अपनी त़रफ़ से वज़ाह़त न की जाए। अगर किसी चीज़ की समझ न आए तो दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के मुफ़्तियाने किराम से राबित़ा कर के समझ लिया जाए।
- सुन्नतें व आदाब के तह़्त मुख़्तलिफ़ आ'माल की सुन्नतें और आदाब बयान की गई हैं। इन्हें पढ़ कर सुनाने के साथ साथ इन पर अ़मल का ज़ेह्न भी बनाया जाए।
- इस्लाहे़ आ'माल के तह़्त मुख़्तलिफ़ उ़न्वानात पर इस्लाही़ दर्स शामिल किया गया है।

इस किताब में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन **अल्लाह** पाक की तौफ़ीक़, उस के मह़बूबे करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ा, औलियाए किराम की इ़नायत और अमीरे अहले सुन्नत की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा हैं और ख़ामियों में हमारी ग़ैर इरादी कोताही का दख़्ल है। **अल्लाह** पाक से दुआ़ है कि वोह दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही | अ़मल का हो जज़्बा अ़त़ा या इलाही
हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़त़ा या इलाही | मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त
रहूं बा वुज़ू मैं सदा या इलाही | दे शौक़े तिलावत दे ज़ौक़े इ़बादत

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

इज्तिमाई जाएज़े का त़रीक़ा (72 नेक आ'माल)

यौमिय्या 56 नेक आ'माल

(1) अच्छी अच्छी निय्यतें कीं ? (2) पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त अदा कीं ? (3) हर नमाज़ से क़ब्ल नमाज़ की दा'वत दी ? (4) रात में सूरतुल मुल्क पढ़ या सुन ली ? (5) हर नमाज़ के बा'द आयतुल कुरसी, तस्बीहे फ़ातिमा, सूरतुल इख़्लास पढ़ी ? (6) कन्ज़ुल ईमान से 3 आयात या सिरातुल जिनान से 2 सफ़हात तरजमा व तफ़्सीर पढ़ या सुन लिये ? (7) शजरे के अवराद पढ़े ? (8) 313 बार दुरूद शरीफ़ पढ़े ? (9) आंखों को गुनाहों से बचाया ? (10) कानों को गुनाहों से बचाया ? (11) फ़ुज़ूल नज़री से बचते हुए निगाहें नीची रखीं ? (12) 12 मिनट मक्तबतुल मदीना की इस्लाही किताब पढ़ी ? (13) अज़ानो इक़ामत का जवाब दिया ? (14) ग़ुस्से का इलाज किया ? (15) अपना जाएज़ा किया ? (16) अपने निगरान की इताअ़त की ? (17) आप और जी कह कर बात की ? (18) इस्लामी भाइयों के मद्रसतुल मदीना में पढ़ा या पढ़ाया ? (19) इशा की जमाअ़त से दो घन्टे में घर पहुंच गए ? (20) दो घन्टे दीनी कामों पर सर्फ़ किये ? (21) फ़ज्र के लिये जगाया ? (22) दूसरों के घरों में झांकने से बचे ? (23) घर दर्स हुवा ? (24) मस्जिद दर्स दिया या सुना ? (25) सुन्नत के मुताबिक़ लिबास पहना ? (26) ज़ुल्फ़ें रखने की सुन्नत पर अ़मल है ? (27) एक मुश्त दाढ़ी है ? (28) गुनाह होने की सूरत में फ़ौरन तौबा की ? (29) सुन्नत के मुताबिक़ खाना खाया ? (30) मुसल्मानों को सलाम किया ? (31) कुछ न कुछ सुन्नतों पर अ़मल किया ? (32) ज़ोहर की सुन्नते क़ब्लिया फ़र्ज़ से पहले अदा कीं ? (33) तहज्जुद या सलातुल्लैल पढ़ी ? (34) अव्वाबीन या इश्राक़ो चाश्त पढ़ीं ? (35) अ़स्र या इशा की सुन्नते क़ब्लिया पढ़ीं ? (36) 12 दीनी कामों में से एक दीनी काम की तरग़ीब दिलाई ? (37) दूसरों से मांग कर चीज़ें तो इस्ति'माल नहीं कीं ? (38) झूट, ग़ीबत और चुग़ली से बचे ? (39) कुछ न कुछ वक़्त FGN चेनल देखा ? (40) ज़ाती दोस्ती तो नहीं की ? (41) वक़्त पर क़र्ज़ अदा कर दिया ? (42) आ़जिज़ी के ऐसे अल्फ़ाज़ तो नहीं बोले जिन की ताईद दिल न करे ? (43) सफ़ाई और सलीक़े का ख़याल रखा ? (44) मुसल्मानों के उ़यूब की पर्दापोशी की ? (45) बा'दे फ़ज्र तफ़्सीर सुनने सुनाने के ह़ल्क़े में शिर्कत की ? (46) कुछ न कुछ जाइज़ काम से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ी ? (47) चौक दर्स दिया या सुना ? (48) वालिदैन और पीरो मुर्शिद को ईसाले सवाब किया ? (49) इसराफ़ से बचे ?

(50) ट्राफ़िक क़वानीन की पाबन्दी की ? (51) तन्ज़ीमी त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ मस्अला ह़ल किया ? (52) ज़बान के गुनाहों से बचे ? (53) फ़ुज़ूल बातों से बचे ? (54) मज़ाक़ मस्ख़री, त़न्ज़, दिल आज़ारी और क़हक़हा लगाने से बचे ? (55) इमामा शरीफ़ बांधा ? (56) मां बाप का अदब किया ?

क़ुफ़्ले मदीना कारकर्दगी

✿ लिख कर गुफ़्त्गू 12 मरतबा ✿ इशारे से गुफ़्त्गू 12 मरतबा ✿ निगाहें गाड़े बिग़ैर गुफ़्त्गू 12 मरतबा ।

हफ़्तावार 9 दीनी काम

(57) इस्लामी बहनों के हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में किसी न किसी इस्लामी बहन को घर से भेजा ? (58) हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा देखा या सुना ? (59) हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत हुई ? (60) यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़ किया ? (61) मरीज़ या दुख्यारे की इ़यादत या ग़म ख़्वारी और किसी के इन्तिक़ाल पर ता'ज़ियत की ? (62) हफ़्ते में किसी भी दिन रोज़ा रखा ? (63) हफ़्तावार रिसाला पढ़ा या सुना ? (64) अ़लाक़ाई दौरा किया ? (65) पहले आने वाले और अब न आने वाले इस्लामी भाई को दीनी माह़ोल से वाबस्ता किया ?

इस्लामी भाइयों के मद्रसतुल मदीना का टाइम टेबल

टाइम टेबल बराए मसाजिद			टाइम टेबल बराए मार्केट, दफ़ातिर		
#	पीरियड	दौरानिया	#	पीरियड	दौरानिया
1	मदनी क़ाइदा+अज़्कारे नमाज़	30 मिनट	1	मदनी क़ाइदा+अज़्कारे नमाज़	21 मिनट
2	तफ़्सीर सुनना व सुनाना	3 मिनट	2	तफ़्सीर सुनना व सुनाना	3 मिनट
	आओ इ़ल्मे दीन सीखें			आओ इ़ल्मे दीन सीखें	
3	नमाज़ के अह़काम	12 मिनट	3	नमाज़ के अह़काम	11 मिनट
4	सुन्नतें और आदाब		4	सुन्नतें और आदाब	
5	दर्स (इस्लाहे़ आ'माल)		5	दर्स (इस्लाहे़ आ'माल)	
6	नेक आ'माल का जाएज़ा व इख़्तितामी दुआ		6	नेक आ'माल का जाएज़ा व इख़्तितामी दुआ	
	कुल वक़्त	45 मिनट		कुल वक़्त	35 मिनट

तज्वीद की अहम्मिय्यत

इल्मे तज्वीद की ता'रीफ़

"इल्मे तज्वीद" उस इल्म का नाम है जिस में हुरूफ़ के मख़ारिज और उन की सिफ़ात और हुरूफ़ की तस्हीह़ (दुरुस्त अदा करने) और तह़सीन (खूब सूरत पढ़ने) के बारे में बह़स की जाती है।

कुरआने करीम दुरुस्त पढ़ने की अहम्मिय्यत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! कुरआने पाक दुरुस्त पढ़ना निहायत अहम और ज़रूरी है। **अल्लाह** पाक कुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है :

وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِیْلًا ؕ
(پ29، المزمل:4)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और कुरआन ख़ूब ठहर ठहर कर पढ़ो।

इस आयत का मा'ना येह है कि इत़्मीनान के साथ इस त़रह़ कुरआन पढ़ो कि हुरूफ़ जुदा जुदा रहें, जिन मक़ामात पर वक़्फ़ करना है उन का और तमाम ह़रकात और मद्दात की अदाएगी का ख़ास ख़याल रहे। आयत के आख़िर में "تَرْتِیْلًا" फ़रमा कर इस बात की ताकीद की जा रही है कि कुरआने पाक की तिलावत करने वाले के लिये तरतील के साथ तिलावत करना इन्तिहाई ज़रूरी है।[1]

एक मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाता है :

اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ
(پ1، البقرۃ:121)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह लोग जिन्हें हम ने किताब दी है तो वोह उस की तिलावत करते हैं जैसा तिलावत करने का ह़क़ है।

"یَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ" के तह़्त तफ़्सीरे मदारिक में एक मा'ना येह बयान किया गया है कि वोह किताबुल्लाह को ऐसे पढ़ते हैं जैसे पढ़ने का ह़क़ है या'नी तज्वीद, हुरूफ़ की अदाएगी और ग़ौरो फ़िक्र करते हुए उस की तिलावत करते हैं।[2]

1 ...تفسیر مدارک، پ29، المزمل، تحت الآیۃ:4، 556/3
2 ...تفسیر مدارک، پ1، البقرۃ، تحت الآیۃ:121، 126/1

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान में है : इस से येह भी मा'लूम हुवा कि किताबुल्लाह के बहुत से हुक़ूक़ भी हैं। कुरआन का हक़ येह है कि इस की ता'ज़ीम की जाए, इस से महब्बत की जाए, इस की तिलावत की जाए, इसे समझा जाए, इस पर ईमान रखा जाए, इस पर अ़मल किया जाए और इसे दूसरों तक पहुंचाया जाए।[1]

दुरुस्त कुरआन पढ़ने पर मुश्तमिल अह़ादीसे मुबारका

ह़ज़रते ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से मरवी है कि प्यारे आक़ा, दो जहां के दाता صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ اَنْ یُّقْرَءَ الْقُرآنُ کَمَا اُنْزِلَ" बेशक **अल्लाह** पाक पसन्द फ़रमाता है कि कुरआन को उसी त़रह़ पढ़ा जाए जैसे इसे नाज़िल किया गया।[2] एक मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : "اِقْرَءُوا الْقُرْاٰنَ بِلُحُوْنِ الْعَرَبِ وَاَصْوَاتِهَا" कुरआन को अ़रब के लबो लहजे और उन की आवाज़ों में पढ़ो।[3]

इल्मे तज्वीद के मुतअ़ल्लिक़ उ़लमा के अक़्वाल

इ़ल्मे तज्वीद व क़िराअत के इमाम ह़ज़रते इमाम जज़री رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَیْه अपनी किताब अल मुक़द्दमतुल जज़रिय्यह में फ़रमाते हैं :

وَالْاَخْذُ بِالتَّجْوِیْدِ حَتْمٌ لَّازِمٌ | مَنْ لَّمْ یُصَحِّحِ الْقُرْاٰنَ اٰثِمٌ

तज्वीद का ह़ासिल करना ज़रूरी और लाज़िमी है, जो कुरआने करीम सह़ीह़ न पढ़े वोह गुनाहगार है।

لِاَنَّهٗ بِهِ الْاِلٰهُ اَنْزَلَا | وَهٰكَذَا مِنْهُ اِلَیْنَا وَصَلَا

इस लिये कि कुरआन को **अल्लाह** पाक ने तज्वीद के साथ नाज़िल फ़रमाया है और इसी त़रह़ (या'नी तज्वीद के साथ) ह़क़ तआ़ला से हम तक पहुंचा है।[4]

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَیْه फ़रमाते हैं : **هٰذَا الْعِلْمُ لَا خِلَافَ فِیْ اَنَّهٗ فَرْضُ کِفَایَةٍ وَالْعَمَلُ بِهٖ فَرْضُ عَیْنٍ** या'नी इस इ़ल्म का ह़ासिल करना बिला इख़्तिलाफ़ "फ़र्ज़े किफ़ाया" है और इस के मुत़ाबिक़ अ़मल करना (या'नी तज्वीद के साथ पढ़ना) "फ़र्ज़े ऐ़न" है।[5]

1... तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह : 1, अल बक़रह, तह़्तल आयह : 121, 1/226

2 ...جامع صغیر، ص117، حدیث: 1897 3 ...نوادر الاصول، الاصل الثالث والخمسون والمائتان: فی ان القرآن مثله...الخ، 242/2

4 ...المقدمة الجزریة، باب التجوید، ص3 5 ...منح الفکریة شرح المقدمة الجزریة، ص20

कितनी तज्वीद सीखना फ़र्ज़ है ?

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : बिला शुबा इतनी तज्वीद जिस से तस्ह़ीहे़ ह़ुरूफ़ हो (या'नी तज्वीद के क़ाइदों के मुत़ाबिक़ ह़ुरूफ़ को दुरुस्त मख़ारिज से अदा कर सके) और ग़लत़ ख़्वानी (या'नी ग़लत़ पढ़ने) से बचे ''फ़र्ज़े ऐन'' है। बज़्ज़ाज़िया वग़ैरा में है : **''اَللَّحْنُ حَرَامٌ بِلَاخِلَافٍ''** (लह़्न सब के नज़्दीक ह़राम है।) जो इसे बिद्अ़त कहता है अगर जाहिल है तो उसे समझा दिया जाए और दानिस्ता (या'नी जान बूझ कर तज्वीद की फ़र्ज़िय्यत जानते हुए) कहता है तो कुफ़्र है कि फ़र्ज़ को बिद्अ़त कहता है।[1]

तज्वीद के साथ कुरआने करीम पढ़ने के मुतअ़ल्लिक़ मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के बयान कर्दा एक मस्अले का ख़ुलासा है कि जिस से ह़ुरूफ़ सह़ीह़ अदा नहीं होते उस पर वाजिब है कि ह़ुरूफ़ सह़ीह़ अदा करने की रात दिन पूरी कोशिश करे और अगर नमाज़ में सह़ीह़ पढ़ने वाले की इक़्तिदा कर सकता हो तो जहां तक मुम्किन हो उस की इक़्तिदा करे या वोह आयतें पढ़े जिन के ह़ुरूफ़ सह़ीह़ अदा कर सकता हो और येह दोनों सूरतें ना मुम्किन हों तो कोशिश के ज़माने में इस की नमाज़ हो जाएगी और किसी अपने ही जैसे की इमामत भी कर सकता है जब कि उस से भी वोह ही ह़ुरूफ़ सह़ीह़ अदा न होते हों जो इस से नहीं होते वरना नहीं। लेकिन अगर कोशिश भी नहीं करता तो इस की ख़ुद की भी नमाज़ नहीं होगी दूसरे की इस के पीछे क्या होगी। आज कल आ़म लोग इस में मुब्तला हैं कि ग़लत़ पढ़ते हैं और सह़ीह़ पढ़ने की कोशिश नहीं करते, ऐसे लोगों का इमाम बनना तो एक त़रफ़ ख़ुद उन की अपनी नमाज़ें ही बात़िल हैं।[2]

कुरआने करीम तज्वीद से न पढ़ने का नुक़्सान

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! कुरआने करीम ग़लत़ पढ़ने के मस्अले को ख़ूब सन्जीदगी से लीजिये और जल्द अज़ जल्द दुरुस्त त़रीक़े से कुरआने पाक पढ़ना सीख लीजिये। आ'ला ह़ज़रत मौलाना इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के फ़रमान का ख़ुलासा है : हर मुसल्मान पर ह़क़ है कि कुरआन जैसा उतरा वैसा ही पढ़े, ग़लत़ पढ़ने या ह़र्फ़ की आवाज़ बदलने में कई जगह

1... फ़तावा रज़विय्या, 6/343

2... बहारे शरीअ़त, 1/570, हिस्सा : 3 मुलख़्ख़सन

अल्फ़ाज़ बे मा'ना हो जाते या मा'ना कुछ के कुछ हो जाते यहां तक कि बसा अवक़ात مَعَاذَالله कुफ़्रो इस्लाम का फ़र्क़ हो जाता है।[1] आइये ! चन्द ऐसी मिसालें मुलाहज़ा कीजिये जहां ग़लत़ पढ़ने से मा'ना बदल जाते हैं : मसलन

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (پ1، الفاتحة:1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : सब ता'रीफ़ें **अल्लाह** के लिये हैं जो तमाम जहान वालों का पालने वाला है।

ऊपर दी गई आयते मुबारका में लफ़्ज़ "ह़म्द" आया है। इस लफ़्ज़ को "ح" के मख़्रज से अदा करने और "ھ" के मख़्रज से अदा करने से मा'ना में मुन्दरिजए ज़ैल फ़र्क़ वाक़ेअ़ होगा :

ह़र्फ़	लफ़्ज़	मा'ना
ح	حَمْد	ख़ूबी/ता'रीफ़
ھ	هَمْد	धीमी आग

दूसरी मिसाल :

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (پ30، الاخلاص:1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ : वोह **अल्लाह** एक है।

ऊपर दी गई आयते मुबारका में लफ़्ज़ "قل" आया है। इस लफ़्ज़ को "ق" के मख़्रज से अदा करने और "ک" के मख़्रज से अदा करने से मुन्दरिजए ज़ैल तब्दीली वाक़ेअ़ होगी :

ह़र्फ़	लफ़्ज़	मा'ना
ق	قُلْ	फ़रमाओ
ك	كُلْ	खाओ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

[1]... फ़तावा रज़विय्या, 6/318, मुलख़्ख़सन

सबक़ नम्बर 1

मौज़ूआत

1	मदनी क़ाइदा : हुरूफ़े ह़ल्क़ी	2	तफ़सीरे क़ुरआन : तअ़व्वुज़ व तस्मिया की अहम्मिय्यत
3	नमाज़ के अह़काम : नबिय्ये करीम की क़िराअत	4	सुन्नतें व आदाब : सलाम करने की सुन्नतें व आदाब
5	इस्लाहे़ आ'माल : बिस्मिल्लाह से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अहम मा'लूमात	6	

(1) मदनी क़ाइदा ﴾हुरूफ़े ह़ल्क़ी﴿

➤ ء, ﮪ, ع, ح, غ, خ इन छे हुरूफ़ को हुरूफ़े ह़ल्क़ी कहते हैं।

➤ हुरूफ़े ह़ल्क़ी के मख़ारिज और अदाएगी की मश्क़ करें, और इन में फ़र्क़ समझें।

हुरूफ़े ह़ल्क़ी के मख़ारिज

ह़ल्क़ के ऊपर वाले ह़िस्से से	ह़ल्क़ के दरमियान वाले ह़िस्से से	ह़ल्क़ के नीचे वाले ह़िस्से से
غ،خ	ع،ح	ه ،ء

हुरूफ़े ह़ल्क़ी के मख़ारिज में फ़र्क़ समझने के लिये मिसालें

ح और ﮪ में फ़र्क़ की मिसाल :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۱﴾

(پ1، الفاتحۃ:1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : सब ता'रीफ़ें **अल्लाह** के लिये जो तमाम जहान वालों का पालने वाला है।

ऊपर दी गई आयते मुबारका में लफ़्ज़ "اَلْحَمْدُ" आया है। इस लफ़्ज़ को "ح" के मख़्रज से अदा करने और "ﮪ" के मख़्रज से अदा करने से मा'ना में मुन्दरिजए ज़ैल फ़र्क़ वाक़ेअ़ होगा :

ह़र्फ़	लफ़्ज़	मा'ना
ح	حَمْد	ख़ूबी/ता'रीफ़
ه	هَمْد	धीमी आग

ع और ء में फ़र्क़ की मिसाल :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَۙ(۱)
(پ1، الفاتحۃ:1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : सब ता'रीफ़ें **अल्लाह** के लिये जो तमाम जहान वालों का पालने वाला है।

ऊपर दी गई आयते मुबारका में लफ़्ज़ "الْعٰلَمِیْنَ" आया है। इस लफ़्ज़ को "ع" के मख़्रज से अदा करने और "ء" के मख़्रज से अदा करने से मा'ना में मुन्दरिजए ज़ैल फ़र्क़ वाक़ेअ़ होता है :

हर्फ़	लफ़्ज़	मा'ना
ع	الْعٰلَمِیْنَ	तमाम जहान
ء	الءٰلَمِیْن	तमाम रन्जो ग़म

غ और خ में फ़र्क़ की मिसाल :

غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّیْنَ۠(۷)
(پ1، الفاتحۃ:7)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : न उन का जिन पर ग़ज़ब हुवा और न बहके हुओं का।

ऊपर दी गई आयते मुबारका में लफ़्ज़ "الْمَغْضُوْبِ" आया है। इस लफ़्ज़ को "غ" के साथ अदा करने और "خ" के साथ अदा करने से मा'ना में मुन्दरिजए ज़ैल फ़र्क़ वाक़ेअ़ होता है :

हर्फ़	लफ़्ज़	मा'ना
غ	مغضوب	जिन पर गुस्सा हुवा
خ	مخضوب	जिन पर रंग हुवा

(2) तफ़्सीरे कुरआन ﴾तस्मिया की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत﴿

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ○

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान, रहमत वाला है।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 1, सफ़हा 44 पर है कि अ़ल्लामा अहमद सावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : कुरआने मजीद की इब्तिदा "बिस्मिल्लाह" से इस लिये की गई ताकि **अल्लाह** पाक

के बन्दे इस की पैरवी करते हुए हर अच्छे काम की इब्तिदा ''बिस्मिल्लाह'' से करें।[1] और ह़दीसे पाक में भी (अच्छे और) अहम काम की इब्तिदा ''बिस्मिल्लाह'' से करने की तरग़ीब दी गई है, चुनान्चे ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस अहम काम की इब्तिदा ''بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ'' से न की गई तो वोह अधूरा रह जाता है।''[2] लिहाज़ा तमाम मुसल्मानों को चाहिये कि वोह हर नेक और जाइज़ काम की इब्तिदा ''بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ'' से करें, इस की बहुत बरकत है।

﴿الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ﴾ की तफ़्सीर के तह़त इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक ने अपनी ज़ात को रह़मान और रह़ीम फ़रमाया तो येह उस की शान से बईद है कि वोह रह़्म न फ़रमाए। मरवी है कि एक साइल ने बुलन्द दरवाज़े के पास खड़े हो कर कुछ मांगा तो उसे थोड़ा सा दे दिया गया, दूसरे दिन वोह एक कुल्हाड़ा ले कर आया और दरवाज़े को तोड़ना शुरूअ़ कर दिया। उस से कहा गया कि तू ऐसा क्यूं कर रहा है ? उस ने जवाब दिया : तू दरवाज़े को अपनी अ़ता के लाइक़ कर या अपनी अ़ता को दरवाज़े के लाइक़ बना। ऐ हमारे **अल्लाह** ! रह़मत के समुन्दरों को तेरी रह़मत से वोह निस्बत है जो एक छोटे से ज़र्रे को तेरे अ़र्श से निस्बत है और तू ने अपनी किताब की इब्तिदा में अपने बन्दों पर अपनी रह़मत की सिफ़त बयान की इस लिये हमें अपनी रह़मत और फ़ज़्ल से मह़रूम न रखना।[3]

(3) नमाज़ के अह़काम ﴿नबिय्ये करीम की क़िराअत﴾

नमाज़ में ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ पाने के लिये क़िराअत ठहर ठहर कर की जाए और जहां जहां शरई रुख़्सत हो वहां मसलन रात तन्हाई में तहज्जुद वग़ैरा के अन्दर निहायत ख़ुश इल्ह़ानी से क़ुरआने करीम पढ़ा जाए।

1 ...تفسیر صاوی، پ1، الفاتحۃ، الجزء:6، 365/3
2 ...کنز العمال، کتاب الاذکار، الباب السابع فی تلاوۃ القرآن وفضائلہ، جز1، 277/1، حدیث: 2488
3 ...تفسیر کبیر، الباب الحادی عشر فی بعض النکت المستخرجۃ...الخ، 153/1

प्यारे आक़ा की क़िराअत

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते अबू या'ला बिन मम्लक رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھَا से ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़िराअत के बारे में पूछा, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھَا ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ऐसी क़िराअत बयान की जिस का एक एक ह़र्फ़ वाज़ेह़ था ।[1]

क़ुरआन ज़ियादा पढ़ने की कोशिश में ग़लत़ मत पढ़िये

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ "मिरआतुल मनाजीह़" में फ़रमाते हैं : या'नी आप صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़िराअत निहायत आहिस्तगी से और साफ़ थी, जिस से हर कलिमा जुदागाना समझ में आता था । और हर कलिमे के ह़ुरूफ़ ح, ع, ز, ذ, ظ, ض, वाज़ेह़ त़ौर पर समझ लिये जाते थे । एक कलिमा दूसरे से मख़्लूत़ (या'नी गुडमुड) न होता था, तिलावते क़ुरआने करीम का येह ही त़रीक़ा चाहिये, ज़ियादा पढ़ने की कोशिश न करो, (अगर्चे थोड़ा पढ़ो मगर) दुरुस्त पढ़ने की कोशिश करो ।[2]

(4) सुन्नतें व आदाब ﴾सलाम करने की सुन्नतें व आदाब﴿

(1) ☞ सलाम करना हमारे प्यारे आक़ा, ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बहुत ही प्यारी सुन्नत है ।[3] बद क़िस्मती से आज कल येह सुन्नत भी ख़त्म होती नज़र आ रही है । इस्लामी भाई जब आपस में मिलते हैं तो اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ से इब्तिदा करने के बजाए "आदाब अ़र्ज़", "क्या ह़ाल है ?", "मिज़ाज शरीफ़", "सुब्ह़ बख़ैर", "शाम बख़ैर" वग़ैरा वग़ैरा अ़जीबो ग़रीब कलिमात से इब्तिदा करते हैं, येह ख़िलाफ़े सुन्नत है । रुख़्सत होते वक़्त भी "ख़ुदा ह़ाफ़िज़" "गुडबाय" "टाटा" वग़ैरा कहने के बजाए सलाम करना चाहिये । हां ! रुख़्सत होते हुए اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ के बा'द अगर ख़ुदा ह़ाफ़िज़ कह दें तो ह़रज नहीं ।[4]

---

1 ... نسائی، کتاب قیام اللیل وتطوع النہار، باب ذکر صلاۃ رسول اللہ باللیل، ص284، حدیث:1626 ملخصًا
2... मिरआतुल मनाजीह़, 2/247
3... बहारे शरीअ़त, 3/459, ह़िस्सा : 16
4... सुन्नतें और आदाब, स. 10

﴾2﴿☞ सलाम के बेहतरीन अल्फ़ाज़ येह हैं : "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ" या'नी तुम पर सलामती हो और **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से रह़मतें और बरकतें नाज़िल हों।

﴾3﴿☞ सलाम के जवाब के बेहतरीन अल्फ़ाज़ येह हैं : "وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ" या'नी और तुम पर भी सलामती हो और **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से रह़मतें और बरकतें नाज़िल हों।[1]

﴾4﴿☞ सलाम करने से आपस में मह़ब्बत पैदा होती है। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है, तुम जन्नत में दाख़िल नहीं होगे जब तक तुम ईमान न लाओ और तुम मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि तुम एक दूसरे से मह़ब्बत न करो। क्या मैं तुम को एक ऐसी बात न बताऊं जिस पर तुम अ़मल करो तो एक दूसरे से मह़ब्बत करने लगो ? : (चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया :) अपने दरमियान सलाम को आ़म करो।"[2]

(5) इस्लाहे़ आ'माल ﴾बिस्मिल्लाह से मुतअ़ल्लिक़ अहम मा'लूमात﴿

"بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ" पारह 19, **सूरतुन्नम्ल** की तीसवीं आयत का ह़िस्सा भी है और अलग से कुरआने मजीद की एक पूरी आयते मुबारका भी, जो कि दो सूरतों के माबैन फ़ासिले के लिये उतारी गई।[3]

बिस्मिल्लाह शरीफ़ की बरकत

ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : जब "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ" नाज़िल हुई तो बादल मशरिक़ की सम्त दौड़े, हवाएं साकिन हो गईं, समुन्दर जोश में आ गया, चौपायों ने ग़ौर से सुनने के लिये अपने कान लगा दिये और शैत़ानों को आस्मानों से पथ्थर मारे गए। **अल्लाह** पाक ने फ़रमाया : "मुझे मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जिस चीज़ पर "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ" पढ़ी गई, मैं उस में बरकत दूंगा।"[4]

1... फ़तावा रज़विय्या, 22/409 माख़ूज़न

2 ... ابو داود، کتاب الادب، باب افشاء السلام، ص809، حدیث:5193

3 ... درمختار، کتاب الصلاۃ، ص68بتقدمٍ وتأخرٍ

4 ... تفسیر درمنثور، پ1، الفاتحة، 26/1

हज़रते सफ़्वान बिन सुलैम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : "इन्सान के साज़ो सामान और मल्बूसात को जिन्नात इस्ति'माल करते हैं। लिहाज़ा तुम में से जब कोई शख़्स कपड़ा (पहनने के लिये) उठाए या (उतार कर) रखे तो "बिस्मिल्लाह शरीफ़" पढ़ लिया करे। उन के लिये **अल्लाह** पाक का नाम मोहर है।"[1] (या'नी बिस्मिल्लाह पढ़ने से जिन्नात उन कपड़ों को इस्ति'माल नहीं करेंगे।)

बिस्मिल्लाह दुरुस्त पढ़िये

"بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم" पढ़ने में दुरुस्त मख़ारिज से हुरूफ़ की अदाएगी लाज़िमी है और कम अज़ कम इतनी आवाज़ भी ज़रूरी है कि रुकावट न होने की सूरत में अपने कानों से सुन सकें। जल्द बाज़ी में बा'ज़ लोग हुरूफ़ चबा जाते हैं। जान बूझ कर इस तरह पढ़ना मम्नूअ़ है और मा'ना फ़ासिद (या'नी ख़राब) होने की सूरत में गुनाह। लिहाज़ा जल्दी जल्दी पढ़ने की आ़दत की वज्ह से जो लोग ग़लत़ पढ़ डालते हैं वोह अपनी इस्लाह़ कर लें नीज़ जहां पूरी पढ़ने की कोई ख़ास वज्ह मौजूद न हो वहां सिर्फ़ "बिस्मिल्लाह" कह लें तब भी दुरुस्त है।[2]

बिस्मिल्लाह कीजिये कहना मम्नूअ़ है

बा'ज़ लोग इस त़रह़ कह देते हैं : "बिस्मिल्लाह कीजिये !" "आओ जी बिस्मिल्लाह !" "मैं ने बिस्मिल्लाह कर डाली" ताजिर ह़ज़रात जो दिन में पहला सौदा बेचते हैं उस को उ़मूमन "बोनी" कहा जाता है मगर बा'ज़ लोग इस को भी "बिस्मिल्लाह" कहते हैं, मसलन "मेरी तो आज अभी तक बिस्मिल्लाह ही नहीं हुई !" जिन जुम्लों की मिसालें पेश की गईं येह सब ग़लत़ अन्दाज़ हैं। इसी त़रह़ खाना खाते वक़्त अगर कोई आ जाता है तो अक्सर खाने वाला उस से कहता है : आइये ! आप भी खा लीजिये, आ़म तौ़र पर जवाब मिलता है : "बिस्मिल्लाह" या इस त़रह़ कहते हैं : "बिस्मिल्लाह कीजिये !" "बहारे शरीअ़त" ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 32 पर है कि "इस मौक़अ़ पर इस त़रह़ बिस्मिल्लाह कहने को उ़लमा ने बहुत सख़्त मम्नूअ़ क़रार दिया है।" हां ! येह कह सकते हैं : बिस्मिल्लाह पढ़ कर खा लीजिये। बल्कि ऐसे मौक़अ़ पर दुआ़इया अल्फ़ाज़ कहना बेहतर है, मसलन بَارَکَ اللّٰہُ لَنَا وَلَکُمۡ या'नी **अल्लाह** पाक हमें और तुम्हें बरकत दे। या अपनी मादरी

[1] ... العظمۃ لابی الشیخ، باب ذکر الجن وخلقھم، ص426، حدیث: 1123

[2] ... फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह स. 2

www.dawateislamiindia.org

ज़बान में कह दीजिये : **अल्लाह** पाक बरकत दे ।[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 2

मौज़ूआत

1	मदनी क़ाइदा : हुरूफ़े लिसविय्यह का मख़्रज	2	तफ़्सीरे क़ुरआन : बिस्मिल्लाह से मुतअ़ल्लिक़ चन्द शरई अह़काम
3	नमाज़ के अह़काम : नमाज़ की फ़र्ज़िय्यत व अहम्मिय्यत	4	सुन्नतें व आदाब : सलाम करने की सुन्नतें व आदाब
5	इस्लाहे़ आ'माल : नमाज़ छोड़ने की मज़म्मत		

(1) मदनी क़ाइदा ﴾हुरूफ़े लिसविय्यह के मख़ारिज﴿

हुरूफ़े मुफ़्रिदात : ह़िस्सए अव्वल

हिदायात

- हुरूफ़े मुफ़्रिदात या'नी हुरूफ़े तहज्जी उन्तीस (29) हैं, इन को अ़रबी लहजे (بَا، تَا، ثَا) में अदा करें, उर्दू तलफ़्फ़ुज़ (بے، تے، ثے) में पढ़ना दुरुस्त नहीं ।
- ث, ذ और ظ को हुरूफ़े लिसविय्यह कहते हैं ।

हुरूफ़े लिसविय्यह का मख़्रज

ث، ذ، ظ	ज़बान का सिरा और ऊपर के दांतों के अन्दरूनी कनारे से अदा होते हैं ।

हुरूफ़े मुफ़्रिदात

ج	ث	ت	ب	ا
ر	ذ	د	خ	ح

[1]... फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह, स. 26

हुरूफ़े लिसविय्यह के मख़्रज में फ़र्क़ समझने की मिसालें

س और ث में फ़र्क़ की मिसाल :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا (پ5، النساء:71)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! होशियारी से काम लो फिर दुश्मन की त़रफ़ थोड़े थोड़े हो कर निकलो या इकट्ठे चलो ।

ऊपर दी गई आयते मुबारका में लफ़्ज़ "ثُبَات" आया है। इस लफ़्ज़ को "ث" के मख़्रज से अदा करने और "س" के मख़्रज से अदा करने से मा'ना में मुन्दरिजए ज़ैल फ़र्क़ वाक़ेअ़ होगा :

ह़र्फ़	लफ़्ज़	मा'ना
ث	ثُبات	थोड़े थोड़े
س	سُبات	आराम

ذ और ظ में फ़र्क़ की मिसाल :

وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَمِنْهَا يَاْكُلُوْنَ (پ23، يٰس:72)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ने इन चौपायों को उन के लिये ताबेअ़ कर दिया तो इन चौपायों से कुछ उन की सुवारियां हैं और कुछ से वोह खाते हैं ।

ऊपर दी गई आयते मुबारका में लफ़्ज़ "ذَلَّلْنٰهَا" आया है। इस लफ़्ज़ को "ذ" के साथ अदा करने और "ظ" के साथ अदा करने से मा'ना में मुन्दरिजए ज़ैल फ़र्क़ वाक़ेअ़ होता है :

ह़र्फ़	लफ़्ज़	मा'ना
ذ	ذَلَّلْنٰهَا	ताबेअ़ कर दिया
ظ	ظَلَّلْنٰهَا	साएबान कर दिया

(2) तफ़्सीरे कुरआन 《बिस्मिल्लाह के मुतअ़ल्लिक़ चन्द शरई अह़काम》

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान, रह़मत वाला है ।

तफ़्सीरे **सिरातुल जिनान** में है कि उ़लमाए किराम ने "**बिस्मिल्लाह**" से मुतअ़ल्लिक़ बहुत से शरई मसाइल बयान किये हैं, उन में से चन्द दर्जे ज़ैल हैं :

(1)☞ जो "**बिस्मिल्लाह**" हर सूरत के शुरूअ़ में लिखी हुई है, येह पूरी आयत है और जो "सूरए नम्ल" की आयत नम्बर 30 में है वोह उस आयत का एक ह़िस्सा है।

(2)☞ "**बिस्मिल्लाह**" हर सूरत के शुरूअ़ की आयत नहीं है बल्कि पूरे क़ुरआन की एक आयत है जिसे हर सूरत के शुरूअ़ में लिख दिया गया ताकि दो सूरतों के दरमियान फ़ासिला हो जाए, इसी लिये सूरत के ऊपर इम्तियाज़ी शान में "**बिस्मिल्लाह**" लिखी जाती है, आयात की त़रह़ मिला कर नहीं लिखते और इमाम जहरी नमाज़ों में "**बिस्मिल्लाह**" आवाज़ से नहीं पढ़ता, नीज़ ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام जो पहली वह़ी लाए उस में "**बिस्मिल्लाह**" न थी।

(3)☞ तरावीह़ पढ़ाने वाले को चाहिये कि वोह किसी एक सूरत के शुरूअ़ में "**बिस्मिल्लाह**" आवाज़ से पढ़े ताकि एक आयत रह न जाए।

(4)☞ तिलावत शुरूअ़ करने से पहले "اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم" पढ़ना सुन्नत है, लेकिन अगर शागिर्द उस्ताद से क़ुरआने मजीद पढ़ रहा हो तो उस के लिये सुन्नत नहीं।

(5)☞ सूरत की इब्तिदा में "**बिस्मिल्लाह**" पढ़ना सुन्नत है वरना मुस्तह़ब है।

(6)☞ अगर "सूरए तौबह" से तिलावत शुरूअ़ की जाए तो "اَعُوْذُ بِاللّٰه" और "**बिस्मिल्लाह**" दोनों को पढ़ा जाए और अगर तिलावत के दौरान सूरए तौबह आ जाए तो "**बिस्मिल्लाह**" पढ़ने की ह़ाजत नहीं।[1]

(3) नमाज़ के अह़काम «नमाज़ की फ़र्ज़िय्यत व अहम्मिय्यत»

नमाज़ किस पर फ़र्ज़ है ?

हर मुसल्मान आ़क़िलो बालिग़ मर्दो औ़रत पर रोज़ाना पांच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ है। इस की फ़र्ज़िय्यत (या'नी फ़र्ज़ होने) का इन्कार कुफ़्र है। जो जान बूझ कर एक नमाज़ तर्क करे वोह फ़ासिक़ सख़्त गुनहगार व अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है।[2]

1... तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह : 1, अल फ़ातिह़ा : 1/44

2... درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، 6/2 ملتقطاً

नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ चन्द आयाते मुबारका

अल्लाह पाक इर्शाद फ़रमाता है :

وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِیْ ﴿۱۴﴾

(پ16،طٰہٰ:14)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मेरी याद के लिये नमाज़ क़ाइम रख।

एक मक़ाम पर इर्शाद होता है :

وَالَّذِیْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ یُحَافِظُوْنَ ﴿۹﴾ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ﴿۱۰﴾ الَّذِیْنَ یَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ؕ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۱۱﴾

(پ18، المومنون، 9تا11)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं। येही लोग वारिस हैं। येह फ़िरदौस की मीरास पाएंगे, वोह उस में हमेशा रहेंगे।

एक और मक़ाम पर इर्शाद होता है :

وَ اَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ وَ اَطِیْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۵۶﴾ (پ18، النور:56)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और रसूल की फ़रमां बरदारी करते रहो इस उम्मीद पर कि तुम पर रह़म किया जाए।

नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ दो अह़ादीसे मुबारका

(1) ☞ ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है कि प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللہُ عَنْہ को यमन की त़रफ़ रवाना किया तो फ़रमाया कि तुम अहले किताब के पास जा रहे हो तो उन्हें इस बात की दा'वत देना कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और बेशक मुह़म्मद (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** पाक के रसूल हैं, अगर वोह इस में फ़रमां बरदारी करें तो उन्हें बताना कि **अल्लाह** करीम ने उन पर दिन रात में पांच नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई हैं, फिर अगर वोह येह भी मान जाएं तो उन्हें सिखाना कि **अल्लाह** पाक ने उन पर ज़कात फ़र्ज़ की है जो उन के मालदारों से ली जाएगी और उन ही के फ़क़ीरों को दी जाएगी फिर अगर येह भी मान लें तो उन के बेहतरीन मालों[1]

1... या'नी ज़कात में उन के बेहतरीन माल न वुसूल करना बल्कि दरमियानी माल लेना, हां ! अगर ख़ुद मालिक ही बेहतरीन माल अपनी ख़ुशी से दे तो उन की मरज़ी है। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/3)

से बचना और सितम रसीदा की बद दुआ से डरना कि उस के और रब के दरमियान कोई आड़ नहीं।[1]

(2) ☞ हज़रते अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी कि एक साहिब से एक गुनाह सादिर हो गया, उस ने सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आ कर इस की ख़बर दी, चुनान्चे येह आयते करीमा नाज़िल हुई :

وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَیِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّیْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ یُذْهِبْنَ السَّیِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِیْنَ ﴿۱۱۴﴾ (پ12،هود:114)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और दिन के दोनों कनारों और रात के कुछ हिस्से में नमाज़ क़ाइम रखो। बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं, येह नसीहत मानने वालों के लिये नसीहत है।

उन्हों ने अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** क्या येह ख़ास मेरे लिये है ? फ़रमाया : "मेरी सारी उम्मत के लिये है।"[2]

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस हदीसे पाक की शर्ह में लिखते हैं : या'नी येह आयत अगर्चे तेरे बारे में उतरी मगर इस का हुक्म आम है। कोई मुसल्मान कोई गुनाहे सग़ीरा करे उस की नमाज़ें वग़ैरा मुआफ़ी का ज़रीआ हैं। इस से मा'लूम हुवा कि अज्नबिय्या से ख़ल्वत और बोसो कनार गुनाहे सग़ीरा है, हां ! येह जुर्म बार बार करने से कबीरा बन जाएगा क्यूं कि सग़ीरा पर दवाम (या'नी हमेशगी) कबीरा है।

मज़ीद फ़रमाते हैं : येह हदीस उस के लिये है जो इत्तिफ़ाक़न ऐसा मुआमला कर बैठे फिर शर्मिन्दा हो कर तौबा करे, लिहाज़ा हदीस पर येह ए'तिराज़ नहीं कि इस में इन हरकतों की इजाज़त दे दी गई। मज़ीद फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि येह आसानियां सिर्फ़ इस उम्मत के लिये हैं, गुज़श्ता उम्मतों की मुआफ़ी बहुत मुश्किल होती थी।[3]

1 ... بخاری، کتاب المغازی، باب بعث موسی ومعاذ الی الیمن...الخ، ص1079، حدیث: 4347

2 ... بخاری، کتاب مواقیت الصلاۃ، باب الصلاۃ کفارۃ، ص200، حدیث: 526 ملخصًا

3... मिरआतुल मनाजीह, 1/531

(4) सुन्नतें व आदाब «सलाम करने की सुन्नतें व आदाब»

(1) ☞ बातचीत शुरूअ़ करने से पहले ही सलाम करने की आ़दत बनानी चाहिये। आक़ाए दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''اَلسَّلَامُ قَبْلَ الْكَلَامِ'' या'नी सलाम बातचीत से पहले है।[1]

(2) ☞ छोटा बड़े को, चलने वाला बैठे हुए को, थोड़े ज़ियादा को और सुवार पैदल को सलाम करने में पहल करें। सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : सुवार पैदल को सलाम करे, चलने वाला बैठे हुए को, और थोड़े लोग ज़ियादा को, और छोटा बड़े को सलाम करे।[2]

(3) ☞ सलाम में पहल करने वाला तकब्बुर से बरी है। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ عَنْه रिवायत करते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : पहले सलाम कहने वाला तकब्बुर से बरी है।[3]

(4) ☞ ज़बान से सलाम करने की बजाए सिर्फ़ उंग्लियों या हथेली के इशारे से सलाम न किया जाए।[4]

(5) ☞ सलाम का फ़ौरन जवाब देना वाजिब है। अगर बिला उ़ज़्र ताख़ीर की तो गुनाहगार होगा और सिर्फ़ जवाब देने से गुनाह मुआ़फ़ नहीं होगा, तौबा भी करना होगी।[5]

(5) इस्लाहे़ आ'माल «नमाज़ छोड़ने की मज़म्मत»

पारह 16, सूरए मरयम, आयत 59 में है :

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿۵۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो उन के बा'द वोह ना लाइक़ लोग उन की जगह आए जिन्हों ने नमाज़ों को ज़ाएअ़ किया और अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी की तो अ़न्क़रीब वोह जहन्नम की ख़ौफ़नाक वादी ''ग़य'' से जा मिलेंगे।

1 ... ترمذی، کتاب الاستئذان و الآداب، باب ماجاء فی السلام قبل الکلام، ص635، حدیث: 2699

2 ... ترمذی، کتاب الاستئذان و الآداب، باب ماجاء فی التسلیم الراکب علی الماشی..الخ، ص636، حدیث: 2703

3 ... شعب الایمان، باب فی مقاربۃ و موادۃ اھل الدین، 433/6، حدیث: 8786

4 ... बहारे शरीअ़त, 3/464, ह़िस्सा : 16 माख़ूज़न

5 ... درمختار مع ردالمحتار، کتاب الحظر و الاباحۃ، فصل فی البیع، 683/9

इस आयत में नमाज़ें ज़ाएअ़ करने को सब से पहले और दीगर गुनाहों को बा'द में ज़िक्र किया गया, इस से मा'लूम हुवा कि नमाज़ें ज़ाएअ़ करना गुनाहों की जड़ है। नमाज़ें ज़ाएअ़ करने की कई सूरतें हैं, जैसे नमाज़ न पढ़ना, बे वक़्त पढ़ना, हमेशा न पढ़ना, रियाकारी से पढ़ना और निय्यत के बिग़ैर नमाज़ शुरूअ़ कर देना वग़ैरा।[1]

तर्के नमाज़ की मज़म्मत पर अह़ादीसे मुबारका

(1) ☞ ह़ज़रते नौफ़ल बिन मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस की नमाज़ फ़ौत हुई गोया उस के अहलो माल जाते रहे।"[2]

(2) ☞ ह़ज़रते उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रिवायत है, हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़स्दन नमाज़ तर्क न करो क्यूं कि जो क़स्दन नमाज़ तर्क कर देता है, **अल्लाह** पाक और रसूल صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस से बरिय्युज़्ज़िम्मा हैं।"[3]

(3) ☞ रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन बन्दे के आ'माल में सब से पहले नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल होगा। अगर येह दुरुस्त हुई तो उस ने फ़लाह़ व काम्याबी पाई और इस में कमी हुई तो वोह ना मुराद हुवा और उस ने नुक़्सान उठाया।"[4]

(4) ☞ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا रिवायत करते हैं कि रसूले पाक صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो नमाज़ की ह़िफ़ाज़त नहीं करेगा तो नमाज़ उस के लिये क़ियामत के दिन नूर, दलील और नजात का बाइ़स नहीं होगी और वोह बरोज़े क़ियामत क़ारून, फ़िरऔ़न, हामान और उबय बिन ख़लफ़ के साथ होगा।[5]

अल्लाह करीम हमें पांचों वक़्त बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

1... तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह : 16, मरयम, तह़्तल आयह : 59, 6/131

2... بخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوۃ فی الاسلام، ص916، حدیث:3602

3... مسند امام احمد، مسند القبائل، حدیث ام ایمن رضی اللہ عنہا، 10/271، حدیث:281126

4... ترمذی، ابواب السھو، باب ماجاء ان اول مایحاسب بہ العبد یوم القیامۃ الصلاۃ، ص126، حدیث:413

5... مسند امام احمد، مسند عبد اللہ بن عمرو بن العاص، 3/553، حدیث:6733

सबक़ नम्बर 3

मौज़ूआत

1	मदनी क़ाइदा : हुरूफ़े सफ़ीरिया और हर्फ़े हाफ़िया के मख़ारिज	2	तफ़्सीरे कुरआन : तिलावत के आदाब
3	नमाज़ के अह़काम : नमाज़ के फ़ज़ाइल	4	सुन्नतें व आदाब : बातचीत करने की सुन्नतें व आदाब
5	इस्लाहे आ'माल : पाक दामन औ़रतों पर ज़िना की तोहमत		

(1) मदनी क़ाइदा ﴾हुरूफ़े सफ़ीरिया और ह़र्फ़े ह़ाफ़िया के मख़ारिज﴿

हुरूफ़े मुफ़्रिदात : हिस्सए दुवुम

हिदायात

- ز, س, ص को हुरूफ़े सफ़ीरिया कहते हैं।
- मौजूदा सबक़ में आने वाले हुरूफ़े ह़ल्क़ी और हुरूफ़े लिसविय्यह की पहचान और मख़्रज से अदाएगी की मश्क़ करें।
- "ض" को ह़र्फ़े ह़ाफ़िया कहते हैं।

हुरूफ़े सफ़ीरिया का मख़्रज

ز،س،ص	ज़बान की नोक और दोनों दांतों के अन्दरूनी कनारों से अदा होते हैं।

"ض" ह़र्फ़े ह़ाफ़िया का मख़्रज

ض	ज़बान की करवट और ऊपर की दाढ़ों की जड़ से अदा होता है।

हुरूफ़े मुफ़्रिदात

ض	ص	ش	س	ز
ف	غ	ع	ظ	ط

हुरूफ़े सफ़ीरिया के हुरूफ़ में फ़र्क़ को समझने के लिये मिसालें

س और ص के फ़र्क़ की मिसाल

اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ (پ30، الاخلاص:2) तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह बे नियाज़ है।

ऊपर दी गई आयते मुबारका में लफ़्ज़ ''صمد'' आया है। इस लफ़्ज़ को ''ص'' के साथ अदा करने और ''س'' के साथ अदा करने से मा'ना में मुन्दरिजए ज़ैल फ़र्क़ वाक़ेअ़ होता है :

हर्फ़	लफ़्ज़	मा'ना
ص	صَمَد	बे नियाज़
س	سَمَد	हैरान/परेशान

ز और ذ के फ़र्क़ की मिसाल

ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ (پ23، الزمر:21) तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर उस से मुख़्तलिफ़ रंगों की खेती निकालता है।

ऊपर दी गई आयते मुबारका में लफ़्ज़ ''زرع'' आया है। इस लफ़्ज़ को ''ز'' के मख़्रज से अदा करने और ''ذ'' के मख़्रज से अदा करने से मा'ना में मुन्दरिजए ज़ैल फ़र्क़ वाक़ेअ़ होता है :

हर्फ़	लफ़्ज़	मा'ना
ز	زَرْعٌ	खेती
ذ	ذَرْعٌ	नाप

ض के मख़्रज में फ़र्क़ की मिसाल

وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ؕ (پ30، الضحی:5) तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे।

ऊपर दी गई आयते मुबारका में लफ़्ज़ ''ترضی'' आया है। इस लफ़्ज़ को ''ض'' के मख़्रज से अदा करने और ''د'' के मख़्रज से अदा करने से मा'ना में मुन्दरिजए ज़ैल फ़र्क़ वाक़ेअ़ होता है :

हर्फ़	लफ़्ज़	मा'ना
ض	تَرْضٰی	तुम राज़ी हो जाओगे
د	تَرْدٰی	तुम हलाक हो जाओगे

(2) तफ़्सीरे कुरआन «तिलावत के आदाब»

اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖؕ
(پ1، البقرۃ:121)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह लोग जिन्हें हम ने किताब दी है तो वोह उस की तिलावत करते हैं जैसा तिलावत करने का हक़ है।

तफ़्सीरे जलालैन में इस आयते मुबारका के तहत है : ''اَیْ یَقْرَءُوْنَهٗ كَمَا اُنْزِلَ'' या'नी वोह उसे ऐसे पढ़ते हैं जिस तरह नाज़िल किया गया।[1]

तिलावते कुरआन के ज़ाहिरी आदाब

कुरआने मजीद की तिलावत करने वाले को दर्जे ज़ैल 6 ज़ाहिरी चीज़ों का ख़याल रखना चाहिये :

(1)☞ बा वुज़ू हो कर, क़िब्ला रू हो कर, मुअद्दब (बा अदब) हो कर और इज्ज़ो इन्किसारी के साथ बैठे।

(2)☞ आहिस्ता पढ़े और उस के मआनी में ग़ौरो फ़िक्र करे, तिलावते कुरआन करने में जल्द बाज़ी से काम न ले।

(3)☞ दौराने तिलावत रोना भी चाहिये और अगर रोना न आए तो रोने जैसी शक्ल ही बना ले।

(4)☞ हर आयत की तिलावत का हक़ बजा लाए।

(5)☞ अगर क़िराअत से रियाकारी का अन्देशा हो या किसी की नमाज़ में ख़लल पड़ता हो तो आहिस्ता आवाज़ में तिलावत करे।

(6)☞ जहां तक मुम्किन हो कुरआने पाक को खुश इल्हानी (या'नी अच्छे लहजे) के साथ पढ़े।[2]

1 ...تفسیر جلالین مع حاشیہ انوار الحرمین، پ1، البقرۃ، تحت الآیۃ:121، 58/1

2... तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह : 1, अल बक़रह, तहतल आयह : 121, 1/226

(3) नमाज़ के अह़काम «नमाज़ के फ़ज़ाइल»

नमाज़ जन्नत की चाबी है

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान करते हैं कि **अल्लाह** के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जन्नत की चाबी नमाज़ और नमाज़ की चाबी वुज़ू है।[1]

नमाज़ नूर है

ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''اَلصَّلَاةُ نُوْرٌ'' या'नी नमाज़ नूर है।[2]

नमाज़ नूर होने का मत़लब

ह़ज़रते इमाम अबू ज़करिय्या यह़्या बिन शरफ़ नववी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ नमाज़ के नूर होने की वज़ाह़त करते हुए लिखते हैं : इस का मा'ना येह है कि जिस त़रह़ नूर के ज़रीए रोशनी ह़ासिल की जाती है इसी त़रह़ नमाज़ भी गुनाहों से बाज़ रखती (या'नी रोकती) है और बे ह़याई और बुरी बातों से रोक कर सीधी राह दिखाती है। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ इस का मा'ना है : नमाज़ का अज्रो सवाब बरोज़े क़ियामत नमाज़ी के लिये नूर होगा। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ इस का मत़लब येह है कि बरोज़े क़ियामत नमाज़ी के चेहरे पर नमाज़ नूर बन के ज़ाहिर होगी नीज़ दुन्या में भी नमाज़ी के चेहरे पर रौनक़ होगी।[3]

नमाज़ दीन का सुतून है

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : नमाज़ दीन का सुतून है, जिस ने इस को क़ाइम रखा, दीन को क़ाइम रखा और जिस ने इस को छोड़ दिया उस ने दीन को ढा (या'नी गिरा) दिया।[4]

1 ...ترمذی، ابواب الطہارۃ، باب ما جاء ان مفتاح الصلاۃ الطھور، ص10، حدیث: 4

2 ...مسلم، کتاب الطہارۃ، باب فضل الوضوء، ص106، حدیث: 223

3 ...شرح مسلم للنووی، کتاب الطہارۃ، باب فضل الوضوء، ص113، ، تحت الحدیث: 223 ملخصًا

4 ...منیۃ المصلی، ثبوت فرضیۃ الصلاۃ بالسنۃ، ص13

(4) सुन्नतें व आदाब «बातचीत करने की सुन्नतें व आदाब»

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें ज़िन्दगी में अक्सर अवक़ात बातचीत करने की ज़रूरत पड़ती रहती है। लेकिन हम बिला ज़रूरत भी हर वक़्त बोलते रहते हैं, येह बिला ज़रूरत बोलना बहुत ही नुक़्सान देह है, ग़ैर ज़रूरी गुफ़्त्गू करने से ख़ामोश रहना अफ़्ज़ल है। चुनान्चे यहां बातचीत के तअ़ल्लुक़ से चन्द सुन्नतें और आदाब बयान किये जाते हैं, आइये ! मुलाहज़ा कीजिये :

(1) ☞ सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गुफ़्त्गू दिल नशीन (या'नी दिल को अच्छे लगने वाले) अन्दाज़ में ठहर ठहर कर फ़रमाते कि सुनने वाला आसानी से याद कर लेता, चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم साफ़ साफ़ और जुदा जुदा कलाम फ़रमाते थे, हर सुनने वाला उस को याद कर लेता था।[1]

(2) ☞ मुस्कुरा कर और ख़न्दा पेशानी से बातचीत कीजिये। छोटों के साथ शफ़्क़त और बड़ों के साथ मुअद्दबाना (या'नी अदब वाला) लहजा रखें। اِنْ شَآءَ اللهُ الرَّحْمٰن आप दोनों के नज़्दीक "मुअ़ज़्ज़ज़" रहेंगे।

(3) ☞ ऊंची आवाज़ में बात करना जैसा कि आज कल बे तकल्लुफ़ी में दोस्त आपस में करते हैं, ना पसन्दीदा है।

(4) ☞ दौराने गुफ़्त्गू एक दूसरे के हाथ पर ताली देना ठीक नहीं क्यूं कि ताली, सीटी बजाना महूज़ खेलकूद, तमाशा और कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा है।[2]

(5) ☞ बातचीत करते वक़्त दूसरे के सामने बार बार नाक या कान में उंगली डालना, थूकते रहना अच्छी बात नहीं। इस से दूसरों को घिन आती है।[3]

(5) इस्लाहे आ'माल «पाक दामन औ़रतों पर ज़िना की तोहमत»

अल्लाह पाक इर्शाद फ़रमाता है :

1 ...مسند امام احمد، مسند عائشة، 10/293، حدیث: 25819

2... तफ़्सीरे नईमी, पारह : 9, अल अन्फ़ाल, तह़्तल आयह : 35, 9/603

3... सुन्नतें और आदाब, स. 30, 31 ब तसर्रुफ़

إِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۪ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۲۳﴾ (پ18، النور:23)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह जो अन्जान, पाक दामन, ईमान वाली औ़रतों पर बोहतान लगाते हैं उन पर दुन्या और आख़िरत में ला'नत है और उन के लिये बड़ा अ़ज़ाब है।

एक मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया :

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّ لَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۴﴾ (پ18، النور:4)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो पारसा औ़रतों को ऐ़ब लगाएं फिर चार गवाह मुआ़यना के न लाएं तो उन्हें अस्सी कोड़े लगाओ और उन की कोई गवाही कभी न मानो और वोही फ़ासिक़ हैं। मगर जो इस के बा'द तौबा कर लें और अपनी इस्लाह़ कर लें तो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह़रबान है।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस आयते मुबारका में पाक दामन अज्नबी औ़रतों पर ज़िना की तोहमत लगाने वालों की सज़ा का बयान है। आयत का खुलासा येह है कि जो लोग पाक दामन औ़रतों पर ज़िना की तोहमत लगाएं फिर चार गवाह ऐसे न लाएं जिन्हों ने उन के ज़िना का मुआ़यना किया हो तो उन में से हर एक को अस्सी (80) कोड़े लगाओ और किसी चीज़ में उन की गवाही कभी क़बूल न करो और कबीरा गुनाह के मुर्तकिब होने की वज्ह से वोही फ़ासिक़ हैं।[1]

तोहमते ज़िना की सज़ा से मुतअ़ल्लिक़ चन्द शर्ई अह़काम

(1) ☞ जो शख़्स किसी पारसा मर्द या औ़रत को ज़िना की तोहमत लगाए और उस पर चार मुआ़यने के गवाह पेश न कर सके तो उस पर 80 कोड़ों की ह़द वाजिब हो जाती है।

(2) ☞ ऐसे लोग जो ज़िना की तोहमत में सज़ायाब हों और उन पर ह़द जारी हो चुकी हो वोह मरदूदुश्शहादत हो जाते हैं, या'नी उन की गवाही कभी मक़्बूल नहीं होती। पारसा से मुराद वोह हैं जो मुसल्मान, मुकल्लफ़, आज़ाद और ज़िना से पाक हों।

1 ... تفسیر صاوی، پ18، النور، تحت الآیۃ:4، الجزء:4، 173/2

﴾3﴿☞ ज़िना की गवाही का निसाब चार गवाह हैं।

﴾4﴿☞ ह़द्दे क़ज़्फ़ या'नी ज़िना की तोहमत लगाने की सज़ा मुत़ालबे पर मशरूत़ है, जिस पर तोहमत लगाई गई है अगर वोह मुत़ालबा न करे तो क़ाज़ी पर ह़द क़ाइम करना लाज़िम नहीं।

﴾5﴿☞ जिस पर तोहमत लगाई गई है अगर वोह ज़िन्दा हो तो मुत़ालबे का ह़क़ उसी को है और अगर मर गया हो तो उस के बेटे पोते को भी है।

﴾6﴿☞ ग़ुलाम अपने मौला के ख़िलाफ़ और बेटा बाप के ख़िलाफ़ क़ज़्फ़ या'नी अपनी मां पर ज़िना की तोहमत लगाने का दा'वा नहीं कर सकता।

﴾7﴿☞ क़ज़्फ़ के अल्फ़ाज़ येह हैं कि वोह सराह़तन किसी को ऐ ज़ानी कहे या येह कहे कि तू अपने बाप से नहीं है या उस के बाप का नाम ले कर कहे कि तू फ़ुलां का बेटा नहीं है या उस को ज़ानिया का बेटा कह कर पुकारे जब कि उस की मां पारसा हो तो ऐसा शख़्स क़ाज़िफ़ या'नी ज़िना की तोहमत लगाने वाला हो जाएगा और उस पर तोहमत की ह़द लाज़िम आएगी।

﴾8﴿☞ अगर ग़ैर मोह़्सन को ज़िना की तोहमत लगाई मसलन किसी ग़ुलाम को या काफ़िर को या ऐसे शख़्स को जिस का कभी ज़िना करना साबित हो तो उस पर ह़द्दे क़ज़्फ़ क़ाइम न होगी बल्कि उस पर ता'ज़ीर वाजिब होगी और येह ता'ज़ीर 3 से 39 कोड़े तक जितने शरई ह़ाकिम तज्वीज़ करे उतने कोड़े लगाना है, इसी त़रह़ अगर किसी शख़्स ने ज़िना के सिवा और किसी गुनाह की तोहमत लगाई और पारसा मुसल्मान को ऐ फ़ासिक़, ऐ काफ़िर, ऐ ख़बीस, ऐ चोर, ऐ बदकार, ऐ मुख़न्नस, ऐ बद दियानत, ऐ लूत़ी, ऐ ज़िन्दीक़, ऐ दय्यूस, ऐ शराबी, ऐ सूद ख़्वार, ऐ बदकार औ़रत के बच्चे, ऐ ह़राम ज़ादे, इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ कहे तो भी उस पर ता'ज़ीर वाजिब होगी।[1]

नोट : ह़द्दे क़ज़्फ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसाइल की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये बहारे शरीअ़त जिल्द 2 हिस्सा 9 से "क़ज़्फ़ का बयान" मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

1... तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह : 18, अन्नूर, तह़्तल आयह : 4, 5, 6/585

सबक़ नम्बर 4

मौज़ूआत

1	मदनी क़ाइदा : हुरूफ़े लहविय्या और शफ़विय्या के मख़ारिज	2	तफ़्सीरे कुरआन : फ़ज़ाइले नमाज़
3	नमाज़ के अह़काम : नमाज़ बे हयाई और बुरे कामों से रोकती है	4	सुन्नतें व आदाब : बातचीत करने की सुन्नतें व आदाब
5	इस्लाहे आ'माल : कुरआनो सुन्नत के ख़िलाफ़ फ़ैसला करना		

(1) मदनी क़ाइदा ﴾हुरूफ़े लहविय्या और शफ़विय्या के मख़ारिज﴿

हुरूफ़े मुफ़्रिदात : हिस्सए सिवुम

हिदायात

- ق, ک को हुरूफ़े लहविय्या कहते हैं।
- ب, ف, م, و को हुरूफ़े शफ़विय्या कहते हैं।
- मौजूदा सबक़ में आने वाले हुरूफ़े ह़ल्क़ी और हुरूफ़े मुस्ता'लिया की पहचान और हुरूफ़े ह़ल्क़ी की मख़्रज से अदाएगी की मश्क़ करें।

हुरूफ़े लहविय्या का मख़्रज

ق	ज़बान की जड़ और तालू के नर्म हिस्से से अदा होता है।
ک	ज़बान की जड़ और तालू के सख़्त हिस्से से अदा होता है।

हुरूफ़े शफ़विय्या के मख़्रज

ف	ऊपर के दांतों के कनारे और निचले होंट के तर हिस्से से अदा होता है।
ب	दोनों होंटों के तर हिस्से से अदा होता है।
م	दोनों होंटो के ख़ुश्क हिस्से से अदा होता है।
و	दोनों होंटों की गोलाई से अदा होता है।

सबक़

ن	م	ل	ک	ق
ی	ء	ھ	و	

हुरूफ़े लहविय्या के फ़र्क़ को समझने के लिये मिसाल

اَلَا بِذِکْرِ اللّٰہِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ ؕ﴿۲۸﴾ (پ13، الرعد:28)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : सुन लो ! **अल्लाह** की याद ही से दिल चैन पाते हैं।

ऊपर दी गई आयते मुबारका में लफ़्ज़ ''**قلوب**'' आया है जो लफ़्ज़े ''قلب'' की जम्अ़ है इस लफ़्ज़ को ''ق'' के मख़रज से अदा करने और ''ک'' के मख़रज से अदा करने से मा'ना में मुन्दरिजए ज़ैल फ़र्क़ वाक़ेअ़ होता है :

हर्फ़	लफ़्ज़	मा'ना
ق	قَلْبٌ	दिल
ک	کَلْبٌ	कुत्ता

हुरूफ़े शफ़विय्या की मिसालें

مُنِیْرًا	بَیْنَنَا	وَدُوْدٌ	فَوْقِ

(2) तफ़्सीरे क़ुरआन «फ़ज़ाइले नमाज़»

وَاَقِمِ الصَّلٰوۃَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوۃَ تَنْہٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ ؕ (پ20، العنکبوت:45)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और नमाज़ क़ाइम करो, बेशक नमाज़ बे हयाई और बुरी बात से रोकती है।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 7 सफ़हा 382 पर इस आयत के तहत मज़्कूर है कि नमाज़ बे हयाइयों और बुरी बातों से रोकती है, लिहाज़ा जो शख़्स नमाज़ का पाबन्द होता है और इसे अच्छी तरह अदा करता है तो इस का नतीजा येह होता है कि एक न एक दिन वोह उन बुराइयों को तर्क कर देता है जिन में मुब्तला था। यहां इसी से मुतअ़ल्लिक़ दो रिवायात मुलाहज़ा हों :

(1) ☞ ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि एक अन्सारी जवान सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ नमाज़ पढ़ा करता था और बहुत से कबीरा गुनाहों का इरतिकाब करता था, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से उस की शिकायत की गई तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उस की नमाज़ किसी दिन उसे इन बातों से रोक देगी।" चुनान्चे कुछ ही अ़र्से में उस ने तौबा कर ली और उस का ह़ाल बेहतर हो गया।[1]

(2) ☞ ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : फ़ुलां आदमी रात में नमाज़ पढ़ता है और जब सुब्ह़ होती है तो चोरी करता है। इर्शाद फ़रमाया : "अ़न्क़रीब नमाज़ उसे उस चीज़ से रोक देगी जो तू कह रहा है।"[2]

अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपनी किताब "फ़ैज़ाने नमाज़" में मज़्कूरा आयते मुबारका ज़िक्र करने के बा'द लिखते हैं : **प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह** पाक का फ़रमाने आ़लीशान बिला शको शुबा ह़क़, ह़क़, ह़क़ है। यक़ीनन "नमाज़ बे ह़याई और बुरी बातों से मन्अ़ करती है।" लेकिन क्या वज्ह है कि आज कल बे शुमार नमाज़ियों के अन्दर मां बाप की ना फ़रमानी, बे पर्दगी, उ़र्यानी, गाली गलोच, ग़ीबत, चुग़ली, फ़ोह़श गोई, दिल आज़ारी, लोगों की ह़क़ तलफ़ी, सूद और रिश्वत के लेनदेन वग़ैरा वग़ैरा गुनाहों की कसरत है ! क्या ह़क़ीक़ी नमाज़ी झूटा, दग़ाबाज़, चुग़ल ख़ोर, रिज़्क़े ह़राम कमाने और खाने खिलाने वाला, फ़िल्मों ड्रामों का शैदाई, म्यूज़ीकल प्रोग्रामों और गाने बाजों का शौक़ीन नीज़ दाढ़ी मुंडाने या एक मुठ्ठी से घटाने वाला हो सकता है ? नहीं...... कभी नहीं...... हरगिज़ नहीं। बेशक ह़क़ीक़त येही है कि नमाज़ बुराइयों से रोकती है।

अफ़्सोस ! हमारी अपनी नमाज़ों में कमज़ोरियां हैं, जिन के सबब हम नेक नहीं बन पा रहे, लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम अपनी नमाज़ का जाएज़ा लें, नमाज़ के ज़ाहिरी व बात़िनी आदाब सीखें और अपना वुज़ू व ग़ुस्ल वग़ैरा भी दुरुस्त कर लें। अगर सह़ीह़ मा'नों में बा वुज़ू बा त़हारत

1 ... تفسیر ابو سعود، پ14، العنکبوت، تحت الآیۃ: 45، 6/384

2 ... مسند امام احمد، مسند ابی ھریرۃ، 4/658، حدیث: 10030

ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ के साथ इस के तमाम तर ज़ाहिरी व बातिनी आदाब का ख़याल रख कर हम **नमाज़** पढ़ेंगे तो اِنْ شَآءَالله ज़रूर इस की बरकतें ज़ाहिर होंगी और दुरुस्त पढ़ी जाने वाली **नमाज़** की बरकत से वाक़ेई गुनाहों की ज़ाहिरी व बातिनी गन्दगियां दूर हो जाएंगी और हम नेक सूरत, नेक सीरत मुसल्मान बन जाएंगे और हमारा पूरा किरदार सुन्नतों का आईना दार बन जाएगा, اِنْ شَآءَالله ।[1]

(3) नमाज़ के अह़काम ﴿नमाज़ बुरे कामों से रोकती है﴾

सह़ीह़ नमाज़ ही बुराइयों से बचाती है

जो इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें सह़ीह़ त़रीक़े पर नमाज़ अदा करते हैं **अल्लाह** करीम उन्हें ज़रूर बुराइयों से बचाता है। चुनान्चे दो ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते ह़सन बसरी और ह़ज़रते क़तादा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمَا ने फ़रमाया कि जिस शख़्स को उस की नमाज़ बुरे कामों और फ़ोह़्श (या'नी बे ह़याई की) बातों से बाज़ न रखे वोह नमाज़ उस के लिये वबाल है, अलबत्ता जो शख़्स पांचों वक़्त की नमाज़ इस तरह़ अदा करता है कि उस की शराइत़ व अरकान व अह़काम, सुन्नतें और दुआ़एं पूरे त़ौर पर बजा लाए तो **अल्लाह** पाक ऐसे शख़्स को ज़रूर फ़ोह़्श बातों (या'नी बे ह़याइयों) और गुनाहों के कामों से बचाएगा।[2]

नमाज़ी की इस्लाह़ हो ही गई

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه से मन्क़ूल है कि अन्सार का एक नौ जवान जो पांच वक़्त की नमाज़ बा जमाअ़त सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ पढ़ता था मगर उस की अ़मली ह़ालत अच्छी न थी, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''इस शख़्स की नमाज़ कभी न कभी ज़रूर इसे गुनाहों से बाज़ रखे (या'नी दूर कर दे)गी।'' चुनान्चे ऐसा ही हुवा, थोड़े ही दिनों के बा'द उस ने तमाम बुरी बातों से तौबा कर ली और उस की ह़ालत अच्छी हो गई।[3]

चोर भी अगर सह़ीह़ नमाज़ पढ़े तो सुधर सकता है

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया गया कि फ़ुलां शख़्स रात को

1... फ़ैज़ाने नमाज़, स. 40

2 ...تفسیر خازن، پ21، العنکبوت، تحت الآیۃ:45، 3/452 ملخصًا

3 ...تفسیر خازن، پ21، العنکبوت، تحت الآیۃ:45، 3/452

नमाज़ पढ़ता है और सुब्ह़ को चोरी करता है ! आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अ़न्क़रीब नमाज़ उसे बुरे अ़मल से रोक देगी ।[1]

(4) सुन्नतें व आदाब «बातचीत करने की सुन्नतें व आदाब»

(1) ☞ जब तक दूसरा बात कर रहा हो, इत्मीनान से सुनें । उस की बात काट कर अपनी बात शुरूअ़ न कर दें ।

(2) ☞ कोई हक्ला कर बात करता हो तो उस की नक़्ल न उतारें कि इस से उस की दिल आज़ारी हो सकती है ।

(3) ☞ बातचीत करते हुए क़ह्क़हा न लगाएं कि सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी क़ह्क़हा नहीं लगाया ।[2] (क़ह्क़हा या'नी इतनी आवाज़ से हंसना कि दूसरों तक आवाज़ पहुंचे ।)

(4) ☞ ज़ियादा बातें करने और बार बार क़ह्क़हा लगाने से अपनी इ़ज़्ज़त भी ख़राब होती है । सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जब तुम किसी दुन्या से बे रग़बत शख़्स को देखो और उसे कम बोलने वाला पाओ तो उस के पास ज़रूर बैठो क्यूं कि उस पर ह़िक्मत का नुज़ूल होता है ।[3]

(5) ☞ ह़दीसे पाक में है : "जो चुप रहा उस ने नजात पाई ।"[4]

(5) इस्लाहे़ आ'माल «कुरआनो सुन्नत के ख़िलाफ़ फ़ैसला करना»

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़ैसला करते हुए हमेशा याद रखिये कि किसी फ़रीक़ का ह़क़ ज़ाएअ़ न हो । हमेशा अ़द्ल का दामन थामे रहें कि अ़द्ल से काम लेना जन्नत में ले जाने वाला और फ़ैसले में ना इन्साफ़ी करना जहन्नम में ले जाने वाला काम है । चुनान्चे ह़ज़रते बुरैदा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : क़ाज़ी (या'नी फ़ैसला करने वाले) तीन त़रह़ के होते हैं : एक जन्नती और दो दोज़ख़ी । पस जन्नती वोह है जो ह़क़ पहचान कर उस के मुत़ाबिक़ फ़ैसला करे और जो क़ाज़ी ह़क़ जान ले मगर

1 ... مسند امام احمد، مسند ابی ھریرۃ، 4/658، حدیث: 10030

2 ... मिरआतुल मनाजीह़, 6/402 माख़ूज़न

3 ... ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب الزھد فی الدنیا، 667، حدیث: 4101

4 ... ترمذی، ابواب صفۃ القیامۃ...الخ، 45-باب، ص591، حدیث: 2501

फ़ैसले में ज़ुल्म करे वोह दोज़ख़ी है और जो जहालत पर (या'नी ह़क़ व नाह़क़ की तह़क़ीक़ के बिग़ैर) लोगों के फ़ैसले करे वोह भी दोज़ख़ी है।[1] एक और ह़दीसे पाक में आता है : जो क़ौम क़ुरआने पाक के बिग़ैर फ़ैसला करती है, **अल्लाह** पाक उन को ज़ियादती (या'नी ग़लत़ फ़ैसले) का मज़ा चखाता है और उन्हें एक दूसरे के डर में मुब्तला कर देता है।[2]

अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ फ़ैसला करने वालों का अन्जाम

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जो 10 आदमियों का वाली (या'नी ह़ाकिम) बना और उन के दरमियान उन की पसन्द या ना पसन्द के मुत़ाबिक़ फ़ैसला किया तो (बरोज़े क़ियामत) उस के दोनों हाथ बांध कर लाया जाएगा, अगर उस ने अ़द्ल किया और रिश्वत न ली और न ही किसी पर ज़ुल्म किया तो **अल्लाह** पाक उसे उस से आज़ाद फ़रमा देगा और अगर उस ने **अल्लाह** पाक के नाज़िल कर्दा हुक्म के ख़िलाफ़ फ़ैसला किया और रिश्वत ली और किसी की त़रफ़ दारी की तो उस का बायां हाथ दाएं के साथ कस के बांध दिया जाएगा, फिर उसे जहन्नम में फेंक दिया जाएगा और वोह 500 साल में भी उस की तह तक न पहुंचेगा।[3]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 5

मौज़ूआ़त

1	मदनी क़ाइदा : मुरक्कबात का तआ़रुफ़ व पहचान	2	तफ़्सीरे क़ुरआन : वुज़ू के मुतअ़ल्लिक़ चन्द अह़काम
3	नमाज़ के अह़काम : वुज़ू के मसाइल	4	सुन्नतें व आदाब : घर में आने जाने की सुन्नतें व आदाब
5	इस्लाहे़ आ'माल : मर्द व औ़रत का एक दूसरे की मुशाबहत करना		

1 … ابو داود، کتاب الاقضیۃ، باب فی القاضی، ص567، حدیث:3573

2 … قرۃ العیون ومفرح القلب المحزون، الباب الخامس فی عقوبۃ اکل الربا … الخ، ص392

3 … مستدرک، کتاب الاحکام، باب لعن رسول اللہ الراشی والمرتشی، 5/140، حدیث:7157

(1) मदनी क़ाइदा ﴾मुरक्कबात का तआ़रुफ़ व पहचान﴿

हिदायात

➤ दो या इस से ज़ाइद हुरूफ़ से मिल कर एक मुरक्कब बनता है। मुरक्कबात में सिर्फ़ हुरूफ़ की पहचान करवाएं।

सबक़

جا	تا	با	لا	لا	ا
قسم	شل	سل	شا	كب	لب
صم	خذ	عد	كث	طن	كن
خذ	بج	عج	لج	بر	خز
خرق	رقب	وعيد	قبل	قلب	بعد
الغنى	وحيد	يؤد	بئس	جسد	وجد
المذل	المعز	الرقيب	الرحيم	الجبار	القهار
نبيل	كريم	حسب	نصر	فتح	ضرب
رحيم	يغفر	فظ	عط	نة	بة

(2) तफ़्सीरे कुरआन ﴿वुज़ू के मुतअ़ल्लिक़ चन्द अह़काम﴾

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَ اَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَ امْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَ اَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِؕ (پ6، المائدۃ:6)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! जब तुम नमाज़ की त़रफ़ खड़े होने लगो तो अपने चेहरों को और अपने हाथ कोहनियों तक धो लो और सरों का मस्ह़ करो और टख़्नों तक पाउं धो लो ।

(1) ☞ तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 2 सफ़ह़ा 435 पर है कि जितना धोने का हुक्म है उस से कुछ ज़ियादा धो लेना मुस्तह़ब है कि जहां तक आ'ज़ाए वुज़ू को धोया जाएगा क़ियामत के दिन वहां तक आ'ज़ा रोशन होंगे ।[1]

(2) ☞ रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और बा'ज़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم हर नमाज़ के लिये ताज़ा वुज़ू फ़रमाया करते जब कि अक्सर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم जब तक वुज़ू टूट न जाता उसी वुज़ू से एक से ज़ियादा नमाज़ें अदा फ़रमाते, एक वुज़ू से ज़ियादा नमाज़ें अदा करने का अ़मल ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से भी साबित है ।[2]

(3) ☞ अगर्चे एक वुज़ू से भी बहुत सी नमाज़ें फ़राइज़ व नवाफ़िल दुरुस्त हैं मगर हर नमाज़ के लिये जुदागाना वुज़ू करना ज़ियादा बरकत व सवाब का ज़रीआ़ है ।

(4) ☞ बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इब्तिदाए इस्लाम में हर नमाज़ के लिये जुदागाना वुज़ू फ़र्ज़ था, बा'द में मन्सूख़ किया गया ।[3] (और जब तक बे वुज़ू करने वाली कोई चीज़ वाक़ेअ़ न हो एक ही वुज़ू से फ़राइज़ व नवाफ़िल सब का अदा करना जाइज़ हो गया ।)

(5) ☞ याद रहे कि जहां धोने का हुक्म है वहां धोना ही ज़रूरी है वहां मस्ह़ नहीं कर सकते जैसे पाउं को धोना ही ज़रूरी है मस्ह़ करने की इजाज़त नहीं, हां अगर मोज़े पहने हों तो इस की शराइत़ पाए जाने की सूरत में मोज़ों पर मस्ह़ कर सकते हैं कि येह अह़ादीसे मश्हूरा से साबित है ।[4]

1 ... بخاری، کتاب الوضوء، باب فضل الوضوء والغرّ المحجّلون... الخ، ص110، حدیث: 136 ملخصًا

2 ... عمدۃ القاری، کتاب الوضوء، باب الوضوء من غیر حدث، 2/590، تحت الحدیث: 214

3 ... تفسیر مدارک، پ6، المائدۃ، تحت الآیۃ: 6، 1/449

4 ... तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह : 6, अल माइदह, तह़तल आयह : 6, 2/436

(3) नमाज़ के अह़काम «वुज़ू के मसाइल»

वुज़ू के फ़राइज़

वुज़ू के चार फ़राइज़ हैं : (1) चेहरा धोना। (2) कोहनियों समेत दोनों हाथ धोना। (3) चौथाई सर का मस्ह़ करना। (4) टख़्नों समेत दोनों पाउं धोना।

धोने की ता'रीफ़

जिस्म के किसी भी ह़िस्से को धोने के मा'ना येह हैं कि हर ह़िस्से पर कम अज़ कम पानी के दो क़त्रे बह जाएं। सिर्फ़ भीग जाने या पानी को तेल की त़रह़ मल लेने या एक क़त्रा बह जाने को धोना नहीं कहेंगे, न इस त़रह़ वुज़ू या ग़ुस्ल अदा होगा।[1]

वुज़ू में पानी का इसराफ़

आज कल अक्सर लोग वुज़ू में नल खोल कर बे तह़ाशा पानी बहाते हैं, ह़त्ता कि बा'ज़ तो वुज़ूख़ाने पर आते ही नल खोल देते हैं, इस के बा'द आस्तीन चढ़ाते हैं, उतनी देर तक مَعَاذَالله पानी ज़ाएअ़ होता रहता है, इसी त़रह़ मस्ह़ के दौरान अक्सरिय्यत नल खुला छोड़ देती है ! हम सब को **अल्लाह** पाक से डर कर इसराफ़ से बचना चाहिये, क़ियामत के रोज़ ज़र्रे ज़र्रे और क़त्रे क़त्रे का ह़िसाब होगा।

इसराफ़ की मज़म्मत में अह़ादीसे मुबारका

(1) ☞ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक के मह़बूब صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को वुज़ू करते देखा, फ़रमाया : इसराफ़ न कर, इसराफ़ न कर।[2]

(2) ☞ ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है : वुज़ू में बहुत सा पानी बहाने में कुछ ख़ैर (भलाई) नहीं और वोह काम शैत़ान की त़रफ़ से है।[3]

1 ... درمختار مع ردالمحتار، کتاب الطهارة، مطلب فی فرض القطعی و الظنی، 217/1

2 ... ابن ماجه، کتاب الطهارة وسننها، باب ما جاء فی القصد فی الوضو...الخ، 79، حدیث: 424

3 ... کنز العمال، کتاب الطهارة، جز 9، 144/5، حدیث: 26255

आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : हदीस (मुबारका) ने नहरे जारी में भी इसराफ़ साबित फ़रमाया और इसराफ़ शरअ़ में मज़्मूम (या'नी शरीअ़त में बुरा) ही हो कर आया है।

وَلَا تُسْرِفُوْا ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۙ﴿۱۴۱﴾

(پ8، الانعام: 141)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और फ़ुज़ूल ख़र्ची न करो बेशक वोह फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वालों को पसन्द नहीं फ़रमाता।

मुत्लक़ है तो येह इसराफ़ भी मज़्मूम व मम्नूअ़ ही होगा बल्कि ख़ुद इसराफ़ फ़िल वुज़ू में भी सीग़ए नही वारिद और नही हक़ीक़तन मुफ़ीदे तह़रीम।[1] (या'नी वुज़ू में इसराफ़ से मन्अ़ किया गया है और हक़ीक़त में मुमानअ़त का हुक्म हराम होने का फ़ाएदा देता है।)

(4) सुन्नतें व आदाब ﴾घर में आने जाने की सुन्नतें व आदाब﴿

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें हर रोज़ अपने या किसी अ़ज़ीज़ या दोस्त व अह़बाब के घर में जाने की हाजत पड़ती रहती है तो हमें येह मा'लूम होना चाहिये कि घर में दाख़िल होने का सुन्नत तरीक़ा क्या है ? किसी के घर में जाएं तो दरवाज़े के सामने खड़े हों या एक तरफ़ हट कर ? और किस तरह इजाज़त तलब करें ? अगर इजाज़त न मिले तो क्या करना चाहिये ? दुआ़ पढ़ कर घर से निकलने की क्या क्या बरकतें हैं ? अगर घर में कोई मौजूद न हो तो क्या पढ़ना चाहिये ? घर में दाख़िल होने और इजाज़त वग़ैरा तलब करने के ह़वाले से मुतअ़द्दद सुन्नतें और आदाब हैं, आइये ! मुलाहज़ा फ़रमाइये :

﴾1﴿ ☞ अपने घर में आते हुए भी सलाम करें और जाते हुए भी सलाम करें। हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि जब तुम घर में आओ तो घर वालों को सलाम करो और जाओ तो सलाम कर के जाओ।[2]

﴾2﴿ ☞ **अल्लाह** पाक का नाम लिये बिग़ैर जो घर में दाख़िल होता है, शैतान भी उस के साथ घर में दाख़िल हो जाता है। जैसा कि हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि आक़ाए दो जहां

1... फ़तावा रज़विय्या, 1/984

2... شعب الایمان، باب فی مقاربۃ و مودۃ اھل الدین، 6/447، حدیث: 8845

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब आदमी घर में दाख़िल होते वक़्त और खाना खाते वक़्त **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करता है तो शैतान कहता है : आज यहां न तुम्हारी रात गुज़र सकती है और न तुम्हें खाना मिल सकता है। और जब इन्सान घर में बिग़ैर **अल्लाह** पाक का ज़िक्र किये दाख़िल होता है तो शैतान कहता है : आज की रात यहीं गुज़रेगी। और जब खाने के वक़्त **अल्लाह** पाक का नाम नहीं लेता तो वोह कहता है : तुम्हें ठिकाना भी मिल गया और खाना भी मिल गया।[1]

﴾3﴿☞ जब कोई ख़ुश नसीब अपने घर से बाहर जाते वक़्त बाहर जाने की दुआ पढ़ लेता है तो वोह घर लौटने तक हर बला व आफ़त से महफ़ूज़ हो जाता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल करने में बरकत ही बरकत है। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है, ह़ुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी अपने घर के दरवाज़े से बाहर निकलता है तो उस के साथ दो फ़रिश्ते मुक़र्रर होते हैं। जब वोह आदमी कहता है कि "**بِسْمِ اللّٰهِ**" तो वोह फ़रिश्ते कहते हैं : तू ने सीधी राह इख़्तियार की। और जब इन्सान कहता है : "**لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ**" तो फ़रिश्ते कहते हैं : अब तू हर आफ़त से महफ़ूज़ है। जब बन्दा कहता है : "**تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ**" तो फ़रिश्ते कहते हैं : अब तुझे किसी और की मदद की ह़ाजत नहीं। इस के बा'द उस शख़्स के दो शैतान जो उस पर मुसल्लत़ होते हैं वोह उस से मिलते हैं तो फ़रिश्ते कहते हैं : अब तुम इस के साथ क्या करना चाहते हो ? इस ने तो सीधा रास्ता इख़्तियार किया, तमाम आफ़ात से महफ़ूज़ हो गया और ख़ुदा की इमदाद के इ़लावा दूसरे की इमदाद से बे नियाज़ हो गया।[2]

(5) इस्लाहे आ'माल ﴾मर्द व औ़रत का एक दूसरे की मुशाबहत करना﴿

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मर्दों का औ़रतों के साथ इसी त़रह़ औ़रतों का मर्दों के साथ मख़्सूस उमूर मसलन लिबास या जूते पहने इसी त़रह़ सर के बालों और दीगर चीज़ों में एक दूसरे की मुशाबहत इख़्तियार करना गुनाह और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

1 ...مسلم، کتاب الاشربة، باب آداب الطعام و الشراب و احکامها، ص803، حدیث:2018

2 ...ابن ماجه، کتاب الدعاء، باب مایدعو به الرجل اذا خرج من بیته، ص624، حدیث:3886

मर्दाना औरतें जन्नत में दाखिल न होंगी

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : तीन शख़्स कभी जन्नत में दाखिल न होंगे[1] (1) दय्यूस (2) मर्दानी औरतें और (3) शराब का आदी। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की : शराब के आदी को तो हम ने जान लिया, दय्यूस कौन है ? तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : वोह शख़्स जो इस बात की परवाह नहीं करता कि उस के घर वालों के पास कौन कौन आता है। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की : मर्दानी औरतें कौन हैं ? तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो मर्दों की मुशाबहत इख़्तियार करती हैं।[2]

ला'नत के मुस्तहिक़

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا इर्शाद फ़रमाते हैं कि सरवरे काएनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने औरतों की मुशाबहत इख़्तियार करने वाले मर्दों और मर्दों की मुशाबहत इख़्तियार करने वाली औरतों पर ला'नत फ़रमाई है।[3] एक औरत गले में कमान लटकाए सय्यिदे दो आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब से गुज़री तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक मर्दों की मुशाबहत करने वाली औरतों और औरतों की मुशाबहत करने वाले मर्दों पर ला'नत फ़रमाता है।[4] एक रिवायत में है कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने औरत का लिबास पहनने वाले मर्द और मर्द का लिबास पहनने वाली औरत पर ला'नत फ़रमाई।[5]

ज़नानी वज़्अ़ वाले को जला वतन कर दिया

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : एक मरतबा आक़ाए दो जहां, सय्याहे ला मकां

1... हज़रते अल्लामा अब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस हदीस में उस शख़्स के बारे में कलाम है जो इन चीज़ों को हलाल जानते हुए करे, तो ऐसा शख़्स कभी जन्नत में दाखिल न होगा। (فیض القدیر، 430/3، تحت الحدیث: 3530)

2 ... مجمع الزوائد، کتاب النکاح، باب فیمن یرضی لاھلہ بالخبث، 427/4، حدیث: 7722

3 ... بخاری، کتاب اللباس، باب المتشبھین بالنساء والمتشبھات بالرجال، ص1479، حدیث: 5885

4 ... معجم اوسط، 102/3، حدیث: 4003

5 ... ابو داود، کتاب اللباس، باب فی لباس النساء، ص633، حدیث: 4098

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में एक मुख़न्नस (या'नी हीजड़े) को लाया गया जिस ने अपने हाथ पाउं मेहंदी से रंगे हुए थे, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : इस का क्या मुआमला है ? सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : येह औ़रतों की मुशाबहत इख़्तियार करता है । चुनान्चे आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे नक़ीअ़ (मदीने से दूर एक मक़ाम) की त़रफ़ जला वत़न करने का हुक्म इर्शाद फ़रमाया ।[1]

मर्दों का बाल बढ़ाना कैसा ?

औ़रतों की त़रह़ मर्दों के लम्बे लम्बे बाल रखने के मुतअ़ल्लिक़ आ'ला ह़ज़रत मौलाना इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के कलाम का ख़ुलासा है कि सीने तक बाल रखना शर्अ़न मर्द को ह़राम, औ़रतों से मुशाबहत और बहुत सी सह़ीह़ अह़ादीस के मुत़ाबिक़ مَعَاذَ الله बाइसे ला'नत है ।[2] मर्द को कन्धों से नीचे ढल्के हुए औ़रतों जैसे बाल रखना ह़राम है बल्कि इसे ज़नानी वज़्अ़ की कोई बात भी इख़्तियार करना ह़राम है । **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस पर ला'नत फ़रमाई है ।[3]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 6

मौज़ूआत

1	मदनी क़ाइदा : ह़रकात का बयान	2	तफ़्सीरे कुरआन : दूसरों के घरों में दाख़िले के अह़काम
3	नमाज़ के अह़काम : वुज़ू का त़रीक़ा व माए मुस्ता'मल	4	सुन्नतें व आदाब : घर में आने जाने की सुन्नतें व आदाब
5	इस्लाहे़ आ'माल : एह़सान जतलाने की मज़म्मत		

1 ...ابو داود، کتاب الادب، باب فی حکم المخنثین، ص772، حدیث: 4928

2... फ़तावा रज़विय्या, 6/610

3... फ़तावा रज़विय्या, 21/600 मुलख़्ख़सन

(1) मदनी क़ाइदा ﴾ह़रकात का बयान﴿

हिदायात

- ज़बर, ज़ेर और पेश को ह़रकात कहते हैं। ह़रकात को बिग़ैर खींचे बिग़ैर झटका दिये मा'रूफ़ पढ़ें।
- मिलती जुलती आवाज़ वाले ह़ुरूफ़ में वाज़ेह़ फ़र्क़ करें।
- अलिफ़ पर कोई ह़रकत (اَ اِ اُ) या जज़्म (اْ) आ जाए तो उसे हम्ज़ा पढ़ें।
- "ر" पर ज़बर (رَ) या पेश (رُ) हो तो इस को पुर (या'नी मोटा) और रा के नीचे ज़ेर (رِ) हो तो इस को बारीक पढ़ें।

طُ	طِ	طَ	تُ	تِ	تَ
ذُ	ذِ	ذَ	زُ	زِ	زَ
ضُ	ضِ	ضَ	ظُ	ظِ	ظَ
سُ	سِ	سَ	ثُ	ثِ	ثَ
کُ	کِ	کَ	صُ	صِ	صَ
ھُ	ھِ	ھَ	قُ	قِ	قَ
ءُ	ءِ	ءَ	حُ	حِ	حَ
دُ	دِ	دَ	عُ	عِ	عَ
غُ	غِ	غَ	خُ	خِ	خَ

ह़रकात में की जाने वाली ग़लत़ियों की मिसाल

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ﴿٨﴾

(پ30، التکاثر:8)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से ने'मतों के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा।

ऊपर दी गई आयते मुबारका में लफ़्ज़ "لَتُسْـَٔلُنَّ" आया है। इस लफ़्ज़ के आग़ाज़ में ह़र्फ़ "لَ" के ऊपर ज़बर की ह़रकत है, और ह़रकात को पढ़ने का क़ाइदा येह है कि इन्हें बिग़ैर खींचे, बिग़ैर झटका दिये मा'रूफ़ पढ़ते हैं, लेकिन अगर कोई ह़र्फ़ "لَ" की ह़रकत को खींच कर लम्बा कर दे और इस को "لَ" की बजाए "لَا" पढ़ दे तो मा'ना में मुन्दरिजए ज़ैल फ़र्क़ वाक़ेअ़ होगा :

त़रीक़ए अदाएगी	ह़र्फ़	लफ़्ज़	मा'ना
बिग़ैर खींचे (या'नी बिग़ैर लम्बा किये)	لَ	لَتُسْـَٔلُنَّ	ज़रूर पूछा जाएगा।
खींच कर (या'नी लम्बा कर के)	لَا	لَاتُسْـَٔلُنَّ	ज़रूर नहीं पूछा जाएगा।

(2) तफ़्सीरे क़ुरआन «दूसरों के घरों में दाख़िले के अह़काम»

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا عَلٰۤى اَهْلِهَا ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾

(پ18، النور:27)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! अपने घरों के सिवा और घरों में दाख़िल न हो जब तक इजाज़त न ले लो और उन में रहने वालों पर सलाम न कर लो। येह तुम्हारे लिये बेहतर है ताकि तुम नसीह़त मान लो।

इस आयते मुबारका में दूसरों के घरों में दाख़िले से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अह़काम बयान किये गए हैं, चुनान्चे तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 6 सफ़्ह़ा 612 पर है :

(1) ☞ इस आयत से साबित हुवा कि ग़ैर के घर में कोई बे इजाज़त दाख़िल न हो। इजाज़त लेने का त़रीक़ा येह भी है कि बुलन्द आवाज़ से سُبْحٰنَ الله या اَلْحَمْدُ لِله या اَكْبَرُ कहे, या खन्कारे जिस से मकान वालों को मा'लूम हो जाए कि कोई आना चाहता है (और येह सब काम इजाज़त लेने के तौ़र पर हों) या येह कहे कि क्या मुझे अन्दर आने की इजाज़त है ? ग़ैर के घर से वोह घर मुराद है

जिस में गै़र रहता हो ख़्वाह वोह उस का मालिक हो या न हो ।[1]

(2) ☞ गै़र के घर जाने वाले की अगर साहिबे मकान से पहले ही मुलाक़ात हो जाए तो पहले सलाम करे फिर इजाज़त चाहे और अगर वोह मकान के अन्दर हो तो सलाम के साथ इजाज़त ले और इस त़रह़ कहे : اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ, क्या मुझे अन्दर आने की इजाज़त है ? ह़दीस शरीफ़ में है कि सलाम को कलाम पर मुक़द्दम करो ।[2]

(3) ☞ अगर दरवाज़े के सामने खड़े होने में बे पर्दगी का अन्देशा हो तो दाईं या बाईं जानिब खड़े हो कर इजाज़त त़लब करे । ह़दीस शरीफ़ में है : अगर घर में मां हो जब भी इजाज़त त़लब करे ।[3]

(3) नमाज़ के अह़काम ﴾वुज़ू का त़रीक़ा और माए मुस्ता'मल﴿

वुज़ू का त़रीक़ा (ह़नफ़ी)

का'बतुल्लाह शरीफ़ की त़रफ़ मुंह कर के ऊंची जगह बैठना मुस्तह़ब है । वुज़ू के लिये निय्यत करना सुन्नत है, निय्यत न हो तब भी वुज़ू हो जाएगा मगर सवाब नहीं मिलेगा । दिल में निय्यत होते हुए ज़बान से भी कह लेना अफ़्ज़ल है लिहाज़ा ज़बान से इस त़रह़ निय्यत कीजिये कि मैं हुक्मे इलाही बजा लाने और पाकी ह़ासिल करने के लिये वुज़ू कर रहा हूं । बिस्मिल्लाह कह लीजिये कि येह भी सुन्नत है । बल्कि بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰه कह लीजिये कि जब तक बा वुज़ू रहेंगे फ़िरिश्ते नेकियां लिखते रहेंगे ।[4] अब दोनों हाथ तीन तीन बार पहुंचों तक धोइये, (नल बन्द कर के) दोनों हाथों की उंग्लियों का ख़िलाल भी कीजिये । कम अज़ कम तीन तीन बार दाएं बाएं ऊपर नीचे के दांतों में मिस्वाक कीजिये और हर बार मिस्वाक को धो लीजिये । अब सीधे हाथ के तीन चुल्लू पानी से (हर बार नल बन्द कर के) इस त़रह़ तीन कुल्लियां कीजिये कि हर बार मुंह के हर पुरज़े पर (ह़ल्क़ के कनारे तक) पानी बह जाए, अगर रोज़ा न हो तो ग़रग़रा भी कर लीजिये । फिर सीधे ही हाथ के तीन चुल्लू से (हर बार नल बन्द कर के) तीन बार नाक में नर्म गोश्त तक पानी चढ़ाइये और

1 ... تفسیر روح البیان، پ18، النور، تحت الآیۃ:27، 148/6 ملخصًا

2 ... ترمذی، کتاب الاستئذان و الآداب، باب ماجاء فی السلام، ص635، حدیث:2699

3 ... موطا امام مالک، کتاب الاستئذان، باب الاستئذان، ص508، حدیث:1847 مختصرًا

4 ... معجم صغیر، 167/1، حدیث:196

अगर रोज़ा न हो तो नाक की जड़ तक पानी पहुंचाइये, अब (नल बन्द कर के) उलटे हाथ से नाक साफ़ कर लीजिये और छोटी उंगली नाक के सूराख़ों में डालिये। तीन बार सारा चेहरा इस त़रह़ धोइये कि जहां से आ़दतन सर के बाल उगना शुरूअ़ होते हैं वहां से ले कर ठोड़ी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक हर जगह पानी बह जाए। अगर दाढ़ी है और एह़राम बांधे हुए नहीं हैं तो (नल बन्द करने के बा'द) इस त़रह़ ख़िलाल कीजिये कि उंग्लियों को गले की त़रफ़ से दाख़िल कर के सामने की त़रफ़ निकालिये। फिर पहले सीधा हाथ उंग्लियों के सिरे से धोना शुरूअ़ कर के कोहनियों समेत तीन बार धोइये। इसी त़रह़ फिर उलटा हाथ धो लीजिये। दोनों हाथ आधे बाज़ू तक धोना मुस्तह़ब है। अक्सर लोग चुल्लू में पानी ले कर पहुंचे से तीन बार छोड़ देते हैं कि कोहनी तक बहता चला जाता है इस त़रह़ करने से कोहनी और कलाई की करवटों पर पानी न पहुंचने का अन्देशा है लिहाज़ा बयान कर्दा त़रीक़े पर हाथ धोइये। अब चुल्लू भर कर कोहनी तक पानी बहाने की ह़ाजत नहीं बल्कि येह पानी का इसराफ़ है। अब (नल बन्द कर के) सर का मस्ह़ इस त़रह़ कीजिये कि दोनों अंगूठों और कलिमे की उंग्लियों को छोड़ कर दोनों हाथ की तीन तीन उंग्लियों के सिरे एक दूसरे से मिला लीजिये और पेशानी के बाल या खाल पर रख कर खींचते हुए गुद्दी (गरदन का पिछला ह़िस्सा) तक इस त़रह़ ले जाइये कि हथेलियां सर से जुदा रहें, फिर गुद्दी (या'नी गरदन के पिछले ह़िस्से) से हथेलियां खींचते हुए पेशानी तक ले आइये, कलिमे की उंग्लियां और अंगूठे इस दौरान सर पर बिल्कुल मस नहीं होने चाहिएं, फिर कलिमे की उंग्लियों से कानों की अन्दरूनी सत़ह़ का और अंगूठों से कानों की बाहरी सत़ह़ का मस्ह़ कीजिये और छुंगल्यां (या'नी छोटी उंग्लियां) कानों के सूराख़ों में दाख़िल कीजिये और उंग्लियों की पुश्त से गरदन के पिछले ह़िस्से का मस्ह़ कीजिये। बा'ज़ लोग गले का और धुले हुए हाथों की कोहनियों और कलाइयों का मस्ह़ करते हैं येह सुन्नत नहीं है। सर का मस्ह़ करने से क़ब्ल टोंटी अच्छी त़रह़ बन्द करने की आ़दत बना लीजिये, बिला वज्ह नल खुला छोड़ देना या अधूरा बन्द करना कि पानी टपक कर ज़ाएअ़ होता रहे इसराफ़ व गुनाह है। पहले सीधा फिर उलटा पाउं हर बार उंग्लियों से शुरूअ़ कर के टख़्नों के ऊपर तक बल्कि मुस्तह़ब है कि आधी पिंडली तक तीन तीन बार धो

लीजिये। दोनों पाउं की उंग्लियों का ख़िलाल करना सुन्नत है। (ख़िलाल के दौरान नल बन्द रखिये) इस का मुस्तह़ब त़रीक़ा येह है कि उलटे हाथ की छुंगल्या (छोटी उंगली) से सीधे पाउं की छुंगल्या का ख़िलाल शुरूअ़ कर के अंगूठे पर ख़त्म कीजिये और उलटे ही हाथ की छुंगल्या से उलटे पाउं के अंगूठे से शुरूअ़ कर के छुंगल्या पर ख़त्म कर लीजिये।[1]

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हर उ़ज़्व धोते वक़्त येह उम्मीद करता रहे कि मेरे इस उ़ज़्व के गुनाह निकल रहे हैं।[2]

मुस्ता'मल पानी किसे कहते हैं ?

वोह क़लील पानी जिस से ह़दस (नापाकी को) दूर किया गया हो या ब निय्यते तक़र्रुब या'नी सवाब की निय्यत से मसलन पहले से वुज़ू है लेकिन दोबारा वुज़ू करने में इस्ति'माल किया गया हो, और बदन से जुदा हो गया हो अगर्चे कहीं ठहरा नहीं बह ही रहा हो माए मुस्ता'मल या'नी इस्ति'माल शुदा पानी कहलाता है।[3]

मुस्ता'मल पानी का अहम मस्अला

अगर बे वुज़ू शख़्स का हाथ या उंगली का पोरा या नाख़ुन या बदन का कोई टुकड़ा जो वुज़ू में धोया जाता हो जान बूझ कर या भूल कर दह दर दह (10x10) से कम पानी (मसलन पानी से भरी हुई बाल्टी या लोटे वग़ैरा) में पड़ जाए तो पानी मुस्ता'मल (या'नी इस्ति'माल शुदा) हो गया और अब वुज़ू और ग़ुस्ल के लाइक़ न रहा। इसी त़रह़ जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो उस के जिस्म का कोई बे धुला हुवा ह़िस्सा पानी से छू जाए तो वोह पानी वुज़ू और ग़ुस्ल के काम का न रहा। हां अगर धुला हाथ या धुले हुए बदन का कोई ह़िस्सा पड़ जाए तो ह़रज नहीं।[4]

(4) सुन्नतें व आदाब ﴾घर में आने जाने की सुन्नतें व आदाब﴿

(1) ☞ जब किसी के घर जाना हो तो इस का त़रीक़ा येह है कि पहले अन्दर आने की इजाज़त ह़ासिल कीजिये फिर जब अन्दर जाएं तो पहले सलाम करें फिर बातचीत शुरूअ़

1... नमाज़ के अह़काम, स. 8
2... احیاء العلوم، کتاب اسرار الطہارۃ، باب آداب قضاء الحاجۃ، 1/189 ملخصًا
3... नुज़्हतुल क़ारी, 1/554 मुफ़स्सलन
4... बहारे शरीअ़त, 1/333, ह़िस्सा : 2

कीजिये ।[1] हज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन मरतबा इजाज़त त़लब करो, अगर इजाज़त मिल जाए तो ठीक वरना वापस लौट जाओ ।[2]

(2) ☞ जो सलाम किये बिग़ैर घर में दाख़िले की इजाज़त मांगे उसे दाख़िले की इजाज़त न दी जाए । हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स सलाम के साथ इब्तिदा न करे उस को इजाज़त न दो ।[3]

(3) ☞ जब किसी के घर जाना हो तो इजाज़त मांग कर जाइये कि येह सुन्नत से साबित है । बेहतर येह है कि इस त़रह़ इजाज़त मांगें : "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم क्या मैं अन्दर आ सकता हूं ?"[4] हज़रते रिबई बिन हिराश رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : हमें बनू आ़मिर के एक शख़्स ने येह बात बताई कि उस ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से उस वक़्त इजाज़त त़लब की जब आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم घर में तशरीफ़ फ़रमा थे । उस ने अ़र्ज़ किया : क्या मैं दाख़िल हो जाऊं ? हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने ख़ादिम से फ़रमाया : बाहर उस आदमी के पास जाओ और उस को इजाज़त त़लब करने का त़रीक़ा सिखाओ, उस से कहो कि इस त़रह़ कहे : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم क्या मैं दाख़िल हो सकता हूं ? उस आदमी ने सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुबारक सुन लिया और अ़र्ज़ किया : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم क्या मैं दाख़िल हो सकता हूं ? तब आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस को इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई और वोह अन्दर दाख़िल हो गया ।[5]

(5) इस्लाहे आ'माल «एह़सान जतलाने की मज़म्मत»

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! एह़सान जताना बहुत बुरा अ़मल है जो किसी मुसल्मान को ज़ेब नहीं देता । हमारे मुआ़शरे में अव्वल तो कोई किसी की मदद करने को तय्यार नहीं होता और अगर मदद कर भी दे तो उ़मूमन किसी न किसी मौक़अ़ पर एह़सान जता कर अपना सवाब ज़ाएअ़ कर बैठता है । चुनान्चे क़ुरआने पाक में इर्शाद होता है :

1... बहारे शरीअ़त, 3/452, हिस्सा : 16

2 ... مسلم، كتاب الآداب، باب استئذان، ص853، حديث: 2153

3 ... شعب الايمان، باب فى مقاربة و مودة اهل الدين، 441/6، حديث: 8816

4... मिरआतुल मनाजीह, 6/346 मुलख़्ख़सन

5 ... ابو داود، كتاب الادب، باب كيف الاستئذان، ص807، حديث: 5177

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ (پ3، البقرۃ:264) **तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** ऐ ईमान वालो ! एह़सान जता कर और तक्लीफ़ पहुंचा कर अपने सदक़े बरबाद न कर दो।

इस आयत के तह़्त तफ़्सीरे सिरातुल जिनान में है कि इर्शाद फ़रमाया गया कि ऐ ईमान वालो ! जिस पर ख़र्च करो उस पर एह़सान जतला कर और उसे तक्लीफ़ पहुंचा कर अपने सदक़े का सवाब बरबाद न कर दो क्यूं कि जिस त़रह़ मुनाफ़िक़ आदमी लोगों को दिखाने के लिये और अपनी वाह वाह करवाने के लिये माल ख़र्च करता है लेकिन उस का सवाब बरबाद हो जाता है इसी त़रह़ फ़क़ीर पर एह़सान जतलाने वाले और उसे तक्लीफ़ देने वाले का सवाब भी ज़ाएअ़ हो जाता है। इस की मिसाल यूं समझो कि जैसे एक चिक्ना पथ्थर हो जिस पर मिट्टी पड़ी हुई हो, अगर उस पर ज़ोरदार बारिश हो जाए तो पथ्थर बिल्कुल साफ़ हो जाता है और उस पर मिट्टी का नामो निशान भी बाक़ी नहीं रहता।[1]

जन्नत से मह़रूमी का सबब

ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : एह़सान जताने वाला, वालिदैन का ना फ़रमान और शराब का आ़दी जन्नत में नहीं जाएंगे।[2]

नुक़्सान उठाने वाले अफ़राद

ह़ज़रते अबू ज़र رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तीन शख़्स वोह हैं जिन से **अल्लाह** पाक क़ियामत के दिन न तो कलाम करेगा न नज़रे रह़मत फ़रमाएगा और न उन्हें गुनाहों से पाक करेगा बल्कि उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। ह़ज़रते अबू ज़र رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه ने अ़र्ज़ की : येह लोग तो टोटे और ख़सारे ही में पड़ गए, ऐ **अल्लाह** पाक के रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह कौन लोग हैं ? फ़रमाया : तहबन्द लटकाने वाला, एह़सान जताने वाला और झूटी क़सम से माल बेचने वाला।[3]

1... तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह : 3, अल बक़रह, तह़तल आयह : 264, 1/457

2... نسائی، کتاب الاشربۃ، الروایۃ فی المدمنین فی الخمر، ص895، حدیث:5683

3... مسلم، کتاب الایمان، باب بیان غلظ تحریم اسبال الازار والمن بالعطیۃ وتنفیق...الخ، ص58، حدیث:171

हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : कलाम से मुराद मह़ब्बत का कलाम है, देखने से मुराद करम का देखना है और पाक फ़रमाने से मुराद गुनाह बख़्शना है या'नी दूसरे मुसल्मानों पर येह तीनों करम होंगे मगर इन तीन क़िस्म के लोग इन तीनों इ़नायतों से मह़रूम रहेंगे लिहाज़ा इन से बचते रहो ।[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 7

मौज़ूआ़त

1	मदनी क़ाइ़दा : तन्वीन का बयान	2	तफ़्सीरे क़ुरआन : **अल्लाह** पाक की तस्बीह़ो तह़मीद करने का बयान
3	नमाज़ के अह़काम : वुज़ू तोड़ने वाली चीज़ें	4	सुन्नतें व आदाब : सुरमा लगाने की सुन्नतें व आदाब
5	इस्लाहे़ आ'माल : मुसल्मानों को अज़िय्यत देने की मज़म्मत		

(1) मदनी क़ाइ़दा ﴾तन्वीन का बयान﴿

हिदायात

- दो ज़बर ً, दो ज़ेर ٍ और दो पेश ٌ को तन्वीन कहते हैं। जिस ह़र्फ़ पर तन्वीन हो उसे मुनव्वन कहते हैं।
- तन्वीन नून साकिन होता है जो कलिमे के आख़िर में आता है इस लिये तन्वीन की आवाज़ नून साकिन की त़रह़ होती है।
- तन्वीन को इस त़रह़ पढ़ेंगे :

مًا : मीम दो ज़बर مَنْ, مٍ = मीम दो ज़ेर مِنْ, مٌ = मीम दो पेश مُنْ = مًا, مٍ, مٌ

- ज़बर की तन्वीन के बा'द कहीं "ا" और कहीं "ى" लिखा जाता है। हिज्जे करते वक़्त इस का नाम न लें।

[1]... मिरआतुल मनाजीह़, 4/244

طٌ	طٍ	طًا	ةٌ	تٍ	تًا
ذٌ	ذٍ	ذًا	زٌ	زٍ	زًا
ضٌ	ضٍ	ضًا	ظٌ	ظٍ	ظًا
سٌ	سٍ	سًا	ثٌ	ثٍ	ثًا
كٌ	كٍ	كًا	صٌ	صٍ	صًا
هٌ	هٍ	هًا	قٌ	قٍ	قًا
ءٌ	ءٍ	ءً	حٌ	حٍ	حًا
دٌ	دٍ	دًى	عٌ	عٍ	عًا
غٌ	غٍ	غً	خٌ	خٍ	خًا
ىٌ	يٍ	ىً	وٌ	وٍ	وًا

(2) तफ़्सीरे कुरआन ﴾अल्लाह पाक की तस्बीह़ो तह़मीद करने का बयान﴿

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَ حِيْنَ
تُصْبِحُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَ لَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ وَ عَشِيًّا وَّ حِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿۱۸﴾

(پ21،الروم:17-18)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो **अल्लाह** की पाकी बयान करो जब शाम करो और जब सुब्ह़ करो । और उसी के लिये ता'रीफ़ है आस्मानों और ज़मीन में और उस वक़्त जब दिन का कुछ ह़िस्सा बाक़ी हो और जब तुम दोपहर करो ।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 7 सफ़्हा 424 पर है : या'नी ऐ अ़क़्ल मन्दो ! जब तुम ने नेक आ'माल करने वाले मोमिनों को मिलने वाला सवाब और ने'मतें यूंही झुटलाने वाले कुफ़्फ़ार को होने वाले अ़ज़ाब के बारे में जान लिया तो तुम सुब्ह़ शाम हर उस चीज़ से **अल्लाह** पाक की पाकी बयान करो जो उस की शान के लाइक़ नहीं । यहां **अल्लाह** पाक की पाकी बयान करने से मुतअ़ल्लिक़ मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह भी है कि इस से मुराद नमाज़ अदा करना है । ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से दरयाफ़्त किया गया कि क्या पांच नमाज़ों का बयान कुरआने पाक में है ? आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : हां । और येह आयतें तिलावत फ़रमाईं और फ़रमाया कि इन में पांचों नमाज़ें और उन के अवक़ात मज़्कूर हैं ।[1]

दूसरे क़ौल के मुत़ाबिक़ इस आयत में तीन नमाज़ों का बयान हुवा, शाम में मग़रिब और इ़शा की नमाज़ें आ गईं जब कि सुब्ह़ में नमाज़े फ़ज्र आ गई ।[2]

अल्लाह की ह़म्दो सना और तस्बीह़ बयान करने के फ़ज़ाइल

अह़ादीस में **अल्लाह** पाक की ह़म्दो सना और तस्बीह़ बयान करने की बहुत सी फ़ज़ीलतें वारिद हैं, यहां उन में से दो फ़ज़ाइल मुलाह़ज़ा हों :

(1) ☞ ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''दो कलिमे ऐसे हैं जो ज़बान पर हलके हैं, मीज़ाने अ़मल में भारी हैं और **अल्लाह** पाक को बहुत पसन्द हैं । (वोह दो कलिमे येह हैं :) ''سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ، سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ'' ।[3]

(2) ☞ ह़ज़रते अबू सईद खुदरी और ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** पाक ने कलाम में से चार चीज़ों को पसन्द फ़रमा लिया है : (1) سُبْحٰنَ اللّٰه, (2) اَلْحَمْدُ لِلّٰه, (3) لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه, (4) اَللّٰهُ اَكْبَر । जिस ने ''سُبْحٰنَ اللّٰه'' कहा तो

1 ...تفسیر روح البیان، پ21، الروم، تحت الآیۃ:17، 18/7
2 ...تفسیر خازن، پ21، الروم، تحت الآیۃ:18، 388/3
3 ...بخاری، کتاب الایمان والنذور، باب اذا قال: واللہ لا اتکلم الیوم فصلی...۱ ، ص1632، حدیث:6682

अल्लाह पाक उस के लिये 20 नेकियां लिख देता है और उस के 20 गुनाह मिटा देता है । जिस ने "اَلْحَمْدُ لِلّٰه" कहा तो उस के लिये भी इसी की मिस्ल है। जिस ने "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" कहा तो उस के लिये भी इसी की मिस्ल है और जिस ने अपनी त़रफ़ से "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن" कहा तो उस के लिये 30 नेकियां लिखी जाएंगी और उस के 30 गुनाह मिटा दिये जाएंगे ।"[1]

नमाज़ के लिये येह पांच अवक़ात मुक़र्रर फ़रमाए जाने की ह़िक्मत

याद रहे कि नमाज़ के लिये येह पांच अवक़ात इस लिये मुक़र्रर फ़रमाए गए कि अफ़्ज़ल आ'माल वोह हैं जो हमेशा हों और इन्सान येह क़ुदरत नहीं रखता कि अपने तमाम अवक़ात नमाज़ में सर्फ़ करे क्यूं कि इस के साथ खाने पीने वग़ैरा के ह़वाइज व ज़रूरिय्यात हैं तो **अल्लाह** पाक ने बन्दों पर इबादत में तख़्फ़ीफ़ (या'नी कमी) फ़रमाई और दिन के शुरूअ़, दरमियान और आख़िर में जब कि रात के शुरूअ़ और आख़िर में नमाज़ें मुक़र्रर कीं ताकि इन अवक़ात के अन्दर नमाज़ में मश्ग़ूल रहना दाइमी (या'नी हमेशा) इबादत के हुक्म में हो ।[2]

(3) नमाज़ के अह़काम ﴾वुज़ू तोड़ने वाली चीज़ें﴿

﴾1﴿ ☞ ख़ून, पीप या ज़र्द पानी कहीं से निकल कर बहा और उस के बहने में ऐसी जगह पहुंचने की सलाह़िय्यत थी जिस जगह का वुज़ू या ग़ुस्ल में धोना फ़र्ज़ है तो वुज़ू जाता रहा ।[3]

﴾2﴿ ☞ ख़ून या रत़ूबत अगर ज़ाहिर हुवा और बहा नहीं जैसे सूई की नोक या चाक़ू का कनारा लग जाता है और ख़ून उभर या चमक जाता है या ख़िलाल किया या मिस्वाक की या उंगली से दांत साफ़ किये या दांत से कोई चीज़ मसलन सेब वग़ैरा काटा उस पर ख़ून का असर ज़ाहिर हुवा या नाक में उंगली डाली उस पर ख़ून की सुर्ख़ी आ गई मगर वोह ख़ून बहने के क़ाबिल न था वुज़ू नहीं टूटा ।[4]

1 ...مسند امام احمد، مسند ابی ھریرۃ،4/228،حدیث:8233

2 ...تفسیر خازن، پ21، الروم، تحت الآیۃ:18، 3/389

3... बहारे शरीअ़त, 1/304, ह़िस्सा : 2

4... बहारे शरीअ़त, 1/304, ह़िस्सा : 2 मुलख़्ख़सन

﴾3﴿☞ ज़ख़्म का ख़ून बार बार साफ़ करते रहे कि बहने की नौबत न आई तो ग़ौर कर लीजिये कि अगर इतना ख़ून पोंछ लिया है कि अगर न पोंछते तो बह जाता तो वुज़ू टूट गया, अगर न बहता तो वुज़ू नहीं टूटेगा ।[1]

﴾4﴿☞ गोश्त में इन्जेक्शन लगाने में सिर्फ़ इसी सूरत में वुज़ू टूटेगा जब कि बहने की मिक़्दार में ख़ून निकले । जब कि नस का इन्जेक्शन लगा कर पहले ख़ून ऊपर की त़रफ़ खींचते हैं जो कि बहने की मिक़्दार में होता है लिहाज़ा वुज़ू टूट जाता है । येह ही सूरत ड्रिप की है ।[2]

﴾5﴿☞ आंख की बीमारी के सबब जो आंसू बहा वोह नापाक है और वुज़ू भी तोड़ देगा ।[3] अफ़्सोस ! अक्सर लोग इस मस्अले से ना वाक़िफ़ होते हैं और दुखती आंख से बीमारी की वज्ह से बहने वाले आंसू को और आंसूओं की मानिन्द समझ कर आस्तीन या क़मीज़ के दामन वग़ैरा से पोंछ कर कपड़े नापाक कर डालते हैं ।[4]

﴾6﴿☞ छाला नोच डाला और उस में भरा पानी बह गया तो वुज़ू टूट गया वरना नहीं ।[5]

﴾7﴿☞ ख़ारिश या फुड़ियों में अगर बहने वाली रत़ूबत न हो सिर्फ़ चिपक हो और कपड़ा उस से बार बार छू कर चाहे कितना ही सन जाए (गीला हो जाए) पाक है ।[6]

﴾8﴿☞ मुंहभर क़ै (उलटी) खाने, पानी या सफ़रा (या'नी पीले रंग का कड़वा पानी) की वुज़ू तोड़ देती है । जो क़ै (उलटी) तकल्लुफ़ के बिग़ैर न रोकी जा सके उसे मुंहभर कहते हैं ।[7] मुंहभर क़ै पेशाब की त़रह़ नापाक होती है इस के छींटों से अपने कपड़े और बदन को बचाना ज़रूरी है ।[8]

1 ... فتاوی ھندیہ، کتاب الطھارۃ، الباب الاول فی الوضوء، الفصل الخامس، 12/1 بتغیر قلیل

2... वुज़ू का त़रीक़ा, स. 26

3 ... فتاوی ھندیہ، کتاب الطھارۃ، الباب الاول فی الوضوء، الفصل الخامس، 13/1

4... वुज़ू का त़रीक़ा, स. 23

5 ... فتاوی ھندیہ، کتاب الطھارۃ، الباب الاول فی الوضوء، الفصل الخامس، 13/1

6... फ़तावा रज़विय्या, 1/370 मुलख़्ख़सन

7 ... فتاوی ھندیہ، کتاب الطھارۃ، الباب الاول فی الوضوء، الفصل الخامس، 14/1

8... वुज़ू का त़रीक़ा, स. 20,24 मुल्तक़तन

(4) सुन्नतें व आदाब «सुरमा लगाने की सुन्नतें व आदाब»

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सुरमा लगाना हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निहायत ही प्यारी और मीठी सुन्नत है। सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब सोने लगते तो अपनी मुबारक आंखों में सुरमा लगाया करते। लिहाज़ा हमें भी सोने से पहले इत्तिबाए सुन्नत की निय्यत से अपनी आंखों में सुरमा लगाना चाहिये। इस से हमें सुरमा लगाने की सुन्नत का भी सवाब होगा और साथ ही साथ इस के दुन्यवी फ़वाइद भी हासिल होंगे।

सोते वक़्त सुरमा डालना सुन्नत है

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुरमा सोते वक़्त इस्ति'माल फ़रमाते थे, चुनान्चे हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि ताजदारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सोने से पहले हर आंख में सुरमए इस्मिद की तीन सलाइयां लगाया करते थे।[1]

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हदीसे पाक से मा'लूम हुवा कि सुरमा सोते वक़्त इस्ति'माल करना सुन्नत है।[2] लिहाज़ा हम रात को जब भी सोया करें हमें सुरमा लगाना न भूलना चाहिये। सोते वक़्त सुरमा लगाने में येह मस्लहत है कि सुरमा ज़ियादा देर तक आंखों में रहता है और आंखों के मसामात में सरायत कर के आंखों को फ़ाएदा पहुंचाता है। इब्ने माजह की रिवायत में है : "तमाम सुरमों में बेहतर सुरमा इस्मिद" है कि येह निगाह को रोशन करता और पलकें उगाता है।[3]

सुरमा लगाने का तरीक़ा

हमारे प्यारे सरकार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दोनों मुक़द्दस आंखों में सुरमे की तीन तीन सलाइयां इस्ति'माल फ़रमाते थे और अक्सर इसी पर अमल था। ताहम बा'ज़ रिवायात में सीधी आंख मुबारक में तीन सलाइयां और बाईं में दो का भी ज़िक्र आया है और "शमाइले

1 ...ترمذی، کتاب اللباس، باب ماجاء فی الاکتحال، ص439، حدیث:1757

2... मिरआतुल मनाजीह, 6/180

3 ...ابن ماجہ، کتاب الطب، باب الکحل بالاثمد، ص566، حدیث:3497

रसूल'' में इसी त़रह़ बयान किया गया है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर आंख मुबारक में दो दो सलाइयां सुरमे की डालते और एक सलाई को दोनों मुबारक आंखों में लगाते।[1]

(5) इस्लाहे़ आ'माल ﴾मुसल्मानों को अज़िय्यत देने की मज़म्मत﴿

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बिला वज्हे शरई किसी को भी तक्लीफ़ पहुंचाने की इस्लाम में क़त़्अ़न इजाज़त नहीं है। अगर कोई ऐसा करता है तो यक़ीनन उस का येह अ़मल सरासर इस्लामी ता'लीमात के मुनाफ़ी है।

अल्लाह पाक इर्शाद फ़रमाता है :

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّ اِثْمًا مُّبِيْنًا (پ22، الاحزاب:58)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो ईमान वाले मर्दों और औरतों को बिग़ैर कुछ किये सताते हैं तो उन्हों ने बोहतान और खुले गुनाह का बोझ उठा लिया है।

अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : मुसल्मान मर्दों या औरतों को बे किये सताने से मुराद येह है कि उन के ह़क़ में वोह बातें करते या उन के साथ वोह काम करते हैं जिस से उन्हें रन्ज पहुंचता है ह़ालां कि कोई ऐसी वज्ह नहीं होती कि जिस पर उन्हें दुख या रन्ज पहुंचाया जाए। मज़ीद फ़रमाते हैं : येह आयते मुबारका आ़म है, इस में हर वोह ईज़ा या'नी तक्लीफ़ मुराद है जो किसी भी मोमिन मर्द व औरत को नाह़क़ दी जाए।[2]

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुसल्मान को बिग़ैर किसी शरई वज्ह के तक्लीफ़ देना क़त़्ई ह़राम है।[3]

अल्लाह पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : مَنْ اٰذٰى مُسْلِمًا فَقَدْ اٰذَانِیْ وَمَنْ اٰذَانِیْ فَقَدْ اٰذَى الله जिस ने (बिला वज्हे शरई) किसी मुसल्मान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** को ईज़ा दी।[4]

1 ...وسائل الوصول الی الشمائل الرسول، الباب الثانی فی صفة خلقة رسول الله، الفصل الثانی، ص31

2 ...تفسیر روح البیان، پ22، الاحزاب، تحت الآیة: 58، 239/7

3 ... फ़तावा रज़विय्या, 24/425

4 ...معجم اوسط، 387/2، حدیث: 3607

लोगों को तक्लीफ़ देने वाला मल्ऊन है

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर ताजदारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने मुसल्मान को तक्लीफ़ या धोका दिया वोह मल्ऊ़न है ।[1]

लोगों को तक्लीफ़ देने वाले का अ़ज़ाब

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि हम प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ चल रहे थे, हमारा गुज़र दो क़ब्रों के पास से हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रुक गए लिहाज़ा हम भी आप के साथ ठहर गए । आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का रंग मुबारक तब्दील होने लगा यहां तक कि आप की क़मीसे मुबारक की आस्तीन कपकपाने लगी । हम ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या माजरा है ? इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम भी वोह आवाज़ सुन रहे हो जो मैं सुन रहा हूं ? हम ने अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** के रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप क्या समाअ़त फ़रमा रहे हैं ? इर्शाद फ़रमाया : इन दोनों अफ़राद पर इन की क़ब्रों में इन्तिहाई सख़्त अ़ज़ाब हो रहा है वोह भी ऐसे गुनाह की वज्ह से जो ह़क़ीर है (या'नी इन दोनों के ख़याल में ह़क़ीर था या फिर येह कि इस से बचना इन के लिये आसान था) । हम ने अ़र्ज़ की : वोह कौन सा गुनाह है ? इर्शाद फ़रमाया : इन में से एक पेशाब से न बचता था और दूसरा अपनी ज़बान से लोगों को अज़िय्यत देता था और चुग़ली करता था । फिर आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खजूर की दो टह्नियां मंगवाईं और उन में से हर एक क़ब्र पर एक एक ठहनी रख दी । हम ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या येह चीज़ इन को कोई नफ़्अ़ देगी ? इर्शाद फ़रमाया : हां ! जब तक येह दोनों टह्नियां तर रहेंगी इन से अ़ज़ाब में कमी होती रहेगी ।[2]

1 ...ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی الخیانة والغش، ص385، حدیث:1940

2 ...ابن حبان، کتاب الرقائق، باب الاذکار، ص329، حدیث:824

ख़ारिश मुसल्लत़ कर दी जाएगी

मुसल्मानों को तक्लीफ़ देने वाले जहन्नम जैसे मक़ामे अ़ज़ाब में मज़ीद अ़ज़ाबात का सामना भी करेंगे चुनान्चे ह़ज़रते मुजाहिद رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जहन्नमियों पर एक क़िस्म की ख़ारिश मुसल्लत़ कर दी जाएगी, जिस की वज्ह से वोह अपने बदनों को खुजाएंगे यहां तक कि उन में से किसी की हड्डी ज़ाहिर हो जाएगी तो निदा की जाएगी : ऐ फ़ुलां ! क्या तुझे इस की वज्ह से तक्लीफ़ हो रही है ? वोह कहेगा : हां ! तो निदा देने वाला कहेगा : येह उस का बदला है जो तुम मुसल्मानों को तक्लीफ़ देते थे ।[1]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 8

मौज़ूआत

1	मदनी क़ाइदा : साबिक़ा अस्बाक़ की दोहराई	2	तफ़्सीरे क़ुरआन : ह़ालते नापाकी में नमाज़ के क़रीब न जाओ
3	नमाज़ के अह़काम : वुज़ू तोड़ने वाली चीज़ें	4	सुन्नतें व आदाब : तेल डालने व कंघा करने की सुन्नतें व आदाब
5	इस्लाहे़ आ'माल : लोगों के ऐब व ख़ुफ़्या बातें सुनने की मज़म्मत		

(1) मदनी क़ाइदा ﴾दोहराई अव्वल﴿

- मदनी क़ाइदे के अस्बाक़ : ह़ुरूफ़े ह़ल्क़ी, ह़ुरूफ़े मुफ़्रिदात मुकम्मल, मुरक्कबात, ह़रकात और तन्वीन की दोहराई की जाएगी ।
- इस सबक़ को हिज्जे करते हुए और रवां दोनों त़रह़ पढ़ें ।

1 ... احیاء علوم الدین، کتاب آداب الالفۃ، الباب الثالث فی حق المسلم والرحم والجوار... الخ، 240/2

➤ ह़रकात, तन्वीन और तमाम हुरूफ़ बिल ख़ुसूस हुरूफ़े मुस्ता'लिया की दुरुस्त अदाएगी का ख़ास ख़याल रखें।

➤ हिज्जे इस त़रह़ करें : مَلِكٌ : मीम ज़बर مَ, लाम ज़ेर لِ, مَلِ, काफ़ दो पेश كٌ = مَلِكٌ

مَلِكٍ	حَمِدَ	صُحُفُ	رُسُلُ	جَعَلَ	نَزَلَ
كِبَرُ	قُرِئَ	سُئِلَ	قُتِلَ	يَلِجُ	تَجِدُ
طُوًى	هُدًى	عَمَلًا	مَرَضًا	اَحَدًا	حُشِرَ
فِئَةٍ	ظُلَلٍ	سَخَطٍ	ثَمَنٍ	مَسَدٍ	قُرًى
اُذُنٌ	لَعِبٌ	غَضَبٌ	صَمَدٌ	نَفَرٌ	عُنُقٍ
شَجَرَةٌ	سَفَرَةٍ	عَلَقَةٍ	قِرَدَةً	دَرَجَةً	كُتُبٌ

(2) तफ़्सीरे क़ुरआन ﴾नापाकी की ह़ालत में नमाज़ के क़रीब न जाओ﴿

وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِیْ سَبِیْلٍ حَتّٰی تَغْتَسِلُوْا ؕ

(پ5، النساء:43)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और न नापाकी की ह़ालत में (नमाज़ के क़रीब जाओ) ह़त्ता कि तुम ग़ुस्ल कर लो सिवाए इस के कि तुम ह़ालते सफ़र में हो (तो तयम्मुम कर लो)।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 2, सफ़ह़ा 238 पर है : जब तुम जनाबत की ह़ालत में हो तो जब तक ग़ुस्ल न कर लो तब तक नमाज़ के क़रीब न जाओ या'नी पहले ग़ुस्ल करना फ़र्ज़ है। हां अगर सफ़र की ह़ालत में हो और पानी न मिले तो तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ लो। यहां सफ़र की क़ैद इस लिये है कि पानी न मिलना अक्सर सफ़र ही में होता है वरना न तो सफ़र में

तयम्मुम की कुल्ली इजाज़त है और न तयम्मुम की इजाज़त सफ़र के साथ ख़ास है या'नी अगर सफ़र में पानी मुयस्सर हो तो तयम्मुम की इजाज़त न होगी और यूंही अगर सफ़र की ह़ालत नहीं लेकिन बीमारी वग़ैरा है जिस में पानी का इस्ति'माल नुक़्सान देह हो तो तयम्मुम की इजाज़त है।

नमाज़ के लिये पाकी ज़रूरी है

बहारे शरीअ़त जिल्द 1, सफ़ह़ा 282 पर है : नमाज़ के लिये त़हारत ऐसी ज़रूरी चीज़ है कि बे इस के नमाज़ होती ही नहीं बल्कि जान बूझ कर बे त़हारत नमाज़ अदा करने को उ़लमा कुफ़्र लिखते हैं और क्यूं न हो कि इस बे वुज़ू या बे ग़ुस्ल नमाज़ पढ़ने वाले ने इ़बादत की बे अदबी और तौहीन की। नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि जन्नत की कुन्जी नमाज़ है और नमाज़ की कुन्जी त़हारत।[1] एक रोज़ नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुब्ह़ की नमाज़ में सूरए रूम पढ़ रहे थे तो मुतशाबह लगा। बा'दे नमाज़ इर्शाद फ़रमाया : क्या ह़ाल है उन लोगों का जो हमारे साथ नमाज़ पढ़ते हैं और अच्छी त़रह़ त़हारत नहीं करते, उन्हीं की वज्ह से इमाम को क़िराअत में शुब्हा पड़ता है।[2]

(चुनान्चे) जब बिग़ैर कामिल त़हारत नमाज़ पढ़ने का येह वबाल है तो बे त़हारत नमाज़ पढ़ने की नुहूसत का क्या पूछना। एक ह़दीस में फ़रमाया : त़हारत (पाकी) निस्फ़ ईमान है।[3]

त़हारत की क़िस्में

त़हारत की दो क़िस्में हैं : (1) सुग़रा (या'नी छोटी), (2) कुब्रा (या'नी बड़ी)। त़हारते सुग़रा वुज़ू को और त़हारते कुब्रा ग़ुस्ल को कहते हैं।[4]

जुनुबी शख़्स के अह़काम

औ़रत के साथ हम बिस्तरी की हो या किसी और त़रीक़े से शह्वत के साथ मनी निकल गई हो तो ग़ुस्ल करना वाजिब है, इसे ग़ुस्ले जनाबत कहते हैं। ग़ुस्ले जनाबत न करना गुनाह है। जुनुबी शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ चन्द ह़दीसें मुलाह़ज़ा कीजिये :

1 ... مسند امام احمد، مسند جابر بن عبد اللہ، 6/149، حدیث: 15039

2 ... نسائی، کتاب الافتتاح، القراءۃ فی الصبح بالروم، ص165، حدیث: 944 مفہوماً

3 ... ترمذی، کتاب الدعوات، 89-باب، ص806، حدیث: 3519

4 ... बहारे शरीअ़त, 1/282, ह़िस्सा : 2 ब तसर्रुफ़

{1} ☞ अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि उस घर में रह़मत के फ़िरिश्ते दाख़िल नहीं होते जिस घर में तस्वीर या कुत्ता या जुनुबी (या'नी जिस पर ग़ुस्ल वाजिब है) मौजूद हो ।[1]

{2} ☞ ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہ से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जुनुबी और ह़ाएज़ा क़ुरआने मजीद से कुछ न पढ़े (न थोड़ा न बहुत) ।[2]

{3} ☞ जुनुबी का मस्जिद में दाख़िल होना ह़राम है ।[3] उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम मस्जिद की त़रफ़ से घरों के दरवाज़े बन्द कर दो क्यूं कि मैं ह़ाइज़ और जुनुबी के मस्जिद में दाख़िल होने को ह़लाल नहीं करूंगा ।[4]

(3) नमाज़ के अह़काम «वुज़ू तोड़ने वाली चीज़ें»

{1} ☞ रुकूअ़ व सुजूद वाली नमाज़ में बालिग़ ने क़ह्क़हा लगा दिया या'नी इतनी आवाज़ से हंसा कि आस पास वालों ने सुना तो वुज़ू भी गया और नमाज़ भी गई, अगर इतनी आवाज़ से हंसा कि सिर्फ़ ख़ुद सुना तो नमाज़ गई वुज़ू बाक़ी है, मुस्कुराने से न नमाज़ जाएगी न वुज़ू । मुस्कुराने में आवाज़ बिल्कुल नहीं होती सिर्फ़ दांत ज़ाहिर होते हैं ।[5]

{2} ☞ बालिग़ ने नमाज़े जनाज़ा में क़ह्क़हा लगाया तो नमाज़ टूट गई, वुज़ू बाक़ी है ।[6]

{3} ☞ अ़वाम में मश्हूर है कि घुटना या सत्र खुलने या अपना या पराया सत्र देखने से वुज़ू टूट

1 ... ابوداود، کتاب اللباس، باب فی الصور، ص651، حدیث:4152

2 ... ترمذی، ابواب الطھارۃ، باب ماجاء فی الجنب والحائض أنھما لایقران القرآن، ص45، حدیث:131

3 ... बहारे शरीअ़त, 1/326, ह़िस्सा : 2

4 ... ابوداود، کتاب اللباس، باب فی الجنب یدخل المسجد، ص50، حدیث:232

5 ... نور الایضاح مع مراقی الفلاح، ص64

6 ... نور الایضاح مع مراقی الفلاح، ص64

जाता है येह बिल्कुल ग़लत़ है। हां ! वुज़ू के आदाब से है कि नाफ़ से ले कर दोनों घुटनों समेत सब सत्र छुपा हो, बिग़ैर ज़रूरत सत्र खुला रखना मन्अ़ और दूसरों के सामने सत्र खोलना ह़राम है ।[1]

(4) ☞ मुंह से ख़ून निकला अगर थूक पर ग़ालिब है तो वुज़ू टूट जाएगा वरना नहीं, ग़लबे की पहचान येह है कि अगर थूक का रंग सुर्ख़ हो जाए तो ख़ून ग़ालिब समझा जाएगा और वुज़ू टूट जाएगा येह सुर्ख़ थूक नापाक भी है। अगर थूक ज़र्द (या'नी पीला) हो तो ख़ून पर थूक ग़ालिब माना जाएगा लिहाज़ा न वुज़ू टूटेगा न येह ज़र्द थूक नापाक (है) ।[2]

(5) ☞ आप बा वुज़ू थे अब शक आने लगा कि पता नहीं वुज़ू है या नहीं, ऐसी सूरत में आप बा वुज़ू हैं क्यूं कि सिर्फ़ शक से वुज़ू नहीं टूटता ।[3] यक़ीनन आप उस वक़्त तक बा वज़ू हैं जब तक वुज़ू टूटने का ऐसा यक़ीन न हो जाए कि क़सम खा सकें ।[4]

(6) ☞ सोने से मुत़्लक़न वुज़ू नहीं टूटता, सोने में अगर येह दो शराइत़ पाई जाएं तो वुज़ू टूटेगा : (1) दोनों सुरीन अच्छी त़रह़ जमे हुए न हों। (2) ऐसी ह़ालत पर सोया जो ग़ाफ़िल हो कर सोने में रुकावट न हो । जब दोनों शर्तें जम्अ़ हों या'नी सुरीन भी अच्छी त़रह़ जमे हुए न हों नीज़ ऐसी ह़ालत में सोया हो जो ग़ाफ़िल हो कर सोने में रुकावट न हो तो ऐसी नींद से वुज़ू टूट जाता है। अगर एक शर्त़ पाई जाए और दूसरी न पाई जाए तो वुज़ू नहीं टूटेगा ।[5] तफ़्सील के लिये "नमाज़ के अह़काम" सफ़ह़ा 35 ता 37 का मुत़ालआ़ कीजिये ।

(7) ☞ पेशाब, पाख़ाना, मनी, कीड़ा या पथरी मर्द या औ़रत के आगे या पीछे से निकलें तो वुज़ू जाता रहेगा ।[6]

1... बहारे शरीअ़त, 1/309, ह़िस्सा : 2

2 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الطہارۃ، الباب الاول فی الوضوء، الفصل الخامس، 13/1

3 ...درمختار، کتاب الطہارۃ، ص25

4... वुज़ू का त़रीक़ा, स. 26

5... वुज़ू का त़रीक़ा, स. 26,27

6 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الطہارۃ، باب الوضوء، الفصل الخامس فی نواقض الوضوء، 12/1

(8) ☞ मर्द या औ़रत के पीछे से मा'मूली सी हवा भी ख़ारिज हुई, वुज़ू टूट गया। मर्द या औ़रत के आगे से हवा ख़ारिज हुई, वुज़ू नहीं टूटेगा।[1] बा'ज़ लोग कहते हैं कि ख़िन्ज़ीर का नाम लेने से वुज़ू टूट जाता है, येह ग़लत़ है।[2]

(4) सुन्नतें व आदाब ﴾तेल डालने व कंघा करने की सुन्नतें व आदाब﴿

हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने सरे अक़्दस और दाढ़ी मुबारक में तेल डालते, कंघा करते, बीच सर में मांग निकालते थे। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि हु़ज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस के बाल हों तो वोह उन का इक्राम करे।"[3] (या'नी उन को धोए, तेल लगाए और कंघा करे।)

चुनान्चे तेल डालने और कंघा करने की चन्द सुन्नतें और आदाब बयान किये जाते हैं, आइये मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

(1) ☞ मांग सर के बीच में निकाली जाए कि येह सुन्नत है।[4]

(2) ☞ सर में तेल डालने से क़ब्ल "بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم" पढ़ लेना चाहिये।

(3) ☞ सर में तेल लगाने का त़रीक़ा येह है कि "بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم" पढ़ कर उलटे हाथ की हथेली में थोड़ा सा तेल डालें, फिर पहले सीधी आंख के अब्रू पर तेल लगाएं फिर उलटी के, इस के बा'द सीधी आंख की पलक पर, फिर उलटी पर। अब (फिर "بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم" पढ़ कर) सर में तेल डालें।[5]

(4) ☞ जब भी तेल लगाएं तो इमामे के नीचे सर पर रूमाल (सरबन्द) बांधें। हमारे सरकार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मिज़ाजे मुबारक में चूंकि बेह़द नफ़ासत थी इसी लिये तो आप صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब सरे मुबारक में तेल लगाते तो अपने इमामए मुबारक और उस

1 ... درمختار مع ردالمحتار، کتاب الطہارۃ، مطلب نواقض الوضوء، 1/288ملتقطًا

2 ... नमाज़ के अह़काम, स. 46

3 ... ابوداود، کتاب الترجل، باب فی اصلاح الشعر، ص653، حدیث:4163

4 ... बहारे शरीअ़त, 3/587, हि़स्सा : 16 मुलख़्ख़सन

5 ... وسائل الوصول الی الشمائل الرسول، الباب الثانی فی صفۃ خلقۃ رسول اللہ، الفصل الثالث...الخ، ص33ملخصًا

की टोपी शरीफ़ और दीगर लिबास को तेल के असर से बचाने के लिये सरे अक्दस पर एक कपड़ा लपेट लिया करते और चूंकि तेल मुबारक का इस्ति'माल बहुत ज़ियादा होता इस लिये वोह मुबारक कपड़ा तेल शरीफ़ वाला हो जाता।[1]

(5) इस्लाहे आ'माल «लोगों के ऐब व ख़ुफ़्या बातें जानने की मज़म्मत»

लोगों की ख़ुफ़्या बातें और ऐब जानने की कोशिश करना तजस्सुस कहलाता है।[2] बद गुमानी के नताइज में से एक **टोह में पड़ना** भी है क्यूं कि दिल गुमान को ही काफ़ी नहीं समझता बल्कि यक़ीन चाहता है लिहाज़ा वोह टोह में पड़ जाता है।[3]

अल्लाह पाक कुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है :

وَّلَا تَجَسَّسُوْا (پ26، الحجرات:12)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (और पोशीदा बातों की) जुस्तजू न करो।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान में इस के तहत मज़्कूर है क इस आयत में दूसरा हुक्म येह दिया गया कि मुसल्मानों की ऐबजूई न करो और उन के पोशीदा हाल की जुस्तजू में न रहो जिसे **अल्लाह** पाक ने अपनी सत्तारी से छुपाया है। इस आयत से मा'लूम हुवा कि मुसल्मानों के पोशीदा ऐब तलाश करना और उन्हें बयान करना मम्नूअ़ है।[4]

महशर की रुस्वाई का सबब

हज़रते अबू बरज़ा अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ उन लोगों के गुरौह ! जो ज़बान से ईमान लाए और ईमान उन के दिलों में दाख़िल नहीं हुवा, मुसल्मानों की ग़ीबत न करो और उन की छुपी हुई बातों की टटोल न करो, इस लिये कि जो शख़्स अपने मुसल्मान भाई की छुपी हुई चीज़ की टटोल करेगा, **अल्लाह** पाक उस की पोशीदा चीज़ की टटोल करेगा

1... الشمائل المحمدية، باب ماجاء في صفة ترجل رسول الله، ص430، حديث: 254 ملخصًا

2... احياء العلوم، كتاب الالفة والاخوة، الباب الثالث في حقوق الاخوة والصحبة، 220/2

3... الزواجر عن اقتراف الكبائر، الكبيرة الثامنة والتاسعة والاربعون بعد المائتين، 34/2

4... सिरातुल जिनान, पारह : 27, अल हुजुरात, तह्तल आयह : 12, 9/437

और जिस की **अल्लाह** पाक टटोल करेगा (या'नी ऐब ज़ाहिर करेगा) उस को रुस्वा कर देगा, अगर्चे वोह अपने मकान के अन्दर हो ।[1]

कुत्तों की शक्ल में ह़श्र

एक मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : ग़ीबत करने वालों, चुग़ल ख़ोरों और पाकबाज़ लोगों के ऐब तलाश करने वालों को **अल्लाह** पाक (क़ियामत के दिन) कुत्तों की शक्ल में उठाएगा ।[2]

कानों में पिघला हुवा सीसा

एक रिवायत में है : जिस ने लोगों के ना पसन्द करने और न चाहने के बा वुजूद उन की बातों की त़रफ़ कान लगाए बरोज़े क़ियामत उस के कानों में सीसा उंडेला जाएगा ।[3]

मुसल्मान मुसल्मान का भाई है

फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बद गुमानी से बचो क्यूं कि बद गुमानी सब से झूटी बात है और दूसरों के ऐब तलाश न करो, किसी से ह़सद न करो, दूसरों से पीठ न फेरो, दूसरों से बुग़्ज़ न रखो और (ऐ) **अल्लाह** के बन्दो ! भाई भाई बन जाओ ।[4] मुसल्मान मुसल्मान का भाई है, वोह उस पर ज़ुल्म न करे, उस को रुस्वा न करे और उस की तह़क़ीर न करे, (अपने सीने की त़रफ़ इशारा फ़रमाया) तक़्वा यहां है, तक़्वा यहां है, तक़्वा यहां है । आदमी के लिये येह बुराई बहुत है कि अपने मुसल्मान भाई को ह़क़ीर समझे, हर मुसल्मान पर दूसरे मुसल्मान का ख़ून, माल और इ़ज़्ज़त ह़राम है, **अल्लाह** पाक तुम्हारे जिस्मों और सूरतों पर नज़र नहीं फ़रमाता लेकिन तुम्हारे दिलों पर नज़र फ़रमाता है ।[5]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

1 ...ابو داود، کتاب الادب، باب فی الغیبة، ص765، حدیث:4880

2 ...التوبیخ و التنبیہ لابی الشیخ الاصبھانی، باب البھتان وما جاء فیہ، ص237، حدیث: 216

3 ...بخاری، کتاب التعبیر، باب من کذب فی حلمہ، ص1713، حدیث:7042

4 ...بخاری، کتاب الادب، باب ما ینھی عن التحاسد و التدابر، ص1509، حدیث:6064

5 ...مسلم، کتاب البر و الصلة و الآداب، باب تحریم الظلم المسلم و خذله...الخ، ص995، حدیث:2563

सबक़ नम्बर 9

मौज़ूआ़त

1	मदनी क़ाइदा : हु़रूफ़े मद्दा	2	तफ़्सीरे कु़रआन : फ़ख़्रो रिया की निय्यत से मस्जिदें ता'मीर करने की मज़म्मत
3	नमाज़ के अह़काम : ग़ुस्ल के फ़राइज़ व त़रीक़ा	4	सुन्नतें व आदाब : तेल डालने व कंघा करने की सुन्नतें व आदाब
5	इस्लाह़े आ'माल : ला'नत भेजने की मज़म्मत		

(1) मदनी क़ाइदा ﴾हु़रूफ़े मद्दा﴿

- इस अ़लामत ْ को जज़्म कहते हैं। जिस ह़र्फ़ पर जज़्म हो उस को साकिन कहते हैं।
- साकिन ह़र्फ़ अपने से पहले वाले मुतह़र्रिक ह़र्फ़ से मिला कर पढ़ा जाता है।
- हु़रूफ़े मद्दा तीन हैं : ا،و،ی । अलिफ़ से पहले ज़बर हो तो अलिफ़ मद्दा होगा जैसे بَا, वाव साकिन "وْ" से पहले पेश हो तो वाव मद्दा होगा जैसे "بُوْ", या साकिन "یْ" से पहले ज़ेर हो तो या मद्दा होगा जैसे "بِیْ"
- हु़रूफ़े मद्दा को एक अलिफ़ या'नी दो ह़रकात के बराबर खींच कर पढ़ें।
- हिज्जे इस त़रह़ करें : بَا = बा अलिफ़ ज़बर بَا, بُوْ = बा वाव पेश بُوْ, بِیْ = बा या ज़ेर بِیْ । بَا، بُوْ، بِیْ

تِیْ	تُوْ	تَا	بِیْ	بُوْ	بَا
جِیْ	جُوْ	جَا	ثِیْ	ثُوْ	ثَا
خِیْ	خُوْ	خَا	حِیْ	حُوْ	حَا
ذِیْ	ذُوْ	ذَا	دِیْ	دُوْ	دَا

زِیْ	زُوْ	زَا	رِیْ	رُوْ	رَا
شِیْ	شُوْ	شَا	سِیْ	سُوْ	سَا

(2) तफ़्सीरे कुरआन

«फ़ख़्रो रियाकारी की निय्यत से मस्जिदें ता'मीर करने की मज़म्मत»

لَا تَقُمۡ فِیۡہِ اَبَدًا ؕ (پ11، التوبۃ:108) **तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** (ऐ हबीब !) आप इस मस्जिद में कभी खड़े न हों।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 4, सफ़्हा 237 पर है कि इस आयत में ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मस्जिदे ज़रार में नमाज़ पढ़ने की मुमानअ़त फ़रमाई गई।[1]

फ़ख़्रो रियाकारी की निय्यत से मस्जिद ता'मीर करने की मज़म्मत

इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद नसफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि जो मस्जिद फ़ख़्रो रिया और नुमूदो नुमाइश या रिज़ाए इलाही के सिवा और किसी ग़रज़ के लिये या ह़राम माल से बनाई गई हो वोह भी मस्जिदे ज़रार के साथ लाह़िक़ है।[2]

फ़ी ज़माना मुसल्मानों में एक ता'दाद ऐसी है जिन्हें आ़लीशान मस्जिद ता'मीर करने पर और ज़ियादा मसाजिद बनाने पर एक दूसरे से फ़ख़्र का इज़्हार करते देखा गया है, उन के दिलों का ह़ाल **अल्लाह** पाक ही बेहतर जानता है या ख़ुद उन्हें अपने दिलों का ह़ाल अच्छी त़रह़ मा'लूम है, अगर उन्हों ने **अल्लाह** की रिज़ा ह़ासिल करने और उस की इ़बादत करने में मुसल्मानों को सहूलत पहुंचाने की निय्यत से आ़लीशान और ख़ूब सूरत मसाजिद बनाई हैं तो उन का येह अ़मल लाइक़े तह़सीन और अज्रो सवाब का बाइ़स है और अगर उन की निय्यत येह न थी बल्कि ख़ूब सूरत मसाजिद बनाने से रियाकारी और फ़ख़्रो बड़ाई का इज़्हार मक़्सूद था (जैसे बा'ज़ अ़लाक़ों में क़बीलों के लोग एक दूसरे के मुक़ाबले पर मसाजिद बनाते हैं कि हमारी मस्जिद पूरे अ़लाक़े में मुन्फ़रिद होनी

1 ...تفسیر خازن، پ11، التوبۃ، تحت الآیۃ:108، 407/2

2 ...تفسیر مدارک، پ11، التوبۃ، تحت الآیۃ:107، 709/1

चाहिये) । अगर्चे ज़बान से लोगों के सामने येह सदा आ़म होती है : **अल्लाह** पाक हमारी येह कोशिश क़बूल फ़रमाए । तो उन्हें चाहिये कि दर्जे ज़ैल 3 अह़ादीस से नसीह़त ह़ासिल करने की कोशिश करें ।

﴾1﴿ ☞ ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है, हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत की निशानी येह भी है कि लोग मस्जिद ता'मीर करने में फ़ख़्र करेंगे ।"[1] या'नी **अल्लाह** पाक की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये इख़्लास के साथ नहीं बल्कि नामवरी, रियाकारी और बड़ाई की निय्यत से मस्जिदें ता'मीर करेंगे ।

﴾2﴿ ☞ ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है, हु़ज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत क़ाइम न होगी यहां तक कि लोग जब मस्जिद (ता'मीर करने) के मुआमले में फ़ख़्र करने लग जाएंगे ।"[2]

﴾3﴿ ☞ ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है, हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा जिस में वोह मस्जिदें ता'मीर करने में एक दूसरे पर फ़ख़्र किया करेंगे और उन्हें आबाद कम किया करेंगे ।"[3]

याद रहे कि किसी के दिल का ह़ाल **अल्लाह** पाक ही बेहतर जानता है और हमारे पास कोई ऐसा ज़रीआ़ नहीं जिस से हम किसी के दिल का ह़ाल मा'लूम कर सकें, इस लिये किसी मुसल्मान पर बद गुमानी करने और उस पर येह इल्ज़ाम डालने की शर्अ़न किसी को इजाज़त नहीं कि उस ने फ़ख़्रो रियाकारी की निय्यत से मस्जिद ता'मीर की है । लेकिन ता'मीर करने वाले को बहर ह़ाल अपने क़ल्ब की त़रफ़ नज़र रखनी चाहिये कि इस का मक़्सद क्या है ।

(3) नमाज़ के अह़काम ﴾ग़ुस्ल के फ़राइज़ व त़रीक़ा﴿

ग़ुस्ल के फ़राइज़

ग़ुस्ल के तीन फ़र्ज़ हैं : (1) कुल्ली करना (2) नाक में पानी चढ़ाना (3) तमाम ज़ाहिरे बदन पर पानी बहाना ।

1 ... نسائی، کتاب المساجد، باب المباھاۃ فی المساجد، ص120، حدیث: 686

2 ... ابن ماجہ، کتاب المساجد والجماعات، باب تشیید المساجد، ص127، حدیث: 239

3 ... ابن خزیمہ، کتاب الصلاۃ، باب کراھۃ التباھی فی بناء المسجد... الخ، ص306، حدیث: 1321

(1)... कुल्ली करना

मुंह में थोड़ा सा पानी ले कर पच कर के डाल देने का नाम कुल्ली नहीं बल्कि मुंह के हर पुरज़े, गोशे, होंट से ह़ल्क़ की जड़ तक हर जगह पानी बह जाए। इसी त़रह़ दाढ़ों के पीछे गालों की तह में, दांतों की खिड़कियों और जड़ों और ज़बान की हर करवट पर बल्कि ह़ल्क़ के कनारे तक पानी बहे। रोज़ा न हो तो ग़रग़रा भी कर लीजिये कि सुन्नत है। ग़ुस्ल से क़ब्ल दांतों में बोटी के रेशे वग़ैरा मह़सूस न हुए और रह गए नमाज़ भी पढ़ ली बा'द को मा'लूम होने पर छुड़ा कर पानी बहाना फ़र्ज़ है, पहले जो नमाज़ पढ़ी थी वोह हो गई। जो हिलता दांत मसाले से जमाया गया या तार से बांधा गया और तार या मसाले के नीचे पानी न पहुंचता हो तो मुआफ़ है।[1] जिस त़रह़ की एक कुल्ली ग़ुस्ल के लिये फ़र्ज़ है इसी त़रह़ की तीन कुल्लियां वुज़ू के लिये सुन्नत हैं।[2]

(2)... नाक में पानी चढ़ाना

जल्दी जल्दी नाक की नोक पर पानी लगा लेने से काम नहीं चलेगा बल्कि जहां तक नर्म जगह है या'नी सख़्त हड्डी के शुरूअ़ तक धुलना लाज़िमी है। और येह यूं हो सकेगा कि पानी को सूंघ कर ऊपर खींचिये। येह ख़याल रखिये कि बाल बराबर भी जगह धुलने से न रह जाए वरना ग़ुस्ल न होगा। नाक के अन्दर अगर रींठ सूख गई है तो उस का छुड़ाना फ़र्ज़ है। नाक के बालों का धोना भी फ़र्ज़ है।[3]

(3)... तमाम ज़ाहिरी बदन पर पानी बहाना

सर के बालों से ले कर पाउं के तल्वों तक जिस्म के हर पुरज़े और हर हर रोंगटे पर पानी बह जाना ज़रूरी है, जिस्म की बा'ज़ जगहें ऐसी हैं कि अगर एह़तियात़ न की तो वोह सूखी रह जाएंगी और ग़ुस्ल न होगा। अक्सर बल्कि बा'ज़ पढ़े लिखे येह करते हैं कि सर पर पानी डाल कर बदन पर हाथ फेर लेते हैं। और समझते हैं कि ग़ुस्ल हो गया। ह़ालां कि बा'ज़ आ'ज़ा ऐसे हैं कि जब तक उन की ख़ास एह़तियात़ न की जाए तो वोह न धुलें और न ग़ुस्ल होगा।[4]

1... बहारे शरीअ़त, 1/316, हिस्सा : 2 मुलख़्ख़सन
2... नमाज़ के अह़काम, स. 103
3... बहारे शरीअ़त, 1/316, हिस्सा : 2 मुलख़्ख़सन
4... फ़तावा रज़विय्या, 1/595 मुलख़्ख़सन

(4) सुन्नतें व आदाब ﴾तेल डालने व कंघा करने की सुन्नतें व आदाब﴿

﴾1﴿ ☞ जिस से बन पड़े वोह उ़म्दा खुश्बूदार तेल लगाए। खुश्बूदार तेल बनाने का एक आसान त़रीक़ा येह भी है कि खोपरे के तेल की शीशी में अपने पसन्दीदा इ़त्र के चन्द क़त़रे डाल कर ह़ल कर लीजिये। खुश्बूदार तेल तय्यार है। सर के बालों को वक़्तन फ़ वक़्तन साबून से धोते रहिये।

﴾2﴿ ☞ जिन इस्लामी भाइयों के सर पर बाल हों उन को चाहिये कि उन में कंघा किया करें। ह़ज़रते अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मैं ने अ़र्ज़ की, कि मेरे सर पर पूरे बाल हैं, मैं इन को कंघा किया करूं ? तो आक़ाए मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हां ! और इन का इक्राम करो।" चुनान्चे ह़ज़रते अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमाने की वज्ह से कभी कभी तो दिन में दो दो मरतबा भी तेल लगा लिया करते।[1]

﴾3﴿ ☞ बाल बिखरे हुए न रखें। ह़ज़रते अ़त़ा बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे दो आ़लम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे, इतने में एक शख़्स आया जिस के सर और दाढ़ी के बाल बिखरे हुए थे। मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस की त़रफ़ इस अन्दाज़ पर इशारा किया जिस से साफ़ ज़ाहिर होता था कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस को बाल दुरुस्त करने का हुक्म फ़रमा रहे हैं, चुनान्चे वोह शख़्स बाल दुरुस्त कर के वापस आया तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या येह इस से बेहतर नहीं है कि कोई शख़्स बालों को इस त़रह़ बिखेर कर आता है गोया वोह शैत़ान है।"[2]

﴾4﴿ ☞ कंघा करते वक़्त सीधी त़रफ़ से इब्तिदा कीजिये। हमारे प्यारे आक़ा, शबे असरा के दूल्हा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर तकरीम वाला काम सीधी त़रफ़ से शुरूअ़ फ़रमाते जैसा कि "तिरमिज़ी शरीफ़" में है कि ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं : सरकारे मदीना, राह़ते

1 ...موطا امام مالک، کتاب الشعر، باب اصلاح الشعر، ص500، حدیث:1818

2 ...موطا امام مالک، کتاب الشعر، باب اصلا الشعر، ص501، حدیث:1819

क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दाईं जानिब से वुज़ू करना पसन्द फ़रमाते और इसी त़रह़ कंघा भी सीधी त़रफ़ से ही करते, नीज़ ना'लैने शरीफ़ैन भी जब पहनने का इरादा फ़रमाते तो पहले सीधा क़दमे मुबारक ना'ल शरीफ़ में दाख़िल फ़रमाते।[1]

(5) इस्लाहे़ आ'माल ﴾ला'नत भेजने की मज़म्मत﴿

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ला'नत से मुराद किसी को **अल्लाह** की रह़मत से दूर कहना है। यक़ीन के साथ किसी पर भी ला'नत करना जाइज़ नहीं चाहे वोह काफ़िर हो या मोमिन, गुनहगार हो या फ़रमां बरदार क्यूं कि किसी के ख़ातिमे का ह़ाल कोई नहीं जानता।[2] फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में है कि ला'नत बहुत सख़्त चीज़ है, हर मुसल्मान को इस से बचाया जाए बल्कि काफ़िर पर भी ला'नत जाइज़ नहीं जब तक उस का कुफ़्र पर मरना क़ुरआनो ह़दीस से साबित न हो।[3]

मोमिन ला'न त़ा'न नहीं करता

फ़ी ज़माना बात बात पर ला'नत मलामत करने का मरज़ आ़म है और इ़ल्मे दीन से मह़रूमी के बाइ़स इस में कोई ह़रज भी नहीं समझा जाता ह़ालां कि किसी मोमिन को ला'नत करना उसे क़त्ल करने के मुतरादिफ़ है जैसा कि ह़ज़रते ज़ह़्ह़ाक رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : किसी मोमिन पर ला'नत करना उसे क़त्ल करने की त़रह़ है।[4] और किसी पर ला'नत करना मोमिन की शान के भी मुनाफ़ी है जैसा कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ عَنْه रिवायत करते हैं कि मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन ला'न त़ा'न और फ़ोह़्श काम नहीं करता।[5]

1 ... ترمذی، ابواب السفر، باب مایستحب من التیمن فی الطهور، ص175، حدیث:608

2 ... الحدیقة الندیة، القسم الثانی فی آفات اللسان، النوع التاسع فی اللعن، 69/4

3 ... फ़तावा रज़विय्या, 21/222 मुलख़्ख़सन

4 ... بخاری، کتاب الایمان و النذر، باب من حلف بملة سوی ملة الاسلام، ص1621، حدیث:6652

5 ... ترمذی، کتاب البر و الصلة، باب جاء فی اللعنة، ص480، حدیث:1977

ला'नत भेजने वाले पर लौट आती है

हज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बन्दा जब ला'नत करता है वोह आस्मान की त़रफ़ जाती है तो वहां के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं, फिर येह ज़मीन की त़रफ़ लौटती है तो ज़मीन के दरवाज़े भी बन्द कर दिये जाते हैं और येह दाएं बाएं कहीं से निकलने की कोशिश करती है, जब कोई रास्ता नहीं पाती तो जिस पर भेजी गई हो उस की त़रफ़ लौटती है अगर वोह उस का अह्ल हो तो ठीक वरना ला'नत भेजने वाले पर वापस आ जाती है।[1]

एक रिवायत में है : बेशक जिस की त़रफ़ ला'नत भेजी जाए अगर वोह उस पर वाक़ेअ़ होने का कोई रास्ता या जगह पाए तो उस पर पड़ती है वरना कहती है : ऐ **अल्लाह** ! मुझे फ़ुलां की त़रफ़ भेजा गया लेकिन मैं ने वहां उतरने का कोई रास्ता न पाया। तो उसे कहा जाता है : जहां से आई है वहीं लौट जा।[2] ह़ज़रते सलमा बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ इर्शाद फ़रमाते हैं : जब हम किसी शख़्स को अपने भाई पर ला'नत भेजते हुए देखते तो ख़याल करते कि येह कबीरा गुनाहों के दरवाज़े पर आ गया है।[3]

अल्लाह पाक हमें ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 10

मौज़ूआ़त

1	मदनी क़ाइदा : हुरूफ़े लीन	2	अज़्कारे नमाज़ : सना
3	तफ़्सीरे कु़रआन : तक़्वे की बुन्याद पर रखी गई मस्जिद के फ़ज़ाइल	4	नमाज़ के अह़काम : ग़ुस्ल का त़रीक़ा व एह़तियातें
5	सुन्नतें व आदाब : खाना खाने की सुन्नतें व आदाब	6	इस्लाहे़ आ'माल : निस्बत की बरकत

1 ... ابو داود، کتاب الادب، باب فی اللعن، ص769، حدیث:4905

2 ... مسند امام احمد، مسند عبد اللہ بن مسعود، 603/2، حدیث:4117 3 ... معجم اوسط، 88/5، حدیث:6674

(1) मदनी क़ाइदा «हुरूफ़े लीन»

◄ हुरूफ़े लीन दो हैं و और ی ।

◄ वाव साकिन से पहले ज़बर हो तो वाव लीन होगा जैसे جَوْ, या साकिन से पहले ज़बर हो तो या लीन होगा जैसे جَیْ

◄ वाव और या (हुरूफ़े लीन) को बिग़ैर खींचे बिग़ैर झटका दिये नरमी से मा'रूफ़ पढ़ेंगे ।

◄ हुरूफ़े लीन के हिज्जे इस तरह करें : بَوْ = बा वाव ज़बर بَوْ, بَیْ = बा या ज़बर بَیْ=بَیْ ,بَوْ,

ثَیْ	ثَوْ	تَیْ	تَوْ	بَیْ	بَوْ
خَیْ	خَوْ	حَیْ	حَوْ	جَیْ	جَوْ
رَیْ	رَوْ	ذَیْ	ذَوْ	دَیْ	دَوْ
شَیْ	شَوْ	سَیْ	سَوْ	زَیْ	زَوْ
طَیْ	طَوْ	ضَیْ	ضَوْ	صَیْ	صَوْ

(2) अज़्कारे नमाज़ «सना»

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَ بِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ ط

तरजमा : पाक है तू ऐ **अल्लाह** ! और मैं तेरी ह़म्द करता हूं, तेरा नाम बरकत वाला है और तेरी अ़ज़्मत बुलन्द है और तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं ।

(3) तफ़्सीरे कुरआन «तक़्वे की बुन्याद पर रखी गई मस्जिद के फ़ज़ाइल»

لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ط (پ11، التوبة:108)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह मस्जिद जिस की बुन्याद पहले दिन से परहेज़ गारी पर रखी गई है वोह इस की ह़क़दार है कि तुम उस में खड़े हो ।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 4, सफ़हा नम्बर 238 पर है कि इस से मुराद मस्जिदे कुबा है जिस की बुन्याद रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रखी और जब तक हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मस्जिदे कुबा में क़ियाम फ़रमाया उस में नमाज़ पढ़ी। मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह भी है कि इस से मस्जिदे मदीना मुराद है।[1]

अहादीस में मस्जिदे नबवी और मस्जिदे कुबा के कसीर फ़ज़ाइल मज़्कूर हैं, उन में से चन्द फ़ज़ाइल दर्जे ज़ैल हैं :

{1} ☞ हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरे घर और मेरे मिम्बर के दरमियान की जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है और मेरा मिम्बर मेरे हौज़ पर है।"[2]

{2} ☞ हज़रते अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "किसी शख़्स का अपने घर में नमाज़ पढ़ना एक नमाज़ का सवाब है और उस का महल्ले की मस्जिद में नमाज़ पढ़ना पच्चीस नमाज़ों का सवाब है और उस का जामेअ़ मस्जिद में नमाज़ पढ़ना पांच सो नमाज़ों का सवाब है और उस का मस्जिदे अक़्सा में नमाज़ पढ़ना पचास हज़ार नमाज़ों का सवाब है और उस का मेरी मस्जिद (या'नी मस्जिदे नबवी) में नमाज़ पढ़ना पचास हज़ार नमाज़ों का सवाब है और उस का मस्जिदे ह़राम में नमाज़ पढ़ना एक लाख नमाज़ों का सवाब है।"[3]

{3} ☞ हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर हफ़्ते मस्जिदे कुबा में (कभी) पैदल और (कभी) सुवार हो कर तशरीफ़ लाते थे।[4]

{4} ☞ हज़रते सहल बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद

1 ... تفسیر مدارک، پ11، التوبۃ، تحت الآیۃ:107، 1/709

2 ... بخاری، کتاب فضائل المدینۃ، 12-باب، ص500، حدیث: 1888

3 ... ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ والسنۃ فیھا، باب ما جاء فی الصلاۃ فی المسجد الجامع، ص229، حدیث: 1413

4 ... بخاری، کتاب فضل الصلاۃ فی مسجد مکۃ والمدینۃ، باب من اتی مسجد قباء کل سبت، ص341، حدیث: 1193

फ़रमाया : "जो शख़्स अपने घर से निकले, फिर मस्जिदे कुबा में आ कर नमाज़ पढ़े तो उसे एक उम्रे का सवाब मिलेगा।"[1]

(4) नमाज़ के अह़काम «ग़ुस्ल का त़रीक़ा»

बिग़ैर ज़बान हिलाए दिल में इस त़रह़ निय्यत कीजिये कि मैं पाकी ह़ासिल करने के लिये ग़ुस्ल करता हूं। पहले दोनों हाथ पहुंचों तक तीन तीन बार धोइये, फिर इस्तिन्जे की जगह धोइये ख़्वाह नजासत हो या न हो, फिर जिस्म पर अगर कहीं नजासत हो तो उस को दूर कीजिये फिर नमाज़ का सा वुज़ू कीजिये मगर पाउं न धोइये, हां ! अगर किसी चीज़ पर खड़े हो कर ग़ुस्ल कर रहे हैं तो पाउं भी धो लीजिये, फिर बदन पर तेल की त़रह़ पानी मल लीजिये, ख़ुसूसन सर्दियों में (इस दौरान साबुन भी लगा सकते हैं) फिर तीन बार सीधे कन्धे पर पानी बहाइये, फिर तीन बार उलटे कन्धे पर, फिर सर पर और तमाम बदन पर तीन बार, फिर ग़ुस्ल की जगह से अलग हो जाइये, अगर वुज़ू करने में पाउं नहीं धोए थे तो अब धो लीजिये। नहाने में क़िब्ला रुख़ न हों, तमाम बदन पर हाथ फेर कर मल कर नहाइये। ऐसी जगह नहाना चाहिये जहां किसी की नज़र न पड़े अगर येह मुम्किन न हो तो मर्द अपना सत्र (नाफ़ से ले कर दोनों घुटनों समेत) किसी मोटे कपड़े से छुपा ले, मोटा कपड़ा न हो तो ह़स्बे ज़रूरत दो या तीन कपड़े लपेट ले क्यूं कि बारीक कपड़ा होगा तो पानी से बदन पर चिपक जाएगा और مَعَاذَاللہ घुटनों या रानों वग़ैरा की रंगत ज़ाहिर होगी। औ़रत को तो और भी ज़ियादा एह़तियात़ की ह़ाजत है। दौराने ग़ुस्ल किसी क़िस्म की गुफ़्त्गू मत कीजिये, कोई दुआ़ भी न पढ़िये, नहाने के बा'द तोलिये वग़ैरा से बदन पोंछने में ह़रज नहीं। नहाने के बा'द फ़ौरन कपड़े पहन लीजिये। अगर मक्रूह वक़्त न हो तो दो रक्अ़त नफ़्ल अदा करना मुस्तह़ब है।[2]

ग़ुस्ल की चन्द एह़तियातें

अक्सर अ़वाम बल्कि बा'ज़ पढ़े लिखे येह करते हैं कि सर पर पानी डाल कर बदन पर हाथ फेर लेते हैं और समझते हैं कि ग़ुस्ल हो गया ह़ालां कि बा'ज़ आ'ज़ा ऐसे हैं कि जब तक उन

1 ...نسائی، کتاب المساجد، فضل مسجد قباء و الصلاۃ فیہ، ص121، حدیث:796

2 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الطھارۃ، الباب الثانی فی الغسل، الفصل الثانی، 16/1

की ख़ास तौर पर एहतियात न की जाए, नहीं धुलेंगे और ग़ुस्ल न होगा।[1] चन्द एहतियातें मुलाहज़ा कीजिये :

(1) भवों, मूंछों और दाढ़ी के हर बाल का जड़ से नोक तक और इन के नीचे की खाल का धुलना ज़रूरी है (2) कान का हर पुरज़ा और उस के सूराख़ का मुंह धोएं (3) कानों के पीछे के बाल हटा कर पानी बहाएं (4) ठोड़ी और गले का जोड़ कि मुंह उठाए बिग़ैर न धुलेगा (5) हाथों को अच्छी तरह उठा कर बग़लें धोएं (6) पेट की बल्टें उठा कर धोएं (7) नाफ़ में उंगली डाल कर धोएं (8) जिस्म का हर रोंगटा जड़ से नोक तक धोएं (9) जब बैठ कर नहाएं तो रान और पिंडली के जोड़ पर भी पानी बहाना याद रखें।[2]

नोट : मज़ीद तफ़्सील के लिये "नमाज़ के अहकाम" सफ़हा नम्बर 104 का मुतालआ फ़रमाइये।

(5) सुन्नतें व आदाब ﴿खाना खाने की सुन्नतें व आदाब﴾

खाना **अल्लाह** पाक की बहुत लज़ीज़ ने'मत है। अगर सुन्नते अहमदे मुज्तबा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुताबिक़ खाना खाया जाए तो हमें पेट भरने के साथ साथ सवाब भी हासिल होगा। इस लिये हमें चाहिये कि सुन्नत के मुताबिक़ खाना खाने की आदत डालें। आइये ! खाना खाने की कुछ सुन्नतें और आदाब मुलाहज़ा कीजिये :

﴿1﴾☞ हर खाने से पहले अपने हाथ पहुंचों तक धो लें। हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه रिवायत करते हैं कि तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो येह पसन्द करे कि **अल्लाह** पाक उस के घर में बरकत ज़ियादा करे तो उसे चाहिये कि जब खाना हाज़िर किया जाए तो वुज़ू करे और जब उठाया जाए तब भी वुज़ू करे।"[3] हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه लिखते हैं : इस (या'नी खाने के वुज़ू) के मा'ना हैं हाथ व मुंह की सफ़ाई करना कि हाथ धोना कुल्ली कर लेना।[4]

1... फ़तावा रज़विय्या, 1/595 मुलख़्ख़सन

2... बहारे शरीअत, 1/317, हिस्सा : 2

3... ابن ماجہ، کتاب الاطعمۃ، باب الوضوء عند الطعام، ص531، حدیث: 3260

4... मिरआतुल मनाजीह, 6/32

(2) ☞ जब भी खाना खाएं तो उलटा पाउं बिछा दें और सीधा खड़ा रखें या सुरीन पर बैठ जाएं और दोनों घुटने खड़े रखें।[1]

(3) ☞ खाने से पहले जूते उतार लें। ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : खाना खाने बैठो तो जूते उतार लो, इस में तुम्हारे लिये राह़त है।[2]

(4) ☞ खाने से पहले بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ लें। ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस खाने पर बिस्मिल्लाह न पढ़ी जाए उस खाने को शैत़ान अपने लिये ह़लाल समझता है।[3]

(5) ☞ अगर खाने के शुरूअ़ में "बिस्मिल्लाह" पढ़ना भूल जाएं तो याद आने पर "بِسْمِ اللّٰہِ اَوَّلَہٗ وَاٰخِرَہٗ" पढ़ लें। ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुम में से कोई खाना खाए तो उसे चाहिये कि पहले बिस्मिल्लाह पढ़े। अगर शुरूअ़ में बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाए तो येह कहे : "بِسْمِ اللّٰہِ اَوَّلَہٗ وَاٰخِرَہٗ"।[4]

(6) इस्लाहे़ आ'माल «निस्बत की बरकत»

बा कमाल रूमाल

ह़ज़रते उ़ब्बाद बिन अ़ब्दुस्समद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : हम एक रोज़ ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के दौलत ख़ाने पर ह़ाज़िर हुए। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने कनीज़ को दस्तर ख़्वान बिछाने का हुक्म फ़रमाया। कनीज़ ने दस्तर ख़्वान बिछाया। फ़रमाया : रूमाल भी लाओ। वोह एक रूमाल ले आई जिसे धोने की ज़रूरत थी। हुक्म दिया इस को तन्नूर में डाल दो! उस ने भड़क्ते तन्नूर में डाल दिया! थोड़ी देर के बा'द जब उसे आग से निकाला गया तो वोह ऐसा सफ़ेद था

1... बहारे शरीअ़त, 3/378, ह़िस्सा : 16

2 ...دارمی، کتاب الاطعمۃ، باب فی خلع النعال عند الاکل، ص648، حدیث:2084

3 ...مسلم، کتاب الاشربۃ، باب آداب الطعام والشراب...الخ، ص802، حدیث:2017

4 ...ابوداود، کتاب الاطعمہ، باب التسمیۃ علی الطعام، ص597، حدیث:3767

जैसा कि दूध । हम ने हैरान हो कर अ़र्ज़ की : इस में क्या राज़ है ? ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने फ़रमाया : येह वोह रूमाल है जिस से हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना रुखे़ पुरनूर साफ़ फ़रमाया था । अब इसे जब भी धोने की ज़रूरत पड़ती है हम इस को इसी त़रह़ आग में धो लेते हैं ! क्यूं कि जो चीज़ अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के मुबारक चेहरों पर गुज़रे, आग उसे नहीं जलाती ।[1]

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आ़रिफ़े कामिल ह़ज़रते मौलाना रूम رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ "मस्नवी शरीफ़" में इस मुबारक वाक़िए को लिखने के बा'द फ़रमाते हैं :

ای دل ترسندہ از نار و عذاب	با چنان دست و لبی کن اقتراب
چون جمادی را چنین تشریف داد	جان عاشق را چہا خواھد گشاد

या'नी ऐ वोह दिल जिस को अ़ज़ाबे नार का डर है, उन प्यारे प्यारे होंटों और मुक़द्दस हाथों से नज़्दीकी क्यूं नहीं ह़ासिल कर लेता जिन्हों ने बेजान चीज़ रूमाल तक को ऐसी फ़ज़ीलत व बुज़ुर्गी अ़त़ा फ़रमाई कि वोह आग में न जले, तो उन के जो आ़शिक़े ज़ार (रोने वाला आ़शिक़) हैं उन पर अ़ज़ाबे नार क्यूं न ह़राम हो !

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 11

मौज़ूआत

1	मदनी क़ाइदा : खड़ी ह़रकात	2	अज़्कारे नमाज़ : तअ़व्वुज़ व तस्मिया
3	तफ़्सीरे क़ुरआन : त़हारत की अहम्मिय्यत	4	नमाज़ के अह़काम : ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने के अस्बाब
5	सुन्नतें व आदाब : खाना खाने की सुन्नतें व आदाब	6	इस्लाहे़ आ'माल : बद शुगूनी का बयान

[1] ...خصائص الکبری، ذکر معجزاتہ فی ضروب الحیوانات، باب الآیۃ فی الناس، 134/1

(1) मदनी क़ाइदा ﴾खड़ी ह़रकात﴿

- खड़े ज़बर ـٰ और खड़े ज़ेर ـٖ और उलटे पेश ـٗ को खड़ी ह़रकात कहते हैं।
- खड़ी ह़रकात ह़ुरूफ़े मद्दा के क़ाइम मक़ाम हैं इस लिये खड़ी ह़रकात को भी ह़ुरूफ़े मद्दा की त़रह़ एक अलिफ़ या'नी दो ह़रकात के बराबर खींच कर पढ़ें।
- इस सबक़ में मिलती जुलती आवाज़ वाले ह़ुरूफ़ में वाज़ेह़ फ़र्क़ करें।

طٗ	طٖ	طٰ	تٗ	تٖ	تٰ
ذٗ	ذٖ	ذٰ	زٗ	زٖ	زٰ
ضٗ	ضٖ	ضٰ	ظٗ	ظٖ	ظٰ
سٗ	سٖ	سٰ	ثٗ	ثٖ	ثٰ
كٗ	كٖ	كٰ	صٗ	صٖ	صٰ
هٗ	هٖ	هٰ	قٗ	قٖ	قٰ
اٗ ـ ءٗ	اٖ ـ ءٖ	اٰ ـ ءٰ	حٗ	حٖ	حٰ
دٗ	دٖ	دٰ	عٗ	عٖ	عٰ
ىٗ	ىٖ	ىٰ	شٗ	شٖ	شٰ

(2) अज़्कारे नमाज़ ﴾तअ़व्वुज़ व तस्मिया﴿

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

तरजमा : मैं **अल्लाह** पाक की पनाह में आता हूं शैतान मरदूद से ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तरजमा : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान, रह़मत वाला है ।

(3) तफ़्सीरे कुरआन ﴾त़हारत की अहम्मिय्यत﴿

فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ؕ وَ اللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ۝۱۰۸ (پ11، التوبة:108)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : इस में वोह लोग हैं जो ख़ूब पाक होना पसन्द करते हैं और **अल्लाह** ख़ूब पाक होने वालों से मह़ब्बत फ़रमाता है ।

अल्लाह पाक साफ़ सुथरे लोगों को पसन्द फ़रमाता है

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 4, सफ़ह़ा 239 पर है कि येह आयत मस्जिदे कुबा वालों के ह़क़ में नाज़िल हुई, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया : ऐ गुरौहे अन्सार ! **अल्लाह** पाक ने तुम्हारी ता'रीफ़ फ़रमाई है, तुम वुज़ू और इस्तिन्जे के वक़्त क्या अ़मल करते हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम बड़ा इस्तिन्जा तीन ढेलों से करते हैं, इस के बा'द पानी से त़हारत करते हैं ।[1]

इस्लाम में सफ़ाई की अहम्मिय्यत

हर साह़िबे ज़ौक़ शख़्स इस बात से बख़ूबी वाक़िफ़ है कि अमीरी हो या फ़क़ीरी हर ह़ाल में सफ़ाई, सुथराई इन्सान के इ़ज़्ज़तो वक़ार की अ़लामत है जब कि गन्दगी इन्सान की इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत की बद तरीन दुश्मन है । दीने इस्लाम ने जहां इन्सान को कुफ़्रो शिर्क की नजासतों से पाक कर के इ़ज़्ज़तो रिफ़अ़त अ़त़ा की वहीं ज़ाहिरी त़हारत, सफ़ाई सुथराई और पाकीज़गी की आ'ला ता'लीमात के ज़रीए इन्सानिय्यत का वक़ार बुलन्द किया, बदन की पाकीज़गी हो या लिबास की

1 ... تفسیر مدارك، پ11، التوبة، تحت الآية:108، 1/710

सुथराई, ज़ाहिरी हैअत की उ़म्दगी हो या त़ौर त़रीक़े की अच्छाई, मकान और साज़ो सामान की बेहतरी हो या सुवारी की धुलाई अल ग़रज़ हर हर चीज़ को साफ़ सुथरा रखने की दीने इस्लाम में ता'लीम और तरग़ीब दी गई है, चुनान्चे **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है : ﴿ اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ التَّوَّابِیْنَ وَ یُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِیْنَ ﴾ (پ2،البقرۃ:222) **तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** बेशक **अल्लाह** बहुत तौबा करने वालों से मह़ब्बत फ़रमाता है और ख़ूब साफ़ सुथरे रहने वालों को पसन्द फ़रमाता है।

ह़ज़रते अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "पाकीज़गी निस्फ़ ईमान है।"[1]

ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रिवायत है, सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक इस्लाम साफ़ सुथरा (दीन) है तो तुम भी नज़ाफ़त ह़ासिल किया करो क्यूं कि जन्नत में साफ़ सुथरा रहने वाला ही दाख़िल होगा।[2] एक रिवायत में है कि जो चीज़ तुम्हें मुयस्सर हो उस से नज़ाफ़त ह़ासिल करो, **अल्लाह** पाक ने इस्लाम की बुन्याद सफ़ाई पर रखी है और जन्नत में साफ़ सुथरे रहने वाले ही दाख़िल होंगे।[3] ह़ज़रते सह्ल बिन ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो लिबास तुम पहनते हो उसे साफ़ सुथरा रखो और अपनी सुवारियों की देखभाल किया करो और तुम्हारी ज़ाहिरी हैअत ऐसी साफ़ सुथरी हो कि जब लोगों में जाओ तो वोह तुम्हारी इ़ज़्ज़त करें।[4]

(4) नमाज़ के अह़काम ﴿ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने के अस्बाब﴾

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने के पांच अस्बाब हैं :

﴿1﴾ ☞ मनी का अपनी जगह से शह्वत के साथ जुदा हो कर उ़ज़्व से निकलना।

﴿2﴾ ☞ एह़तिलाम या'नी सोते में मनी का निकल जाना।

1 ... مسلم، کتاب الطھارۃ، باب فضل الوضوء، ص106، حدیث: 223

2 ... معجم اوسط، 382/3، حدیث: 4893

3 ... جمع الجوامع، 115/4، حدیث: 10624

4 ... جامع صغیر، ص22، حدیث: 257

(3) ☞ शर्मगाह में ह़श्फ़ा (सुपारी) दाख़िल हो जाना ख़्वाह शह्वत हो या न हो, इन्ज़ाल हो या न हो, दोनों पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ है।

(4) ☞ औ़रत का ह़ैज़ से फ़ारिग़ होना।

(5) ☞ औ़रत का निफ़ास (या'नी बच्चा जनने पर जो ख़ून आता है उस) से फ़ारिग़ होना।[1]

ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने के मुतअ़ल्लिक़ ज़रूरी अह़काम

(1) ☞ मनी शह्वत के साथ अपनी जगह से जुदा न हुई बल्कि बोझ उठाने या बुलन्दी से गिरने या फ़ुज़्ला ख़ारिज करने के लिये ज़ोर लगाने की सूरत में ख़ारिज हुई तो ग़ुस्ल फ़र्ज़ नहीं हुवा। वुज़ू बहर ह़ाल टूट जाएगा।

(2) ☞ अगर मनी पतली पड़ गई और पेशाब के वक़्त या वैसे ही बिला शह्वत उस के क़त़रे निकल आए, ग़ुस्ल फ़र्ज़ न हुवा वुज़ू टूट जाएगा।

(3) ☞ अगर एह़तिलाम होना याद है मगर उस का कोई असर कपड़े वग़ैरा पर नहीं तो ग़ुस्ल फ़र्ज़ नहीं।

(4) ☞ नमाज़ में शह्वत थी और मनी उतरती हुई मा'लूम हुई मगर बाहर निकलने से क़ब्ल ही नमाज़ पूरी कर ली अब ख़ारिज हुई तो नमाज़ हो गई मगर अब ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो गया।

(5) ☞ अपने हाथों से माद्दा ख़ारिज करने से ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो जाता है। येह गुनाह का काम है। ह़दीसे पाक में ऐसा करने वाले को मल्ऊ़न कहा गया है। ऐसा करने से मर्दाना कमज़ोरी पैदा होती है और बारहा देखा गया है कि बिल आख़िर आदमी शादी के लाइक़ नहीं रहता।[2]

(5) सुन्नतें व आदाब ﴾खाना खाने की सुन्नतें व आदाब﴿

(1) ☞ खाने से पहले येह दुआ़ पढ़ ली जाए तो अगर खाने में ज़ह्‌र भी होगा तो اِنْ شَآءَ الله असर नहीं करेगा, "بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ یَاحَیُّ یَاقَیُّوْمُ" या'नी **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ करता हूं जिस के नाम की बरकत से ज़मीन व आस्मान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती। ऐ हमेशा से ज़िन्दा व क़ाइम रहने वाले।[3]

1... बहारे शरीअ़त, 1/321, ह़िस्सा : 3

2... ग़ुस्ल का त़रीक़ा, स. 9

3...مسند الفردوس، 282/1، حدیث:1106

(2) ☞ खाना सीधे हाथ से खाएं। हुज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अज़मत निशान है : "जब तुम में से कोई खाना खाए तो सीधे हाथ से खाए और जब पिये तो सीधे हाथ से पिये कि शैतान उलटे हाथ से खाता पीता है।"[1]

(3) ☞ खाना अपने सामने से खाएं। हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हर शख़्स बरतन की उसी जानिब से खाए जो उस के सामने हो।"[2] हज़रते अबू सलमा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि एक रोज़ खाना खाते हुए मेरा हाथ पियाले में इधर उधर हरकत कर रहा था (या'नी कभी एक तरफ़ से लुक़्मा उठाया कभी दूसरी तरफ़ से और कभी तीसरी तरफ़ से लुक़्मा उठाया) जब **अल्लाह** पाक के महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे इस तरह करते हुए देखा तो फ़रमाया : बिस्मिल्लाह पढ़ कर दाएं हाथ से खाया करो और अपने सामने से खाया करो। चुनान्चे इस के बा'द से मेरे खाने का तरीक़ा येही हो गया।[3]

(4) ☞ खाने में किसी क़िस्म का ऐब न लगाएं। मसलन येह न कहें की मज़ेदार नहीं, कच्चा रह गया है, फीका रह गया क्यूं कि खाने में ऐब निकालना मक्रूह व ख़िलाफ़े सुन्नत है बल्कि जी चाहे तो खाएं वरना हाथ रोक लें। हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया कि तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी किसी खाने को ऐब नहीं लगाया (या'नी बुरा नहीं कहा) अगर ख़्वाहिश होती तो खा लेते और ख़्वाहिश न होती तो छोड़ देते।[4]

(6) इस्लाहे आ'माल ﴾बद शुगूनी का बयान﴿

मन्हूस कौन ?

एक बादशाह अपने वज़ीरों, मुशीरों के साथ दरबार में मौजूद था कि काले रंग के एक आंख वाले आदमी को बादशाह के सामने पेश किया गया, लोगों को शिकायत थी कि येह ऐसा मन्हूस है कि जो सुब्ह सवेरे इस की शक्ल देख लेता है उसे ज़रूर कोई न कोई नुक़्सान उठाना पड़ता

1 ... مسلم، کتاب الاشربۃ، باب آداب الطعام والشراب...الخ، ص803، حدیث:2020

2 ... بخاری، کتاب الاطعمۃ، باب الاکل مما یلیہ، ص1379

3 ... بخاری، کتاب الاطعمۃ، باب التسمیۃ علی الطعام والاکل بالیمین، ص1378، حدیث:5376

4 ... بخاری، کتاب الاطعمۃ، باب ماعاب النبی طعاما، ص1385، حدیث:5409

है लिहाज़ा इसे मुल्क से निकाल दिया जाए। थोड़ी देर सोचने के बा'द बादशाह ने कहा : कोई फ़ैसला करने से पहले मैं ख़ुद तजरिबा करूंगा और कल सुब्ह़ सब से पहले इस की सूरत देखूंगा फिर कोई दूसरा काम करूंगा। अगले दिन जब बादशाह बेदार हुवा और ख़्वाब गाह का दरवाज़ा खोला तो वोही एक आंख वाला आदमी सामने खड़ा था। बादशाह उस को देख कर वापस पलट आया और दरबार में जाने के लिये तय्यार होने लगा। लिबास तब्दील करने के बा'द जूंही बादशाह ने जूते में अपना पाउं डाला, उस में मौजूद ज़हरीले बिच्छू ने डंक मार दिया। बादशाह की चीखें बुलन्द हुईं तो ख़िदमत गार भागम भाग उस के पास पहुंचे। ज़ह्र के असर से बादशाह का सुर्ख़ो सफ़ेद चेहरा नीला पड़ चुका था, मह़ल में शोर मच गया कि "बादशाह सलामत को बिच्छू ने काट लिया है।" चन्द लम्ह़ों में वज़ीरे ख़ास भी पहुंच गए, हाथों हाथ शाही त़बीब को त़लब कर लिया गया जिस ने बड़ी महारत से बादशाह का इ़लाज शुरूअ़ कर दिया। जैसे तैसे कर के बादशाह की जान तो बच गई लेकिन उसे कई रोज़ बिस्तरे अ़लालत पर गुज़ारना पड़े। जब त़बीअ़त ज़रा संभली और बादशाह दरबार में बैठा तो एक आंख वाले आदमी को दोबारा पेश किया गया ताकि उसे सज़ा सुनाई जाए क्यूं कि शिकायत करने वालों का कहना था कि अब इस के "मन्ह़ूस" होने का तजरिबा ख़ुद बादशाह सलामत कर चुके हैं। वोह शख़्स रो रो कर रह़्म की फ़रियाद करने लगा कि मुझे मेरे वत़न से न निकाला जाए। येह देख कर एक वज़ीर को उस पर रह़्म आ गया, उस ने बादशाह से बोलने की इजाज़त ली और कहने लगा : बादशाह सलामत! आप ने सुब्ह़ सुब्ह़ इस की सूरत देखी तो आप को बिच्छू ने काट लिया इस लिये येह मन्ह़ूस ठहरा लेकिन मुआ़फ़ कीजियेगा कि इस ने भी सुब्ह़ सवेरे आप का चेहरा देखा था जिस के बा'द से येह अब तक क़ैद में था और अब शायद इसे मुल्क बदरी (या'नी मुल्क छोड़ने) की सज़ा सुना दी जाए तो ज़रा ठन्डे दिल से ग़ौर कीजिये कि मन्ह़ूस कौन ? येह शख़्स या आप ? येह सुन कर बादशाह ला जवाब हो गया और एक आंख वाले काले आदमी को न सिर्फ़ आज़ाद कर दिया बल्कि ए'लान करवा दिया कि आइन्दा किसी ने इस को मन्ह़ूस कहा तो उसे सख़्त सज़ा दी जाएगी।[1]

[1]... बद शुगूनी, स. 7

क्या कोई शख़्स मन्हूस हो सकता है ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! किसी शख़्स, जगह, चीज़ या वक़्त को मन्हूस जानने का इस्लाम में कोई तसव्वुर नहीं, येह मह्ज़ वहमी ख़यालात होते हैं। आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह्मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से इसी नौइय्यत का सुवाल किया गया कि एक शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ मश्हूर है अगर सुब्ह को उस की मन्हूस सूरत देख ली जाए या कहीं काम को जाते हुए येह सामने आ जाए तो ज़रूर कुछ न कुछ दिक़्क़त और परेशानी उठानी पड़ेगी और चाहे कैसा ही यक़ीनी त़ौर पर काम हो जाने का वुसूक़ (ए'तिमाद और भरोसा) हो लेकिन उन का ख़याल है कि कुछ न कुछ ज़रूर रुकावट और परेशानी होगी चुनान्चे उन लोगों को उन के ख़याल के मुनासिब हर बार तजरिबा होता रहता है और वोह लोग बराबर इस अम्र (या'नी बात) का ख़याल रखते हैं कि अगर कहीं जाते हुए उस से सामना हो जाए तो अपने मकान पर वापस आ जाते हैं और थोड़ी देर बा'द येह मा'लूम कर के कि वोह मन्हूस सामने तो नहीं है ! अपने काम के लिये जाते हैं। अब सुवाल येह है कि उन लोगों का येह अ़क़ीदा और त़र्ज़े अ़मल कैसा है ? कोई क़बाहते शरइय्या तो नहीं ?[1]

आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने जवाब दिया : शरए मुत़ह्हर में इस की कुछ अस्ल नहीं, लोगों का वह्म सामने आता है। शरीअ़त में हुक्म है : اِذَا تَطَيَّرْتُمْ فَامْضُوْا या'नी जब कोई शुगूने बद गुमान में आए तो उस पर अ़मल न करो। वोह त़रीक़ा मह्ज़ हिन्दुवाना है, मुसल्मानों को ऐसी जगह चाहिये कि "اَللّٰهُمَّ لَا طَيْرَ اِلَّا طَيْرُكَ، وَلَا خَيْرَ اِلَّا خَيْرُكَ، وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ" (ऐ **अल्लाह** ! नहीं है कोई बुराई मगर तेरी त़रफ़ से और नहीं है कोई भलाई मगर तेरी त़रफ़ से और तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं) पढ़ ले और अपने रब पर भरोसा कर के अपने काम को चला जाए, हरगिज़ न रुके, न वापस आए। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم[2]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

1... बद शुगूनी, स. 8

2... फ़तावा रज़विय्या, 29/641 मुलख़्ख़सन

सबक़ नम्बर 12

मौज़ूआत

1	मदनी क़ाइदा : जज़्म व सुकून	2	अज़्कारे नमाज़ : सूरतुल फ़ातिहा
3	तफ़्सीरे क़ुरआन : तयम्मुम का बयान	4	नमाज़ के अह़काम : तयम्मुम के फ़राइज़ व त़रीक़ा
5	सुन्नतें व आदाब : जमाही के मदनी फूल	6	इस्लाह़े आ'माल : अच्छे व बुरे शुगून का बयान

(1) मदनी क़ाइदा ﴿जज़्म व सुकून﴾

- जैसा कि आप पीछे पढ़ चुके हैं इस अ़लामत को "ـْ" जज़्म कहते हैं। जिस ह़र्फ़ पर जज़्म हो उसे साकिन कहते हैं।
- जज़्म वाला ह़र्फ़ अपने से पहले वाले मुतह़र्रिक ह़र्फ़ से मिला कर पढ़ा जाता है।
- हम्ज़ए साकिना (اَءْ) को हमेशा झटका दे कर पढ़ें।
- इस सबक़ में हम्ज़ए साकिना की अदाएगी का ख़ास ख़याल रखें और मिलती जुलती आवाज़ वाले हुरूफ़ में वाज़ेह़ फ़र्क़ करें।

اُطْ	اِطْ	اَطْ	اُتْ	اِتْ	اَتْ
اُذْ	اِذْ	اَذْ	اُزْ	اِزْ	اَزْ
اُغْ	اِعْ	اَعْ	اُءْ	اِءْ	اَءْ
या साकिन से पहले पेश नहीं आता	اِیْ	اَیْ	اُشْ	اِشْ	اَشْ

(2) अज़्कारे नमाज़ «सूरतुल फ़ातिहा : आयत 1 ता 3»

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान, रह़मत वाला है।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۙ﴿۱﴾ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۙ﴿۲﴾ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ؕ﴿۳﴾

सब ता'रीफ़ें **अल्लाह** के लिये हैं जो तमाम जहान वालों का पालने वाला है। बहुत मेह्रबान रह़मत वाला, जज़ा के दिन का मालिक।

(3) तफ़्सीरे क़ुरआन «तयम्मुम का बयान»

وَ اِنۡ کُنۡتُمۡ مَّرۡضٰۤی اَوۡ عَلٰی سَفَرٍ اَوۡ جَآءَ اَحَدٌ مِّنۡکُمۡ مِّنَ الۡغَآئِطِ اَوۡ لٰمَسۡتُمُ النِّسَآءَ فَلَمۡ تَجِدُوۡا مَآءً فَتَیَمَّمُوۡا صَعِیۡدًا طَیِّبًا فَامۡسَحُوۡا بِوُجُوۡہِکُمۡ وَ اَیۡدِیۡکُمۡ ؕ (پ5،النسآء:43)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुम में से कोई क़ज़ाए ह़ाजत से आया हो या तुम ने औ़रतों से हम बिस्तरी की हो तो पानी न पाओ तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो तो अपने मुंह और हाथों का मस्ह़ कर लिया करो।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 2, सफ़ह़ा 239 पर है कि आयत में तीसरी बात जो इर्शाद फ़रमाई गई उस में तयम्मुम के हुक्म में तफ़्सील बयान कर दी गई जिस में येह भी दाख़िल है कि तयम्मुम की इजाज़त जिस त़रह़ बे ग़ुस्ल होने की सूरत में है इसी त़रह़ बे वुज़ू होने की सूरत में है। चुनान्चे फ़रमाया गया कि अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो और तुम्हें वुज़ू या ग़ुस्ल की ह़ाजत है या तुम बैतुल ख़ला से क़ज़ाए ह़ाजत से फ़ारिग़ हो कर आओ और तुम्हें वुज़ू की ह़ाजत हो या तुम ने औ़रतों से हम बिस्तरी की हो और तुम पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो गया हो तो इन तमाम सूरतों में अगर तुम पानी के इस्ति'माल पर क़ादिर न हो ख़्वाह पानी मौजूद न होने के बाइ़स या दूर होने के सबब या उस के ह़ासिल करने का सामान न होने के सबब या सांप, दरिन्दा, दुश्मन वग़ैरा के डर से तो तयम्मुम कर सकते हो। याद रहे कि जब औ़रत को हैज़ो निफ़ास से फ़ारिग़ होने के बा'द ग़ुस्ल की ह़ाजत हो और अगर उस वक़्त पानी पर क़ुदरत न पाए तो इस सूरत में इसे भी तयम्मुम की इजाज़त है जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में आया है।

आयते मुबारका के आख़िरी जुज़ का शाने नुज़ूल येह है कि ग़ज़्वए बनी मुस्तलक़ में जब लश्करे इस्लाम रात के वक़्त एक बयाबान में ठहरा जहां पानी न था और सुब्ह वहां से कूच करने का इरादा था, वहां उम्मुल मुअमिनीन हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا का हार गुम हो गया, उस की तलाश के लिये सय्यिदे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वहां क़ियाम फ़रमाया, सुब्ह हुई तो पानी न था। इस पर **अल्लाह** करीम ने तयम्मुम की आयत नाज़िल फ़रमाई। येह देख कर हज़रते उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने कहा कि "ऐ आले अबू बक्र ! येह तुम्हारी पहली ही बरकत नहीं है या'नी तुम्हारी बरकत से मुसल्मानों को बहुत आसानियां हुईं और बहुत फ़वाइद पहुंचे।" फिर जब ऊंट उठाया गया तो उस के नीचे हार मिल गया।[1]

हार गुम होने और रहमते दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के न बताने में बहुत सी हिक्मतें थीं। हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के हार की वज्ह से नबिय्ये रहमत صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वहां क़ियाम फ़रमाना हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की फ़ज़ीलतो मर्तबे को ज़ाहिर करता है और सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم के हार तलाश करने में इस बात की हिदायत है कि हुज़ूर ताजदारे अम्बिया صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुतह्हरात की ख़िदमत मोमिनीन की सआ़दत है, नीज़ इस वाक़िए से तयम्मुम का हुक्म भी मा'लूम हो गया जिस से क़ियामत तक मुसल्मान नफ़्अ़ उठाते रहेंगे।[2]

(4) नमाज़ के अह़काम «तयम्मुम के फ़राइज़ व त़रीक़ा»

तयम्मुम के तीन (3) फ़र्ज़ हैं : (1) निय्यत (2) सारे मुंह पर हाथ फेरना, (3) कोहनियों समेत दोनों हाथों का मस्ह करना।

तयम्मुम का त़रीक़ा : तयम्मुम करने के लिये सब से पहले तयम्मुम की निय्यत कीजिये (निय्यत दिल के इरादे का नाम है, ज़बान से भी कह लें तो बेहतर है। मसलन यूं कहिये : बे वुज़ूई या बे ग़ुस्ली या दोनों से पाकी हासिल करने और नमाज़ जाइज़ होने के लिये तयम्मुम करता हूं) "बिस्मिल्लाह" पढ़ कर दोनों हाथों की उंग्लियां कुशादा कर के किसी ऐसी पाक चीज़ पर जो ज़मीन की क़िस्म

1 ... بخاری، کتاب التیمم، باب التیمم، ص155، حدیث:334

2 ... तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह : 5, अन्निसाअ, तह़तल आयह : 43, 2/239, 240

(मसलन पथ्थर, चूना, ईंट, दीवार, मिट्टी वग़ैरा) से हो मार कर लौट लीजिये (या'नी आगे बढ़ाइये और पीछे लाइये)। और अगर ज़ियादा गर्द लग जाए तो झाड़ लीजिये और उस से सारे मुंह का इस त़रह़ मस्ह़ कीजिये कि कोई ह़िस्सा रह न जाए, अगर बाल बराबर भी कोई जगह रह गई तो तयम्मुम न होगा। फिर दूसरी बार इसी त़रह़ हाथ ज़मीन पर मार कर दोनों हाथों का नाख़ुनों से ले कर कोह्नियों समेत मस्ह़ कीजिये, इस का बेहतर त़रीक़ा येह है कि उलटे हाथ के अंगूठे के इ़लावा चार उंग्लियों का पेट सीधे हाथ की पुश्त पर रखिये और उंग्लियों के सिरों से कोह्नियों तक ले जाइये और फिर वहां से उलटे ही हाथ की हथेली से सीधे हाथ के पेट को मस करते हुए गिट्टे तक लाइये और उलटे अंगूठे के पेट से सीधे अंगूठे की पुश्त का मस्ह़ कीजिये। इसी त़रह़ सीधे हाथ से उलटे हाथ का मस्ह़ कीजिये।[1] और अगर एक दम पूरी हथेली और उंग्लियों से मस्ह़ कर लिया तब भी तयम्मुम हो गया, चाहे कोहनी से उंग्लियों की त़रफ़ लाए या उंग्लियों से कोहनी की त़रफ़ ले गए मगर सुन्नत के ख़िलाफ़ हुवा। तयम्मुम में सर और पाउं का मस्ह़ नहीं है।[2]

(5) सुन्नतें व आदाब ﴾जमाही के मदनी फूल﴿

﴾1﴿ ☞ ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** पाक को छींक पसन्द और जमाही ना पसन्द है।[3]

﴾2﴿ ☞ ह़दीसे पाक में है कि जब कोई जमाही लेता है तो शैत़ान हंसता है।[4]

﴾3﴿ ☞ जमाही शैत़ान की त़रफ़ से है, जहां तक हो सके इसे रोकना चाहिये।[5]

﴾4﴿ ☞ जमाही आने लगे तो बाएं हाथ की पुश्त मुंह पर रखनी चाहिये।

1 ...فتاوی تاتارخانیة، کتاب الطهارة، فصل فی التیمم، 360/1 ملتقطًا

2... नमाज़ के अह़काम, ग़ुस्ल का त़रीक़ा, स. 129

3 ...بخاری، کتاب الادب، باب اذا تثاوب فلیضع یده علی فیه، ص1540، حدیث:6226

4 ...بخاری، کتاب الادب، باب اذا تثاوب فلیضع یده علی فیه، ص1540، حدیث:6226

5 ...بخاری، کتاب الادب، باب اذا تثاوب فلیضع یده علی فیه، ص1540، حدیث:6226

(5) ☞ जमाही रोकने का मुजर्रब त़रीक़ा येह है कि दिल में ख़याल करे कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को जमाही नहीं आती थी ।[1]

(6) ☞ कुरआन शरीफ़ की तिलावत के दौरान जमाही आ जाए तो तिलावत मौक़ूफ़ (या'नी बन्द) कर दें क्यूं कि जमाही शैत़ानी असर है ।[2]

(7) ☞ जमाही में आवाज़ कहीं भी नहीं निकालनी चाहिये, अगर्चे मस्जिद से बाहर तन्हा हो क्यूं कि येह शैत़ान का क़हक़हा है ।

(8) ☞ जमाही जब आए ह़त्तल इम्कान मुंह बन्द रखें, मुंह खोलने से शैत़ान मुंह में थूक देता है । अगर यूं न रुके तो ऊपर के दांतों से नीचे का होंट दबा लें, अगर इस त़रह़ भी न रुके तो ह़त्तल इम्कान मुंह कम खोलें और उलटा हाथ उलटी त़रफ़ से मुंह पर रख लें ।[3]

(6) इस्लाहे़ आ'माल ﴾अच्छे व बुरे शुगून का बयान﴿

शुगून किसे कहते हैं ?

शुगून का मा'ना है फ़ाल लेना या'नी किसी चीज़, शख़्स, अ़मल, आवाज़ या वक़्त को अपने ह़क़ में अच्छा या बुरा समझना ।[4]

शुगून की क़िस्में

इस की बुन्यादी त़ौर पर दो क़िस्में हैं : (1) बुरा शुगून लेना (2) अच्छा शुगून लेना । ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन अह़मद अन्सारी कुरतुबी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه "तफ़्सीरे कुरतुबी" में नक़्ल करते हैं : अच्छा शुगून येह है कि जिस काम का इरादा किया हो उस के बारे में कोई कलाम सुन कर दलील पकड़ना, येह उस वक़्त है जब कलाम अच्छा हो, अगर बुरा हो तो बद शुगूनी है । शरीअ़त ने इस बात का हुक्म दिया है कि इन्सान अच्छा शुगून ले कर खुश हो और अपना काम खुशी खुशी पायए तक्मील तक पहुंचाए और जब बुरा कलाम सुने तो उस की त़रफ़ तवज्जोह न करे और न ही उस के सबब अपने काम से रुके ।[5]

1... बहारे शरीअ़त, 1/538, हिस्सा : 3 मुलख़्ख़सन
2... इस्लाम की बुन्यादी बातें, 2/35
3... ردالمحتار، كتاب الصلاة، باب مايفسد الصلاة وما يكره، 499/2
4... बद शुगूनी, स. 10
5... تفسیر قرطبی، پ26، الاحقاف، تحت الآية:4، 132/8

अच्छे व बुरे शुगून की मिसालें

अच्छे शुगून की मिसाल येह है कि हम किसी काम को जा रहे हों, किसी ने पुकारा : ''या रशीद (या'नी ऐ हिदायत याफ़्ता)'', ''या सईद (या'नी ऐ सआदत मन्द)'', ''ऐ नेक बख़्त'' हम ने ख़याल किया कि अच्छा नाम सुना है, اِنْ شَآءَالله काम्याबी होगी या किसी बुज़ुर्ग की ज़ियारत हो गई उसे अपने हक़ में अच्छा समझा कि अब اِنْ شَآءَالله मुझे अपने मक़्सद में काम्याबी मिलेगी जब कि बद शुगूनी की मिसाल येह है कि एक शख़्स सफ़र के इरादे से घर से निकला लेकिन रास्ते में काली बिल्ली रास्ता काट कर गुज़र गई, अब इस शख़्स ने येह यक़ीन कर लिया कि इस की नुहूसत की वज्ह से मुझे सफ़र में ज़रूर कोई नुक़्सान उठाना पड़ेगा और सफ़र करने से रुक गया तो समझ लीजिये कि वोह शख़्स बद शुगूनी में मुब्तला हो गया है। हमारे मुआशरे में जहालत की वज्ह से रवाज पाने वाली ख़राबियों में एक बद शुगूनी भी है जिस को बदफ़ाली भी कहा जाता है जब कि अ़रबी में इस को طَائِرٌ, طَيْرٌ और طِيَرَةٌ कहा जाता है, अ़रब लोग ताइर (या'नी परिन्दे) को उड़ा कर उस से फ़ाल लेते थे, परिन्दे के दाईं तरफ़ उड़ने से अच्छी फ़ाल लेते और बाईं तरफ़ उड़ने और कव्वों के काएं काएं करने से बद शुगूनी (बुरी फ़ाल) लेते, इस के बा'द मुत़्लक़न बद शुगूनी के लिये طَائِرٌ, طَيْرٌ और طِيَرَةٌ का लफ़्ज़ इस्ति'माल होने लगा।[1]

अ़रब लोग परिन्दों के नामों, आवाज़ों, रंगों और उन के उड़ने की सम्तों से फ़ाल लिया करते थे चुनान्चे उ़क़ाब (एक ताक़त वर शिकारी परिन्दा) से मुसीबत, कव्वे से सफ़र और हुदहुद (एक ख़ूब सूरत परिन्दा) से हिदायत की फ़ाल लेते इसी तरह अगर परिन्दे दाईं जानिब उड़ते तो अच्छा शुगून और बाईं जानिब उड़ते तो बद शुगूनी लिया करते थे।[2]

रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : اَلْعِيَافَةُ وَالطِّيَرَةُ وَالطَّرْقُ مِنَ الْجِبْتِ या'नी अच्छा या बुरा शुगून लेने के लिये परिन्दा उड़ाना, बद शुगूनी

1 ...تفسیر کبیر، پ9، الاعراف، تحت الآیۃ:131، 344/5

2 ...بریقۃ محمودیۃ شرح طریقۃ محمدیۃ، باب الخامس والعشرون، 258/3

लेना और तृर्क़ (या'नी कंकर फेंक कर या रेत में लकीर खींच कर फ़ाल निकालना) शैतानी कामों में से है।[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 13

मौज़ूआत

1	मदनी क़ाइदा : हुरूफ़े क़ल्क़ला	2	अज़्कारे नमाज़ : सूरतुल फ़ातिहा
3	तफ़्सीरे कुरआन : नमाज़ पढ़ने का हुक्म	4	नमाज़ के अह्काम : तयम्मुम के चन्द अहम मसाइल
5	सुन्नतें व आदाब : पानी पीने की सुन्नतें व आदाब	6	इस्लाहे आ'माल : इस्लाम में बद शुगूनी नहीं

(1) मदनी क़ाइदा «हुरूफ़े क़ल्क़ला»

- ق, ط, ب, ج, د इन पांच हुरूफ़ को (हुरूफ़े क़ल्क़ला) कहते हैं, इन का मज्मूआ قُطْبُ جَدٍّ है।
- क़ल्क़ला के मा'ना जुम्बिश व ह़रकत के हैं। इन हुरूफ़ को अदा करते वक़्त मख़रज में जुम्बिश सी हो जिस की वज्ह से आवाज़ लौटती हुई निकले।
- जब हुरूफ़े क़ल्क़ला साकिन हों तो उन में क़ल्क़ला ख़ूब ज़ाहिर होगा।
- इस सबक़ में हुरूफ़े क़ल्क़ला की अदाएगी का ख़ास ख़याल रखें और मिलती जुलती आवाज़ वाले हुरूफ़ में वाज़ेह फ़र्क़ करें।

اُدْ	اِدْ	اَدْ	اُطْ	اِطْ	اَطْ
اُبْ	اِبْ	اَبْ	اُقْ	اِقْ	اَقْ
زَجْرَةٌ	قَدْ	ذُقْ	اُجْ	اِجْ	اَجْ

1 ...ابو داود، کتاب الطب، باب فی الخط و زجر الطیر، ص615، حدیث: 3907

تَجْرِیْ	نُطْفَةٍ	مُدْهِنُوْنَ	اَبْوَابًا	فَافْرُقْ	يُقْرِضْ
اِقْرَاْ	يَبْحَثُ	اِذْهَبْ	اُشْدُدْ	اِرْكَبْ	يَسْتَبْدِلُ
فَارْغَبْ	لَمْ يَلِدْ	لَمْ يُوْلَدْ	كَسَبْ	خَلَقْنَا	عَدْنٍ

(2) अज़्कारे नमाज़ «सूरतुल फ़ातिहा : आयत 1 ता 5»

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान, रह्मत वाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۱﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ﴿۲﴾ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ﴿۳﴾
اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ﴿۴﴾ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ﴿۵﴾

सब ता'रीफ़ें **अल्लाह** के लिये हैं जो तमाम जहान वालों का पालने वाला है। बहुत मेह्रबान रह्मत वाला, जज़ा के दिन का मालिक। हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं। हमें सीधे रास्ते पर चला।

(3) तफ़्सीरे क़ुरआन «नमाज़ पढ़ने का हुक्म»

وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ؕ
اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ
(پ12،هود:114)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और दिन के दोनों कनारों और रात के कुछ हिस्से में नमाज़ क़ाइम रखो। बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 4, सफ़्हा 511 पर है कि इस आयत में दिन के दो कनारों से सुब्ह़ और शाम मुराद हैं, ज़वाल से पहले का वक़्त सुब्ह़ में और ज़वाल के बा'द का वक़्त शाम में दाख़िल है। सुब्ह़ की नमाज़ तो फ़ज्र है जब कि शाम की नमाज़ें ज़ोहर व अ़स्र हैं और रात के हिस्सों की नमाज़ें मग़रिब व इशा हैं। नेकियों से मुराद या येही पांच वक़्त नमाज़ें हैं जो आयत में

ज़िक्र हुई या इस से मुराद मुत्लक़न नेक काम हैं या इस से ''سُبۡحَانَ اللّٰہِ وَ الۡحَمۡدُ لِلّٰہِ وَلَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَ اللّٰہُ اَکۡبَرُ'' पढ़ना मुराद है ।[1]

ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि एक शख़्स ने दरबारे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! उस आदमी का क्या हुक्म है जो एक अजनबी औ़रत से अ़लाह़दगी में जिमाअ़ के सिवा सब कुछ करता है ? इस पर येह आयत नाज़िल हुई, फिर आप صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे वुज़ू कर के नमाज़ पढ़ने का हुक्म इर्शाद फ़रमाया । ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या येह इस शख़्स के साथ ख़ास है या तमाम मोमिनों के लिये है ? हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : नहीं, बल्कि येह तमाम मोमिनों के लिये आ़म है ।[2]

नेकियां सग़ीरा गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा होती हैं

इस आयत से मा'लूम हुवा कि नेकियां सग़ीरा गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा होती हैं ख़्वाह वोह नेकियां नमाज़ हों या सदक़ा या ज़िक्रो इस्तिग़फ़ार या और कुछ ।[3] अह़ादीस में मुतअ़द्दद ऐसे आ'माल का बयान मौजूद है जो सग़ीरा गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा बनते हैं, यहां उन में से एक ह़दीसे पाक मुलाह़ज़ा कीजिये :

ह़ज़रत सिख़्बरह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने इ़ल्म तलाश किया तो येह तलाश उस के गुज़श्ता गुनाहों का कफ़्फ़ारा होगी ।''[4]

(4) नमाज़ के अह़काम ﴾तयम्मुम के चन्द अहम मसाइल﴿

(1) ☞ जो चीज़ आग से जल कर राख होती है न पिघल्ती है न नर्म होती है वोह ज़मीन की जिन्स (या'नी क़िस्म) से होती है, उस से तयम्मुम जाइज़ है । जैसे रेता, चूना, सुरमा, गन्धक, पथ्थर वग़ैरा चाहे इन पर गुबार (मिट्टी) हो या न हो ।[5]

1 ...تفسیر مدارك، پ12، هود، تحت الآیة:114، 89/2

2 ...ترمذی، کتاب التفسیر، باب و من سورۃ هود، ص720، حدیث:3113

3 ...تفسیر خازن، پ12، هود، تحت الآیة:114، 507/2

4 ...ترمذی، کتاب العلم، باب فضل طلب العلم، ص624، حدیث:2648

5 ...بحر الرائق، کتاب الطهارۃ، 257/1

(2) ☞ पक्की ईंट, चीनी या मिट्टी के बरतन से तयम्मुम जाइज़ है। हां अगर इन पर किसी ऐसी चीज़ की तह हो या पॉलिश जिर्मदार हो जो ज़मीन की जिन्स से नहीं मसलन कांच का जिर्म हो तयम्मुम जाइज़ नहीं।[1]

(3) ☞ जिस मिट्टी पथ्थर वग़ैरा से तयम्मुम किया जाए उस का पाक होना ज़रूरी है या'नी न उस पर नजासत का असर हो न येह हो कि सिर्फ़ खुश्क होने से नजासत का असर ख़त्म हो गया हो।[2] ज़मीन दीवार और वोह गर्द (मिट्टी) जो ज़मीन पर पड़ी रहती है अगर नापाक हो जाए फिर धूप या हवा से खुश्क हो जाए और नजासत का असर ख़त्म हो जाए तो पाक है। उस पर नमाज़ पढ़ना जाइज़ है, मगर उस से तयम्मुम जाइज़ नहीं हो सकता। येह शक कि कभी नजिस हुई होगी फ़ुज़ूल है इस का ए'तिबार नहीं है।

(4) ☞ अगर किसी लकड़ी, कपड़े या दरी वग़ैरा पर इतनी गर्द (मिट्टी) है कि हाथ मारने से उंग्लियों का निशान बन जाए तो उस से तयम्मुम जाइज़ है।[3]

(5) ☞ जिस का वुज़ू न हो या नहाने की ज़रूरत हो और पानी मौजूद न हो वोह वुज़ू और गुस्ल की जगह तयम्मुम करे।[4]

(6) ☞ ऐसी बीमारी हो कि वुज़ू या गुस्ल करने से उस के ज़ियादा हो जाने या देर से ठीक होने का सहीह़ अन्देशा हो या खुद अपना तजरिबा हो कि जब भी गुस्ल या वुज़ू किया बीमारी बढ़ गई। तो इन सूरतों में तयम्मुम कर सकते हैं।[5]

(7) ☞ जहां चारों त़रफ़ एक एक मील तक पानी का पता न हो वहां भी तयम्मुम कर सकते हैं।[6]

1 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الطھارۃ، الباب الرابع فی التیمم، الفصل الاول، 30/1

2 ...درمختار، کتاب الطھارۃ، باب التیمم، ص36

3 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الطھارۃ، الباب الرابع فی التیمم، الفصل الاول، 30/1

4 ...بحر الرائق، کتاب الطھارۃ، 255/1

5 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الطھارۃ، باب التیمم، 441/1

6 ...بحر الرائق، کتاب الطھارۃ، 242/1

(8) ☞ मस्जिद में सो रहा था कि गुस्ल फ़र्ज़ हो गया तो जहां था वहीं फ़ौरन तयम्मुम कर ले येही ज़ियादा बेहतर है। फिर बाहर निकल आए, ताख़ीर करना ह़राम है।[1]

(5) सुन्नतें व आदाब ﴾पानी पीने की सुन्नतें व आदाब﴿

(1) ☞ पानी बैठ कर, उजाले में देख कर, सीधे हाथ से बिस्मिल्लाह पढ़ कर इस त़रह़ पियें कि हर मरतबा गिलास को मुंह से हटा कर सांस लें। पहली और दूसरी बार एक एक घूंट पियें और तीसरी सांस में जितना चाहें पियें। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऊंट की त़रह़ एक ही घूंट में न पी जाया करो बल्कि दो या तीन बार पिया करो और जब पीने लगो तो بِسۡمِ اللّٰہ पढ़ा करो और जब पी चुको तो اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ कहा करो।"[2]

(2) ☞ ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से मरवी है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पीने में तीन बार सांस लेते थे और फ़रमाते थे : "इस त़रह़ पीने में ज़ियादा सैराबी होती है और सिह़ह़त के लिये मुफ़ीद व ख़ुश गवार है।"[3]

(3) ☞ ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से रिवायत है कि **अल्लाह** पाक के प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बरतन में सांस लेने और फूंकने से मन्अ़ फ़रमाया है।[4]

(4) ☞ ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खड़े हो कर पानी पीने से मन्अ़ फ़रमाया है।[5]

(6) इस्लाह़े आ'माल ﴾इस्लाम में बद शुगूनी नहीं﴿

किसी शख़्स या चीज़ को मन्ह़ूस क़रार देना मुसल्मानों का नहीं बल्कि येह तो ग़ैर मुस्लिमों का पुराना त़रीक़ा है। क़ुरआने करीम, पारह 9, सूरतुल आ'राफ़ में है :

1... फ़तावा रज़विय्या, 3/479 मुलख़्ख़सन

2... ترمذی، کتاب الاشربۃ، باب ماجاء فی التنفس فی الاناء، ص464، حدیث: 1885

3... مسلم، کتاب الاشربۃ، باب کراھۃ التنفس فی نفس الاناء، ص805، حدیث: 2028

4... ابو داود، کتاب الاشربۃ، باب فی النفخ فی الشرب و التنفس فیہ، ص590، حدیث: 3728

5... مسلم، کتاب الاشربۃ، باب کراھیۃ الشرب قائمًا، ص804، حدیث: 2024

فَاِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَ اِنْ تُصِبْهُمْ سَیِّئَةٌ یَّطَّیَّرُوْا بِمُوْسٰى وَ مَنْ مَّعَهٗ ؕ اَلَاۤ اِنَّمَا طٰٓىٕرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَ لٰـكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۱﴾ (پ9، الاعراف:131)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो जब उन्हें भलाई मिलती तो कहते येह हमारे लिये है और जब बुराई पहुंचती तो उसे मूसा और उन के साथियों की नुहूसत क़रार देते। सुन लो ! उन की नुहूसत **अल्लाह** ही के पास है लेकिन उन में अक्सर नहीं जानते।

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस आयत के तहत लिखते हैं : जब फ़िरऔनियों पर कोई मुसीबत (क़हत साली वग़ैरा) आती थी तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام और उन के साथी मोमिनीन से बद शुगूनी लेते थे, कहते थे कि जब से येह लोग हमारे मुल्क में ज़ाहिर हुए हैं तब से हम पर मुसीबतें बलाएं आने लगीं। (मुफ़्ती साहिब मज़ीद लिखते हैं :) इन्सान मुसीबतों, आफ़तों में फंस कर तौबा कर लेता है। मगर वोह लोग ऐसे सरकश थे कि इन सब से उन की आंखें न खुलीं, बल्कि उन का कुफ़्रो सरकशी और ज़ियादा हो गई कि जब कभी हम उन को आराम देते हैं, चीज़ों की कसरत वग़ैरा तो वोह कहते कि येह आरामो राहत हमारी अपनी चीज़ें हैं, हम इस के मुस्तहिक़ हैं नीज़ येह आराम हमारी अपनी कोशिशों से हैं।[1]

हज़रते सालेह عَلَيْهِ السَّلَام को क़ौमे समूद की तरफ़ मब्ऊस किया गया कि उन्हें एक रब की इबादत की तरफ़ बुलाएं। जब आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उन्हें इस की दा'वत पेश की तो एक गुरौह आप पर ईमान ले आया जब कि दूसरा गुरौह अपने कुफ़्र पर क़ाइम रहा और हज़रते सालेह عَلَيْهِ السَّلَام को चेलेन्ज देने लगा कि ऐ सालेह ! जिस अज़ाब का तुम वा'दा देते हो उस को लाओ अगर रसूलों में से हो ! जवाबन आप عَلَيْهِ السَّلَام उन को समझाते : तुम आफ़ियत की जगह मुसीबत व अज़ाब क्यूं मांगते हो, अज़ाब नाज़िल होने से पहले कुफ़्र से तौबा कर के ईमान ला कर **अल्लाह** पाक से बख़्शिश क्यूं नहीं मांगते, शायद तुम पर रहम हो और दुन्या में अज़ाब न किया जाए मगर क़ौम ने न सुना। इस के बाइस बारिश रुक गई, क़हत हो गया, लोग भूके मरने लगे। इस को उन्हों ने हज़रते

1... तफ़्सीरे नईमी, पारह : 9, अल आ'राफ़, तहतल आयह : 131, 9/129

सालेह عَلَيْهِ السَّلَام की तशरीफ़ आवरी की त़रफ़ मन्सूब किया और आप की आमद को बद शुगूनी समझा और बोले : हम ने बुरा शुगून लिया तुम से और तुम्हारे साथियों से। ह़ज़रते सालेह عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : तुम्हारी बद शुगूनी **अल्लाह** के पास है बल्कि तुम लोग फ़ित्ने में पड़े हो या'नी आज़्माइश में डाले गए या अपने दीन के बाइ़स अ़ज़ाब में मुब्तला हो।[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 14

मौज़ूआ़त

1	मदनी क़ाइ़दा : दोहराई सानी	2	अज़्कारे नमाज़ : सूरतुल फ़ातिह़ा
3	तफ़्सीरे क़ुरआन : नमाज़ों के अवक़ात	4	नमाज़ के अह़काम : नमाज़ की शराइत़
5	सुन्नतें व आदाब : लिबास पहनने की सुन्नतें व आदाब	6	इस्लाहे़ आ'माल : कीने का बयान

(1) मदनी क़ाइ़दा ﴾दोहराई सानी﴿

- मदनी क़ाइ़दे के इन अस्बाक़ (ह़ुरूफ़े मद्दा, ह़ुरूफ़े लीन, खड़ी ह़रकात, सुकून, ह़ुरूफ़े क़ल्क़ला) की दोहराई की जाएगी।
- इस सबक़ को हिज्जे और रवां दोनों त़रीक़ों से पढ़ें।
- इन तमाम क़वाइ़द की अदाएगी और पहचान की पुख़्तगी के साथ साथ सिह़ह़ते लफ़्ज़ी का ख़ास ख़याल रखें बिल ख़ुसूस ह़ुरूफ़े मुस्ता'लिया।
- हिज्जे करते वक़्त इस बात का ख़याल रखें कि हर ह़र्फ़ को पिछले ह़र्फ़ से मिलाते जाएं। जैसे مَوْضُوْعَةٌ के हिज्जे इस त़रह़ करें : मीम वाव ज़बर مَوْ, द़ाद वाव पेश ضُوْ = مَوْضُوْ, ऐन ज़बर عَ = مَوْضُوْعَ, ता दो पेश ةٌ = مَوْضُوْعَةٌ

[1]... तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पारह : 19, अन्नम्ल, तह़तल आयह : 45, 47

قَالَ	صِرَاطَ	هٰذَا	شَكُوْرًا	غَفُوْرًا	دَاوٗدَ
لَوْحٍ	حَوْلٍ	دِيْنٌ	بَشِيْرٌ	قَوْمِهٖ	هَدَيْنَا
زَاهِدِيْنَ	رَاكِعُوْنَ	عِيْسٰى	مُوْسٰى	صُدُوْرِ	اٰوٰى
يَوْمَئِذٍ	مَوْعِدُهٗ	اَرَءَيْتَ	اَفَرَءَيْتَ	مَوْعِظَةٌ	مَوْءٗدَةٌ
يَدَيْهِ	حَيْثُ	غَيْبُ	سَمٰوٰتٍ	كَلِمٰتٍ	سَلٰمٌ
حُشِرَتْ	نُشِرَتْ	اَحْضَرَتْ	طُمِسَتْ	يُظْلَمُوْنَ	فَضْلِكَ
مُؤْصَدَةٌ	لَقَدْ	وَقَبْ	قَدْحًا	مَطْلَعٌ	مُقْتَحِمٌ
اَقْلَمُ	اَجْمَعِيْنَ	اَبْتَرُ	اِقْتَرَبَ	يَجْعَلُ	يَدْعُ

(2) अज़्कारे नमाज़ «सूरतुल फ़ातिह़ा : आयत 1 ता 7»

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान, रह़मत वाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝٢ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝٣
اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝٤ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝٥ صِرَاطَ
الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝٧

सब ता'रीफ़ें **अल्लाह** के लिये हैं जो तमाम जहान वालों का पालने वाला है। बहुत मेहरबान रह़मत वाला। जज़ा के दिन का मालिक। हम तेरी ही इ़बादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं। हमें सीधे रास्ते पर चला। उन लोगों का रास्ता जिन पर तू ने एह़सान किया न कि उन का रास्ता जिन पर ग़ज़ब हुवा और न बहके हुओं का।

(3) तफ़्सीरे कुरआन ﴾नमाज़ों के अवक़ात﴿

وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى ﴿۱۳۰﴾

(پ16، طٰه:130)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और सूरज के तुलूअ़ होने से पहले और उस के गुरूब होने से पहले अपने रब की ह़म्द के साथ उस की पाकी बयान करते रहो और रात की कुछ घड़ियों में और दिन के कनारों पर (भी **अल्लाह** की) पाकी बयान करो, इस उम्मीद पर कि तुम राज़ी हो जाओ।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 6, सफ़्ह़ा 267 पर इस आयते मुबारका के तह़्त मज़्कूर है कि सूरज तुलूअ़ होने से पहले, गुरूब होने से पहले, रात की कुछ घड़ियों में और दिन के कनारों पर ह़म्द के साथ **अल्लाह** की पाकी बयान करने का हुक्म दिया गया, सूरज तुलूअ़ होने से पहले पाकी बयान करने से मुराद नमाज़े फ़ज्र अदा करना है। सूरज गुरूब होने से पहले पाकी बयान करने से मुराद ज़ोहर व अ़स्र की नमाज़ें अदा करना हैं जो कि दिन के दूसरे निस्फ़ में सूरज के ज़वाल और गुरूब के दरमियान वाक़ेअ़ हैं। रात की कुछ घड़ियों में पाकी बयान करने से मग़रिब और इ़शा की नमाज़ें पढ़ना मुराद है। दिन के कनारों में पाकी बयान करने से फ़ज्र और मग़रिब की नमाज़ें मुराद हैं और यहां ताकीद के तौ़र पर इन नमाज़ों की तकरार फ़रमाई गई है।[1]

आयते मुबारका के इस ह़िस्से : "इस उम्मीद पर कि तुम राज़ी हो जाओ" की तफ़्सीर में है : या'नी ऐ ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप इन अवक़ात में इस उम्मीद पर **अल्लाह** पाक की तस्बीह़ बयान करते रहें कि आप **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो अ़ता और उस के इन्आ़मो इक्राम से राज़ी हों, आप को उम्मत के ह़क़ में शफ़ीअ़ बना कर आप की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाए और आप को राज़ी करे।[2]

(4) नमाज़ के अह़काम ﴾नमाज़ की शराइत़﴿

नमाज़ की छे[6] शराइत़ हैं : (1) त़हारत (2) सत्रे औ़रत (3) इस्तिक़्बाले क़िब्ला (4) वक़्त (5) निय्यत (6) तक्बीरे तह़रीमा

1 ... تفسیر مدارک، پ16، طٰه، تحت الآیۃ:130، 2/391

2 ... تفسیر خازن، پ16، طٰه، تحت الآیۃ:130، 3/218

त़हारत

नमाज़ की पहली शर्त़ है त़हारत। इस से मुराद येह है कि नमाज़ी का बदन, लिबास और जिस जगह नमाज़ पढ़ रहा है उस जगह का हर क़िस्म की नजासत (नापाकी) से पाक होना ज़रूरी है।[1]

सत्रे औ़रत

दूसरी शर्त़ सत्रे औ़रत है या'नी मर्द के लिये नाफ़ के नीचे से ले कर घुटनों समेत बदन का सारा ह़िस्सा छुपा हुवा होना ज़रूरी है। जब कि औ़रत के लिये इन पांच आ'ज़ा मुंह की टिक्ली, दोनों हथेलियां और दोनों पाउं के तल्वों के इ़लावा सारा जिस्म छुपाना लाज़िमी है।[2] अगर ऐसा बारीक कपड़ा पहना जिस से बदन का वोह ह़िस्सा जिस का नमाज़ में छुपाना फ़र्ज़ है नज़र आए या जिल्द का रंग ज़ाहिर हो नमाज़ न होगी।[3] आज कल बारीक कपड़ों का रवाज बढ़ता जा रहा है। ऐसे बारीक कपड़े का पाजामा पहनना जिस से रान या सत्र का कोई ह़िस्सा चमक्ता हो इ़लावा नमाज़ के भी पहनना ह़राम है।[4] मोटा कपड़ा जिस से बदन का रंग ज़ाहिर न होता हो मगर बदन से ऐसा चिपका हुवा हो कि देखने से उ़ज़्व की हैअत (शक्ल) मा'लूम होती हो। ऐसे कपड़े से अगर्चे नमाज़ हो जाएगी मगर उस उ़ज़्व की त़रफ़ दूसरों को निगाह करना जाइज़ नहीं।[5] ऐसा लिबास लोगों के सामने पहनना मन्अ़ है और औ़रतों के लिये और सख़्ती से मन्अ़ है।[6]

(5) सुन्नतें व आदाब ﴾लिबास पहनने की सुन्नतें व आदाब﴿

अल्लाह पाक का येह एह़साने अ़ज़ीम है कि उस ने हमें लिबास की दौलत अ़त़ा की। लिबास से हम सर्दी, गर्मी के असरात से अपनी ह़िफ़ाज़त कर सकते हैं, येह लिबास हमारी ज़ीनत

1 ...نور الایضاح مع مراقی الفلاح، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ، ص123

2 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ، ص58

3 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الطھارۃ، الباب الرابع فی التیمم، الفصل الاول، 30/1

4... बहारे शरीअ़त, 1/480, ह़िस्सा : 3

5 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ، مطلب فی النظر إلی وجہ الأمرد، 103/2

6... बहारे शरीअ़त, 1/480, ह़िस्सा : 3

का सबब भी है और इ़ज़्ज़त का भी सबब है। हर क़ौम का जुदा जुदा लिबास होता है, मगर मुसल्मान का लिबास सब से मुमताज़ है। लिबास की चन्द सुन्नतें और आदाब मुलाह़ज़ा हों :

(1) ☞ सफ़ेद लिबास हर लिबास से बेहतर है और सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस को पसन्द फ़रमाया है। ह़ज़रते समुरह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि हु़ज़ूरे पाक صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सफ़ेद लिबास पहनो क्यूं कि येह ज़ियादा साफ़ और पाकीज़ा है और अपने मुर्दों को भी इसी में कफ़्नाओ।"[1]

(2) ☞ जब कपड़ा पहनने लगें तो येह दुआ़ पढ़ें, अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे : "اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ کَسَانِیْ ھٰذَا وَرَزَقَنِیْہِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّۃٍ" **तरजमा : अल्लाह** पाक का शुक्र है जिस ने मुझे येह पहनाया और बिग़ैर मेरी कुव्वतो त़ाक़त के मुझे येह अ़त़ा किया।[2]

(3) ☞ पहनते वक़्त सीधी त़रफ़ से शुरूअ़ करें मसलन जब कुरता पहनें तो पहले सीधी आस्तीन में सीधा हाथ दाख़िल करें फिर उलटी में, इसी त़रह़ पाजामा या शल्वार में पहले सीधे पाइंचे में सीधा पाउं दाख़िल करें और जब उतारने लगें तो इस के बर अ़क्स करें या'नी उलटी त़रफ़ से शुरूअ़ करें। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब कुरता पहनते तो दाह्नी त़रफ़ से शुरूअ़ फ़रमाते।[3]

(4) ☞ पहले कुरता पहनें फिर पाजामा।

(5) ☞ इ़मामा बांधने की आ़दत डालिये कि ह़ज़रते उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि **अल्लाह** पाक के प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इ़मामा ज़रूर बांधा करो कि येह फ़िरिश्तों का निशान है और इस (के शम्ले) को पीठ के पीछे लटका लो।"[4]

1 ... ترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی لبس البیاض... الخ، ص656، حدیث:2810

2 ... مستدرک، کتاب اللباس، باب الدعاء عند فراغ الطعام، 271/5، حدیث:7486

3 ... ابو داود، کتاب اللباس، باب ماجاء فی الانتعال، ص650، حدیث:4141

4 ... شعب الایمان، باب فی الملابس والاوانی، 176/5، حدیث:6262

(6) इस्लाहे आ'माल ﴾कीने का बयान﴿

कीना किसे कहते हैं ?

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه कीने की ता'रीफ़ करते हुए लिखते हैं : कीना येह है कि इन्सान अपने दिल में किसी को बोझ जाने, उस से दुश्मनी व बुग़्ज़ रखे, नफ़रत करे और येह कैफ़िय्यत हमेशा हमेशा बाक़ी रहे[1] मसलन कोई शख़्स ऐसा है जिस का ख़याल आते ही आप को अपने दिल में बोझ सा मह़सूस होता हो, नफ़रत की एक लहर दिलो दिमाग़ में दौड़ जाती है, वोह नज़र आ जाए तो मिलने से कतराते हैं और ज़ुबान, हाथ या किसी भी त़रह़ से उसे नुक़्सान पहुंचाने का मौक़अ़ मिले तो पीछे नहीं रहते तो समझ लीजिये कि आप उस शख़्स से कीना रखते हैं और अगर इन में से कोई बात भी नहीं बल्कि वैसे ही किसी से मिलने को जी नहीं चाहता तो येह कीना नहीं कहलाएगा।

कीने का शरई हुक्म

मुसल्मान से बिला वज्हे शरई कीना व बुग़्ज़ रखना ह़राम है।[2] या'नी किसी ने हम पर न तो ज़ुल्म किया और न ही हमारी जानो माल वग़ैरा में कोई ह़क़ तलफ़ी की फिर भी हम उस के लिये दिल में कीना रखें तो येह ना जाइज़ व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है और अगर किसी ने हम पर कोई ज़ुल्म किया हो या हमारा कोई ह़क़ तलफ़ किया हो जिस की वज्ह से हम उस से दिल में कीना रखें तो येह ह़राम नहीं है। लेकिन मुआ़फ़ कर देना अफ़्ज़ल है। और अगर मुआ़फ़ करने की सूरत में ख़दशा हो कि उस शख़्स को मज़ीद जुरअत मिलेगी और वोह हम पर या किसी और पर ज़ियादा ज़ुल्म ढाएगा तो ऐसी सूरत में बदला लेना अफ़्ज़ल है।[3]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1... احیاء العلوم، کتاب ذم الغضب والحقد والحسد، 223/3

2... फ़तावा रज़विय्या, 6/526

3... الطریقۃ المحمدیۃ مع الحدیقۃ الندیۃ، 86/3

सबक़ नम्बर 15

मौज़ूआत

1	मदनी क़ाइदा : तश्दीद	2	अज़्कारे नमाज़ : सूरतुल इख़्लास
3	तफ़्सीरे क़ुरआन : तहज्जुद के फ़ज़ाइल	4	नमाज़ के अह़काम : नमाज़ की शराइत़
5	सुन्नतें व आदाब : जूता पहनने की सुन्नतें व आदाब	6	इस्लाहे़ आ'माल : कीने के नुक़्सानात

(1) मदनी क़ाइदा ﴾तश्दीद﴿

- तीन दन्दान "ـّـ" वाली शक्ल को तश्दीद कहते हैं। जिस ह़र्फ़ पर तश्दीद हो उसे मुशद्दद कहते हैं।
- मुशद्दद ह़र्फ़ को दो मरतबा पढ़ें, एक मरतबा अपने से पहले वाले मुतह़र्रिक ह़र्फ़ से मिला कर और दूसरी मरतबा ख़ुद अपनी ह़रकत के मुत़ाबिक़ ज़रा रुक कर।
- नून मुशद्दद और मीम मुशद्दद में हमेशा ग़ुन्ना होता है। ग़ुन्ने की मिक़्दार एक अलिफ़ के बराबर है। और ग़ुन्ने का मा'ना नाक में आवाज़ ले जाना है।
- जब ह़ुरूफ़े क़ल्क़ला मुशद्दद हो तो उन्हें जमाव के साथ अदा करें।
- पहला ह़र्फ़ मुतह़र्रिक दूसरा साकिन और तीसरा मुशद्दद हो तो अक्सर मरतबा साकिन ह़र्फ़ को छोड़ देंगे और मुतह़र्रिक ह़र्फ़ को मुशद्दद ह़र्फ़ से मिला कर पढ़ेंगे। जैसे عَبَدْتُّمْ को عَبَتُّمْ पढ़ेंगे।
- इस सबक़ में तश्दीद की मश्क़ के साथ साथ मिलती जुलती आवाज़ वाले ह़ुरूफ़ में वाज़ेह़ फ़र्क़ करें।

اُطَّ	اِطَّ	اَطَّ	اُتَّ	اِتَّ	اَتَّ
اُذَّ	اِذَّ	اَذَّ	اُزَّ	اِزَّ	اَزَّ

اُظَّ	اِظَّ	اَظَّ

وَالتِّيْنِ	حَبَّبَ	وَلَمَّا	ثُمَّ	مِنِّىْ	مِنَّا
صَدَّقَ	مُسَخَّرَاتٍ	فِى الْحَجِّ	ثَجَّاجًا	اَلثَّاقِبُ	بِالتَّقْوٰى
وَالطَّيْرِ	وَالطُّوْرِ	وَالصّٰلِحِيْنَ	فَسَنُيَسِّرُهٗ	اَلرَّحْمٰنُ	مِنَ الدَّمْعِ
عِلِّيُّوْنَ	يَسَّمَّعُوْنَ	عَلَى النَّبِيِّ	مُسَمًّى	فَاُمُّهٗ	يُوَفَّ
اِذْذَّهَبَ	قَدْدَّخَلُوْا	اِذْظَّلَمُوْا	عَبَدْتُّمْ	قَدْتَّبَيَّنَ	نَخْلُقْكُّمْ
رَبُّ السَّمٰوٰتِ		يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ		مَدَّ الظِّلَّ	اِنَّ الظَّنَّ
مُدَّثِّرُ	مُطَهَّرَةً	حُقَّتْ	وَالضُّحٰى	بَسَطْتَّ	اَحَطْتُّ

(2) अज़्कारे नमाज़ ﴾सूरतुल इख़्लास : आयत 1 ता 2﴿

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान, रह़मत वाला है।

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾

तुम फ़रमाओ : वोह **अल्लाह** एक है। **अल्लाह** बे नियाज़ है।

(3) तफ़्सीरे कुरआन ﴾तहज्जुद के फ़ज़ाइल﴿

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰۤى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿۷۹﴾

(پ15، بنی اسرآئیل:79)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और रात के कुछ ह़िस्से में तहज्जुद पढ़ो येह ख़ास तुम्हारे लिये ज़ियादा है। क़रीब है कि आप का रब आप को ऐसे मक़ाम पर फ़ाइज़ फ़रमाएगा कि जहां सब तुम्हारी ह़म्द करें।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 5, सफ़ह़ा 497 पर है कि नमाज़े तहज्जुद सरकारे दो

आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर फ़र्ज़ थी, जुम्हूर का येही क़ौल है जब कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के लिये येह नमाज़ सुन्नत है।[1]

तहज्जुद के चार हुरूफ़ की निस्बत से 4 फ़ज़ाइल

(1) ☞ ह़ज़रते अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "रात में क़ियाम को अपने ऊपर लाज़िम कर लो कि येह अगले नेक लोगों का त़रीक़ा है और तुम्हारे रब की त़रफ़ क़ुर्बत का ज़रीआ़ और गुनाहों को मिटाने वाला और गुनाह से रोकने वाला है।"[2]

(2) ☞ ह़ज़रते अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन लोग एक मैदान में जम्अ़ किये जाएंगे, उस वक़्त मुनादी पुकारेगा : कहां हैं वोह जिन की करवटें ख़्वाब गाहों से जुदा होती थीं ? वोह लोग खड़े होंगे और थोड़े होंगे येह जन्नत में बिग़ैर ह़िसाब दाख़िल होंगे फिर और लोगों के लिये ह़िसाब का हुक्म होगा।"[3]

(3) ☞ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से रिवायत है, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जन्नत में एक बालाख़ाना है कि बाहर का अन्दर से दिखाई देता है और अन्दर का बाहर से।" ह़ज़रते अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह किस के लिये है ? इर्शाद फ़रमाया : "उस के लिये जो अच्छी बात करे और खाना खिलाए और रात में क़ियाम करे जब लोग सोते हों।"[4]

(4) ☞ ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स रात में बेदार हो और अपने अहले ख़ाना को जगाए फिर दोनों दो दो रक्अ़त पढ़ें तो कसरत से याद करने वालों में लिखे जाएंगे।"[5]

1 ...تفسیر خازن، پ15، الاسراء، تحت الآیۃ:79، 140/3
2 ...ترمذی، کتاب الدعوات، باب فی دعاء النبی صلی اللہ علیہ وسلم، ص811، حدیث:3549
3 ...شعب الایمان، باب تحسین الصلاۃ والاکثار منها لیلا ونہارا، 169/3، حدیث:3244
4 ...مستدرک، کتاب صلاۃ التطوع، صلاۃ الحاجۃ، 631/1، حدیث:1240
5 ...مستدرک، کتاب صلاۃ التطوع، تودیع المنزل برکعتین، 624/1، حدیث:1230

(4) नमाज़ के अह़काम ﴾नमाज़ की शराइत़﴿

इस्तिक़्बाले क़िब्ला

नमाज़ की तीसरी शर्त़ इस्तिक़्बाले क़िब्ला है या'नी नमाज़ में क़िब्ले की त़रफ़ मुंह करना। इस्तिक़्बाले क़िब्ला के ह़वाले से चन्द ज़रूरी मसाइल :

﴾1﴿ ☞ नमाज़ी ने बिग़ैर किसी मजबूरी के जान बूझ कर क़िब्ले से सीना फेर दिया अगर्चे फ़ौरन ही क़िब्ले की त़रफ़ हो गया, नमाज़ फ़ासिद हो गई और बिला क़स्द (बिग़ैर इरादा) फिर गया और ब क़दरे तीन बार "سُبْحٰنَ اللہ" कहने के वक़्फ़े से पहले वापस क़िब्ला रुख़ हो गया तो फ़ासिद न हुई।[1]

﴾2﴿ ☞ अगर सिर्फ़ मुंह क़िब्ले से फिरा (सीना नहीं फिरा) तो वाजिब है कि फ़ौरन क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर ले और नमाज़ न जाएगी मगर बिला उ़ज़्र ऐसा करना मक्रूहे तह़रीमी है।[2]

﴾3﴿ ☞ अगर ऐसी जगह पर हैं जहां क़िब्ले की पहचान का कोई ज़रीआ़ नहीं है न कोई ऐसा मुसल्मान है जिस से पूछ कर मा'लूम किया जा सके तो तह़र्री की जाए (या'नी सोचे कि क़िब्ला किस त़रफ़ होगा और जिधर क़िब्ला होने पर दिल मुत़्मइन हो जाए उधर ही मुंह कर ले, उस के ह़क़ में वोही क़िब्ला है)।[3]

﴾4﴿ ☞ तह़र्री कर के नमाज़ पढ़ी बा'द में मा'लूम हुवा कि क़िब्ले की त़रफ़ नमाज़ नहीं पढ़ी। नमाज़ हो गई लौटाने की ह़ाजत नहीं।[4]

﴾5﴿ ☞ एक शख़्स तह़र्री कर के नमाज़ पढ़ रहा हो दूसरा उस की देखा देखी उसी सम्त नमाज़ पढ़ेगा तो दूसरे की नमाज़ नहीं होगी। दूसरे के लिये भी तह़र्री का हुक्म है।[5]

1 ...بحر الرائق، کتاب الصلاۃ، 497/1

2 ...منیۃ المصلی، مسائل التحری القبلۃ... إلخ، ص193

3 ...عنایہ، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ التی تتقدمھا، 223/1

4 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الطھارۃ، الباب الرابع فی التیمم، الفصل الاول، 30/1

5 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب: مسائل التحری فی القبلۃ، 143/2

वक़्त

चौथी शर्त् वक़्त है या'नी जो नमाज़ पढ़नी है उस का वक़्त होना ज़रूरी है। मसलन आज नमाज़े अ़स्र अदा करनी है तो अ़स्र का वक़्त शुरूअ़ होना ज़रूरी है। अगर अ़स्र का वक़्त शुरूअ़ होने से पहले ही पढ़ ली तो नमाज़ न होगी।[1] (इसी त़रह़ वक़्त ख़त्म होने के बा'द अदा की निय्यत से पढ़ी तब भी नहीं होगी, क़ज़ा की निय्यत से पढ़ता है तो फिर हो जाएगी।)

तीन अवक़ाते मक्रूहा

(1) ☞ तुलूए़ आफ़्ताब से ले कर 20 मिनट बा'द तक।

(2) ☞ ग़ुरूबे आफ़्ताब से 20 मिनट पहले।

(3) ☞ निस्फ़ुन्नहार (या'नी ज़ह़्वए कुब्रा से ले कर ज़वाले आफ़्ताब तक।)

इन तीनों अवक़ात में कोई नमाज़ जाइज़ नहीं, न फ़र्ज़ न वाजिब न नफ़्ल न क़ज़ा। हां ! अगर उस दिन की नमाज़े अ़स्र नहीं पढ़ी थी और मक्रूह वक़्त शुरूअ़ हो गया तो पढ़ ले मगर इतनी ताख़ीर करना ह़राम है।[2]

(5) सुन्नतें व आदाब ﴿जूता पहनने की सुन्नतें व आदाब﴾

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ना'लैन पहनना सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत है। जूते पहनने से कंकर, कांटे वग़ैरा चुभने से पाउं की ह़िफ़ाज़त रहती है। नीज़ मौसिमे सरमा में सर्दी से भी पाउं मह़फ़ूज़ रहते हैं और गर्मियों में धूप में चलने के लिये जूते निहायत ही कारआमद हैं। जूता पहनने की चन्द सुन्नतें और आदाब मुलाह़ज़ा हों :

(1) ☞ किसी भी रंग का जूता पहनना अगर्चे जाइज़ है लेकिन पीले रंग के जूते पहनना बेहतर है।

1 ... غنیۃ المتملی، شرائط الصلاۃ، ص224

2 ... فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الأول فی المواقیت، الفصل الثانی، 52/1

मौला मुश्किल कुशा अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ وَجْهَهُ الْكَرِیْم फ़रमाते हैं : जो पीले जूते पहनेगा उस की फ़िक्रों में कमी होगी ।[1]

﴾2﴿ ☞ पहले सीधा जूता पहनें फिर उलटा और उतारते वक़्त पहले उलटा जूता उतारें फिर सीधा । ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से मरवी है कि **अल्लाह** पाक के प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "(कोई शख़्स) जब जूता पहने तो पहले दाह्ने पाउं में पहने और जब उतारे तो पहले बाएं पाउं का उतारे ।"[2]

﴾3﴿ ☞ जब बैठें तो जूते उतार लेना सुन्नत है । ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि जब बन्दा बैठे तो सुन्नत है कि अपने जूते उतार ले ।[3]

﴾4﴿ ☞ जूता पहनने से पहले झाड़ लें ताकि कीड़ा या कंकर वग़ैरा हो तो निकल जाए ।

﴾5﴿ ☞ इस्ति'माली जूता उलटा पड़ा हो तो सीधा कर दीजिये वरना फ़क्रो तंगदस्ती का अन्देशा है ।[4]

(6) इस्लाहे़ आ'माल ﴾कीने के नुक़्सानात﴿

﴾1﴿ ☞ सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : اِنَّ النَّمِيْمَةَ وَالْحِقْدَ فِى النَّارِ لَا يَجْتَمِعَانِ فِىْ قَلْبِ مُسْلِمٍ बेशक चुग़ल ख़ोरी और कीना परवरी जहन्नम में हैं, येह दोनों किसी मुसल्मान के दिल में जम्अ़ नहीं हो सकते ।

﴾2﴿ ☞ रसूले नज़ीर صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : हर पीर और जुमे'रात के दिन लोगों के आ'माल पेश किये जाते हैं, फिर बुग़्ज़ो कीना रखने वाले दो भाइयों के इ़लावा हर मोमिन को

1 ... كشف الخفاء، حرف الميم، 2/246

2 ... ابن ماجه، كتاب اللباس، باب لبس النعال وخلعها، ص584، حديث: 3616

3 ... ابو داود، كتاب اللباس، باب في الانتعال، ص650، حديث: 4138

4... सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर, हिस्सा 5, स. 601 मुलख़्ख़सन

बख़्श दिया जाता है और कहा जाता है ''اُتْرُكُوْا اَوِ ارْكُوْا هٰذَيْنِ حَتّٰى يَفِيْئَا'' इन दोनों को छोड़ दो यहां तक कि येह उस बुग्ज़ से वापस पलट आएं ।[1]

(3) ☞ **अल्लाह** पाक के महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : **अल्लाह** करीम (माहे) शा'बान की पन्दरहवीं रात अपने बन्दों पर (अपनी कुदरत के शायाने शान) तजल्ली फ़रमाता है, मग़्फ़िरत चाहने वालों की मग़्फ़िरत फ़रमाता है और रह्म तलब करने वालों पर रह्म फ़रमाता है जब कि कीना रखने वालों को उन की हालत पर छोड़ देता है ।[2]

(4) ☞ हज़रते फुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने ख़लीफ़ा हारून रशीद को एक मरतबा नसीहत करते हुए फ़रमाया : ''ऐ हसीनो जमील चेहरे वाले ! याद रख ! कल बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** पाक तुझ से मख़्लूक़ के बारे में सुवाल करेगा । अगर तू चाहता है कि तेरा येह ख़ूब सूरत चेहरा जहन्नम की आग से बच जाए तो कभी भी सुब्ह या शाम इस हाल में न करना कि तेरे दिल में किसी मुसल्मान के मुतअ़ल्लिक़ कीना या अ़दावत हो । बेशक **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''مَنْ اَصْبَحَ لَهُمْ غَاشًّا لَمْ يَرِحْ رَائِحَةَ الْجَنَّةِ'' : जिस ने इस हाल में सुब्ह की, कि वोह कीना परवर है तो वोह जन्नत की ख़ुश्बू न सूंघ सकेगा ।'' येह सुन कर ख़लीफ़ा हारून रशीद रोने लगे ।[3]

(5) ☞ हज़रते अबुल्लैस समर कन्दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं तीन अश्ख़ास ऐसे हैं जिन की दुआ क़बूल नहीं की जाती : (1) हराम खाने वाला (2) कसरत से ग़ीबत करने वाला और (3) वोह शख़्स कि जिस के दिल में अपने मुसल्मान भाइयों का कीना या हसद मौजूद हो ।[4]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1 ... مسلم، كتاب البر و الصلة و الآداب، باب النهى عن الشحناء و التهاجر، ص996، حديث: 2565

2 ... شعب الايمان، باب فى الصيام، ماجاء فى ليلة النصف من شعبان، 3/382، حديث: 3835

3 ... حلية الاولياء، الفضيل بن عياض، 8/110، رقم: 11536

4 ... درة الناصحين، المجلس الثامن عشر فى ذم الحسد، ص70

सबक़ नम्बर 16

मौज़ूआत

1	मदनी क़ाइदा : नून साकिन और तन्वीन (इज़्हार, इख़्फ़ा)	2	अज़्कारे नमाज़ : सूरतुल इख़्लास
3	तफ़्सीरे कुरआन : दिखावे के लिये नमाज़ पढ़ना	4	नमाज़ के अह़काम : नमाज़ की शराइत़
5	सुन्नतें व आदाब : छींकने की सुन्नतें व आदाब	6	इस्लाहे आ'माल : बुग़्ज़े सहाबा का अन्जाम

(1) मदनी क़ाइदा ﴾नून साकिन और तन्वीन (इज़्हार, इख़्फ़ा)﴿

- नून साकिन (نْ) और तन्वीन के चार क़ाइदे हैं : (1) इज़्हार (2) इख़्फ़ा (3) इदग़ाम (4) इक़्लाब
- इज़्हार : नून साकिन या तन्वीन के बा'द हुरूफ़े ह़ल्क़ी में से कोई ह़र्फ़ आ जाए तो नून साकिन और तन्वीन में ग़ुन्ना न कर के पढ़ने को इज़्हार कहते हैं। हुरूफ़े ह़ल्क़ी छे हैं : "ء، ہ، ع، ح، غ، خ"
- इख़्फ़ा : नून साकिन या तन्वीन के बा'द हुरूफ़े इख़्फ़ा में से कोई ह़र्फ़ आ जाए तो नून साकिन और तन्वीन में ग़ुन्ना कर के पढ़ने को इख़्फ़ा कहते हैं । हुरूफ़े इख़्फ़ा पन्दरह हैं : "ت، ث، ج، د، ذ، ز، س، ش، ص، ض، ط، ظ، ف، ق، ک"

مِنْ اَجَلٍ	مِنْ هَادٍ	مِنْ عَلَقٍ	مِنْ حَكِيْمٍ	مِنْ غَفُوْرٍ
فَمَنْ تَبِعَ	مِنْ ثَمَرَةٍ	مِنْ جُوْعٍ	مِنْ دُوْنِكُمْ	مِنْ ذَهَبٍ
مَنْ سَفِهَ	مَنْ شَكَرَ	مِنْ صَلْصَالٍ	اِنْ ضَلَلْتُ	مِنْ طِيْنٍ
يَنْئَوْنَ	مِنْهُمْ	اَنْعَمْتَ	وَانْحَرْ	فَسَيُنْغِضُوْنَ
مِنْ خَوْفٍ	فَاِنْ زَلَلْتُمْ	مَنْ ظَلَمَ	وَالْمُنْخَنِقَةُ	قَرْضًا حَسَنًا

इस हिस्से में क़वाइद की पहचान खुद इस्लामी भाई फ़रमाएं।

صَبْرٌ جَمِيْلٌ	بَأْسٍ شَدِيْدٍ	عَمَلًا صَالِحًا	ثَمَنًا قَلِيْلًا	بَلَدًا اٰمِنًا
عَذَابًا اَلِيْمًا	نُوْحًا هَدَيْنَا	جُرُفٍ هَارٍ	سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ	خُلُقٍ عَظِيْمٍ
مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ	قَوْمًا غَيْرَكُمْ	عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ	رَفْرَفٍ خُضْرٍ	قَوْلًا ثَقِيْلًا
بَخْسٍ دَرَاهِمَ	عَدْنٍ تَجْرِيْ	خَلْقٍ جَدِيْدٍ	كَاْسًا دِهَاقًا	سِرَاعًا ذٰلِكَ
قَوْلًا سَدِيْدًا	بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ	فَتْحٌ قَرِيْبٌ	رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ	نَفْسٍ ظَلَمَتْ

(2) अज़्कारे नमाज़ ﴾सूरतुल इख़्लास : आयत 1 ता 4﴿

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान, रह़मत वाला है।

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ﴿۳﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۠﴿۴﴾

तुम फ़रमाओ : वोह **अल्लाह** एक है। **अल्लाह** बे नियाज़ है। न उस ने किसी को जनम दिया और न वोह किसी से पैदा हुवा। और कोई उस के बराबर नहीं।

(3) तफ़्सीरे क़ुरआन ﴾दिखावे के लिये नमाज़ पढ़ना﴿

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जो अपनी नमाज़ से ग़ाफ़िल हैं। वोह जो दिखावा करते हैं।

الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۙ﴿۵﴾ الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۙ﴿۶﴾ (پ30، الماعون:5-6)

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 10, सफ़्ह़ा 841 पर है कि नमाज़ से ग़फ़्लत की चन्द सूरतें हैं, जैसे पाबन्दी से न पढ़ना, सह़ीह़ वक़्त पर न पढ़ना, फ़राइज़ो वाजिबात को सह़ीह़ त़रीक़े से अदा न करना, शरई़ उ़ज़्र के बिग़ैर बा जमाअ़त न पढ़ना, नमाज़ की परवाह न करना, तन्हाई में क़ज़ा कर देना और लोगों के सामने पढ़ लेना वग़ैरा, येह सब सूरतें वई़द में दाख़िल हैं जब कि शौक़ से न

पढ़ना, समझ बूझ कर अदा न करना, तवज्जोह से न पढ़ना भी नमाज़ से ग़फ़्लत में दाखिल है अलबत्ता येह सूरतें इस वईद में दाखिल नहीं जो मा क़ब्ल आयत (فَوَيۡلٌ لِّلۡمُصَلِّيۡنَۙ **तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** तो उन नमाज़ियों के लिये ख़राबी है) में बयान हुई है । मुनाफ़िक़ीन फ़राइज़ की अदाएगी **अल्लाह** पाक की रिज़ा हासिल करने के लिये नहीं बल्कि लोगों को दिखाने के लिये करते हैं ।[1]

रियाकारी की ता'रीफ़ और इस की मज़म्मत

रियाकारी की ता'रीफ़ येह है कि अपने अ़मल को इस इरादे से ज़ाहिर करना कि लोग उसे देख कर उस की इ़बादत गुज़ारी की ता'रीफ़ करें ।[2]

कसीर अहादीस में रियाकारी की मज़म्मत बयान की गई है, यहां उन में से दो अहादीस मुलाहज़ा हों, चुनान्चे

(1) ☞ हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : हम लोग मसीह दज्जाल का ज़िक्र कर रहे थे कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया : "मैं तुम्हें ऐसी चीज़ की ख़बर न दूं जिस का मसीह दज्जाल से भी ज़ियादा मेरे नज़्दीक तुम पर ख़ौफ़ है ?" हम ने अ़र्ज़ की : हां, **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, इर्शाद फ़रमाया : "वोह शिर्के ख़फ़ी है, आदमी नमाज़ पढ़ने खड़ा होता है तो इस वज्ह से तवील करता है कि दूसरा शख़्स इसे नमाज़ पढ़ता देख रहा है ।"[3]

(2) ☞ हज़रते अबू सईद बिन अबू फ़ुज़ाला رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब **अल्लाह** पाक तमाम अव्वलीनो आख़िरीन को उस दिन में जम्अ़ फ़रमाएगा जिस में शक नहीं, तो एक मुनादी निदा करेगा : जिस ने कोई काम **अल्लाह** पाक के

1 ...تفسیر مدارک، پ30، الماعون، تحت الآیۃ:5، 3/684

2 ...تفسیر قرطبی، پ30، الماعون، تحت الآیۃ:6، 10/132

3 ...ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب الریاءو السمعۃ، ص682، حدیث:4204

लिये किया और उस में किसी को शरीक कर लिया वोह अपने अ़मल का सवाब उसी शरीक से त़लब करे क्यूं कि **अल्लाह** पाक शिर्क से बिल्कुल बे नियाज़ है।''[1]

याद रहे कि अपनी निय्यत को दुरुस्त रखते हुए फ़र्ज़ इ़बादात सब के सामने करनी चाहिये ताकि लोग फ़र्ज़ इ़बादात छोड़ने की इस पर तोहमत न लगाएं और नफ़्ली इ़बादात पोशीदा करनी चाहिएं क्यूं कि इन में तोहमत लगने का अन्देशा नहीं।[2]

(4) नमाज़ के अह़काम ﴾नमाज़ की शराइत़﴿

निय्यत

नमाज़ की पांचवीं शर्त़ निय्यत है। निय्यत से मुतअ़ल्लिक़ चन्द ज़रूरी मसाइल :

﴾1﴿ ☞ निय्यत दिल के पक्के इरादे का नाम है।[3]

﴾2﴿ ☞ ज़बान से निय्यत करना ज़रूरी नहीं अलबत्ता दिल में निय्यत ह़ाज़िर होते हुए ज़बान से कह लेना बेहतर है।[4]

﴾3﴿ ☞ अ़रबी में ज़रूरी नहीं, उर्दू वग़ैरा किसी भी ज़बान में कह सकते हैं।[5]

﴾4﴿ ☞ निय्यत में ज़बान से कहने का ए'तिबार नहीं या'नी अगर दिल में मसलन ज़ोहर की निय्यत हो और ज़बान से लफ़्ज़े अ़स्र निकला तब भी ज़ोहर की नमाज़ हो गई।[6]

﴾5﴿ ☞ निय्यत का अदना दरजा येह है कि अगर उस वक़्त कोई पूछे कि कौन सी नमाज़ पढ़ते हो ? तो फ़ौरन बता दे, अगर ह़ालत ऐसी है कि सोच कर बताएगा तो नमाज़ न हुई।[7]

1 ...ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ الکھف، ص728، حدیث:3154

2... तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह : 30, अल माऊ़न, तह़्तल आयह : 6, 10/842

3 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ، ص59

4 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث فی شروط الصلاۃ، الفصل الرابع، 72/1

5 ...درمختار مع رد المحتار، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ، 113/2 موخوذًا

6 ...درمختار مع رد المحتار، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ، 112/2

7 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث فی شروط الصلاۃ، الفصل الرابع، 72/1

(6) ☞ फ़र्ज़ नमाज़ में फ़र्ज़ की निय्यत भी ज़रूरी है मसलन दिल में येह निय्यत हो कि आज की ज़ोहर की फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ता हूं ।[1]

(7) ☞ नमाज़े नफ़्ल में मुत़्लक़ नमाज़ की निय्यत काफ़ी है अगर्चे नफ़्ल निय्यत में न हो ।[2]

(8) ☞ इक़्तिदा में मुक़्तदी का इस त़रह़ निय्यत करना भी जाइज़ है कि जो नमाज़ इमाम की है वोही नमाज़ मेरी है ।[3]

(9) ☞ वाजिब में वाजिब की निय्यत करना ज़रूरी है और इसे मुअ़य्यन भी किया जाए मसलन ईदुल फ़ित्र, ईदुल अज़्ह़ा, नज़्र, नमाज़ बा'दे त़वाफ़ (वाजिबुत्तवाफ़) या वोह नफ़्ल नमाज़ जिस को जान बूझ कर फ़ासिद किया हो कि उस की क़ज़ा भी वाजिब हो जाती है ।[4]

(10) ☞ सज्दए शुक्र अगर्चे नफ़्ल है मगर इस में भी निय्यत ज़रूरी है मसलन दिल में येह निय्यत हो कि सज्दए शुक्र करता हूं ।[5]

तक्बीरे तह़रीमा

छटी और आख़िरी शर्त़ तक्बीरे तह़रीमा है या'नी नमाज़ को "اَللّٰہُ اَکْبَر" कह कर शुरूअ़ करना ।[6]

(5) सुन्नतें व आदाब «छींकने की सुन्नतें व आदाब»

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! छींक का आना भी **अल्लाह** पाक की एक ने'मत है । इस की भी सुन्नतें और आदाब हैं । लेकिन अफ़्सोस ! मदनी माह़ोल से दूर रहने के बाइ़स मुसल्मानों की अक्सरिय्यत को इस सिल्सिले में कोई मा'लूमात नहीं होतीं, जहां छींक आई ज़ोर ज़ोर से "आक्छी आक्छी" कर लिया । नाक भर आई तो सिनक ली और बस । ऐसा नहीं है, इस की भी सुन्नतें और आदाब हमें सीखने चाहिएं ।

1 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ، 117/2
2 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ، 116/2
3 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث فی شروط الصلاۃ، الفصل الرابع، 74/1
4 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ، مطلب فی حضور القلب و الخشوع، 119/2
5 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ، 120/2
6 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث فی صفۃ الصلاۃ، الفصل الاول، 75/1

(1) ☞ छींक के वक़्त सर झुकाएं, मुंह छुपाएं और आवाज़ आहिस्ता निकालें, छींक की आवाज़ बुलन्द करना हमाक़त है।[1] हज़रते उ़बादा बिन सामित व हज़रते शद्दाद बिन औस व हज़रते वासिला رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''किसी को डकार या छींक आए तो आवाज़ बुलन्द न करे कि शैत़ान को येह बात पसन्द है कि इन में आवाज़ बुलन्द की जाए।''[2]

(2) ☞ जब छींक आए और ''اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ'' कहेंगे तो फ़िरिश्ते ''رَبِّ الْعٰلَمِیْن'' कहेंगे। अगर आप ''اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن'' कहेंगे तो मा'सूम फ़िरिश्ते येह दुआ़ करेंगे : ''یَرْحَمُکَ اللّٰہ'' (या'नी **अल्लाह** पाक तुझ पर रह़म फ़रमाए)। हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब किसी को छींक आए और वोह ''اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ'' कहे तो फ़िरिश्ते कहते हैं : ''رَبِّ الْعٰلَمِیْن'' और वोह ''اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن'' कहता है तो फ़िरिश्ते कहते हैं : ''یَرْحَمُکَ اللّٰہ'' या'नी **अल्लाह** पाक तुझ पर रह़म फ़रमाए।[3]

(3) ☞ छींक आने पर ''اَلْحَمْدُ لِلّٰہ'' कहना सुन्नत है, बेहतर येह है कि ''اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن'' कहे। सुनने वाले पर वाजिब है कि फ़ौरन ''یَرْحَمُکَ اللّٰہ'' (या'नी **अल्लाह** पाक तुझ पर रह़म करे) कहे। और इतनी आवाज़ से कहे कि छींकने वाला खु़द सुन ले। अगर जवाब में ताख़ीर कर दी तो गुनहगार होगा। सिर्फ़ जवाब देने से गुनाह मुआ़फ़ नहीं होगा तौबा भी करना होगी।[4]

(4) ☞ जवाब सुन कर छींकने वाला कहे : ''یَغْفِرُ اللّٰہُ لَنَا وَلَکُمْ'' (**अल्लाह** पाक हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए) या येह कहे : ''یَھْدِیْکُمُ اللّٰہُ وَیُصْلِحُ بَالَکُمْ'' (**अल्लाह** पाक तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारी इस्लाह़ फ़रमाए)।[5]

1... बहारे शरीअ़त, 3/478, हि़स्सा : 16

2...شعب الایمان، باب فی تشمیت العاطس، 32/7، حدیث:9355

3...معجم اوسط، 305/2، حدیث:3371

4... बहारे शरीअ़त, 3/477, हि़स्सा : 16 मुलख़्ख़सन

5...فتاوی ھندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب السابع فی السلام و تشمیت العاطس، 403/5

(6) इस्लाहे आ'माल ﴾बुग़्ज़े सहाबा का अन्जाम﴿

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि रसूले नज़ीर صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मेरे अस्ह़ाब के ह़क़ में ख़ुदा से डरो ! ख़ुदा का ख़ौफ़ करो ! इन्हें मेरे बा'द निशाना न बनाओ, जिस ने इन्हें मह़बूब रखा मेरी मह़ब्बत की वज्ह से मह़बूब (या'नी प्यारा) रखा और जिस ने इन से बुग़्ज़ किया वोह मुझ से बुग़्ज़ रखता है, इस लिये उस ने इन से बुग़्ज़ रखा, जिस ने इन्हें ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी, जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने बेशक ख़ुदा पाक को ईज़ा दी, जिस ने **अल्लाह** करीम को ईज़ा दी क़रीब है कि **अल्लाह** पाक उसे अपनी पकड़ में ले ।[1]

हज़रते नूरुद्दीन अ़ब्दुर्रह़मान जामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ अपनी मश्हूर किताब "शवाहिदुन्नुबुव्वत" में नक़्ल करते हैं : तीन अफ़राद यमन के सफ़र पर निकले उन में एक कूफ़ी (कूफ़े का रहने वाला) था जो शैख़ैने करीमैन (हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا) का गुस्ताख़ था, उसे समझाया गया लेकिन वोह बाज़ न आया । जब येह तीनों यमन के क़रीब पहुंचे तो एक जगह क़ियाम किया और सो गए । जब कूच का वक़्त आया तो उन में से उठ कर दो ने वुज़ू किया और फिर उस गुस्ताख़ कूफ़ी को जगाया । वोह उठ कर कहने लगा : अफ़्सोस ! मैं तुम से इस मन्ज़िल में पीछे रह गया हूं, तुम ने मुझे ऐन उस वक़्त जगाया जब मह़बूबे करीम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे सिरहाने तशरीफ़ ला कर इर्शाद फ़रमा रहे थे : ऐ फ़ासिक़ ! **अल्लाह** पाक फ़ासिक़ को ज़लीलो ख़्वार करता है, इसी सफ़र में तेरी शक्ल बदल जाएगी । जब वोह गुस्ताख़ उठ कर वुज़ू के लिये बैठा तो उस के पाउं की उंग्लियां मस्ख़ होना (बिगड़ना) शुरूअ़ हो गईं, फिर उस के दोनों पाउं बन्दर के पाउं के मुशाबेह हो गए, फिर घुटनों तक बन्दर की त़रह़ हो गया, यहां तक कि उस का सारा बदन बन्दर की त़रह़ बन गया । उस के साथियों ने उस बन्दर नुमा गुस्ताख़ को पकड़ कर ऊंट के पालान के साथ बांध दिया और अपनी मन्ज़िल की त़रफ़ चल दिये । ग़ुरूबे आफ़्ताब के वक़्त वोह एक ऐसे जंगल में पहुंचे जहां कुछ बन्दर जम्अ़ थे, जब उस ने उन को देखा तो मुज़्त़रिब (या'नी बेताब) हो कर रस्सी छुड़ाई और उन में जा मिला । फिर सभी बन्दर इन दोनों के क़रीब आए तो येह ख़ाइफ़ (या'नी ख़ौफ़ज़दा) हो गए मगर उन्हों ने इन को कोई अज़िय्यत न दी और वोह बन्दर नुमा गुस्ताख़ इन दोनों

1 ...ترمذی، ابواب المناقب عن رسول اللہ، باب فیمن سب اصحاب النبی، ص870، حدیث: 3866

के पास बैठ गया और इन्हें देख देख कर आंसू बहाता रहा। एक घन्टे के बा'द जब बन्दर वापस गए तो वोह भी उन के साथ ही चला गया।[1]

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने देखा ! शैख़ैने करीमैन (ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا) का गुस्ताख़ बन्दर बन गया। किसी किसी को इस त़रह़ दुन्या में भी सज़ा दे कर लोगों के लिये इब्रत का नुमूना बना दिया जाता है ताकि लोग डरें, गुनाहों और गुस्ताख़ियों से बाज़ आएं।

अल्लाह पाक हम सब को नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हर हर निस्बत का अदबो एह़तिराम करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیۡن بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِیۡن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب!   صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 17

मौज़ूआ़त

1	मदनी क़ाइदा : नून साकिन और तन्वीन (इदग़ाम, इक़्लाब)	2	अज़्कारे नमाज़ : तस्बीह़े रुकूअ़ व सुजूद
3	तफ़्सीरे क़ुरआन : मुसीबत के वक़्त क्या करना चाहिये ?	4	नमाज़ के अह़काम : नमाज़ के फ़राइज़
5	सुन्नतें व आदाब : छींकने की सुन्नतें व आदाब	6	इस्लाह़े आ'माल : कौन अच्छा, कौन बुरा

(1) मदनी क़ाइदा «नून साकिन और तन्वीन (इदग़ाम, इक़्लाब)»

- इदग़ाम : नून साकिन या तन्वीन के बा'द हुरूफ़े یَرْمَلُوْن में से कोई ह़र्फ़ आ जाए तो इदग़ाम होगा। "را" और "لام" में बिग़ैर गुन्ना के और बाक़ी चार हुरूफ़ में गुन्ना के साथ पढ़ेंगे। हुरूफ़े یَرْمَلُوْن येह हैं : ی،ر،م،ل،و،ن
- इक़्लाब : नून साकिन या तन्वीन के बा'द ह़र्फ़ "ب" आ जाए तो इक़्लाब होगा। या'नी नून साकिन और तन्वीन को मीम से बदल कर गुन्ना कर के पढ़ेंगे।

[1] ...شواھد النبوۃ، ص203

www.dawateislamiindia.org

⮜ इदग़ाम के हिज्जे इस त़रह़ करें, जैसे مَنْ يَّقُوْلُ : मीम नून या ज़बर مَنْ يّ, या ज़बर يَ = مَنْ يَّ,
क़ाफ़ वाव पेश قُوْ = مَنْ يَّقُوْ, लाम पेश لُ = مَنْ يَّقُوْلُ

⮜ इक्लाब के हिज्जे इस त़रह़ करें, जैसे مِنْ بَعْدِ : मीम, नून ज़ेर مِنْ बा ऐन ज़बर بَعْ = مِنْ بَعْ,
दाल ज़ेर دِ = مِنْ بَعْدِ

مِنْ مَّشْهَدٍ	مِنْ وَّلِيٍّ	مِنْ يَّوْمٍ	مَنْ يَّقُوْلُ
لَيُنْۢبَذَنَّ	اَنْۢبِئْهُمْ	مِنْۢ بَقْلِهَا	مِنْۢ بَعْدِ
مُصَدِّقًا لِّمَا	سِرَاجًا مُّنِيْرًا	حِلٌّۢ بِهٰذَا	مِنْ مِّثْلِهٖ

इस ह़िस्से में क़वाइ़द की पहचान खु़द इस्लामी भाई फ़रमाएं।

مِنْ لَّدُنْهُ	مِنْ نَّصِيْرٍ	صُمٌّۢ بُكْمٌ	مِنْ نُّطْفَةٍ
رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ	وَيْلٌ لِّكُلِّ	رَجُلٌ يَّسْعٰى	يَكُنْ لَّهٗ
قَوْلًا بَلِيْغًا	وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ	خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ	بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ
هُدًى وَّذِكْرٰى		خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا	مِنْ رَّبِّهِمْ

(2) अज़्कारे नमाज़ «तस्बीह़ाते रुकूअ़ व सुजूद»

रुकूअ़ की तस्बीह़ : سُبْحٰنَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ ط

पाक है मेरा अ़ज़मत वाला परवर्दगार।

रुकूअ़ से सर उठाते हुए : سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ ط

अल्लाह ने उस की सुन ली जिस ने उस की ता'रीफ़ की।

रुकूअ़ से वापस सीधा खड़ा होने (क़ौमा) की ह़ालत में : اَللّٰھُمَّ رَبَّنَا وَلَکَ الْحَمْدُ ط

ऐ **अल्लाह** ! ऐ हमारे मालिक ! सब ख़ूबियां तेरे ही लिये हैं ।

सज्दे की तस्बीह़ : سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی ط

पाक है मेरा परवर्दगार सब से बुलन्द ।

(3) तफ़्सीरे कुरआन ﴿मुसीबत के वक़्त क्या करना चाहिये ?﴾

اَلَّذِیْنَ اِذَاۤ اَصَابَتْهُمْ مُّصِیْبَةٌ ۙ قَالُوْۤا اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿۱۵۶﴾ (پ2، البقرۃ:156)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह लोग कि जब उन पर कोई मुसीबत आती है तो कहते हैं : हम **अल्लाह** ही के हैं और हम उसी की त़रफ़ लौटने वाले हैं ।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 1, सफ़ह़ा 286 पर है कि इस आयत में येह बताया गया कि सब्र करने वाले वोह लोग हैं कि जब उन पर कोई मुसीबत आती है तो कहते हैं : हम **अल्लाह** पाक ही के बन्दे हैं, वोह हमारे साथ जो चाहे करे और आख़िरत में हमें उसी की त़रफ़ लौट कर जाना है ।[1]

अह़ादीस में मुसीबत के वक़्त ''اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ'' पढ़ने के बहुत फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, उन में से चन्द फ़ज़ाइल येह हैं :

﴾1﴿ ☞ ह़ज़रते इमाम ह़ुसैन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस मुसल्मान मर्द या औ़रत पर कोई मुसीबत पहुंची और वोह उसे याद कर के ''اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ'' कहे, अगर्चे मुसीबत का ज़माना दराज़ हो गया हो तो **अल्लाह** पाक उस पर नया सवाब अ़त़ा फ़रमाता है और वैसा ही सवाब देता है जैसा उस दिन दिया था जिस दिन मुसीबत पहुंची थी ।''[2]

﴾2﴿ ☞ एक मरतबा नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चराग़ बुझ गया तो आप ने ''اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ'' पढ़ा । अ़र्ज़ की गई : क्या येह भी मुसीबत है ? इर्शाद फ़रमाया :

1 ...تفسیر جلالین مع حاشیۃ انوار الحرمین، پ1، تحت الآیۃ:156، 76/1

2 ...مسند امام احمد، مسند الحسین بن علی رضی اللہ تعالٰی عنہ، 545/1، حدیث:1760

हां ! और हर वोह चीज़ जो मोमिन को अज़िय्यत दे वोह उस के लिये मुसीबत है और उस पर अज्र है ।[1]

(3) ☞ एक और ह़दीस शरीफ़ में है कि मुसीबत के वक़्त ''اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ'' पढ़ना रह़मते इलाही का सबब होता है ।[2]

(4) ☞ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी उम्मत को एक ऐसी चीज़ दी गई है जो पहली उम्मतों में से किसी को नहीं दी गई, वोह चीज़ मुसीबत के वक़्त ''اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ'' पढ़ना है ।[3]

(5) ☞ उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं : मैं ने सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना कि जिस मुसल्मान पर कोई मुसीबत आए और वोह **अल्लाह** पाक के हुक्म के मुत़ाबिक़ ''اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ'' पढ़े (और येह दुआ़ करे) ''اَللّٰهُمَّ اٰجِرْنِىْ فِىْ مُصِيْبَتِىْ وَاَخْلِفْ لِىْ خَيْرًا مِّنْهَا'' या'नी ऐ **अल्लाह** ! मेरी इस मुसीबत पर मुझे अज्र अ़त़ा फ़रमा और मुझे इस का बेहतर बदल अ़त़ा फ़रमा ।'' तो **अल्लाह** पाक उस को उस से बेहतर बदल अ़त़ा फ़रमाएगा । ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं : जब ह़ज़रते अबू सलमा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़ौत हो गए तो मैं ने सोचा कि मुसल्मानों में ह़ज़रते अबू सलमा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से बेहतर कौन होगा ? वोह तो पहले घर वाले हैं जिन्हों ने हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ हिजरत की । बहर ह़ाल मैं ने येह दुआ़ कह ली, चुनान्चे **अल्लाह** पाक ने उन के बदले मुझे **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अ़त़ा फ़रमा दिये ।[4] (जो कि ह़ज़रते अबू सलमा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से बहुत बेहतर थे)

1 ...تفسیر درمنثور، پ2، البقرۃ، تحت الآیۃ:156، 380/1
2 ...کنز العمال، کتاب الاخلاق، قسم الاقوال، جز2، 122/1، حدیث:6646
3 ...معجم کبیر، 37/6، حدیث:12241
4 ...مسلم، کتاب الجنائز، باب ما یقال عند المصیبۃ، ص329، حدیث:918

(4) नमाज़ के अह्काम «नमाज़ के फ़राइज़»

नमाज़ के 7 फ़राइज़ हैं : (1) तक्बीरे तह्रीमा (2) क़ियाम (3) क़िराअत (4) रुकूअ़ (5) सुजूद (6) क़ा'दए अख़ीरा (7) ख़ुरूजे बिसुन्इही

तक्बीरे तह्रीमा

नमाज़ का पहला फ़र्ज़ तक्बीरे तह्रीमा है। या'नी नमाज़ शुरूअ़ करने के लिये اَللّٰہُ اَکْبَر कहना। येह अगर्चे शराइते नमाज़ में से है मगर नमाज़ के अफ़्आ़ल से बिल्कुल मिली हुई है इस लिये इसे नमाज़ के फ़राइज़ से भी शुमार किया गया है।[1] तक्बीरे तह्रीमा से मुतअ़ल्लिक़ चन्द ज़रूरी मसाइल :

(1) ☞ मुक़्तदी ने तक्बीरे तह्रीमा का लफ़्ज़ "**अल्लाह**" इमाम के साथ कहा मगर "**अक्बर**" इमाम से पहले ख़त्म कर लिया तो नमाज़ न होगी।[2]

(2) ☞ इमाम को रुकूअ़ में पाया और तक्बीरे तह्रीमा कहता हुवा रुकूअ़ में गया या'नी तक्बीर उस वक़्त ख़त्म हुई कि हाथ बढ़ाए तो घुटने तक पहुंच जाए, नमाज़ न होगी।[3] (ऐसे मौक़अ़ पर पहले खड़े खड़े तक्बीरे तह्रीमा कह लें इस के बा'द اَللّٰہُ اَکْبَر कहते हुए रुकूअ़ करें)

(3) ☞ लफ़्ज़ **अल्लाह** को **आल्लाह** या **अक्बर** को **आक्बर** या **अक्बार** कहा, नमाज़ न होगी बल्कि मा'ना फ़ासिद समझ कर जान बूझ कर कहे तो काफ़िर है।[4]

क़ियाम

नमाज़ का दूसरा फ़र्ज़ क़ियाम या'नी सीधा खड़ा होना। क़ियाम के मुतअ़ल्लिक़ चन्द ज़रूरी मसाइल :

(1) ☞ क़ियाम की अदना (सब से कम) हालत येह है कि हाथ बढ़ाए तो घुटनों तक न पहुंचें और पूरा क़ियाम येह है कि सीधा खड़ा हो।[5]

1... बहारे शरीअ़त, 1/507, हिस्सा : 3 मुलख़्ख़सन

2 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الرابع فی صفۃ الصلاۃ، الفصل الاول، 75/1

3 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الرابع فی صفۃ الصلاۃ، الفصل الاول، 76/1

4 ...درمختار مع رد المحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، 177/2

5 ...درمختار مع رد المحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، 163/2

(2) ☞ क़ियाम इतनी देर है जितनी देर तक क़िराअत है, फ़र्ज़ क़िराअत की मिक्दार क़ियाम भी फ़र्ज़, वाजिब क़िराअत की मिक्दार क़ियाम भी वाजिब इसी त़रह़ सुन्नत की मिक्दार सुन्नत, नफ़्ल की मिक्दार नफ़्ल ।[1]

(3) ☞ फ़र्ज़, वित्र, ईदैन और सुन्नते फ़ज्र में क़ियाम फ़र्ज़ है। अगर शरई उ़ज़्र के बिग़ैर कोई येह नमाजें बैठ कर अदा करेगा तो नमाज़ न होगी ।[2]

(4) ☞ खड़े होने से सिर्फ़ कुछ तक्लीफ़ होना उ़ज़्र नहीं बल्कि क़ियाम उस वक़्त मुआ़फ़ होगा कि खड़ा न हो सके या खड़ा हो सकता है मगर इस से मरज़ बढ़ेगा या मरज़ देर में ठीक होगा तो बैठ कर पढ़ सकता है ।[3]

(5) ☞ अ़सा (बैसाखी) ख़ादिम या दीवार पर टेक लगा कर खड़ा होना मुम्किन है तो फ़र्ज़ है कि खड़ा हो कर पढ़े ।[4]

(6) ☞ अगर सिर्फ़ इतना खड़ा होना मुम्किन है कि खड़े खड़े तक्बीरे तह़रीमा कह लेगा तो फ़र्ज़ है कि खड़ा हो कर اَللّٰهُ اَكْبَر कह ले और अब खड़ा रहना मुम्किन नहीं तो बैठ जाए ।[5]

(5) सुन्नतें व आदाब ﴾छींकने की सुन्नतें व आदाब﴿

(1) ☞ छींकने वाला ज़ोर से ह़म्द कहे ताकि कोई सुने और जवाब दे, दोनों को सवाब मिलेगा ।[6]

(2) ☞ छींक का जवाब एक मरतबा वाजिब है। दोबारा छींक आए और वोह اَلْحَمْدُلِلّٰه कहे तो दोबारा जवाब वाजिब नहीं बल्कि मुस्तह़ब है ।[7] ह़ज़रते अयास बिन सलमा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास एक आदमी को छींक आई। मैं भी मौजूद था। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **يَرْحَمُكَ الله** (**अल्लाह** पाक तुझ पर रह़्म फ़रमाए)। उसे दोबारा छींक आई तो हु़ज़ूरे अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इसे जुकाम हो गया है।"[8]

1 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، 163/2
2 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، 163/2
3 ...غنیۃ المتملی، فرائض الصلاۃ، ص261
4 ...غنیۃ المتملی، فرائض الصلاۃ، ص261
5 ...غنیۃ المتملی، فرائض الصلاۃ، ص262
6 ...ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، 684/9
7 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب السابع فی السلام وتشمیت العاطس، 403/5
8 ...ترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء کم یشمت العاطس، ص644، حدیث: 2743

(3) ☞ जवाब उस सूरत में वाजिब होगा जब छींकने वाला اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहे और ह़म्द न करे तो जवाब वाजिब नहीं।[1] ह़ज़रते अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना : ''जब तुम में से किसी शख़्स को छींक आए और वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहे तो तुम उस के लिये يَرْحَمُکَ الله कहो। और अगर वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰه न कहे तो तुम भी يَرْحَمُکَ الله न कहो।''[2]

(4) ☞ छींकने वाला दीवार के पीछे हो जब भी जवाब दें।[3]

(5) ☞ कई इस्लामी भाई मौजूद हों और बा'ज़ ह़ाज़िरीन ने जवाब दे दिया तो सब की त़रफ़ से जवाब हो गया मगर बेहतर येही है कि सारे जवाब दें।[4]

(6) ☞ नमाज़ के दौरान छींक आए तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه न कहें।[5]

(7) ☞ आप नमाज़ पढ़ रहे हैं और किसी को छींक आई और आप ने जवाब दे दिया तो आप की नमाज़ फ़ासिद हो गई।[6]

(8) ☞ काफ़िर को छींक आई और उस ने اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहा तो जवाब में يَهْدِيْكَ اللّٰهُ (**अल्लाह** पाक तुझे हिदायत दे) कहा जाए।[7]

(6) इस्लाहे़ आ'माल «अच्छा कौन और बुरा कौन ?»

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! एक मरतबा रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हें अच्छे बुरों की ख़बर न दूं ? सब ख़ामोश रहे, तीन बार येही पूछा तो एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : जी हां **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमें हमारे

1... बहारे शरीअ़त, 3/476, हिस्सा : 16 माख़ूज़न

2 ...مسلم، کتاب الزھد والرقائق، باب تشمیت العاطس وکراھیة التثاوب، ص1143، حدیث:2992

3 ...ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة، فصل فی البیع، 684/9

4 ...ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة، فصل فی البیع، 684/9

5 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاة، الباب السابع فیما یفسد الصلاة وما یکرہ فیھا، 108/1

6 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاة، الباب السابع فیما یفسد الصلاة وما یکرہ فیھا، 109/1

7 ...ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة، فصل فی البیع، 684/9

बुरे भलों की ख़बर दीजिये ! फ़रमाया : तुम्हारा भला वोह शख़्स है जिस से ख़ैर की उम्मीद की जाए और उस के शर से अम्न हो, और तुम्हारा बुरा वोह शख़्स है जिस से ख़ैर की उम्मीद न की जाए और उस के शर से अम्न न हो ।[1]

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه हदीसे पाक के इस हिस्से कि "जिस से ख़ैर की उम्मीद की जाए और उस के शर से अम्न हो" के तहत फ़रमाते हैं : या'नी क़ुदरती तौर पर लोगों के दिलों में उस की तरफ़ से इत्मीनान हो कि येह शख़्स किसी को तक्लीफ़ नहीं देता, हो सकता है तो ख़ैर ही करता है। "जिस से ख़ैर की उम्मीद न की जाए और उस के शर से अम्न न हो" के तहत मुफ़्ती साहिब फ़रमाते हैं : या'नी क़ुदरती तौर पर लोग उस से डरते हों कि येह शख़्स ख़तरनाक है इस से बचो, इस से ख़ैर न पहुंचेगी, शर (या'नी बुराई) ही पहुंचेगी ।[2]

हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं : इस हदीस में इशारा है कि साथियों के साथ अ़द्ल करना वाजिब है और अ़द्ल तीन चीज़ों के ज़रीए हो सकता है : (1) ज़ियादती न करना (2) ज़लील करने से बचना (3) तक्लीफ़ न देना। क्यूं कि ज़ियादती न करने से महब्बत बढ़ती है, ज़लील करने से बचना सब से बड़ी मेहरबानी है और तक्लीफ़ न देना सब से बड़ा इन्साफ़ है। अगर येह तीन चीज़ें न छोड़ी जाएं तो आपस में दुश्मनियां जनम लेने लगती हैं और फ़साद बरपा हो जाता है ।[3]

हमारा प्यारा मज़हब इस्लाम हर मुसल्मान की जान, माल और इ़ज़्ज़त के तहफ़्फ़ुज़ की ज़मानत देता है चुनान्चे हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हुर्मत निशान है : **كُلُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ حَرَامٌ دَمُهٗ وَمَالُهٗ وَعِرْضُهٗ** या'नी हर मुसल्मान का ख़ून, माल और इ़ज़्ज़त दूसरे मुसल्मान पर हराम है ।[4]

1 ...ترمذی، کتاب الفتن، باب—72، ص544، حدیث:2263

2 ... मिरआतुल मनाजीह, 6/579

3 ...فیض القدیر، 132/3، تحت الحدیث:2857

4 ...مسلم، کتاب البر والصلة، باب تحریم ظلم المسلم وخذله واحتقاره...الخ، ص995، حدیث:2564

हज़रते अबू हाज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : आदमी के बद अख़्लाक़ होने की अ़लामत येह है कि वोह अपने अहले ख़ाना के पास इस ह़ालत में जाए कि वोह ख़ुशी से मुस्कुरा रहे हों और उसे देख कर ख़ौफ़ से अलग अलग हो जाएं और एक अ़लामत येह है कि बिल्ली उस से (डर कर) भाग जाए या कुत्ता ख़ौफ़ की वज्ह से दीवार फलांग जाए।[1]

हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ख़ुश अख़्लाक़ी का अदना दरजा येह है कि किसी को जानी, माली, इ़ज़्ज़त की ईज़ा न दे, आ'ला दरजा येह है कि बुराई का बदला भलाई से करे, येह बहुत आ'ला चीज़ है, जिसे ख़ुदा पाक नसीब करे।[2]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 18

मौज़ूआ़त

1	मदनी क़ाइ़दा : मद्दात	2	अज़्कारे नमाज़ : दोहराई अव्वल
3	तफ़्सीरे क़ुरआन : नमाज़ ह़िर्स से बचाती है	4	नमाज़ के अह़काम : नमाज़ के फ़राइज़
5	सुन्नतें व आदाब : नाख़ुन काटने की सुन्नतें व आदाब	6	इस्लाह़े आ'माल : मैं इस से बेहतर हूं

(1) मदनी क़ाइ़दा «मद्दात»

- मद के मा'ना लम्बा करना और खींचना है। मद के दो सबब हैं : (1) हम्ज़ा, ء (2) सुकून
- मद की छे (6) क़िस्में हैं : (1) मद्दे मुत्तसिल (2) मद्दे मुन्फ़सिल (3) मद्दे लाज़िम (4) मद्दे लीन लाज़िम (5) मद्दे आ़रिज़ (6) मद्दे लीन आ़रिज़
- मद्दे मुत्तसिल : ह़ुरूफ़े मद्दा के बा'द हम्ज़ा उसी कलिमे में हो तो मद्दे मुत्तसिल होगा। जैसे جَآءَ
- मद्दे मुन्फ़सिल : ह़ुरूफ़े मद्दा के बा'द हम्ज़ा दूसरे कलिमे में हो तो मद्दे मुन्फ़सिल होगा। जैसे فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ

1 ... تنبیہ المغترین، من اخلاق السلف...الخ، ومنہا حسن الخلق مع جفاۃ الناس، ص168

2 ... मिरआतुल मनाजीह, 6/461

∢ मद्दे मुत्तसिल और मद्दे मुन्फ़सिल को " दो, अढ़ाई अलिफ़" या'नी "चार या पांच ह़रकात" की मिक्दार तक खींच कर पढ़ें ।

∢ मद्दात के हिज्जे इस त़रह़ करें, जैसे جَآئَ : जीम या ज़ेर جِی, हम्ज़ा ज़बर ءَ = جَآئَ

حَدَآئِقَ	سَیِّئَت	اُولٰٓئِكَ	فِیْٓ اَنْفُسِكُمْ	جَآءَ
قُرُوْٓءٍ	هٰٓؤُلَآءِ	یٰٓاَرْضُ	بِمَآ اُنْزِلَ	اَوْلِیَآءَ

(2) अज़्कारे नमाज़ «दोहराई अव्वल»

साबिक़ा अज़्कारे नमाज़ (सना, तअ़व्वुज़ व तस्मिया, सूरतुल फ़ातिह़ा, सूरतुल इख़्लास, तस्बीह़ाते रुकूअ़ व सुजूद) की दोहराई करवाई जाए ।

(3) तफ़्सीरे क़ुरआन «नमाज़ ह़िर्स से बचाती है»

اِلَّا الْمُصَلِّیْنَ ﴿۲۲﴾ الَّذِیْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ دَآىِٕمُوْنَ ﴿۲۳﴾ (پ29، المعارج:22-23)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मगर वोह नमाज़ी जो अपनी नमाज़ की हमेशा पाबन्दी करने वाले हैं ।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 10, सफ़ह़ा 346 पर है कि यहां से उन लोगों के बारे में बयान किया गया है जिन में ह़िर्स और बे सब्री नहीं पाई जाती और येह वोह लोग हैं जिन में येह आठ औसाफ़ (ख़ूबियां) पाए जाते हों :

(1) ☞ फ़र्ज़ नमाज़ें पाबन्दी के साथ अदा करना ।

(2) ☞ अपने माल से वाजिब सदक़ात अदा करना ।

(3) ☞ इन्साफ़ के दिन या'नी क़ियामत की तस्दीक़ करना ।

(4) ☞ **अल्लाह** पाक के अ़ज़ाब से डरना ।

(5) ☞ शर्मगाहों की, ह़राम कारी (ज़िना वग़ैरा) से ह़िफ़ाज़त करना ।

(6) ☞ अमानत और अ़ह्द (वा'दे) की ह़िफ़ाज़त करना ।

(7) ☞ सिद्क़ो इन्साफ़ के साथ गवाही पर क़ाइम रहना ।

(8) ☞ नमाज़ की ह़िफ़ाज़त करना ।

(ﺍﻟَّﺬِﻳْﻦَ ﻫُﻢْ ﻋَﻠٰﻰ ﺻَﻼَﺗِﻬِﻢْ ﺩَﺍٓﺋِﻤُﻮْﻥَ) **तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** जो अपनी नमाज़ की हमेशा पाबन्दी करने वाले हैं।) इस आयत में पहला वस्फ़ बयान हुवा कि (उन लोगों में ह़िर्स और बे सब्री नहीं पाई जाती) जो अपने ऊपर फ़र्ज़ पांचों नमाज़ें उन के अवक़ात में पाबन्दी से अदा करते हैं।[1]

ह़िर्स और हवस से बचने का ज़रीआ

इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** करीम मोमिन बन्दे को नमाज़ की बरकत से दुन्यवी बुराइयों मसलन ह़िर्स और हवस वग़ैरा से बचा लेगा। अह़ादीस में पांचों नमाज़ें अपने वक़्त में पाबन्दी के साथ अदा करने की बहुत फ़ज़ीलत बयान की गई है चुनान्चे ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''पांच नमाज़ें **अल्लाह** पाक ने बन्दों पर फ़र्ज़ कीं, जिस ने अच्छी त़रह़ वुज़ू किया और वक़्त में नमाज़ें पढ़ीं और रुकूअ़ व ख़ुशूअ़ को पूरा किया तो उस के लिये **अल्लाह** पाक ने अपने ज़िम्मए करम पर अ़ह्द (वा'दा) कर लिया है कि उसे बख़्श दे और जिस ने न किया उस के लिये अ़ह्द नहीं, चाहे बख़्श दे, चाहे अ़ज़ाब दे।''[2]

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक फ़रमाता है : ''मेरे बन्दे का मेरे ज़िम्मए करम पर अ़ह्द (वा'दा) है कि अगर वोह वक़्त में नमाज़ क़ाइम करे तो मैं उसे अ़ज़ाब न दूं और बे ह़िसाब जन्नत में दाख़िल करूं।''[3]

(4) नमाज़ के अह़काम «नमाज़ के फ़राइज़»

क़िराअत

नमाज़ का तीसरा फ़र्ज़ क़िराअत है। तमाम हुरूफ़ मख़ारिज से इस त़रह़ अदा किये जाएं कि हर ह़र्फ़ ग़ैर (दूसरे ह़र्फ़) से सह़ीह़ त़ौर पर मुमताज़ हो जाए, क़िराअत कहलाता है।[4] क़िराअत से मुतअ़ल्लिक़ चन्द ज़रूरी मसाइल :

1 ...تفسیر کبیر، پ29، المعارج، تحت الآیۃ:23، 644/10

2 ...معجم اوسط، 303/3، حدیث:4658

3 ...کنز العمال، کتاب الصلاۃ، جز4، 127/7، حدیث:19032

4 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الرابع فی صفۃ الصلاۃ، 77/1

(1) ☞ क़िराअत आहिस्ता पढ़ने में येह ज़रूरी है कि ख़ुद सुन ले ।[1]

(2) ☞ अगर हुरूफ़ तो सहीह़ अदा किये मगर इतनी आहिस्ता आवाज़ में कि ख़ुद को सुनाई न दें और कोई रुकावट (मसलन शोरो गुल और ऊंचा सुनने का मरज़) भी न हो तो नमाज़ न होगी ।[2]

(3) ☞ इमाम व मुन्फ़रिद (तन्हा नमाज़ पढ़ने वाले) पर मुत्लक़न एक आयत पढ़ना फ़र्ज़ की दो रक्अ़तों में और वित्र, सुननो नवाफ़िल की हर रक्अ़त में फ़र्ज़ है ।[3]

(4) ☞ इमाम की क़िराअत मुक़्तदी के लिये काफ़ी है । मुक़्तदी को नमाज़ में क़िराअत करना जाइज़ नहीं, न सूरतुल फ़ातिह़ा न कोई आयत, न सिर्री नमाज़ में (आहिस्ता क़िराअत वाली नमाज़ में), न जहरी नमाज़ में (बुलन्द क़िराअत वाली नमाज़ में) ।[4]

(5) ☞ फ़र्ज़ की किसी रक्अ़त में क़िराअत न की या सिर्फ़ एक रक्अ़त में की दूसरी रक्अ़त में न की, नमाज़ फ़ासिद हो गई ।[5]

(6) ☞ फ़र्ज़ों में ठहर ठहर कर क़िराअत करे और तरावीह़ में दरमियाने अन्दाज़ में और रात के नवाफ़िल में जल्द पढ़ने की इजाज़त है मगर ऐसे कि समझ में आ सके। या'नी कम से कम मद का जो दरजा क़ारियों ने रखा है उस को अदा करे वरना ह़राम है ।[6]

(7) ☞ आज कल के अक्सर हुफ़्फ़ाज़ इस त़रह़ पढ़ते हैं कि मद का अदा होना तो बड़ी बात है, يَعْلَمُوْنَ،تَعْلَمُوْنَ के सिवा किसी लफ़्ज़ की न समझ आती है न पता चलता है कि क्या पढ़ा है। बल्कि जल्दी में लफ़्ज़ के लफ़्ज़ खा जाते हैं। और इस पर फ़ख़्र होता है कि फ़ुलां इस क़दर जल्द पढ़ता है ! ह़ालां कि इस त़रह़ क़ुरआने मजीद पढ़ना ह़राम और सख़्त ह़राम है ।[7]

1 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الرابع فی صفۃ الصلاۃ، 77/1

2 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الرابع فی صفۃ الصلاۃ، 77/1

3 ...نور الایضاح مع مراقی الفلاح، باب شروط الصلاۃ و ارکانھا، ص128

4 ...نور الایضاح مع مراقی الفلاح، باب شروط الصلاۃ و ارکانھا، ص128

5 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الرابع فی صفۃ الصلاۃ، 77/1

6 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، مطلب: السنۃ تکون سنۃ...الخ، 320/2

7... बहारे शरीअ़त, 1/547, ह़िस्सा : 3

अल्लाह पाक हमें दुरुस्त कुरआने पाक सीखने और दुरुस्त पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(5) सुन्नतें व आदाब «नाख़ुन तराश्ने की सुन्नतें व आदाब»

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "पांच चीज़ें फ़ित़रत से हैं, या'नी अम्बियाए साबिक़ीन عَلَیْہِمُ السَّلَام की सुन्नत से हैं : (1) ख़तना करना और (2) मूए ज़ेरे नाफ़ मूंडना और (3) मूंछें कम करना और (4) नाख़ुन तरश्वाना और (5) बग़ल के बाल उखेड़ना ।"[1]

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, कहते हैं कि मूंछें और नाख़ुन तरश्वाने और बग़ल के बाल उखाड़ने और मूए ज़ेरे नाफ़ मूंडने में हमारे लिये येह वक़्त मुक़र्रर किया गया है कि चालीस (40) दिन से ज़ियादा न छोड़ें ।[2] (या'नी चालीस दिन के अन्दर इन कामों को ज़रूर कर लें)

हाथों के नाख़ुन तराश्ने का त़रीक़ा

हाथों के नाख़ुन तराश्ने के दो त़रीक़े हैं, दूसरा पहले की ब निस्बत आसान है ।

(1) ☞ ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से येह मन्क़ूल है कि पहले दाहने हाथ के नाख़ुनों को इस त़रह़ तरश्वाए, सब से पहले छुंगल्या (छोटी उंगली) फिर बीच वाली फिर अंगूठा फिर मंझली (छोटी उंगली के साथ वाली) फिर कलिमे की उंगली और बाएं हाथ में पहले अंगूठा, फिर बीच वाली फिर छुंगल्या फिर कलिमे की उंगली फिर मंझली या'नी दहने (सीधे) हाथ में छुंगल्या (छोटी उंगली) से शुरूअ़ करे और बाएं (उलटे) हाथ में अंगूठे से । एक रिवायत में आया है कि "इस त़रह़ करने से कभी आशोबे चश्म नहीं होगा ।"[3]

(2) ☞ दहने हाथ की कलिमे की उंगली से शुरूअ़ करे और छुंगल्या (छोटी उंगली) पर ख़त्म करे फिर बाएं की छुंगल्या (छोटी उंगली) से शुरूअ़ कर के अंगूठे पर ख़त्म करे । इस के बा'द

1 ...مسلم، کتاب الطہارۃ، باب خصال الفطرۃ، ص115، حدیث: 257

2 ...مسلم، کتاب الطہارۃ، باب خصال الفطرۃ، ص115، حدیث: 257

3 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، 670/9

सीधे हाथ के अंगूठे का नाखुन तरश्वाए, इस सूरत में दहने ही हाथ से शुरूअ़ हुवा और दहने पर ख़त्म भी हुवा।[1] आ'ला ह़ज़रत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस त़रीक़े के मुत़ाबिक़ नाखुन तराश्ते थे। और साहि़बे बहारे शरीअ़त ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه भी इसी त़रीक़े पर अ़मल फ़रमाते थे।[2]

पाउं के नाख़ुन तराश्ने का त़रीक़ा

पाउं के नाखुन तरश्वाने में कोई तरतीब मन्क़ूल नहीं, बेहतर येह है कि पाउं की उंग्लियों में ख़िलाल करने की जो तरतीब है उसी तरतीब से नाखुन तरश्वाए या'नी दहने पाउं की छुंगल्या (छोटी उंगली) से शुरूअ़ कर के अंगूठे पर ख़त्म करे फिर बाएं पाउं के अंगूठे से शुरूअ़ कर के छुंगल्या (छोटी उंगली) पर ख़त्म करे।[3]

(6) इस्लाहे़ आ'माल ﴿मैं इस से बेहतर हूं﴾

अल्लाह पाक ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तख़्लीक़ (या'नी पैदाइश) के बा'द तमाम फ़िरिश्तों और इब्लीस (शैत़ान) को हुक्म दिया कि इन को सज्दा करें तो तमाम फ़िरिश्तों ने **अल्लाह** पाक के हुक्म के मुत़ाबिक़ सज्दा किया। (پ1، البقرة:34 ملخصًا) फ़िरिश्तों में से सब से पहले सज्दा करने वाले ह़ज़रते जिब्राईल फिर ह़ज़रते मीकाईल, ह़ज़रते इसराफ़ील फिर ह़ज़रते इ़ज़राईल फिर दीगर मुक़र्रब फ़िरिश्ते (عَلَيْهِمُ السَّلَام) थे।[4] येह सज्दा जुमुआ़ के रोज़ वक़्ते ज़वाल से अ़स्र तक किया गया।[5] मगर इब्लीस ने इन्कार कर दिया और तकब्बुर कर के काफ़िरों में से हो गया। (پ1، البقرة:34 ملخصًا) जब **अल्लाह** पाक ने इब्लीस से उस के इन्कार की वज्ह पूछी तो अकड़ कर कहने लगा : اَنَا خَیْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِیْ مِنْ نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهٗ مِنْ طِیْنٍ ﴿۷۶﴾ (پ23، ص:76) **तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** मैं इस से बेहतर हूं तू ने मुझे आग से बनाया और इसे मिट्टी से पैदा किया। इस से इब्लीस की फ़ासिद मुराद येह थी कि अगर ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आग से पैदा किये जाते और मेरे बराबर भी होते जब

1 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة، فصل في البيع، 670/9

2 ... बहारे शरीअ़त, 3/584, हि़स्सा : 16

3 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة، فصل في البيع، 670/9

4 ...تفسیر روح البیان، پ1، البقرة، تحت الآیة:34، 106/1 ملتقطًا

5 ... तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 1, अल बक़रह, तह़्तल आयह : 34

भी मैं इन्हें सज्दा न करता बजाए इस के कि इन से बेहतर हो कर इन को सज्दा करूं (مَعَاذَاللہ)। इब्लीस की इस सरकशी, ना फ़रमानी और तकब्बुर पर उस की ह़सीन सूरत ख़त्म हो गई और वोह बद शक्ल रू सियाह हो गया, उस की नूरानिय्यत सल्ब कर ली (छीन ली) गई।[1] **अल्लाह** पाक ने इब्लीस को अपनी बारगाह से धुत्कारते हुए इर्शाद फ़रमाया : (پ23،صٓ:77-78)

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِیْمٌ ۚۖ وَّ اِنَّ عَلَیْكَ لَعْنَتِیْۤ اِلٰى یَوْمِ الدِّیْنِ **तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह** ने फ़रमाया : तू जन्नत से निकल जा कि बेशक तू धुत्कारा हुवा है। और बेशक क़ियामत तक तुझ पर मेरी ला'नत है।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि किस त़रह़ तकब्बुर के बाइ़स इब्लीस (या'नी शैत़ान) को अपने ईमान से हाथ धोने पड़े ! शैत़ान जिस का नाम पहले इ़ज़ाज़ील था,[2] इब्तिदा ही से सरकश व ना फ़रमान न था बल्कि उस ने हज़ारों साल इ़बादत की, जन्नत का ख़ज़ान्ची रहा,[3] येह जिन्न था (پ15،الکھف:50،ملخصًا) मगर अपनी इ़बादतो रियाज़त और इ़ल्मिय्यत के सबब मुअ़ल्लिमुल मलकूत या'नी फ़िरिश्तों का उस्ताज़ बन गया और इस क़दर मुक़र्रब था कि बारगाहे ख़ुदावन्दी में मलाएका के पहलू ब पहलू ह़ाज़िर होता था। मगर चन्द घड़ियों के तकब्बुर ने उसे कहीं का न छोड़ा ! हुक्मे इलाही की ना फ़रमानी की वज्ह से उस की बरसों की इ़बादतें बेकार और हज़ारों साल की रियाज़तें बरबाद हो गईं, ज़िल्लतो रुस्वाई उस का मुक़द्दर बनी, हमेशा हमेशा के लिये ला'नत का त़ौक़ उस के गले पड़ गया और वोह जहन्नम के हमेशा हमेशा के अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ ठहरा।[4]

तकब्बुर की ता'रीफ़

ख़ुद को अफ़्ज़ल, दूसरों को ह़क़ीर जानने का नाम तकब्बुर है। चुनान्चे रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "اَلْکِبْرُ بَطَرُ الْحَقِّ وَغَمْطُ النَّاسِ" या'नी तकब्बुर ह़क़ की

1... तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 23, तह़्तल आयह : 76 मुलख़्ख़सन

2... تفسیر قرطبی، پ1، البقرۃ، تحت الآیۃ:34، 1/212ملتقطًا

3... تفسیر قرطبی، پ1، البقرۃ، تحت الآیۃ:34، 1/212ملتقطًا

4... तकब्बुर, स. 10

मुख़ालफ़त और लोगों को ह़क़ीर जानने का नाम है।''[1] इमाम राग़िब अस्फ़हानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی लिखते हैं : ذٰلِکَ اَنۡ یَّرَی الۡاِنۡسَانُ نَفۡسَہٗ اَکۡبَرَ مِنۡ غَیۡرِہٖ या'नी तकब्बुर येह है कि इन्सान अपने आप को दूसरों से अफ़्ज़ल समझे।[2] जिस के दिल में तकब्बुर पाया जाए उसे ''मुतकब्बिर'' कहते हैं।[3]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 19

मौज़ूआत

1	मदनी क़ाइदा : मद्दात	2	अज़्कारे नमाज़ : तशह्हुद ह़िस्सए अव्वल
3	तफ़्सीरे क़ुरआन : क़ुरआने पाक को नापाकी की ह़ालत में न छूएं	4	नमाज़ के अह़काम : नमाज़ के फ़राइज़
5	सुन्नतें व आदाब : ख़ुश्बू लगाने की सुन्नतें व आदाब	6	इस्लाह़े आ'माल : तकब्बुर के नुक़्सानात

(1) मदनी क़ाइदा ﴾मद्दात﴿

- मद्दे लाज़िम : ह़ुरूफ़े मद्दा के बा'द सुकूने अस्ली (ْ, ّ) हो तो मद्दे लाज़िम होगा। जैसे (جَآنٌّ)
- मद्दे लीन लाज़िम : ह़ुरूफ़े लीन के बा'द सुकूने अस्ली (ْ) हो तो मद्दे लीन लाज़िम होगा। जैसे عَیۡنۡ
- मद्दे लाज़िम व लीन लाज़िम को तीन अलिफ़ या'नी छे ह़रकात की मिक़्दार तक खींच कर पढ़ें।
- मद्दे आ़रिज़ : ह़ुरूफ़े मद्दा के बा'द आ़रिज़ी सुकून हो (वक़्फ़ की वज्ह से किसी ह़र्फ़ के साकिन होने को सुकूने आ़रिज़ी कहते हैं) तो मद्दे आ़रिज़ होगा। जैसे مُسۡلِمُوۡنَ○
- मद्दे लीन आ़रिज़ : ह़ुरूफ़े लीन के बा'द आ़रिज़ी सुकून हो (वक़्फ़ की वज्ह से किसी ह़र्फ़ के साकिन होने को सुकूने आ़रिज़ी कहते हैं) तो मद्दे लीन आ़रिज़ होगा। जैसे شَفَتَیۡنِ○

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم الکبر وبیانہ، ص54، حدیث: 91

2 ...مُفرَدات للراغب اصفهانی، کتاب الکاف، ص439

3 ... तकब्बुर, स. 10, 16 मुल्तक़तन

➤ मद्दे आ़रिज़ और मद्दे लीन आ़रिज़ को ''एक, दो या तीन अलिफ़'' या'नी ''दो, चार या छ ह़रकात'' की मिक़्दार तक खींच कर पढ़ें ।

اَلْحَآقَّةُ	كَآفَّةً	جَآنٌّ	دَآبَّةٍ	ضَآلًّا
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۝		يَتَسَآءَلُوْنَ۝	قُرَيْشٍ۝	خَوْفٍ۝
حَآجُّوْكَ	يٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ۝		وَلَا الضَّآلِّيْنَ۝	

(2) अज़्कारे नमाज़ ﴾तशह्हुद ह़िस्सए अव्वल﴿

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَ الصَّلَوٰتُ وَ الطَّيِّبٰتُ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ

तमाम क़ौली, फ़े'ली और माली इ़बादतें **अल्लाह** पाक ही के लिये हैं । सलाम हो आप पर ऐ नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !

(3) तफ़्सीरे कुरआन ﴾कुरआने पाक को नापाकी की ह़ालत में न छूएं﴿

لَّا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ﴿٧٩﴾ (پ27، الواقعۃ:79) **तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** इसे पाक लोग ही छूते हैं ।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 9, सफ़ह़ा 703 पर है कि इस आयत की एक तफ़्सीर येह है कि कुरआने पाक को वोह लोग हाथ लगाएं जो बा वुज़ू हों और उन पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ न हो ।[1]

ह़दीस शरीफ़ में भी इसी चीज़ का हुक्म है, चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''कुरआने पाक को वोही हाथ लगाए जो पाक हो ।''[2]

कुरआने पाक छूने से मुतअ़ल्लिक़ सात अह़काम

यहां आयत की मुनासबत से कुरआने मजीद छूने से मुतअ़ल्लिक़ 7 अह़काम मुलाह़ज़ा हों :

1 ...تفسیر خازن، پ27، الواقعة، تحت الآیة: 79، 4/242
2 ...معجم صغیر، ص772، حدیث: 1162

(1) ☞ कुरआने अ़ज़ीम को छूने के लिये वुज़ू करना फ़र्ज़ है।[1]

(2) ☞ जिस का वुज़ू न हो उसे कुरआने मजीद या इस की किसी आयत का छूना ह़राम है, अलबत्ता छूए बिग़ैर ज़बानी या देख कर कोई आयत पढ़े तो इस में कोई ह़रज नहीं।[2]

(3) ☞ जिस को नहाने की ज़रूरत हो (या'नी जिस पर गुस्ल फ़र्ज़ हो) उसे कुरआने मजीद छूना अगर्चे इस का सादा ह़ाशिया या जिल्द या गि़लाफ़ छूए, या छूए बिग़ैर देख कर या ज़बानी पढ़ना, या किसी आयत का लिखना, या आयत का ता'वीज़ लिखना, या कुरआने पाक की आयात से लिखा ता'वीज़ छूना, या कुरआने पाक की आयात वाली अंगूठी जैसे हुरूफ़े मुक़त्तआ़त की अंगूठी छूना या पहनना ह़राम है।[3]

(4) ☞ अगर कुरआने अ़ज़ीम जुज़्दान में हो तो जुज़्दान पर हाथ लगाने में ह़रज नहीं, यूंही रूमाल वग़ैरा किसी ऐसे कपड़े से पकड़ना जो न अपना ताबेअ़ हो न कुरआने मजीद का तो जाइज़ है। कुरते की आस्तीन, दोपट्टे की आंचल से यहां तक कि चादर का एक कोना इस के कन्धे पर है तो दूसरे कोने से कुरआने पाक छूना ह़राम है क्यूं कि येह सब इस के ऐसे ही ताबेअ़ हैं जैसे कुरआने मजीद का गि़लाफ़ कुरआने मजीद के ताबेअ़ था।[4]

(5) ☞ रुपिये के ऊपर आयत लिखी हो तो इन सब को (या'नी बे वुज़ू और जुनुब और ह़ैज़ो निफ़ास वाली को) उस का छूना ह़राम है, हां! अगर रुपै थेली में हों तो थेली उठाना जाइज़ है। यूंही जिस बरतन या गिलास पर सूरत या आयत लिखी हो उस को छूना भी इन्हें ह़राम है। उस बरतन या गिलास को इस्ति'माल करना सब के लिये मक्रूह है, अलबत्ता अगर ख़ास शिफ़ा की निय्यत से इन्हें इस्ति'माल करें तो ह़रज नहीं।

(6) ☞ कुरआन का तरजमा फ़ारसी या उर्दू या किसी और ज़बान में हो तो इसे भी छूने और पढ़ने में कुरआने मजीद ही का सा हुक्म है।

1 ...نور الایضاح، کتاب الطہارۃ، فصل فی اوصاف الوضوء، ص59

2 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الطہارۃ، مطلب: یطلق الدعاء...الخ، 348/1

3 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الطہارۃ، 343/1-348ملتقطًا

4 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الطہارۃ، مطلب: یطلق الدعاء...الخ، 348/1

(7) ☞ कुरआने मजीद देखने में इन सब पर कुछ ह़रज नहीं अगर्चे हुरूफ़ पर नज़र पड़े और अल्फ़ाज़ समझ में आएं और दिल में पढ़ते जाएं।[1]

(4) नमाज़ के अह़काम «नमाज़ के फ़राइज़»

रुकूअ़

नमाज़ का चौथा फ़र्ज़ रुकूअ़ है या'नी इतना झुकना कि हाथ बढ़ाए तो घुटने को पहुंच जाए येह रुकूअ़ का अदना दरजा है, और पूरा येह है कि पीठ सीधी बिछा दे।[2] सरवरे दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **अल्लाह** पाक बन्दे की उस नमाज़ की त़रफ़ नज़र नहीं फ़रमाता जिस में रुकूअ़ व सुजूद के दरमियान पीठ सीधी न करे।[3]

सुजूद

पांचवां फ़र्ज़ सुजूद या'नी हर रक्अ़त में दो सज्दे करना। ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : मुझे हुक्म हुवा कि सात हड्डियों पर सज्दा करूं, मुंह और दोनों हाथ और दोनों घुटने और दोनों पन्जे और येह हुक्म हुवा कि कपड़े और बाल न समेटूं।[4]

सज्दे के मुतअ़ल्लिक़ ज़रूरी मसाइल :

(1) ☞ हर रक्अ़त में दो बार सज्दा फ़र्ज़ है।[5]

(2) ☞ सज्दे में पेशानी जमना ज़रूरी है, जमने के मा'ना येह हैं कि ज़मीन की सख़्ती मह़सूस हो। अगर किसी ने इस त़रह़ सज्दा किया कि पेशानी न जमी तो सज्दा न होगा।[6]

1 ...فتاوی ہندیہ، کتاب الطہارۃ، الباب السادس فی الدماء المختصۃ بالنساء، 38/1
2 ...در مختار مع رد المحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، بحث فی الرکوع و السجود، 166/2
3 ...معجم کبیر، 407/4، حدیث:8182
4 ...مسلم، کتاب الصلاۃ، باب اعضاء السجود و النہی عن کف الشعر و الثوب... الخ، ص185، حدیث:490
5 ...در مختار مع رد المحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، بحث الرکوع و السجود، 167/2 ماخوذاً
6 ...فتاوی ہندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الرابع فی صفۃ الصلاۃ، الفصل الاول، 77/1

(3) ☞ किसी नर्म चीज़ (घास, रूई या क़ालीन) वगै़रा पर सज्दा किया तो अगर पेशानी जम गई या'नी इतनी दबी कि अब दबाने से न दबे तो सज्दा हो जाएगा वरना नहीं ।[1]

(4) ☞ आज कल मसाजिद में क़ालीन बिछाने का रवाज पड़ गया है (बल्कि बा'ज़ जगह तो कारपेट के नीचे मज़ीद फ़ोर्म भी बिछा देते हैं) । क़ालीन पर सज्दा करते वक़्त इस बात का ख़ास ख़याल रखना है । पेशानी अच्छी त़रह़ जम जाए वरना नमाज़ न होगी । और नाक की हड्डी न दबी तो नमाज़ मक्रूहे तह़रीमी वाजिबुल इआदा (दोबारा पढ़ना) होगी ।[2]

(5) सुन्नतें व आदाब ﴾ख़ुश्बू लगाने की सुन्नतें व आदाब﴿

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे मीठे मीठे सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ुश्बू बेहद पसन्द है । लिहाज़ा आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर वक़्त मुअ़त्तर मुअ़त्तर रहते । आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुश्बू का बहुत इस्ति'माल फ़रमाया करते थे ताकि गु़लाम भी अदाए सुन्नत की निय्यत से ख़ुश्बू लगाया करें वरना इस बात में किस को शको शुबा हो सकता है, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वुजूदे मस्ऊ़द तो कु़दरती तौ़र पर ख़ुद ही महक्ता रहता और ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक पसीना बज़ाते ख़ुद काएनात की सब से बेहतरीन ख़ुश्बू है ।[3]

ह़ज़रते जाबिर बिन समुरह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक बार मीठे मीठे सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते पुर अन्वार मेरे चेहरे पर फेरा, मैं ने उसे ठन्डा और ऐसी ख़ुश्बूदार हवा की त़रह़ पाया जो किसी इ़त्र फ़रोश के इ़त्रदान से निकलती है ।[4]

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि हमारे मुअ़त्तर मुअ़त्तर ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास एक ख़ास क़िस्म की ख़ुश्बू थी जिसे आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस्ति'माल फ़रमाते ।[5]

1 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الرابع فی صفۃ الصلاۃ، الفصل الاول، 77/1

2 ... बहारे शरीअ़त, 1/514, हिस्सा : 3

3 ... सुन्नतें और आदाब, स. 82 ब तसर्रुफ़

4 ...وسائل الوصول الی الشمائل الرسول، الباب الثانی فی صفۃ خلقۃ رسول اللہ...الخ، الفصل الرابع...الخ، ص36 ملخصًا

5 ...وسائل الوصول الی الشمائل الرسول، الباب الثانی فی صفۃ خلقۃ رسول اللہ...الخ، الفصل الخامس...الخ، ص37

सर में ख़ुश्बू लगाना सुन्नत है

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़दते करीमा थी कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم "मुश्क" सरे अक़्दस के मुक़द्दस बालों और दाढ़ी मुबारक में लगाते ।[1]

ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से मरवी है, फ़रमाती हैं : मैं अपने सरताज, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को निहायत उ़म्दा से उ़म्दा ख़ुश्बू लगाती थी यहां तक कि उस की चमक हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सरे मुबारक और दाढ़ी शरीफ़ में पाती ।[2]

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ख़ुश्बू का तोह़फ़ा रद नहीं फ़रमाते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि नबियों के सरदार, हमारे मुअ़त्तर मुअ़त्तर सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में जब ख़ुश्बू तोह़फ़तन पेश की जाती तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रद न फ़रमाते ।[3]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि तीन चीज़ें वापस नहीं लौटानी चाहिएं : (1) तक्या (2) ख़ुश्बू व तेल (3) दूध ।[4]

(6) इस्लाहे आ'माल ﴾तकब्बुर के नुक़्सानात﴿

(1)... अल्लाह का ना पसन्दीदा बन्दा

रब्बे काएनात तकब्बुर करने वालों को पसन्द नहीं फ़रमाता जैसा कि सूरए नह़्ल में इर्शाद होता है : اِنَّہٗ لَا یُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِیْنَ ﴿۲۳﴾ (پ14، نحل:23) **तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** बेशक वोह मग़रूरों को पसन्द नहीं फ़रमाता । पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "**अल्लाह** पाक मुतकब्बिरीन (या'नी मग़रूरों) और इतरा कर चलने वालों को ना पसन्द फ़रमाता है ।"[5]

1 ...وسائل الوصول الی الشمائل الرسول، الباب الثانی فی صفة خلقة رسول الله...الخ، الفصل الخامس...الخ، ص37

2 ...بخاری، کتاب اللباس، باب الطیب فی الراس واللحیة، ص1484، حدیث:5923

3 ...ترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی کراھیة رد الطیب، ص652، حدیث:2789

4 ...ترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی کراھیة رد الطیب، ص653، حدیث:2790

5 ...کنز العمال، کتاب الاخلاق، باب الکبر والخیلاء، جز2، 3/210، حدیث:7727

(2)... नबिय्ये करीम का इज़्हारे नफ़रत

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक क़ियामत के दिन तुम में से मेरे सब से नज़्दीक और पसन्दीदा शख़्स वोह होगा जो तुम में से अख़्लाक़ में सब से ज़ियादा अच्छा होगा और क़ियामत के दिन मेरे नज़्दीक सब से क़ाबिले नफ़रत और मेरी मजलिस से दूर वोह लोग होंगे जो वाहियात बकने वाले, लोगों का मज़ाक़ उड़ाने वाले और मुतफ़ैहिक़ हैं। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! बेहूदा बक्वास बकने वालों और लोगों का मज़ाक़ उड़ाने वालों को तो हम ने जान लिया मगर येह मुतफ़ैहिक़ कौन हैं ? तो आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''इस से मुराद हर तकब्बुर करने वाला शख़्स है।''[1]

(3)... तकब्बुर करने वाले को बद तरीन शख़्स क़रार दिया गया है

ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه इर्शाद फ़रमाते हैं कि हम सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ एक जनाज़े में शरीक थे कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या मैं तुम्हें **अल्लाह** पाक के बद तरीन बन्दे के बारे में न बताऊं ? वोह बद अख़्लाक़ और मुतकब्बिर है, क्या मैं तुम्हें **अल्लाह** पाक के सब से बेहतरीन बन्दे के बारे में न बताऊं ? वोह कमज़ोर और ज़ईफ़ समझा जाने वाला बोसीदा लिबास पहनने वाला शख़्स है लेकिन अगर वोह किसी बात पर **अल्लाह** पाक की क़सम उठा ले तो **अल्लाह** पाक उस की क़सम ज़रूर पूरी फ़रमाए।''[2]

(4)... तकब्बुर करने वालों को क़ियामत के दिन ज़िल्लतो रुस्वाई का सामना होगा

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : क़ियामत के दिन मुतकब्बिरीन को इन्सानी शक्लों में च्यूंटियों की मानिन्द उठाया जाएगा, हर जानिब से उन पर ज़िल्लत त़ारी होगी, उन्हें जहन्नम के ''**बूलस**'' नामी क़ैदख़ाने की त़रफ़ हांका जाएगा और बहुत बड़ी आग उन्हें अपनी लपेट में

1 ...ترمذی، ابواب البر و الصلة، باب ماجاء فی معالی الاخلاق، ص488، حدیث:3018

2 ...مسند امام احمد، مسند الانصار، 540/9، حدیث:24101

ले कर उन पर ग़ालिब आ जाएगी, उन्हें ''**त़ीनतुल ख़बाल** या'नी जहन्नमियों की पीप'' पिलाई जाएगी ।[1]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 20

मौज़ूआत

1	मदनी क़ाइदा : वक़्फ़	4	नमाज़ के अह़काम : नमाज़ के फ़राइज़
2	अज़्कारे नमाज़ : तशह्हुद ह़िस्सए दुवुम	5	सुन्नतें व आदाब : चलने की सुन्नतें व आदाब
3	तफ़्सीरे कुरआन : नमाज़ में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़	6	इस्लाहे़ आ'माल : तकब्बुर का इ़लाज

(1) मदनी क़ाइदा ﴾वक़्फ़﴿

वक़्फ़ के मा'ना ठहरने और रुकने के हैं। या'नी जिस कलिमे पर वक़्फ़ करें तो उस कलिमे के आख़िरी ह़र्फ़ पर आवाज़ और सांस दोनों को ख़त्म कर दें ।

- कलिमे के आख़िरी ह़र्फ़ पर ज़बर, ज़ेर, पेश, दो ज़ेर, दो पेश, खड़ा ज़ेर, उलटा पेश हो तो उस ह़र्फ़ को वक़्फ़ में साकिन कर दें । जैसे : صٰدِقِیْنَ، فِیْہِ، شَیْءٌ، شَھْرٍ، اَمْرِہٖ، رَبَّہٗ ।
- कलिमे के आख़िरी ह़र्फ़ पर दो ज़बर हों तो उन्हें वक़्फ़ में अलिफ़ से बदल दें। जैसे : اَلْفَافًا، عِلْمًا ।
- कलिमे के आख़िर में गोल ता ''ۃ'' पर ख़्वाह कोई भी ह़रकत हो या तन्वीन उसे वक़्फ़ में हा साकिन ''ہ'' से बदल दें। जैसे رَقَبَۃٌ ।
- खड़ा ज़बर, हुरूफ़े मद्दा और साकिन ह़र्फ़ वक़्फ़ में तब्दील नहीं होते। जैसे : وَتَوَلّٰی، فَتَرْضٰی ।
- मुशद्दद ह़र्फ़ पर वक़्फ़ की सूरत में तश्दीद बाक़ी रखेंगे मगर ह़रकत ज़ाहिर न होने दें। जैसे : بِالْحَقِّ ।

[1] ...ترمذی، ابواب صفة القيامة والرقائق والورع، 4-، ص590، حدیث:2492

नून कुत़्नी

तन्वीन के बा'द हम्ज़ए वस्ली आ जाए तो वस्ल में हम्ज़ए वस्ली को गिराते हुए तन्वीन के नून साकिन को ज़ेर दे कर एक छोटा सा नून लिख दिया जाता है, इस को नून कुत़्नी कहते हैं। मसलन

خَيْرَا الْوَصِيَّةُ | شَيْبًا السَّمَآءُ | مُّنِيْبٍ ادْخُلُوْهَا | مُّبِيْنٍ اقْتُلُوْا

(2) अज़्कारे नमाज़ «तशह्हुद ह़िस्सए दुवुम»

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبٰتُ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ ○

तमाम क़ौली, फ़े'ली और माली इ़बादतें **अल्लाह** पाक ही के लिये हैं। सलाम हो आप पर ऐ नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! और **अल्लाह** पाक की रह़मतें और बरकतें। सलाम हो हम पर और **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों पर।

(3) तफ़्सीरे कुरआन «नमाज़ में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़»

اَلَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۝۲

(پ18، المومنون:2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जो अपनी नमाज़ में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ करने वाले हैं।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 6, सफ़्ह़ा 496 पर है कि यहां से ईमान वालों के चन्द औसाफ़ ज़िक्र फ़रमाए गए हैं, चुनान्चे इन का पहला वस्फ़ बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि ईमान वाले ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ के साथ नमाज़ अदा करते हैं, उस वक़्त उन के दिलों में **अल्लाह** पाक का ख़ौफ़ होता है और उन के आ'ज़ा साकिन होते हैं।[1]

नमाज़ में ख़ुशूअ़ ज़ाहिरी भी होता है और बात़िनी भी, ज़ाहिरी ख़ुशूअ़ येह है कि नमाज़ के आदाब की मुकम्मल रिआ़यत की जाए मसलन नज़र जाए नमाज़ से बाहर न जाए और आंख के

1 ... تفسیر مدارك، پ18، المؤمنون، تحت الآية:2، 2/458

कनारे से किसी त़रफ़ न देखे, आस्मान की त़रफ़ नज़र न उठाए, कोई अ़बस व बेकार काम न करे, कोई कपड़ा शानों पर इस त़रह़ न लटकाए कि उस के दोनों कनारे लटक्ते हों और आपस में मिले हुए न हों, उंग्लियां न चटख़ाए और इस क़िस्म की ह़रकात से बाज़ रहे। बात़िनी ख़ुशूअ़ येह है कि **अल्लाह** करीम की अ़ज़मत पेशे नज़र हो, दुन्या से तवज्जोह हटी हुई हो और नमाज़ में दिल लगा हो।[1]

यहां नमाज़ के दौरान आस्मान की त़रफ़ नज़रें उठाने, इधर उधर देखने और यहां वहां तवज्जोह करने से मुतअ़ल्लिक़ 3 अह़ादीस मुलाह़ज़ा हों :

(1) ☞ ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उन लोगों का क्या ह़ाल है जो अपनी नमाज़ में नज़रें आस्मान की त़रफ़ उठाते हैं !" फिर आप صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस में बहुत सख़्ती की और इर्शाद फ़रमाया : "येह लोग इस से बाज़ आ जाएं वरना इन की नज़रें छीन ली जाएंगी।"[2]

(2) ☞ ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ बेटे ! नमाज़ में इधर उधर देखने से बचो क्यूं कि नमाज़ में इधर उधर तवज्जोह हलाकत है।"[3]

(3) ☞ ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं ने ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से नमाज़ में इधर उधर तवज्जोह करने के बारे में सुवाल किया तो आप صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह शैत़ानी लग़्ज़िश है, इस के ज़रीए शैत़ान बन्दे को नमाज़ से फुस्लाना चाहता है।"[4]

लिहाज़ा हर मुसल्मान मर्द व औ़रत को चाहिये कि वोह पूरी तवज्जोह और ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ के साथ नमाज़ अदा करे और **अल्लाह** की इ़बादत इस त़रह़ करे जैसे इ़बादत करने का ह़क़ है।

1 ...تفسیر خازن، پ18، المؤمنون، تحت الآیۃ:2، 3/267

2 ...بخاری، کتاب الاذان، باب رفع البصر الی السماء فی الصلاۃ، ص244، حدیث:750

3 ...ترمذی، ابواب السفر، باب ما ذکر فی الالتفات فی الصلاۃ، ص172، حدیث:589

4 ...ترمذی، ابواب السفر، باب ما ذکر فی الالتفات فی الصلاۃ، ص172، حدیث:590

www.dawateislamiindia.org

(4) नमाज़ के अह़काम 《नमाज़ के फ़राइज़》

क़ा'दए अख़ीरा

नमाज़ का छटा फ़र्ज़ क़ा'दए अख़ीरा है या'नी नमाज़ की रक्अ़तें पूरी करने के बा'द इतनी देर तक बैठना कि पूरी तशह्हुद (पूरी अत्तहि़य्यात) رَسُوْلُہٗ तक पढ़ ली जाए फ़र्ज़ है।[1] चार रक्अ़त वाली फ़र्ज़ नमाज़ में चौथी (4) रक्अ़त के बा'द क़ा'दा न किया तो जब तक पांचवीं का सज्दा न किया हो बैठ जाए और अगर पांचवीं का सज्दा कर लिया या फ़ज्र में दूसरी रक्अ़त पर नहीं बैठा तीसरी का सज्दा कर लिया या मग़रिब में तीसरी पर न बैठा और चौथी का सज्दा कर लिया इन सब सूरतों में फ़र्ज़ बातिल हो गए। मग़रिब के इलावा और नमाज़ों में एक रक्अ़त मज़ीद मिला ले।[2] इस मक़ाम पर वोह इस्लामी भाई तवज्जोह फ़रमाएं कि जो किसी फ़र्ज़ नमाज़ की आख़िरी रक्अ़त का क़ा'दए अख़ीरा छूट जाने पर अगली रक्अ़त मिला लेते हैं और ख़याल करते हैं कि येह दो रक्अ़तें नफ़्ल हो गईं और हमारा फ़र्ज़ भी अदा हो गया। ह़ालां कि क़ा'दए अख़ीरा छूटने की वज्ह से फ़र्ज़ बातिल हो जाते हैं। अगर क़ा'दए अख़ीरा कर लिया और भूले से अगली रक्अ़त के लिये खड़े हो गए और सज्दा कर लिया, अब एक और रक्अ़त मिला लें। 4 फ़र्ज़ हो गए और आख़िरी 2 नफ़्ल।

ख़ुरूजे बिसुन्इही

सातवां और आख़िरी फ़र्ज़ ख़ुरूजे बिसुन्इही है या'नी क़ा'दए अख़ीरा के बा'द सलाम या बातचीत वग़ैरा कोई ऐसा काम क़स्दन (इरादतन) करना जो नमाज़ से बाहर कर दे। मगर सलाम के इलावा कोई फ़े'ल क़स्दन पाया गया तो नमाज़ वाजिबुल इआ़दा (दोबारा पढ़ना) होगी। और बिला क़स्द (बिग़ैर इरादा) कोई इस त़रह़ का काम किया तो नमाज़ बातिल हो जाएगी।[3]

(5) सुन्नतें व आदाब 《चलने की सुन्नतें व आदाब》

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मदनी सरकार صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा ज़िन्दगी

1 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الرابع فی صفۃ الصلاۃ، 78/1
2 ...غنیۃ المتملی، الشرط السادس القعدۃ الاخیرۃ، ص290
3 ...درمختار مع رد المحتار، کتاب الصلاۃ، باب فی صفۃ الصلاۃ، 170/2

के हर शो'बे में हमारी रहनुमाई करती है। मुसल्मान की चाल भी इम्तियाज़ी होनी चाहिये। गिरेबान खोल कर, गले में ज़न्जीर सजाए, सीना तान कर, क़दम पछाड़ते हुए चलना बे वुक़ूफ़ों और मग़रूरों की चाल है।

मुसल्मानों को दरमियाना और पुर वक़ार त़रीक़े पर चलना चाहिये। चलने की चन्द सुन्नतें और आदाब मुलाह़ज़ा हों :

(1) ☞ अगर कोई रुकावट न हो तो दरमियानी रफ़्तार से रास्ते के कनारे कनारे चलें, न इतना तेज़ कि लोगों की निगाहें आप पर जम जाएं और न इतना आहिस्ता कि आप बीमार मह़सूस हों।

(2) ☞ लफ़ंगों की त़रह़ गिरेबान खोल कर, अकड़ते हुए हरगिज़ न चलें कि येह अह़मक़ों और मग़रूरों की चाल है बल्कि नीची नज़रें किये पुर वक़ार त़रीक़े पर चलें। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ عَنْہ से मरवी है कि जब हुज़ूरे पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चलते तो झुके हुए मा'लूम होते थे।[1]

(3) ☞ राह चलने में परेशान नज़री से बचें और सड़क उ़बूर करते वक़्त गाड़ियों वाली सम्त देख कर सड़क उ़बूर करें। अगर गाड़ी आ रही हो तो बे तह़ाशा भाग न पड़ें बल्कि रुक जाएं कि इस में ह़िफ़ाज़त का ज़ियादा इम्कान है। ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** पाक! हमें प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत के मुत़ाबिक़ दरमियाना, तकब्बुर से बिल्कुल पाक चाल चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और हमें रास्ते के एक त़रफ़, इधर उधर झांके ताके बिग़ैर सर झुका कर शरीफ़ाना चाल चलने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा।[2] اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(6) इस्लाह़े आ'माल ﴾तकब्बुर का इलाज﴿

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! तकब्बुर या'नी ख़ुद को अफ़्ज़ल और दूसरों को ह़क़ीर जानना बहुत बड़ा गुनाह है। तकब्बुर और इस की तबाह कारियों से बचने के लिये मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ रिसाले "तकब्बुर" सफ़ह़ा 68 से चन्द इलाज व त़रीक़े बयान किये जाते हैं, आइये ! मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

1 ... ابو داود، کتاب الادب، باب فی ھدی الرجل، ص763، حدیث: 4864

2 ... सुन्नतें और आदाब, स. 97

(1) ☞ बारगाहे इलाही में ह़ाज़िरी को याद रखिये और इस त़रह़ "फ़िक्रे मदीना" (या'नी अपना मुह़ासबा) कीजिये कि कल जब ह़श्र बपा होगा और हर एक अपने किये का ह़िसाब देगा तो मुझे भी **अल्लाह** पाक की बारगाह में अपने आ'माल का ह़िसाब देना पड़ेगा, उस वक़्त मैं इन्तिहाई इ़ज्ज़, ज़िल्लत और पस्ती की जगह पर होउंगा। अगर मेरा रब मुझ से नाराज़ हुवा तो मेरा क्या बनेगा ! अगर तकब्बुर के सबब मुझे जहन्नम में फेंक दिया गया तो दर्दनाक अ़ज़ाब क्यूंकर बरदाश्त कर पाऊंगा ? इस त़रह़ तसव्वुर में अ़ज़ाब को याद करने की वज्ह से आ़जिज़ी पैदा होगी। इन तमाम बातों को सोच कर اِنْ شَآءَ اللّٰه तकब्बुर दूर हो जाएगा, और बन्दा ख़ुद को **अल्लाह** पाक की बारगाह में ह़क़ीर व आ़जिज़ ख़याल करेगा।

(2) ☞ तकब्बुर से नजात पाने के लिये मोमिन के हथियार या'नी दुआ़ को इस्ति'माल कीजिये और बारगाहे इलाही में कुछ इस त़रह़ दुआ़ मांगिये : **या अल्लाह !** मैं नेक बनना चाहता हूं, तकब्बुर से जान छुड़ाना चाहता हूं मगर नफ़्सो शैत़ान ने मुझे दबा रखा है, ऐ मेरे मालिक ! मुझे इन के मुक़ाबले में काम्याबी अ़त़ा फ़रमा, मुझे नेक बना दे, आ़जिज़ी का पैकर बना दे। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(3) ☞ तकब्बुर से बचने के लिये अपने गुनाहों पर नज़र रखना बहुत मुफ़ीद है और अपनी आ़दातो अत़्वार को तक़्वे की छलनी से गुज़ारना अच्छाइयों और बुराइयों की पहचान के लिये बहुत मददगार है। रसूले बे मिस्लो बे मिसाल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा कमाल है : "अ़न्क़रीब मेरी उम्मत को पिछली उम्मतों की बीमारी लाह़िक़ होगी।" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "पिछली उम्मतों की बीमारी क्या है ?" तो आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तकब्बुर करना, इतराना, कसरत से माल जम्अ़ करना और दुन्या में एक दूसरे पर सब्क़त ले जाना, नीज़ आपस में बुग़्ज़ो ह़सद रखना, बुख़्ल करना, यहां तक कि वोह ज़ुल्म में तब्दील हो जाए और फिर फ़ितना व फ़साद बन जाए।"[1]

(4) ☞ मोहलिकात का एक इ़लाज येह भी है कि जब किसी मोहलिक के दरपेश होने का अन्देशा

[1] ...معجم اوسط، 6/348، حدیث:9016

हो तो उस के नुक़्सानात व अ़ज़ाबात पर ख़ूब ग़ौर करे ताकि अपने अन्दर उस मोहलिक (या'नी हलाक करने वाले अ़मल) से बचने का जज़्बा पैदा हो।

(5) ☞ अपने दिल से तकब्बुर की गन्दगी को साफ़ करने के लिये आ़जिज़ी का पानी इस्ति'माल करना बेहद मुफ़ीद है, ख़ातमुल मुरसलीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी) इख़्तियार करो और मिस्कीनों के साथ बैठा करो, **अल्लाह** पाक के बड़े मर्तबे वाले बन्दे बन जाओगे और तकब्बुर से भी बरी हो जाओगे।"[1]

(6) ☞ गुरूरो तकब्बुर ने न किसी को शाइस्तगी बख़्शी है और न किसी को अ़ज़मतो सर बुलन्दी की चोटी पर पहुंचाया है, हां ! ज़िल्लत की पस्तियों में ज़रूर गिराया है जैसा कि नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जो **अल्लाह** पाक के लिये आ़जिज़ी इख़्तियार करे, **अल्लाह** पाक उसे बुलन्दी अ़ता फ़रमाएगा, पस वोह ख़ुद को कमज़ोर समझेगा मगर लोगों की नज़रों में अ़ज़ीम होगा और जो तकब्बुर करे, **अल्लाह** पाक उसे ज़लील कर देगा, पस वोह लोगों की नज़रों में छोटा होगा मगर ख़ुद को बड़ा समझता होगा यहां तक कि वोह लोगों के नज़्दीक कुत्ते और ख़िन्ज़ीर से भी बदतर हो जाता है।"[2]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 21

मौज़ूआ़त

1	मदनी क़ाइदा : वक़्फ़	2	अज़्कारे नमाज़ : तशह्हुद
3	तफ़्सीरे कुरआन : लह्वो लइब से बचना मोमिन की ख़ूबी है	4	नमाज़ के अह़काम : नमाज़ के वाजिबात ०
5	सुन्नतें व आदाब : सोने जागने की सुन्नतें व आदाब	6	इस्लाहे आ'माल : ज़कात न देना

1 ...كنز العمال، كتاب الاخلاق، باب التواضع، جز3، 50/2، حديث: 5722

2 ...كنز العمال، كتاب الاخلاق، باب التواضع، جز3، 51/2، حديث: 5734

(1) मदनी क़ाइदा «वक़्फ़»

- ○ : येह वक़्फ़े ताम और आयत मुकम्मल होने की अ़लामत है, यहां ठहरना चाहिये।
- م : येह वक़्फ़े लाज़िम की अ़लामत है, यहां ज़रूर ठहरना चाहिये।
- ط : येह वक़्फ़े मुत़्लक़ की अ़लामत है, यहां ठहरना बेहतर है।
- ج : येह वक़्फ़े जाइज़ की अ़लामत है, यहां ठहरना बेहतर और न ठहरना भी जाइज़ है।
- ز : येह वक़्फ़े मुजव्वज़ की अ़लामत है, यहां ठहरना जाइज़ मगर न ठहरना बेहतर है।
- ص : येह वक़्फ़े मुरख़्ख़स की अ़लामत है, यहां मिला कर पढ़ना चाहिये मगर वक़्फ़ करना भी जाइज़ है।
- لا : "لا" के मा'ना "नहीं" हैं, येह अ़लामत कहीं आयत के ऊपर इस्ति'माल की जाती है और कहीं इ़बारत के अन्दर। इ़बारत के अन्दर हो तो हरगिज़ नहीं ठहरना चाहिये अलबत्ता आयत के ऊपर हो तो इस पर ठहरने या न ठहरने में इख़्तिलाफ़ है लेकिन ठहरा जाए या न ठहरा जाए इस से मत़लब में ख़लल वाक़ेअ़ नहीं होता।

صٰدِقِيْنَ ○	شَفَتَيْنِ ○	بِالْحَقِّ لا	نَسْتَعِيْنُ ○
يَشَآءُ ط	مِنْ قَبْلُ ج	بِهٖ ج	اَخْلَدَهٗ ○
اَلْفَافًا ○	قُوَّةً ط	جَارِيَةٌ ○	فَحَدِّثْ ○

(2) अज़्कारे नमाज़ «तशह्हुद»

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَ الصَّلَوَاتُ وَ الطَّيِّبٰتُ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ ○ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ○

तमाम क़ौली, फ़े'ली और माली इ़बादतें **अल्लाह** पाक ही के लिये हैं। सलाम हो आप पर ऐ नबी ! और **अल्लाह** पाक की रह़मतें और बरकतें। सलाम हो हम पर और **अल्लाह** के नेक बन्दों पर, मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** पाक के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) उस के बन्दे और रसूल हैं।

(3) तफ़्सीरे कुरआन ﴾लह्वो लइ़ब से बचना मोमिन की ख़ूबी है﴿

وَالَّذِیۡنَ ہُمۡ عَنِ اللَّغۡوِ مُعۡرِضُوۡنَ ۙ﴿۳﴾
(پ18، المومنون:3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह जो फ़ुज़ूल बात से मुंह फेरने वाले हैं।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 6, सफ़्ह़ा 499 पर है कि फ़लाह़ पाने वाले मोमिनों का दूसरा वस्फ़ बयान किया गया कि वोह हर लह्वो बात़िल से बचे रहते हैं।[1]

अ़ल्लामा अह़मद सावी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : ''लग़्व से मुराद हर वोह क़ौल, फ़े'ल और ना पसन्दीदा काम है जिस का मुसल्मान को दीनी या दुन्यवी कोई फ़ाएदा न हो जैसे मज़ाक़ मस्ख़री, बेहूदा गुफ़्तगू, खेलकूद, ख़ुलासा येह है कि मुसल्मान को अपनी आख़िरत की बेहतरी के लिये नेक आ'माल करने में मसरूफ़ रहना चाहिये या वोह अपनी ज़िन्दगी बसर करने के लिये ब क़दरे ज़रूरत (ह़लाल) माल कमाने की कोशिश में लगा रहे।''[2]

अह़ादीस में भी फ़ुज़ूल कामों से बचने की तरग़ीब दी गई है, चुनान्चे ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''आदमी के इस्लाम की अच्छाई में से येह है कि वोह लाया'नी (जिस का कोई फ़ाएदा न हो) चीज़ छोड़ दे।''[3] या'नी जो चीज़ कारआमद न हो उस में न पड़े, ज़बान, दिल और दीगर आ'ज़ा को बेकार बातों की त़रफ़ मुतवज्जेह न करे।[4]

1 ...تفسیر خازن، پ18، المؤمنون، تحت الآیۃ: 3، 269/3
2 ...تفسیر صاوی، پ18، المومنون، تحت الآیۃ: 3، الجزء: 2، 151/4
3 ...ترمذی، کتاب الزھد، 9-باب ماجاء من تکلم بالکلمۃ لیضحك الناس، ص555، حدیث: 3317
4 ... बहारे शरीअ़त, 3/520, ह़िस्सा : 16

हज़रते उक़्बा बिन आमिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और अर्ज़ की : नजात क्या है ?" इर्शाद फ़रमाया : "अपनी ज़बान पर क़ाबू रखो और तुम्हारा घर तुम्हारे लिये गुन्जाइश रखे (या'नी बेकार इधर उधर न जाओ) और अपनी ख़ता पर आंसू बहाओ ।"[1]

ज़बान की हिफ़ाज़त के फ़वाइद व बे अहतियाती के नुक़्सानात

ज़बान की हिफ़ाज़त करने का एक फ़ाएदा येह भी है कि इस से नेक आ'माल की हिफ़ाज़त होती है क्यूं कि जो शख़्स ज़बान की हिफ़ाज़त नहीं करता तो ऐसा शख़्स लोगों की ग़ीबत में मुब्तला होने से बच नहीं पाता, यूंही उस से कुफ़्रिय्या अल्फ़ाज़ निकल जाने का बहुत अन्देशा रहता है और येह ऐसे अमल हैं जिस से बन्दे के नेक आ'माल ज़ाएअ़ हो जाते हैं। हज़रते इमाम हसन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से किसी शख़्स ने कहा : फ़ुलां शख़्स ने आप की ग़ीबत की है। येह सुन कर आप ने ग़ीबत करने वाले आदमी को खजूरों का थाल भर कर रवाना किया और साथ में येह कहला भेजा : सुना है कि तुम ने मुझे अपनी नेकियां हदिय्या (तोहफ़ा) की हैं, तो मैं ने उन का मुआवज़ा देना बेहतर जाना (इस लिये खजूरों का येह थाल हाज़िर है) ।[2]

और दूसरा फ़ाएदा येह है कि ज़बान की हिफ़ाज़त करने से इन्सान दुन्या की आफ़ात से महफ़ूज़ रहता है, चुनान्चे हज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ज़बान से ऐसी बात न निकालो जिसे सुन कर लोग तुम्हारे दांत तोड़ दें। और एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अपनी ज़बान को बे लगाम न छोड़ो ताकि येह तुम्हें किसी फ़साद में मुब्तला न कर दे ।[3]

नीज़ ज़बान की हिफ़ाज़त न करने का एक नुक़्सान येह है कि बन्दा ना जाइज़ व हराम, फ़ुज़ूल बातों में मसरूफ़ हो कर गुनाहों में मुब्तला होता और अपनी ज़िन्दगी की क़ीमती तरीन चीज़ "वक़्त" को ज़ाएअ़ कर देता है। हज़रते हस्सान बिन सिनान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के बारे में मरवी है कि आप

1 ...ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی حفظ اللسان، ص572، حدیث:2406

2 ...منھاج العابدین، العقبۃ الثالثۃ، العائق الرابع، ص171

3 ...منھاج العابدین، العقبۃ الثالثۃ، العائق الرابع، ص171

एक बालाख़ाने के पास से गुज़रे तो उस के मालिक से दरयाफ़्त फ़रमाया : येह बालाख़ाना बनाए तुम्हें कितना अ़र्सा गुज़रा है ? येह सुवाल करने के बा'द आप को दिल में सख़्त नदामत हुई और नफ़्स को मुख़ातब करते हुए यूं फ़रमाया : "ऐ मग़रूर नफ़्स ! तू फ़ुज़ूल और लाया'नी (जिस का कोई फ़ाएदा न हो) सुवालात में क़ीमती तरीन वक़्त को ज़ाएअ़ करता है ?" फिर इस फ़ुज़ूल सुवाल के कफ़्फ़ारे में आप ने एक साल रोज़े रखे ।[1]

और दूसरा नुक़्सान येह है कि ना जाइज़ व ह़राम गुफ़्त्गू की वज्ह से इन्सान क़ियामत के दिन जहन्नम के दर्दनाक अ़ज़ाब में मुब्तला हो सकता है जिसे बरदाश्त करने की ताक़त किसी में नहीं । लिहाज़ा आ़फ़ियत इसी में है कि बन्दा अपनी ज़बान की हि़फ़ाज़त करे और इसे उन बातों के लिये इस्ति'माल करे जो उसे दुन्या और आख़िरत में नफ़्अ़ दें । **अल्लाह** पाक तमाम मुसल्मानों को ज़बान की हि़फ़ाज़त व निगह् दाश्त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए ।[2] اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(4) नमाज़ के अह़काम ﴾वाजिबाते नमाज़﴿

﴾1﴿ ☞ तक्बीरे तह़रीमा में लफ़्ज़ "اَللّٰہُ اَکْبَر" कहना ।

﴾2﴿ ☞ फ़र्ज़ों की तीसरी (3) और चौथी रक्अ़त के इलावा बाक़ी तमाम नमाज़ों की हर रक्अ़त में अल ह़म्द शरीफ़ पढ़ना, सूरत मिलाना या क़ुरआने पाक की एक बड़ी आयत जो छोटी तीन (3) आयतों के बराबर हो या तीन (3) छोटी आयतें पढ़ना ।

﴾3﴿ ☞ अल ह़म्द शरीफ़ का सूरत से पहले पढ़ना ।

﴾4﴿ ☞ अल ह़म्द शरीफ़ और सूरत के दरमियान "आमीन" और "بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم" के इलावा कुछ और न पढ़ना ।

﴾5﴿ ☞ क़िराअत के फ़ौरन बा'द रुकूअ़ करना ।

﴾6﴿ ☞ एक सज्दे के बा'द बित्तरतीब दूसरा सज्दा करना ।

1 ...منهاج العابدين، العقبة الثالثة، العائق الرابع، ص169

2 ... तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह : 18, अल मुअमिनून, तह़्तल आयह : 3, 6/499, 501

(7) ☞ ता'दीले अरकान या'नी रुकूअ़, सुजूद, क़ौमा और जल्सा में कम अज़ कम एक बार سُبْحٰنَ اللّٰه कहने की मिक़्दार ठहरना ।[1]

(5) सुन्नतें व आदाब «सोने जागने की सुन्नतें व आदाब»

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! नींद भी एक त़रह़ की **मौत** है । जब भी हम सोने लगें तो हमें डर जाना चाहिये कि कहीं ऐसा न हो कि आंख ही न खुले और हमेशा हमेशा के लिये ही सोते न रह जाएं । लिहाज़ा रोज़ाना सोने से पहले भी अपने गुनाहों से तौबा कर लेनी चाहिये । अगर हम सुन्नत के मुत़ाबिक़ दुआ़एं वग़ैरा पढ़ कर सोएं तो اِنْ شَآءَ اللّٰه हमें सोने का भी कुछ न कुछ फ़ाएदा ह़ासिल हो ही जाएगा ।

(1) ☞ सोने से पहले बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ कर बिस्तर को तीन बार झाड़ लें ताकि कोई मूज़ी शै (नुक़्सान पहुंचाने वाली चीज़) या कीड़ा वग़ैरा हो तो निकल जाए ।

(2) ☞ सोने से पहले येह दुआ़ पढ़ लेना सुन्नत है । "**اَللّٰهُمَّ بِاسْمِکَ اَمُوْتُ وَاَحْیٰ**" **तरजमा :** ऐ **अल्लाह** पाक ! मैं तेरे नाम के साथ ही मरता और जीता हूं (या'नी सोता और जागता हूं) ।[2]

(3) ☞ उलटा या'नी पेट के बल न सोएं । ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से मरवी है कि हु़ज़ूरे पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को पेट के बल लैटे हुए देखा तो फ़रमाया : "इस त़रह़ लैटने को **अल्लाह** पाक पसन्द नहीं फ़रमाता ।"[3]

(4) ☞ दाएं करवट लैटना सुन्नत है । ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब अपनी ख़्वाब गाह पर तशरीफ़ ले जाते तो अपना सीधा हाथ मुबारक सीधे रुख़्सार शरीफ़ के नीचे रख कर लैटते ।[4]

(5) ☞ कभी चटाई पर सोएं तो कभी बिस्तर पर कभी फ़र्शे ज़मीन पर ही सो जाएं ।[5]

(6) ☞ जागने के बा'द येह दुआ़ पढ़ें : "**اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ**" **तरजमा :**

1 ... درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، مطلب: واجبات الصلاۃ، 2/184-195 ملتقطًا

2 ... بخاری، کتاب الدعوات، باب ما یقول اذا نام، ص1560، حدیث: 6312

3 ... ابن ماجہ، کتاب الادب، باب النھی عن الاضطجاع علی الوجہ، ص599، حدیث: 3723 ملخصًا

4 ... तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 24, حٰمٓ السجدۃ, तह़्तल आयह : 6, 7

5 ... सुन्नतें और आदाब, स. 106, 107

तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** पाक के लिये हैं जिस ने हमें मारने के बा'द ज़िन्दा किया और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है।[1]

(6) इस्लाहे आ'माल ﴾ज़कात न देना﴿

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़कात अदा न करना गुनाहे कबीरा, हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, **अल्लाह** पाक ज़कात अदा न करने वालों की मज़म्मत बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाता है :

وَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝
(پ24، حم السجدۃ:6-7)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मुश्रिकों के लिये ख़राबी है वोह जो ज़कात नहीं देते और वोह आख़िरत के मुन्किर हैं।

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ आयते मुबारका के इस हिस्से "वोह जो ज़कात नहीं देते" की वज़ाहत करते हुए फ़रमाते हैं : येह मन्ए ज़कात से ख़ौफ़ दिलाने के लिये फ़रमाया गया ताकि मा'लूम हो कि ज़कात को मन्अ करना ऐसा बुरा है कि कुरआने करीम में मुश्रिकीन के औसाफ़ में ज़िक्र किया गया और इस की वज्ह येह है कि इन्सान को माल बहुत प्यारा होता है तो माल का राहे ख़ुदा में ख़र्च कर डालना इस के सुबात व इस्तिक़्लाल और सिद्क़ो इख़्लासे निय्यत की क़वी दलील है।[2]

ज़कात न देना माल की बरबादी का सबब

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ख़ुश्की व तरी में जो माल ज़ाएअ़ हुवा है वोह ज़कात न देने की वज्ह से तलफ़ (ज़ाएअ़) हुवा है।[3] एक रिवायत में है : ज़कात का माल जिस (माल) में मिला होगा उसे तबाहो बरबाद कर देगा।[4]

साहिबे बहारे शरीअ़त मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ इस ह़दीस की

1 ...بخاری، کتاب الدعوات، باب مایقول اذانام، ص1560، حدیث:6312

2 ... तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 24, حم السجدۃ, तह़तल आयह : 6, 7

3 ...مجمع الزوائد، کتاب الزکوۃ، باب فرض الزکوۃ، 150/3، حدیث:433

4 ...شعب الایمان، باب فی الزکاۃ، 273/3، حدیث:3522

वज़ाहत करते हुए लिखते हैं : बा'ज़ अइम्मा ने इस ह़दीस के येह मा'ना बयान किये कि ज़कात वाजिब हुई और अदा न की और अपने माल में मिलाए रहा तो येह ह़राम उस ह़लाल को हलाक कर देगा और इमाम अह़मद (رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه) ने फ़रमाया कि मा'ना येह हैं कि मालदार शख़्स माले ज़कात ले तो येह माले ज़कात उस के माल को हलाक कर देगा कि ज़कात तो फ़क़ीरों के लिये है और दोनों मा'ना सह़ीह़ हैं ।[1]

ज़कात न देना इज्तिमाई नुक़्सान का सबब

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जो क़ौम ज़कात न देगी **अल्लाह** पाक उसे क़ह़्त़ में मुब्तला फ़रमाएगा ।[2] एक मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : जब लोग ज़कात की अदाएगी छोड़ देते हैं तो **अल्लाह** पाक बारिश को रोक देता है, अगर ज़मीन पर चौपाए मौजूद न होते तो आस्मान से पानी का एक क़त़रा भी न गिरता ।[3]

ज़कात न देना ला'नत का सबब

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه रिवायत करते हैं : ज़कात न देने वाले पर **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ला'नत फ़रमाई है ।[4]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 22

मौज़ूआ़त

1	मदनी क़ाइदा : दोहराई सिवुम	2	अज़्कारे नमाज़ : दुरूदे इब्राहीमी ह़िस्सए अव्वल
3	तफ़्सीरे क़ुरआन : पहली सफ़ के फ़ज़ाइल	4	नमाज़ के अह़काम : नमाज़ के वाजिबात
5	सुन्नतें व आदाब : मेहमान नवाज़ी की सुन्नतें व आदाब	6	इस्लाहे़ आ'माल : नज़र की ह़िफ़ाज़त

1... बहारे शरीअ़त, 1/871, ह़िस्सा : 5

2... معجم اوسط، 3/276، حدیث: 4577

3... ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب العقوبات، ص648، حدیث 4019

4... ابن خزیمہ، کتاب الزکاۃ، باب ذکر لعن لاوی الصدقۃ... الخ، ص515، حدیث: 2250

(1) मदनी क़ाइदा ﴾दोहराई सिवुम﴿

- इस सबक़ में साबिक़ा अस्बाक़ (तश्दीद, नून साकिन व तन्वीन, मद्दात, वक़्फ़) के तमाम क़वाइद की दोहराई की जाए।
- तमाम क़रीबुस्सौत हुरूफ़, गुन्ना, मद्दात, वक़्फ़ पर ख़ुसूसी तवज्जोह दी जाए।

مِنْ اَجَلٍ	مِنْ هَادٍ	مِنْ عَلَقٍ	جُرُفٍ هَارٍ	سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ
فَمَنْ تَبِعَ	مِنْ ثَمَرَةٍ	مِنْ جُوْعٍ	بَخْسٍ دَرَاهِمَ	عَدْنٍ تَجْرِىْ
اِنَّ الظَّنَّ	مَدَّ الظِّلَّ	يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ		قَدْ تَّبَيَّنَ
مَنْ يَّقُوْلُ	مِنْ يَّوْمٍ	وَيْلٌ لِّكُلِّ	رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ	اَنْۢبِئْهُمْ
قَوْلًا بَلِيْغًا	خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا		فِىْٓ اَنْفُسِكُمْ	هٰٓؤُلَآءِ
جَآنٌّ	كَآفَّةً	يَتَسَآءَلُوْنَ ۝	جَارِيَةٌ ۝	شَهْرٍ ۝
مِنَ الْاُوْلٰى	شِدَّةً	نٰدِمِيْنَ ۝	رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝	
خُلُقٍ عَظِيْمٍ	خَلْقٍ جَدِيْدٍ	عَبَدْتُّمْ	لَيُنْۢبَذَنَّ	بِمَآ اُنْزِلَ
نَبِيًّا ۝	بِالْحَقِّ ۝ۙ	وَالْمَسْكَنَةُ ۗ	قَدِيْرٌ ۝ الَّذِىْ	
تَهْتَدُوْا ۚ	فِيْهَا ؕ	وَاِسْتَبْرَقٌ ؗ	بِالْهُدٰى ۖ	اَلِيْمٌ ۙ بِمَا

(2) अज़्कारे नमाज़ ﴾दुरूदे इब्राहीमी हिस्सए अव्वल﴿

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَ عَلٰٓى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ○

ऐ **अल्लाह** पाक ! दुरूद भेज (हमारे सरदार) मुह़म्मद पर और इन की आल पर जिस त़रह़ तू ने दुरूद भेजा इब्राहीम पर और उन की आल पर, बेशक तू सराहा हुवा बुज़ुर्ग है ।

(3) तफ़्सीरे क़ुरआन ﴾पहली सफ़ के फ़ज़ाइल﴿

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَاْخِرِيْنَ ﴿۲۴﴾ (پ14، الحجر:24)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक हम तुम में से आगे बढ़ने वालों को भी जानते हैं और बेशक हम पीछे रहने वालों को भी जानते हैं ।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 5, सफ़्ह़ा 223 पर है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से एक रिवायत येह है कि اَلْمُسْتَقْدِمِیْنَ से वोह लोग मुराद हैं जो सफ़े अव्वल में नमाज़ की फ़ज़ीलत ह़ासिल करने के लिये आगे बढ़ने वाले हैं और اَلْمُسْتَاْخِرِیْنَ से वोह लोग मुराद हैं जो उ़ज़्र की वज्ह से पीछे रह जाने वाले हैं ।

शाने नुज़ूल : ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से मरवी है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मरतबा जमाअ़त के साथ पढ़ी जाने वाली नमाज़ की सफ़े अव्वल के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم सफ़े अव्वल ह़ासिल करने की बहुत कोशिश करने लगे और उन का रश होने लगा और जिन ह़ज़रात के मकान मस्जिद शरीफ़ से दूर थे वोह अपने मकान बेच कर मस्जिद के क़रीब मकान ख़रीदने पर आमादा हो गए ताकि सफ़े अव्वल में जगह मिलने से कभी मह़रूम न हों । इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें तसल्ली दी गई कि सवाब निय्यतों पर है और **अल्लाह** पाक अगलों को भी जानता है और जो उ़ज़्र की वज्ह से पीछे रह गए हैं उन को भी जानता है और उन की निय्यतों से भी ख़बरदार है और उस पर कुछ मख़्फ़ी नहीं ।[1]

[1] ...تفسیر خازن، پ14، الحجر، تحت الآیۃ:24، 3/100

पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ने के फ़ज़ाइल

इस आयत के शाने नुज़ूल से एक बात येह मा'लूम हुई कि सहाबए किराम رضی اللہ عنہم इबादत का इतना जज़्बा और शौक़ रखते थे कि पहली सफ़ की फ़ज़ीलत हासिल करने की ख़ातिर अपने मकानात तक बेचने पर आमादा हो गए। दूसरी बात येह मा'लूम हुई कि जमाअ़त के साथ पढ़ी जाने वाली नमाज़ की पहली सफ़ की बहुत फ़ज़ीलत है। तरग़ीब के लिये हम यहां पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ने के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 4 अहादीस ज़िक्र करते हैं :

﴾1﴿ ☞ हज़रते अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर लोगों को मा'लूम हो जाए कि अज़ान देने और पहली सफ़ में बैठने का कितना अज्र है और उन्हें कुरआ अन्दाज़ी करने के सिवा इन कामों का मौक़अ़ न मिले तो वोह ज़रूर कुरआ अन्दाज़ी करेंगे।''[1]

﴾2﴿ ☞ हज़रते उबय बिन का'ब رضی اللہ عنہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक पहली सफ़ फ़िरिश्तों की सफ़ के मिस्ल है और अगर तुम जानते कि इस की फ़ज़ीलत क्या है तो इस की त़रफ़ सब्क़त करते।''[2]

﴾3﴿ ☞ हज़रते अबू उमामा رضی اللہ عنہ से रिवायत है, हुज़ूरे अक्दस صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** पाक और उस के फ़िरिश्ते सफ़े अव्वल पर दुरूद भेजते हैं।'' लोगों ने अ़र्ज़ की : और दूसरी सफ़ पर। इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** पाक और उस के फ़िरिश्ते सफ़े अव्वल पर दुरूद भेजते हैं।'' लोगों ने अ़र्ज़ की : और दूसरी पर। इर्शाद फ़रमाया : ''और दूसरी पर (भी)।''[3]

﴾4﴿ ☞ हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا से रिवायत है, रसूले अकरम صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हमेशा सफ़े अव्वल से लोग पीछे होते रहेंगे, यहां तक कि **अल्लाह** पाक उन्हें

1 ...بخاری، کتاب الشھادات، باب القرعۃ فی المشکلات، ص693، حدیث: 2689

2 ...ابو داود، کتاب الصلاۃ، باب فی فضل صلاۃ الجماعۃ، ص102، حدیث: 554

3 ...مسند امام احمد، مسند الانصار، حدیث ابی امامۃ الباھلی... الخ، 198/9، حدیث: 22901

(अपनी रह़मत से) मुअख़्ख़र कर के नार में डाल देगा।"[1]

अल्लाह पाक हमें पहली सफ़ में पाबन्दी के साथ नमाज़ अदा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم।

(4) नमाज़ के अह़काम ﴾नमाज़ के वाजिबात﴿

﴾1﴿ ☞ क़ौमा या'नी रुकूअ़ से सीधा खड़ा होना (बा'ज़ लोग रुकूअ़ से बिल्कुल सीधा जैसे नोर्मल ह़ालत में खड़े होते हैं इस ह़ालत तक पहुंचने से पहले ही सज्दे में चले जाते हैं। इस त़रह़ उन का वाजिब छूट जाता है)।

﴾2﴿ ☞ जल्सा या'नी दो सज्दों के दरमियान सीधा बैठना (बा'ज़ लोग जल्द बाज़ी की वज्ह से बराबर सीधे बैठने से पहले ही दूसरे सज्दे में चले जाते हैं इस त़रह़ उन का वाजिब तर्क हो जाता है, चाहे कितनी ही जल्दी हो सीधा बैठना लाज़िमी है वरना नमाज़ मक्रूहे तह़रीमी वाजिबुल इआ़दा होगी)।

﴾3﴿ ☞ क़ा'दए ऊला वाजिब है, अगर्चे नमाज़े नफ़्ल हो। (अस्ल में दो नवाफ़िल का हर क़ा'दा "क़ा'दए अख़ीरा" है और फ़र्ज़ है। अगर क़ा'दा न किया, भूल कर खड़ा हो गया तो जब तक उस रक्अ़त का सज्दा न कर ले लौट आए और आख़िर में सज्दए सह्व कर ले।)[2]

﴾4﴿ ☞ अगर तीसरी या पांचवीं रक्अ़त का सज्दा कर लिया तो अब क़ा'दए ऊला फ़र्ज़ के बजाए वाजिब हो गया। आख़िर में सज्दए सह्व कर ले।[3]

﴾5﴿ ☞ फ़र्ज़, वित्र और सुन्नते मुअक्कदा के क़ा'दए ऊला में तशह्हुद (अत्तह़िय्यात) के बा'द कुछ न बढ़ाना।

﴾6﴿ ☞ दोनों क़ा'दों में तशह्हुद मुकम्मल पढ़ना, अगर एक लफ़्ज़ भी छूटा तो वाजिब तर्क हो जाएगा और सज्दए सह्व वाजिब होगा।[4]

1 ...ابوداود، کتاب الصلاۃ، باب صف النساء وکراھیۃ التاخر عن الصف الاول، ص119، حدیث:679

2 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، مطلب: واجبات الصلاۃ، 2/193-195

3 ...حاشیۃ الطحطاوی علی مراقی الفلاح، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، ص466

4 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، مطلب: واجبات صلاۃ، 2/195-196

(7) ☞ फ़र्ज़, वित्र और सुन्नते मुअक्कदा के क़ा'दए ऊला में तशह्हुद के बा'द अगर बे ख़याली में "اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا या اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ"[1] कह लिया तो सज्दए सह्व वाजिब हो गया और अगर जान बूझ कर कहा तो नमाज़ लौटाना वाजिब है।[2]

(8) ☞ दोनों तरफ़ सलाम फेरते वक़्त लफ़्ज़े "اَلسَّلَامُ" दोनों बार वाजिब है लफ़्ज़ "عَلَیْکُمْ" वाजिब नहीं बल्कि सुन्नत है।[3]

(5) सुन्नतें व आदाब «मेहमान नवाज़ी की सुन्नतें व आदाब»

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मेहमान नवाज़ी करना सुन्नते मुबारका है, अहादीसे मुबारका में इस के बहुत से फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं बल्कि यहां तक फ़रमाया कि मेहमान बाइसे ख़ैरो बरकत है। एक दफ़्आ सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के यहां मेहमान हाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़र्ज़ ले कर उस की मेहमान नवाज़ी फ़रमाई। चुनान्चे ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ुलाम अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ कहते हैं, सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : फ़ुलां यहूदी से कहो कि मुझे आटा क़र्ज़ दे। मैं रजब शरीफ़ के महीने में अदा कर दूंगा (क्यूं कि एक मेहमान मेरे पास आया हुवा है)। यहूदी ने कहा : जब तक कुछ गिरवी नहीं रखोगे, न दूंगा। हज़रते अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ कहते हैं कि मैं वापस आया और ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में उस का जवाब अ़र्ज़ किया। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** की क़सम ! मैं आस्मान में भी अमीन हूं और ज़मीन में भी अमीन हूं। अगर वोह दे देता तो मैं अदा कर देता।" (अब मेरी वोह ज़िरह ले जा और गिरवी रख कर आ। मैं ले गया और ज़िरह गिरवी रख कर आटा ले आया)[4]

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का बयान है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस घर में मेहमान हो उस घर में ख़ैरो बरकत इसी तरह तेज़ी से दौड़ती है जैसे ऊंट की कोहान पर छुरी, बल्कि इस से भी तेज़।"[5]

1... बहारे शरीअ़त, 1/520, हिस्सा : 3

2... درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، ص71

3... درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، مطلب: لاینبغی ان یعدل عن الدرایۃ...الخ، 2/199

4... معجم کبیر، 1/331، حدیث:989

5... ابن ماجہ، کتاب الاطعمۃ، باب الضیافۃ، ص545، حدیث:3357

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ऊंट की कोहान में हड्डी नहीं होती, चरबी ही होती है, उसे छुरी बहुत ही जल्द काटती है और उस की तह तक पहुंच जाती है इस लिये इस से तश्बीह दी गई ।[1]

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब कोई मेहमान किसी के यहां आता है तो अपना रिज़्क़ ले कर आता है और जब उस के यहां से जाता है तो साह़िबे ख़ाना के गुनाह बख़्शे जाने का सबब होता है ।"[2]

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते बराअ बिन मालिक رَضِىَ اللهُ عَنْه से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ बराअ ! आदमी जब अपने भाई की, **अल्लाह** पाक के लिये मेहमान नवाज़ी करता है और इस की कोई जज़ा और शुक्रिय्या नहीं चाहता तो **अल्लाह** पाक उस के घर में दस (10) फ़िरिश्तों को भेज देता है जो पूरे एक साल तक **अल्लाह** पाक की तस्बीह़ो तह्लील और तक्बीर पढ़ते और उस के लिये मग़्फ़िरत की दुआ़ करते रहते हैं और जब साल पूरा हो जाता है तो उन फ़िरिश्तों की पूरे साल की इ़बादत के बराबर उस के नामए आ'माल में इ़बादत लिख दी जाती है और **अल्लाह** पाक के ज़िम्मए करम पर है कि उस को जन्नत की लज़ीज़ ग़िज़ाएं "**जन्नतुल ख़ुल्द**" और न फ़ना होने वाली बादशाही में खिलाए ।"[3]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ عَنْه का बयान है, ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सुन्नत येह है कि आदमी मेहमान को दरवाज़े तक रुख़्सत करने जाए ।"[4]

(6) इस्लाहे़ आ'माल ﴾नज़र की ह़िफ़ाज़त﴿

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बद क़िस्मती से जिस त़रह़ आदमी बोलने में बेबाक है इसी त़रह़ देखने में भी बेबाक है, इसे एह़सास तक नहीं कि देखना भी एक अ़मल है जो इस के लिये सवाब या अ़ज़ाब का बाइ़स बन सकता है । मसलन अगर अपनी मां को मह़ब्बत भरी नज़र से देखता है तो एक मक़्बूल ह़ज का सवाब मिलता है और अगर ग़ैर मह़रम को शह्वत के साथ देखता

1... मिरआतुल मनाजीह, 6/67

2... كشف الخفاء، حرف الضاد المعجمة، 33/2

3... كنز العمال، كتاب الضيافة، باب ادب المضيف، جز5، 119/9، حديث: 25972

4... ابن ماجه، كتاب الاطعمة، باب الضيافة، ص545، حديث: 3358

है तो अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार बनता है क्यूं कि ग़ैर मह़रम औ़रत को देखना इन्सान का नहीं शैत़ान का काम है। जैसा कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : اَلْمَرْاَۃُ عَوْرَۃٌ فَاِذَا خَرَجَتْ اِسْتَشْرَفَھَا الشَّیْطَانُ या'नी औ़रत औ़रत (या'नी छुपाने की चीज़) है, जब वोह निकलती है तो शैत़ान उसे झांक झांक कर देखता है।[1]

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : जो आदमी अपनी आंखों को बन्द करने पर क़ादिर नहीं होता वोह अपनी शर्मगाह की भी ह़िफ़ाज़त नहीं कर सकता।[2]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''اَلْعَیْنَانِ تَزْنِیَانِ'' या'नी आंखें भी बदकारी करती हैं।[3] और ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि ''زِنَا الْعَیْنِ النَّظَرُ'' या'नी आंखों की बदकारी देखना है।[4]

सरकारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौला मुश्किल कुशा अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से इर्शाद फ़रमाया : ऐ अ़ली ! एक नज़र के बा'द दूसरी नज़र न करो। (या'नी अगर अचानक किसी औ़रत पर नज़र पड़ी तो फ़ौरन नज़र हटा ले और दोबारा नज़र न करे) कि पहली नज़र जाइज़ और दूसरी ना जाइज़ है।[5]

पहली नज़र से क्या मुराद है ?

जाहिल लोग इस ह़दीसे पाक को ग़लत़ पैराए में बयान करते हुए مَعَاذَاللّٰہ कुछ इस त़रह़ कहते सुनाई देते हैं कि ''पहली नज़र मुआ़फ़ है'' लिहाज़ा वोह अपनी नज़र हटाते ही नहीं और मुसल्सल बद निगाही करते रहते हैं। ह़ालां कि मुआ़फ़ तो वोह पहली नज़र है जो औ़रत पर बे

1 ...ترمذی، کتاب الرضاع،18-باب،ص304،حدیث:1173

2 ...احیاء علوم الدین، کتاب کسر الشھوتین،125/3

3 ...مسند بزار، مسند عبد اللہ ابن مسعود،333/5، حدیث:1956

4 ...مسند بزار، مسند ابی ھریرۃ،116/14، حدیث:7611

5 ...ابو داود، کتاب النکاح، باب ما یؤمر بہ من غض البصر، ص342، حدیث:2149

इख़्तियार पड़ गई और फ़ौरन हटा ली, क़स्दन डाली जाने वाली पहली नज़र भी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। जैसा कि मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : पहली निगाह से मुराद वोह निगाह है जो बिग़ैर क़स्द (या'नी इरादे के बिग़ैर) अजनबी औ़रत पर पड़ जाए और दूसरी निगाह से मुराद दोबारा उसे क़स्दन देखना है। अगर पहली नज़र भी जमाए रखी तो भी दूसरी निगाह के हुक्म में होगी और इस पर भी गुनाह होगा।[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 23

मौज़ूआत

1	मदनी क़ाइदा : सूरतुन्नास	2	अज़्कारे नमाज़ : दुरूदे इब्राहीमी ह़िस्सए दुवुम
3	तफ़्सीरे क़ुरआन : क़ुरआने पाक ग़ौर और ख़ामोशी से सुना जाए	4	नमाज़ के अह़काम : नमाज़ के वाजिबात
5	सुन्नतें व आदाब : इ़मामे के फ़ज़ाइल व आदाब	6	इस्लाह़े आ'माल : काहिनों और नुजूमियों के पास जाने की मुमानअ़त

(1) मदनी क़ाइदा ﴿सूरतुन्नास : आयत 1 ता 3﴾

मदनी क़ाइदे के अस्बाक़ में पढ़े गए क़वाइद का इजरा व दुरुस्त मख़ारिज के साथ पढ़ने की मश्क़ करें।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान, रह़मत वाला है।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾

तुम कहो : मैं तमाम लोगों के रब की पनाह लेता हूं। तमाम लोगों का बादशाह। तमाम लोगों का मा'बूद।

1... मिरआतुल मनाजीह़, 5/17

(2) अज़्कारे नमाज़ «दुरूदे इब्राहीमी हिस्सए दुवुम»

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰۤى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ
عَلٰۤى اِبْرٰهِيْمَ وَ عَلٰۤى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○

ऐ **अल्लाह** पाक ! बरकत नाज़िल कर (हमारे सरदार) मुहम्मद पर और इन की आल पर जिस तरह तू ने बरकत नाज़िल की इब्राहीम और उन की आल पर, बेशक तू सराहा हुवा बुज़ुर्ग है।

(3) तफ़्सीरे कुरआन «कुरआने पाक ग़ौर और ख़ामोशी से सुना जाए»

وَ اِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَ اَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝۲۰۴ (پ9، الاعراف:204)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब कुरआन पढ़ा जाए तो उसे ग़ौर से सुनो और ख़ामोश रहो ताकि तुम पर रह्म किया जाए।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 3, सफ़्हा 511 पर है कि इस आयत में बताया है कि इस की अज़मतो शान का तक़ाज़ा येह है कि जब कुरआन पढ़ा जाए तो इसे ग़ौर से सुना जाए और ख़ामोश रहा जाए।[1]

अल्लामा अब्दुल्लाह बिन अहमद नसफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "इस आयत से साबित हुवा कि जिस वक़्त कुरआने करीम पढ़ा जाए ख़्वाह नमाज़ में या नमाज़ से बाहर उस वक़्त सुनना और ख़ामोश रहना वाजिब है।"[2]

याद रहे कि इस आयते मुबारका के बारे में मुफ़स्सिरीन के मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं, एक क़ौल येह है कि इस आयत में खुत्बे को बग़ौर सुनने और ख़ामोश रहने का हुक्म है। और एक क़ौल येह है कि इस आयत से नमाज़ व खुत्बा दोनों में बग़ौर सुनने और ख़ामोश रहने का वुजूब साबित होता है। जब कि जुम्हूर सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इस तरफ़ हैं कि येह आयत मुक़्तदी के सुनने और ख़ामोश रहने के बाब में है।[3] खुलासा येह है कि इस आयत से इमाम के पीछे कुरआने पाक

1 ...تفسیر کبیر، پ9، الاعراف، تحت الآیۃ:204، 628/1

2 ...تفسیر مدارک، پ9، الاعراف، تحت الآیۃ:204، 401/3

3 ...تفسیر خازن، پ9، الاعراف، تحت الآیۃ:204، 172/2

पढ़ने की मुमानअ़त साबित होती है और कसीर अहादीस में भी येही हुक्म फ़रमाया गया है कि इमाम के पीछे क़िराअत न की जाए। चुनान्चे

﴾1﴿ ☞ ह़ज़रते बशीर बिन जाबिर رَضِیَ اللہُ عَنْه फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ عَنْه ने नमाज़ पढ़ाई तो आप ने कुछ लोगों को सुना कि वोह नमाज़ में इमाम के साथ क़िराअत कर रहे हैं। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया : क्या अभी तुम्हारे लिये वोह वक़्त नहीं आया कि तुम इस आयत के मा'ना समझो।"[1]

﴾2﴿ ☞ ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ عَنْه से मरवी है कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब तुम नमाज़ पढ़ने लगो तो अपनी सफ़ों को दुरुस्त कर लो, फिर तुम में से कोई एक इमामत करवाए, पस जब वोह तक्बीर कहे तो तुम तक्बीर कहो।" एक रिवायत में इतना ज़ाइद है कि "और जब वोह क़िराअत करे तो तुम ख़ामोश रहो।"[2]

﴾3﴿ ☞ ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ عَنْه रिवायत करते हैं, नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इमाम इसी लिये होता है कि उस की इक़्तिदा की जाए, पस जब वोह तक्बीर कहे तो तुम तक्बीर कहो और जब वोह क़िराअत करे तो ख़ामोश रहो।"[3]

﴾4﴿ ☞ ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ عَنْه फ़रमाते हैं : जिस ने एक रक्अ़त भी बिग़ैर सूरए फ़ातिहा के पढ़ी उस की नमाज़ न हुई मगर येह कि इमाम के पीछे हो।[4]

नोट : यहां एक और मस्अला भी याद रखें कि बा'ज़ लोग ख़त्म शरीफ़ में मिल कर बुलन्द आवाज़ से तिलावत करते हैं येह भी मम्नूअ़ है।[5]

1 ...تفسیر ابن جریر، پ9، الاعراف، تحت الآیۃ:204، 161/6

2 ...مسلم، کتاب الصلاۃ، باب التشھد فی الصلاۃ، ص158، حدیث:404

3 ...ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ والسنۃ فیھا، باب اذا قرا الامام فانصتوا، ص143، حدیث:846

4 ...ترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ما جاء فی ترک القراءۃ خلف الامام...الخ، ص98، حدیث:313

5 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الکراھیۃ، الباب الرابع فی الصلاۃ والتسبیح وقراۃ القرآن...الخ، 392/5

(4) नमाज़ के अह़काम ﴾नमाज़ के वाजिबात﴿

﴾1﴿ ☞ वित्र में तक्बीरे क़ुनूत कहना।

﴾2﴿ ☞ वित्र में दुआ़ए क़ुनूत पढ़ना।

﴾3﴿ ☞ ईदैन की छे (6) तक्बीरें।

﴾4﴿ ☞ ईदैन में दूसरी रक्अ़त की तक्बीर रुकूअ़ और इस तक्बीर के लिये लफ़्ज़े "اَللّٰهُ اَكْبَر" होना।

﴾5﴿ ☞ जहरी नमाज़ (वोह नमाज़ जिस में बुलन्द आवाज़ से क़िराअत की जाती है जैसे फ़ज्र के फ़राइज़, मग़रिब के दो फ़र्ज़, इशा के दो फ़र्ज़ वग़ैरा) में इमाम को जह्र (या'नी इतनी बुलन्द आवाज़ कि दूसरे लोग या'नी जो पहली सफ़ में हैं सुन सकें) से क़िराअत करना।

﴾6﴿ ☞ सिर्री क़िराअत (आहिस्ता आवाज़ में क़िराअत) वाली नमाज़ में आहिस्ता क़िराअत करना।

﴾7﴿ ☞ हर फ़र्ज़ व वाजिब का उस की जगह पर होना।

﴾8﴿ ☞ रुकूअ़ हर रक्अ़त में एक बार ही करना।

﴾9﴿ ☞ सज्दा हर रक्अ़त में दो (2) ही बार करना।[1]

(5) सुन्नतें व आदाब ﴾इमामे के फ़ज़ाइल﴿

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इमामा शरीफ़ हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बहुत ही प्यारी सुन्नत है और आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमेशा सरे अक़्दस पर टोपी के ऊपर इमामए मुबारका को सजा कर रखा। इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इमामा सुन्नते मुतवातिरा दाइमा है।[2]

इमामे के फ़ज़ाइल पर चन्द फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴾1﴿ ☞ इमामे के साथ दो रक्अ़तें बिग़ैर इमामे की सत्तर (70) रक्अ़तों से अफ़्ज़ल हैं।[3]

1 ... درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، مطلب واجبات صلاۃ، 2/200-201

2 ... फ़तावा रज़विय्या, 6/208

3 ... مسند الفردوس، 2/265، حدیث: 3233

﴾2﴿☞ इमामे के साथ नमाज़ दस हज़ार (10,000) नेकियों के बराबर है ।[1]

﴾3﴿☞ बेशक **अल्लाह** पाक और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं जुमुआ के दिन इमामा वालों पर ।[2]

﴾4﴿☞ टोपी पर इमामा हमारा और मुश्रिकीन का फ़र्क़ है, हर पेच पर कि मुसल्मान अपने सर पर देगा उस पर रोज़े क़ियामत एक नूर अता किया जाएगा ।[3]

﴾5﴿☞ इमामा बांधो तुम्हारा हिल्म बढ़ेगा ।[4]

﴾6﴿☞ इमामा मुसल्मानों का वक़ार और अ़रब की इ़ज़्ज़त है, जब अ़रब इमामा उतार देंगे अपनी इ़ज़्ज़त उतार देंगे ।[5]

(6) इस्लाहे आ'माल ﴾काहिनों और नुजूमियों के पास जाने की मुमानअ़त﴿

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! काहिनों या नुजूमियों के पास जाना और उन्हें सच्चा जानते हुए उन से गै़ब की ख़बरें पूछना सख़्त मन्अ़ है । इमामे अहले सुन्नत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : काहिनों और ज्योतिषियों से हाथ दिखा कर तक़्दीर का भला बुरा दरयाफ़्त करना अगर बतौ़रे ए'तिक़ाद हो या'नी जो येह बताएं ह़क़ है तो कुफ्रे ख़ालिस है, अगर बतौ़रे ए'तिक़ाद व तयक़्क़ुन (या'नी यक़ीन रखने के) न हो मगर मेल व रग़्बत के साथ हो तो गुनाहे कबीरा है और अगर बतौ़रे हज़्ल व इस्तिह्ज़ा (या'नी हंसी मज़ाक़ के तौ़र पर) हो तो अ़बस (या'नी बेकार) व मक्रूह व ह़माक़त है, हां ! अगर ब क़स्दे ता'जीज़ (या'नी उसे आ़जिज़ करने के लिये) हो तो ह़रज नहीं ।[6]

नुजूमी के पास जाने की वईदात

﴾1﴿☞ रह़मत वाले आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो कोई नुजूमी के पास जाए फिर उस से कुछ पूछे तो उस की चालीस शब की नमाज़ें क़बूल न होंगी ।[7]

1 ...مسند الفردوس، 406/2، حدیث: 3805

2 ...جامع صغیر، ص112، حدیث: 1817

3 ...کنز العمال، کتاب المعیشۃ و العادات، باب فی العمائم، جز8، 132/15، حدیث: 41126

4 ...مستدرک، کتاب اللباس، باب اعتمو اتزدادوا حلماً، 272/5، حدیث: 7488

5 ...مسند الفردوس، 88/3، حدیث: 4247

6 ... फ़तावा रज़विय्या, 21/155

7 ...مسلم، کتاب السلام، باب تحریم الکھانۃ و اتیان الکاھن، ص880، حدیث: 2230

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इस हदीसे पाक के तहत लिखते हैं : या'नी उस की येह नमाज़ें अदा हो जाएंगी, **अल्लाह** पाक के हां इन का सवाब न मिलेगा जैसे ग़स्ब शुदा ज़मीन में नमाज़ कि अगर्चे अदा तो हो जाती है मगर इस पर सवाब नहीं मिलता लिहाज़ा इन नमाज़ों का लौटाना उस पर लाज़िम नहीं। ख़याल रहे कि नेकियों से गुनाह तो मुआफ़ हो जाते हैं मगर गुनाहों से नेकियां बरबाद नहीं होतीं वोह तो सिर्फ़ इरतिदाद से बरबाद होतीं हैं और जब नमाज़ें ही क़बूल न हुईं तो दूसरी इबादतें भी क़बूल न होंगी। बा'ज़ शारिहीन ने फ़रमाया कि चालीस रातों की नमाज़ों से मुराद तहज्जुद की नमाज़ें हैं। फ़राइज़ो वाजिबात क़बूल हो जाएंगे मगर हक़ येह है रातों से मुराद दिन व रात सब हैं और कोई नमाज़ क़बूल नहीं होती[1] (एक) दूसरी हदीस में है कि ऐसे शख़्स की चालीस दिन तक तौबा क़बूल नहीं होती बहर हाल नुजूमियों से ग़ैब की ख़बरें पूछना बद तरीन गुनाह है।[2]

(2) ☞ हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी है : जो किसी नुजूमी या काहिन के पास आए और उन के क़ौल की तस्दीक़ करे तहक़ीक़ उस ने उस का इन्कार किया जो मुहम्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल हुवा (या'नी क़ुरआने मजीद) एक रिवायत में है कि वोह शख़्स बेज़ार हुवा उस से जो मुहम्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल हुवा।[3]

(3) ☞ दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : पांच शख़्स जन्नत में दाख़िल न होंगे : (1) शराब का आदी (2) जादू करने वाला (3) रिश्तेदारी तोड़ने वाला (4) काहिन और (5) एहसान जतलाने वाला।[4]

काहिन और नुजूमी कौन ?

काहिन से मुराद वोह शख़्स है जो बा'ज़ पोशीदा बातें बताता है जिन में से कुछ सहीह और अक्सर ग़लत होती हैं और गुमान करता है कि येह बातें उसे जिन्न बताता है। बा'ज़ ने कहानत के

1... मिरआतुल मनाजीह, 6/270
2... मिरआतुल मनाजीह, 6/270
3... مستدرك، كتاب الايمان، باب التشديد في اتيان الكاهن وتصديقه، 155/1، حديث:151
4... مسند امام احمد، مسند ابي سعيد الخدرى، 38/5، حديث:11107

मुतअ़ल्लिक़ वज़ाह़त की है कि इस से मुराद किसी का ज़मानए मुस्तक़्बिल की पोशीदा बातों के मुतअ़ल्लिक़ आस्मानी बातें बता कर इ़ल्मे ग़ैब जानने का दा'वा करना और येह गुमान करना कि येह बातें उसे जिन्न बताता है। और इ़ल्मे नुजूम मम्नूअ़ है जिस का जानने वाला मुस्तक़्बिल में पेश आमदा वाक़िआ़त जानने का दा'वा करता है जैसे बारिश का आना, बर्फ़बारी होना, हवा का चलना और अश्या की क़ीमतों का तब्दील होना वग़ैरा। वोह गुमान करते हैं कि वोह ख़ास ज़माने में सितारों के चलते हुए एक दूसरे से मिलने और जुदा होने और ज़ाहिर होने के ज़रीए़ इन बातों का इदराक कर लेते हैं। ह़ालां कि **अल्लाह** पाक ने इस इ़ल्म को अपने साथ ख़ास कर रखा है, उस के सिवा (अपने अन्दाज़े से) कोई नहीं जानता, पस जिस ने मज़्कूरा ज़राएअ़ से इस के जानने का दा'वा किया वोह फ़ासिक़ है बल्कि अक्सर अवक़ात येह इ़ल्म कुफ़्र की त़रफ़ ले जाता है।[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 24

मौज़ूआ़त

1	मदनी क़ाइ़दा : सूरतुन्नास	2	अज़्कारे नमाज़ : दुआ़ए मासूरा (**رب اجعلنی**)
3	तफ़्सीरे क़ुरआन : रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहें	4	नमाज़ के अह़काम : नमाज़ के वाजिबात
5	सुन्नतें व आदाब : इ़मामे के फ़ज़ाइल व आदाब	6	इस्लाहे़ आ'माल : नसब में त़ा'न करने की मज़म्मत

(1) मदनी क़ाइ़दा ﴿सूरतुन्नास : आयत 1 ता 6﴾

मदनी क़ाइ़दे के अस्बाक़ में पढ़े गए क़वाइ़द का इजरा व दुरुस्त मख़ारिज के साथ पढ़ने की मश्क़ करें।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान, रह़मत वाला है।

1 ...الزواجر عن اقتراف الكبائر، الكبيرة الرابعة والعشرون الى الخامسة والثلاثين بعد الثلاثمائة، 2/193

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ﴿۱﴾ مَلِكِ النَّاسِ ﴿۲﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ﴿۳﴾ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ﴿۴﴾ الَّذِیْ یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ﴿۵﴾ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ ﴿۶﴾

तुम कहो : मैं तमाम लोगों के रब की पनाह लेता हूं। तमाम लोगों का बादशाह। तमाम लोगों का मा'बूद। बार बार वस्वसे डालने वाले, छुप जाने वाले के शर से (पनाह लेता हूं)। वोह जो लोगों के दिलों में वस्वसे डालता है। जिन्नों और इन्सानों में से।

(2) अज़्कारे नमाज़ «दुआए मासूरा (رب الجعلنی)»

رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوةِ وَ مِنْ ذُرِّیَّتِیْ ۖۗ رَبَّنَا وَ تَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿۴۰﴾

ऐ मेरे रब ! मुझे नमाज़ का क़ाइम करने वाला रख और कुछ मेरी औलाद को ऐ हमारे रब और मेरी दुआ़ सुन ले।

(3) तफ़्सीरे कुरआन «रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहे»

وَ لَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ
(پ5، النساء:32)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम उस चीज़ की तमन्ना न करो जिस से **अल्लाह** ने तुम में एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी है।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 2, सफ़हा 215 पर है कि जब एक इन्सान दूसरे के पास कोई ऐसी ने'मत देखता है जो उस के पास नहीं तो उस का दिल परेशानी में मुब्तला हो जाता है ऐसी सूरत में उस की हालत दो तरह की होती है। (1) वोह इन्सान येह तमन्ना करता है कि येह ने'मत दूसरे से छिन जाए और मुझे हासिल हो जाए। येह हसद है और हसद मज़्मूम और हराम है। (2) दूसरे से ने'मत छिन जाने की तमन्ना न हो बल्कि येह आरज़ू हो कि इस जैसी मुझे भी मिल जाए, इसे गिब्ता कहते हैं येह मज़्मूम नहीं।[1] लिहाज़ा **अल्लाह** पाक ने जिस बन्दे को दीन या दुन्या की जो ने'मत अता की उसे उस पर राज़ी रहना चाहिये।

1 ...تفسیر کبیر، پ5، النساء، تحت الآیۃ:32، 65/4

शाने नुज़ूल : जब आयते मीरास में ﴿ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ﴾ वाला हिस्सा नाज़िल हुवा और मय्यित के तर्के में मर्द का हिस्सा औ़रत से दुगना मुक़र्रर किया गया तो मर्दों ने कहा कि हमें उम्मीद है कि आख़िरत में नेकियों का सवाब भी हमें औ़रतों से दुगना मिलेगा और औ़रतों ने कहा कि हमें उम्मीद है कि गुनाह का अ़ज़ाब हमें मर्दों से आधा होगा। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इस में बताया गया कि **अल्लाह** पाक ने जिस को जो फ़ज़ीलत दी वोह ऐन हिक्मत है, बन्दे को चाहिये कि वोह उस की क़ज़ा पर राज़ी रहे।[1]

दिल के सब्रो क़रार का नुस्ख़ा ही **अल्लाह** पाक की रिज़ा पर राज़ी रहना है वरना दुन्या में कोई शख़्स किसी ने'मत की इन्तिहा को नहीं पहुंचा हुवा और अगर बिलफ़र्ज़ कोई पहुंचा भी हो तो किसी दूसरी ने'मत में ज़रूर कमतर होगा तो अगर दिल को इन्ही आरज़ूओं और तमन्नाओं का मर्कज़ बना कर रखा तो हज़ारों ने'मतों का मालिक हो कर भी दिल को क़रार नहीं मिल सकता, जैसे एक आदमी एक अरब रुपै का मालिक है लेकिन ख़ूब सूरत नहीं तो अगर वोह ख़ूब सूरती की तमन्ना करता रहेगा तो जीना दूभर हो जाएगा और अगर एक आदमी ख़ूब सूरत है लेकिन जेब में पैसा नहीं और वोह पैसे को रोता रहेगा तो भी बे क़रार रहेगा और जिस के पास पैसा और ख़ूब सूरती कुछ न हो लेकिन वोह कहे कि मैं **अल्लाह** पाक की रिज़ा पर राज़ी हूं और फिर वोह सब्र कर के आख़िरत के सवाब को पेशे नज़र रखे तो यक़ीनन ऐसा आदमी दिल का सुकून पा लेगा।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है, सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अगर इब्ने आदम के पास माल की दो वादियां भी हों तो वोह येह पसन्द करेगा कि उस के पास तीसरी वादी भी हो और इस का पेट तो मिट्टी ही भर सकती है, **अल्लाह** पाक उस की तौबा क़बूल फ़रमाएगा जो तौबा करे।[2]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम अपने से नीचे वाले को देखो और जो तुम से ऊपर हो उसे न देखो, येह इस से बेहतर है कि तुम **अल्लाह** पाक की अपने ऊपर ने'मत को ह़क़ीर जानो।[3]

1 ...تفسیر خازن، پ5، النساء، تحت الآیۃ:32، 369/1 2 ...بخاری، کتاب الرقاق، باب ما یتقی من فتنۃ المال، ص1584، حدیث:6436
3 ...مسلم، کتاب الزھد والرقائق، ص1134، حدیث:2963

(4) नमाज़ के अह्काम ﴾नमाज़ के वाजिबात﴿

﴾1﴿ ☞ दूसरी रक्अ़त से पहले क़ा'दा न करना।

﴾2﴿ ☞ चार (4) रक्अ़त वाली नमाज़ में तीसरी (3) पर क़ा'दा न करना।

﴾3﴿ ☞ आयते सज्दा पढ़ी हो तो सज्दए तिलावत करना।

﴾4﴿ ☞ सज्दए सह्व वाजिब हुवा हो तो सज्दए सह्व करना

﴾5﴿ ☞ दो फ़र्ज़ या दो वाजिब या फ़र्ज़ो वाजिब के दरमियान तीन (3) तस्बीह़ की क़दर (या'नी 3 बार ''سُبْحٰنَ اللّٰه'' कहने की मिक़्दार) वक़्फ़ा न होना।

﴾6﴿ ☞ इमाम जब क़िराअत करे ख़्वाह बुलन्द आवाज़ से हो या आहिस्ता आवाज़ से मुक़्तदी का चुप रहना।

﴾7﴿ ☞ क़िराअत के सिवा तमाम वाजिबात में इमाम की पैरवी करना।[1]

(5) सुन्नतें व आदाब ﴾इमामे के फ़ज़ाइल व आदाब﴿

﴾1﴿ ☞ ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इमामे की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया : ''फ़िरिश्तों के ताज ऐसे ही होते हैं।''[2]

﴾2﴿ ☞ इमामे के साथ एक जुमुआ़ बिग़ैर इमामा के सत्तर (70) जुमुआ़ के बराबर है।[3]

﴾3﴿ ☞ ह़ज़रते सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं अपने वालिदे माजिद ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا के हुज़ूर ह़ाज़िर हुवा, वोह इमामा बांध रहे थे, जब बांध चुके तो मेरी त़रफ़ तवज्जोह कर के फ़रमाया : तुम इमामे को दोस्त रखते हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं ! फ़रमाया : इसे दोस्त रखो, इ़ज़्ज़त पाओगे और जब शैत़ान तुम्हें देखेगा तुम से पीठ फेर लेगा, ऐ फ़रज़न्द इमामा बांध ! कि फ़िरिश्ते जुमुआ़ के दिन इमामा बांधे आते हैं और सूरज डूबने तक इमामा बांधने वालों पर सलाम भेजते रहते हैं।[4]

1 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، مطلب: واجبات الصلاۃ، 2/200-205

2 ...کنز العمال، کتاب المعیشۃ والعادات، باب آداب التعمم، جز8، 15/205، حدیث: 41906

3 ...مسند الفردوس، 2/109، حدیث: 2571

4 ...تاریخ ابن عساکر، رقم 4399، عبدان بن زرین بن محمد بن ابو محمد الاذربیجانی...الخ، 37/354

इ़मामे के आदाब

(1) ☞ इ़मामा सात हाथ (साढ़े तीन गज़) से छोटा न हो और बारह (12) हाथ (छे गज़ से बड़ा न हो) ।[1]

(2) ☞ इ़मामे के शम्ले की मिक़्दार कम अज़ कम चार उंगल और ज़ियादा से ज़ियादा इतना हो कि बैठने में न दबे ।[2]

(3) ☞ इ़मामा उतारते वक़्त भी एक एक कर के पेच खोलना चाहिये ।[3]

(4) ☞ इ़मामा क़िब्ले की त़रफ़ रुख़ कर के खड़े खड़े बांधना चाहिये ।[4]

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** ! हमें इ़मामे की सुन्नत पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(6) इस्लाहे़ आ'माल ﴾नसब में त़ा'न करने की मज़म्मत﴿

मुसल्मान भाई को नसबी त़ा'ना देना ह़राम और मुश्रिकों का त़रीक़ा है, आज कल येह बीमारी मुसल्मानों में भी फैली हुई है । नसबी त़ा'ने की बीमारी औ़रतों में ज़ियादा है, इन्हें **अल्लाह** पाक के इस फ़रमान से सबक़ लेना चाहिये, क्या मा'लूम बारगाहे इलाही में कौन किस से बेहतर हो ।

अल्लाह पाक इर्शाद फ़रमाता है :

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا یَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ یَّكُوْنُوْا خَیْرًا مِّنْهُمْ وَ لَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰۤى اَنْ یَّكُنَّ خَیْرًا مِّنْهُنَّۚ وَ لَا تَلْمِزُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ لَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِؕ

(پ۲۶، الحجرات:۱۱)

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : ऐ ईमान वालो ! मर्द दूसरे मर्दों पर न हंसें, हो सकता है कि वोह इन हंसने वालों से बेहतर हों और न औ़रतें दूसरी औ़रतों पर हंसें हो सकता है कि वोह इन हंसने वालियों से बेहतर हों और आपस में किसी को त़ा'ना न दो और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो ।

1... مرقاۃ المفاتیح، کتاب اللباس، 215/8، تحت الحدیث: 4340

2... फ़तावा रज़विय्या, 22/182 मुलख़्ख़सन

3... فتاوی ھندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب التاسع مایکرہ من ذلک ومالایکرہ، ٥/٤٠٨

4... सुन्नतें और आदाब, स. 112, 113 ब तसर्रुफ़

सूरए हुजुरात की आयत नम्बर 11 के इस हिस्से يَاۤ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ के शाने नुज़ूल का एक वाक़िआ़ येह है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : ह़ज़रते साबित बिन क़ैस बिन शमास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ऊंचा सुनते थे, जब वोह सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मजलिस शरीफ़ में ह़ाज़िर होते तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم उन्हें आगे बिठाते और उन के लिये जगह ख़ाली कर देते ताकि वोह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब ह़ाज़िर रह कर कलामे मुबारक सुन सकें। एक रोज़ उन्हें ह़ाज़िरी में देर हो गई और जब मजलिस शरीफ़ ख़ूब भर गई उस वक़्त आप ह़ाज़िर हुए और क़ाइदा येह था कि जो शख़्स ऐसे वक़्त आता और मजलिस में जगह न पाता तो जहां होता वहीं खड़ा रहता। लेकिन ह़ज़रते साबित رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ आए तो वोह रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब बैठने के लिये लोगों को हटाते हुए येह कहते चले कि जगह दो जगह यहां तक कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इतने क़रीब पहुंच गए कि उन के और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरमियान में सिर्फ़ एक शख़्स रह गया, उन्हों ने उस से भी कहा कि जगह दो, उस ने कहा : तुम्हें जगह मिल गई है इस लिये बैठ जाओ। ह़ज़रते साबित رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ गुस्से में आ कर उस के पीछे बैठ गए। जब दिन ख़ूब रोशन हुवा तो ह़ज़रते साबित رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने उस का जिस्म दबा कर कहा : कौन ? उस ने कहा : मैं फ़ुलां शख़्स हूं। ह़ज़रते साबित رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने उस की मां का नाम ले कर कहा : फ़ुलानी का लड़का। इस पर उस शख़्स ने शर्म से सर झुका लिया क्यूं कि उस ज़माने में ऐसा कलिमा आ़र दिलाने के लिये कहा जाता था, इस पर येह आयत नाज़िल हुई।[1]

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : नसब में ता'न करना कुफ़्र है।[2] एक मक़ाम पर नसब में ता'न करने को ज़मानए कुफ़्र की अ़लामत क़रार दिया है।[3]

यहां येह बात ज़ेह्न नशीन रहे कि नसब पर ता'न अगर इसे ह़लाल समझ कर है तो कुफ़्र से मुराद कुफ़्रे ह़क़ीक़ी है वरना नाशुक्री मुराद है।[4]

1 ...خازن، پ26، الحجرات، تحت الآية:11، 180/4

2 ...مسلم، کتاب الایمان، باب اطلاق اسم الکفر علی الطعن فی النسب...الخ، ص48، حدیث:67

3 ...مسلم، کتاب الجنائز، باب التشدید فی النیاحة، ص335، حدیث:934

4 ...فیض القدیر، 383/3، تحت الحدیث:3437

इ़ज़्ज़त व फ़ज़ीलत का मदार परहेज़ गारी

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक की बारगाह में इ़ज़्ज़त व फ़ज़ीलत का मदार नसब नहीं बल्कि परहेज़ गारी है लिहाज़ा हर मुसल्मान को चाहिये कि वोह दूसरे के नसब पर ता'न और अपने नसब पर फ़ख़्र करने से बचे और तक़्वा व परहेज़ गारी इख़्तियार करे ताकि **अल्लाह** पाक की बारगाह में इसे इ़ज़्ज़त व फ़ज़ीलत नसीब हो । मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुसल्मान के किसी नसब को ज़लील जानना या उन्हें कमीन कहना ह़राम है । मुसल्मान शरीफ़ हैं अगर्चे सय्यिद ह़ज़रात हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निस्बत की वज्ह से अशरफ़ हैं मगर उन्हें भी किसी मुसल्मान को कमीन कहने का कोई ह़क़ नहीं ।[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 25

मौज़ूआत

1	मदनी क़ाइदा : सूरतुल फ़लक़	2	अज़्कारे नमाज़ : दुआ़ए मासूरा (**رب اجعلنی**)
3	तफ़्सीरे क़ुरआन : अ़क़्ल मन्द लोगों के काम	4	नमाज़ के अह़काम : नमाज़ के मुफ़्सिदात
5	सुन्नतें व आदाब : मरीज़ की इ़यादत का सवाब	6	इस्लाहे़ आ'माल : नमाज़ दुरुस्त न पढ़ने वालों के बारे में वई़दात

(1) मदनी क़ाइदा ﴾सूरतुल फ़लक़ : आयत 1 ता 3﴿

मदनी क़ाइदे के अस्बाक़ में पढ़े गए क़वाइ़द का इजरा और दुरुस्त मख़ारिज के साथ पढ़ने की मश्क़ करें ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान, रह़मत वाला है ।

1... मिरआतुल मनाजीह़, 2/503

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ﴿۱﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾

तुम फ़रमाओ : मैं सुब्ह़ के रब की पनाह लेता हूं। उस की तमाम मख़्लूक़ के शर से। और सख़्त अंधेरी रात के शर से जब वोह छा जाए।

(2) अज़्कारे नमाज़ 《दुआए मासूरा (رب اجعلنی)》

رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوةِ وَ مِنْ ذُرِّیَّتِیْ ۖ رَبَّنَا وَ تَقَبَّلْ دُعَآءِ ۝
رَبَّنَا اغْفِرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیَّ وَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ ۝

ऐ मेरे रब ! मुझे नमाज़ का क़ाइम करने वाला रख और कुछ मेरी औलाद को ऐ हमारे रब और मेरी दुआ़ सुन ले। ऐ हमारे रब मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को और सब मुसल्मानों को जिस दिन ह़िसाब क़ाइम होगा।

(3) तफ़्सीरे कुरआन 《अ़क़्ल मन्द लोगों के काम》

اَلَّذِیْنَ یَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِیٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَ یَتَفَكَّرُوْنَ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ (پ4، ال عمران: 191)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जो खड़े और बैठे और पहलूओं के बल लैटे हुए **अल्लाह** को याद करते हैं और आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश में ग़ौर करते हैं।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 2, सफ़ह़ा 138 पर है कि यहां अ़क़्ल मन्द लोगों का बयान है कि वोह हैं कौन ? और उन के चन्द अहम काम बयान फ़रमाए गए हैं।

(1) ☞ अ़क़्ल मन्द लोग खड़े, बैठे और बिस्तरों पर लैटे हर ह़ाल में **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करते हैं। मौला करीम की याद हर वक़्त उन के दिलों पर छाई रहती है।

(2) ☞ अ़क़्ल मन्द लोग काएनात में ग़ौरो फ़िक्र करते हैं, आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और काएनात के दीगर अ़जाइबात में ग़ौर करते हैं और इन का मक़्सद **अल्लाह** पाक की अ़ज़मतो कुदरत का ज़ियादा से ज़ियादा इल्म ह़ासिल करना है।

(3) ☞ काएनात में ग़ौरो फ़िक्र के बा'द **अल्लाह** पाक की अ़ज़मत इन पर ज़ाहिर होती है और इन

के दिल **अल्लाह** पाक की अ़ज़मत के सामने झुक जाते हैं और इन की ज़बानें **अल्लाह** पाक की अ़ज़मत के तराने पढ़ती हैं।

(4) ☞ **अल्लाह** पाक की बारगाह में दोज़ख़ के अ़ज़ाब से पनाह मांगते हैं।

मज़्कूरा बाला तमाम चीज़ें मोमिनीन के औसाफ़ हैं, इन को ह़ासिल करने की कोशिश करनी चाहिये। हमारे अस्लाफ़ **अल्लाह** पाक की याद में बहुत रग़बत रखते थे, चुनान्चे ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते जुरजानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के पास सत्तू देखे जिस से वोह भूक मिटा लेते थे। मैं ने कहा : आप खाना और दूसरी अश्या क्यूं नहीं खाते ? आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं ने चबाने और येह सत्तू खा कर गुज़ारा करने में नव्वे तस्बीह़ात का फ़र्क़ पाया है, लिहाज़ा चालीस साल से मैंने रोटी नहीं चबाई ताकि इन तस्बीह़ात का वक़्त ज़ाएअ़ न हो।

ह़ज़रते जुनैदे बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का मा'मूल येह था कि आप बाज़ार जाते और अपनी दुकान खोल कर उस के आगे पर्दा डाल देते और चार सो रक्अ़त नफ़्ल अदा कर के दुकान बन्द कर के घर वापस आ जाते।[1]

काएनात में तफ़क्कुर की ज़रूरत

आस्मानों का मुशाहदा तो सूरज, चांद, सितारों, तुलूओ़ ग़ुरूब और इन की ह़रकत व दौरानिये से होता है। ज़मीन का मुशाहदा इस में मौजूद पहाड़ों, ख़ज़ानों, नहरों, समुन्दरों और ह़ैवानात व नबातात के ज़रीए़ होता है और आस्मानो ज़मीन के दरमियान फ़ज़ा है जिस का इदराक बादल, बारिश, बर्फ़ बिजली और हवा वग़ैरा के ज़रीए़ होता है। येह सब **अल्लाह** पाक की वह़दानिय्यत की गवाही देती हैं और उस के जलाल व किब्रियाई पर दलालत करती हैं और येह ही **अल्लाह** पाक की वह़दानिय्यत पर दलालत करने वाली निशानियां और अ़लामात हैं।[2]

(4) नमाज़ के अह़काम «नमाज़ के मुफ़्सिदात»

(1) ☞ बात करना।[3]

1 ...مکاشفۃ القلوب، الباب الحادی عشر فی طاعۃ اللہ ومحبۃ رسولہ صلی اللہ علیہ وسلم، 49

2 ...احیاء العلوم، کتاب التفکر، بیان کیفیۃ التفکر فی خلق اللہ تعالی، 175/5

3 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب ما یفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا، 445/2-447

﴾2﴿ ☞ किसी को सलाम करना।

﴾3﴿ ☞ सलाम का जवाब देना।

﴾4﴿ ☞ छींक का जवाब देना। (नमाज़ में खुद को छींक आए तो ख़ामोश रहे) अगर اَلْحَمْدُلِلّٰه कह लिया तब भी ह़रज नहीं और अगर उस वक़्त ह़म्द न की तो फ़ारिग़ हो कर कहे।[1]

﴾5﴿ ☞ खुश ख़बरी सुन कर जवाबन اَلْحَمْدُلِلّٰه कहना।

﴾6﴿ ☞ बुरी ख़बर या किसी की मौत की ख़बर सुन कर اِنَّالِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ कहना।[2]

﴾7﴿ ☞ अज़ान का जवाब देना।[3]

﴾8﴿ ☞ **अल्लाह** पाक का नाम सुन कर जवाबन "جَلَّ جَلَالُهٗ" कहना, सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इस्मे गिरामी सुन कर जवाबन दुरूद शरीफ़ पढ़ना मसलन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कहना।[4]

﴾9﴿ ☞ दर्द या मुसीबत की वज्ह से येह अल्फ़ाज़ आह, ऊह, उफ़, तुफ़ निकल गए या आवाज़ से रोने में ह़र्फ़ पैदा हो गए नमाज़ फ़ासिद हो गई। अगर रोने में सिर्फ़ आंसू निकले आवाज़ व ह़ुरूफ़ नहीं निकले तो ह़रज नहीं।[5]

﴾10﴿ ☞ अगर इमाम की खुश इल्ह़ानी के सबब अरे, नअ़म, हां, येह अल्फ़ाज़ कहे नमाज़ टूट गई। खुशूओ़ खुज़ूअ़ के बाइ़स निकल गए तो ह़रज नहीं।[6]

(5) सुन्नतें व आदाब ﴾मरीज़ की इ़यादत का सवाब﴿

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब हमारा कोई मुसल्मान भाई बीमार हो जाए तो हमें वक़्त निकाल कर उस इस्लामी भाई की इ़यादत के लिये ज़रूर जाना चाहिये कि किसी मुसल्मान की इ़यादत करना भी बहुत ज़ियादा अज्रो सवाब का बाइ़स है।

1 ...فتاوی هندیه، کتاب الصلاة، الباب السابع فیما یفسد الصلاة وما یکره فیها، الفصل الاول، 109/1

2 ...فتاوی هندیه، کتاب الصلاة، الباب السابع فیما یفسد الصلاة وما یکره فیها، الفصل الاول، 110/1

3 ...فتاوی هندیه، کتاب الصلاة، الباب السابع فیما یفسد الصلاة وما یکره فیها، الفصل الاول، 111/1

4 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاة، باب ما یفسد الصلاة... الخ، 460/2

5 ...فتاوی هندیه، کتاب الصلاة، الباب السابع فیما یفسد الصلاة وما یکره فیها، الفصل الاول، 112/1

6 ...درمختار، کتاب الصلاة، باب ما یفسد الصلاة وما یکره فیها، 456/2

हज़रते अब्दुर्रहमान बिन अम्र और अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो अपने किसी मुसल्मान भाई की हाजत रवाई के लिये जाता है **अल्लाह** पाक उस पर पछत्तर हज़ार (75000) मलाएका के ज़रीए साया फ़रमाता है, वोह फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ करते हैं और वोह फ़ारिग़ होने तक रहमत में ग़ोताज़न रहता है और जब वोह इस काम से फ़ारिग़ हो जाता है तो **अल्लाह** पाक उस के लिये एक हज और एक उम्रे का सवाब लिखता है और जिस ने मरीज़ की इयादत की **अल्लाह** पाक उस पर पछत्तर हज़ार (75000) मलाएका के ज़रीए साया फ़रमाएगा और घर वापस आने तक उस के हर क़दम उठाने पर उस के लिये एक नेकी लिखी जाएगी और उस के हर क़दम रखने पर उस का एक गुनाह मिटा दिया जाएगा और एक दरजा बुलन्द किया जाएगा, जब वोह मरीज़ के साथ बैठेगा तो रहमत उसे ढांप लेगी और अपने घर वापस आने तक रहमत उसे ढांपे रखेगी।"[1]

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी मरीज़ की इयादत करता है तो एक मुनादी आस्मान से निदा करता है : "ख़ुश हो जा कि तेरा येह चलना मुबारक है और तू ने जन्नत में अपना ठिकाना बना लिया है।"[2]

हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रिवायत है कि प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "मरीज़ों की इयादत किया करो और जनाज़ों में शिर्कत किया करो, येह तुम्हें आख़िरत की याद दिलाते रहेंगे।"[3]

(6) इस्लाहे आ'माल ﴿नमाज़ दुरुस्त न पढ़ने वालों के बारे में वईदात﴾

(1) हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ रिवायत करते हैं कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : इन्सान साठ (60) बरस तक नमाज़ पढ़ता रहता है लेकिन उस की कोई नमाज़

1 ...معجم اوسط، 3/222، حدیث: 4396

2 ...ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی ثواب من عاد مریضا، ص234، حدیث: 1443

3 ...مسند امام احمد، حدیث طلق بن علی، 5/61، حدیث: 11481

बारगाहे इलाही में मक़्बूल नहीं होती क्यूं कि वोह शख़्स रुकूअ़ और सज्दे पूरे तौ़र से अदा नहीं करता ।[1]

(2)... ह़ज़रते त़ल्क़ बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : "**अल्लाह** पाक उस बन्दे की नमाज़ की त़रफ़ नज़र नहीं फ़रमाता जो रुकूअ़ व सुजूद (या'नी सज्दे) में अपनी पीठ सीधी नहीं करता ।"[2]

(3)... ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान करते हैं कि दो जहां के सरदार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : हर नमाज़ी के दाएं बाएं (Right and Left) एक एक फ़िरिश्ता होता है, अगर नमाज़ी पूरे तौ़र पर नमाज़ अदा करता है तो वोह दोनों फ़िरिश्ते उस की नमाज़ ऊपर ले जाते हैं और अगर ठीक त़रीके़ से अदा नहीं करता तो वोह उस की नमाज़ उस के मुंह पर मार देते हैं ।[3]

(4)... ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान करते हैं कि सरकारे नामदार, दो जहां के सरदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे ह़ालते रुकूअ़ में क़िराअत करने से मन्अ़ किया और इर्शाद फ़रमाया : ऐ अ़ली ! नमाज़ में पुश्त (या'नी पीठ) सीधी न करने वाले की मिसाल उस ह़ामिला औ़रत की त़रह़ है कि जब बच्चे की पैदाइश का वक़्त क़रीब आए तो ह़म्ल गिरा दे, अब न तो वोह ह़ामिला रहे और न ही बच्चे वाली ।[4]

(5)... ह़ज़रते अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "लोगों में बद तरीन चोर वोह है जो अपनी नमाज़ में चोरी करे ।" अ़र्ज़ की गई : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! नमाज़ में चोरी कैसे होती है ?" फ़रमाया : "(इस त़रह़ कि) रुकूअ़ और सज्दे पूरे न करे ।"[5]

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा माल के चोर से नमाज़ का चोर बदतर (या'नी ज़ियादा बुरा) है, क्यूं कि माल का चोर अगर

1 ...الترغیب و الترھیب، کتاب الصلاۃ، باب الترھیب من عدم تمام الرکوع و السجود...الخ، ص168، حدیث:8

2 ...معجم کبیر، 4/407، حدیث:8182

3 ...الترغیب و الترھیب، کتاب الصلاۃ، باب الترھیب من عدم اتمام الرکوع و السجود، ص170، حدیث:15

4 ...مسند ابی یعلی، مسند علی بن ابی طالب، 1/115، حدیث:315 5 ...مسند امام احمد، مسند الانصار، 9/311، حدیث:23284

सज़ा भी पाता है तो (चोरी के माल से) कुछ न कुछ नफ़्अ़ भी उठा लेता है मगर नमाज़ का चोर सज़ा पूरी पाएगा, इस के लिये नफ़्अ़ की कोई सूरत नहीं । माल का चोर बन्दे का ह़क़ मारता है जब कि नमाज़ का चोर, **अल्लाह** पाक का ह़क़। येह ह़ालत उन की है जो नमाज़ को नाक़िस (ख़ामियों भरी) पढ़ते हैं, इस से वोह लोग दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करें जो सिरे से नमाज़ पढ़ते ही नहीं ।[1]

नोट : रुकूअ़ व सुजूद में पीठ सीधी करने का मत़लब ता'दीले अरकान या'नी रुकूअ़, सुजूद, क़ौमा और जल्सा में कम अज़ कम एक बार ''سُبْحٰنَ الله'' कहने की मिक़्दार ठहरना है ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 26

मौज़ूआ़त

1	मदनी क़ाइ़दा : सूरतुल फ़लक़	2	अज़्कारे नमाज़ : दुआ़ए मासूरा (رَبَّنَا اٰتِنَا)
3	तफ़्सीरे क़ुरआन : ज़िक्र की अक़्साम व फ़ज़ाइल	4	नमाज़ के अह़काम : नमाज़ के मुफ़्सिदात
5	सुन्नतें व आदाब : इ़यादत के फ़ज़ाइल व त़रीक़ा	6	इस्लाहे़ आ'माल : बा जमाअ़त नमाज़ की अहम्मिय्यत

(1) मदनी क़ाइ़दा ﴾सूरतुल फ़लक़ : आयत 1 ता 5﴿

मदनी क़ाइ़दे के अस्बाक़ में पढ़े गए क़वाइ़द का इजरा व दुरुस्त मख़ारिज के साथ पढ़ने की मश्क़ करें ।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान, रह़मत वाला है ।

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ ۙ﴿۱﴾ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾ وَ مِنۡ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾
وَ مِنۡ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الۡعُقَدِ ۙ﴿۴﴾ وَ مِنۡ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾

[1]... मिरआतुल मनाजीह़, 2/78 मुलख़्ख़सन

तुम फ़रमाओ : मैं सुब्ह के रब की पनाह लेता हूं। उस की तमाम मख़्लूक़ के शर से। और सख़्त अंधेरी रात के शर से जब वोह छा जाए।

और उन औरतों के शर से जो गिरहों में फूंकें मारती हैं। और ह़सद वाले के शर से जब वोह ह़सद करे।

(2) अज़्कारे नमाज़ «दुआए मासूरा»

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ

ऐ **अल्लाह**! ऐ हमारे रब! हमें दुन्या में भलाई दे। और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

(3) तफ़्सीरे कुरआन «ज़िक्र की अक़्साम व फ़ज़ाइल»

فَاذْكُرُوْنِیْۤ اَذْكُرْكُمْ وَ اشْكُرُوْا لِیْ وَ لَا تَكْفُرُوْنِ۠ (۱۵۲) (پ2،البقرة:152)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो तुम मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद करूंगा और मेरा शुक्र अदा करो और मेरी नाशुक्री न करो।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 1, सफ़हा 275 पर है कि काएनात की सब से बड़ी ने'मत हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र करने के बा'द अब ज़िक्रे इलाही और ने'मते इलाही पर शुक्र करने का फ़रमाया जा रहा है।

ज़िक्र की अक़्साम

ज़िक्र तीन त़रह़ का होता है : (1) ज़बानी (2) क़ल्बी (3) आ'ज़ाए बदन के साथ। ज़बानी ज़िक्र में तस्बीहो तक़्दीस, ह़म्दो सना, तौबा व इस्तिग़फ़ार, ख़ुत़्बा व दुआ़ और नेकी की दा'वत वग़ैरा शामिल हैं। क़ल्बी ज़िक्र में **अल्लाह** पाक की ने'मतों को याद करना, उस की अ़ज़्मतो किब्रियाई और उस की अ़ज़ीम क़ुदरत के दलाइल में ग़ौर करना दाख़िल है नीज़ उ़लमा का शरई मसाइल में ग़ौर करना भी इसी में दाख़िल है। आ'ज़ाए बदन के ज़िक्र से मुराद है कि अपने आ'ज़ा से **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी न की जाए बल्कि आ'ज़ा को इत़ाअ़ते इलाही के कामों में इस्ति'माल किया जाए।[1]

[1] ...تفسیر صاوی، البقرة، پ2، تحت الآیة:152، 1/122

ज़िक्र के फ़ज़ाइल

कसीर अहादीस में **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करने के फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, उन में से 10 अहादीस का खुलासा दर्जे ज़ैल है :

(1) ☞ **अल्लाह** का ज़िक्र ईमाने कामिल की निशानी है।[1]

(2) ☞ ज़िक्रुल्लाह दुन्या व आख़िरत की हर भलाई पाने का ज़रीआ़ है।[2]

(3) ☞ ज़िक्रे इलाही अ़ज़ाबे इलाही से नजात दिलाने वाला है।[3]

(4) ☞ ज़िक्र करने वाले क़ियामत के दिन बुलन्द दरजे में होंगे।[4]

(5) ☞ ज़िक्र के ह़ल्क़े जन्नत की क्यारियां हैं।[5]

(6) ☞ ज़िक्र करने वालों को फ़िरिश्ते घेर लेते और रह़मत ढांप लेती है।[6]

(7) ☞ शबे क़द्र में **अल्लाह** का ज़िक्र करने वाले को ह़ज़रते जिब्रईल दुआ़एं देते हैं।[7]

(8) ☞ ज़िक्र करने वालों की सोह़बत में बैठने वाला भी मह़रूम नहीं रहता।[8]

(9) ☞ **अल्लाह** का ज़िक्र करने से शैत़ान दिल से हट जाता है।[9]

(10) ☞ **अल्लाह** के ज़िक्र से दिल की सफ़ाई होती है।[10]

1... सिरातुल जिनान, पारह 2, अल बक़रह, तह़्तल आयह : 152, 1/275

2...مشکاۃ، کتاب الصلاۃ، باب القصد فی العمل، 245/1، حدیث:1250

3...موطا امام مالک، کتاب القران، باب ماجاء فی ذکر اللہ تبارک وتعالی، ص123، حدیث:501

4...شرح السنۃ، کتاب الدعوات، باب فضل ذکر اللہ ومجالس الذکر، 298/3، حدیث:1246

5...ترمذی، کتاب الدعوات، 85-باب، ص804، حدیث:3510 ملخصًا

6...ترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی القوم یجلسون...الخ، ص778، حدیث:3378

7...شعب الایمان، باب فی الصیام، فی لیلۃ العید ویومھما، 343/3، حدیث: 3717

8...مسند امام احمد، مسند المکثرین من الصحابۃ، مسند ابی ھریرۃ، 56/3، حدیث: 7428

9...بخاری، کتاب التفسیر، سورۃ قل اعوذ برب الناس، ص1289

10...مشکاۃ المصابیح، کتاب الدعوات، باب ذکر اللہ والقرب الیہ، الفصل الثالث، 427/1، حدیث: 2286

(4) नमाज़ के अह्काम ﴾नमाज़ के मुफ़्सिदात﴿

﴾1﴿ ☞ मरीज़ की ज़बान से बे इख़्तियार आह ! ऊह निकला नमाज़ न टूटी, यूंही छींक, जमाही, डकार वग़ैरा में जितने हुरूफ़ मजबूरन निकलते हैं मुआफ़ हैं ।[1]

﴾2﴿ ☞ फूंकने में अगर आवाज़ न पैदा हो तो वोह सांस की मिस्ल है और नमाज़ फ़ासिद नहीं होती मगर क़स्दन (जान बूझ कर) फूंकना मक्रूह है और अगर दो हुरूफ़ पैदा हों जैसे उफ़, तुफ़ तो नमाज़ फ़ासिद हो गई ।[2]

﴾3﴿ ☞ खांसी में जब दो दो हुरूफ़ ज़ाहिर हों जैसे अख़ तो मुफ़्सिदे नमाज़ है, हां ! अगर उ़ज़्र या सह़ीह़ मक़्सद हो मसलन त़बीअ़त का तक़ाज़ा हो या आवाज़ साफ़ करने के लिये हो या इमाम को लुक़्मा देना मक़्सूद हो या कोई आगे से गुज़र रहा हो उस को मुतवज्जेह करना हो इन वुजूहात की बिना पर खांसने में कोई मुज़ायक़ा नहीं ।[3]

﴾4﴿ ☞ मुस्ह़फ़ शरीफ़ (कुरआने पाक) से या किसी काग़ज़ से या मेह़राब वग़ैरा में लिखा हुवा देख कर कुरआन शरीफ़ पढ़ना (हां ! अगर अपनी याद पर पढ़ रहा है और कुरआने पाक या मेह़राब पर सिर्फ़ नज़र है तो ह़रज नहीं, अगर किसी काग़ज़ वग़ैरा पर आयात लिखी हैं उसे देखा और समझा मगर पढ़ा नहीं इस में भी कोई ह़रज नहीं) ।[4]

﴾5﴿ ☞ इस्लामी किताब या इस्लामी मज़्मून दौराने नमाज़ जान बूझ कर देखना और इरादतन समझना मक्रूह है ।[5]

﴾6﴿ ☞ अ़मले कसीर नमाज़ को फ़ासिद कर देता है जब कि वोह अ़मल नमाज़ के आ'माल में से भी न हो और इस्लाह़े नमाज़ के लिये भी न किया गया हो । जिस काम के करने वाले को दूर से देखने से ऐसा लगे कि येह नमाज़ में नहीं है बल्कि अगर गुमान भी ग़ालिब हो कि

1 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب ما یفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا، 456/2

2 ...غنیۃ المتملی، کتاب الصلاۃ، فصل فیما یفسد الصلاۃ، ص451

3 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب ما یفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا، 455/2

4 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب ما یفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا، 463/2

5 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب السابع فیما یفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا، الفصل الاول، 112/1

नमाज़ में नहीं तब भी अ़मले कसीर है। और अगर दूर से देखने वाले को शको शुबा है कि नमाज़ में है या नहीं तो अ़मले क़लील है और नमाज़ फ़ासिद न हुई।[1]

(7) ☞ जैसे आज कल बा'ज़ वीडियोज़ में देखा जाता है कि बा'ज़ लोग रुकूअ़ में आते जाते बच्चों को उठाते उतारते हैं। सज्दे से उठ कर क़ियाम में जाते हुए फिर बच्चे को उठाना अगर येह अ़मले कसीर के साथ हो या'नी देखने वाला कहे कि येह तो बच्चे के साथ ही खेल रहा है न कि नमाज़ पढ़ रहा है तो नमाज़ टूट गई। अगर अ़मले कसीर के साथ न हो तो नमाज़ हो गई। अगर बच्चा ख़ुद ब ख़ुद लिपट जाए उतर जाए तो भी नमाज़ हो जाएगी।

(8) ☞ दौराने नमाज़ कुरता या पाजामा पहनना या तहबन्द बांधना।[2]

(9) ☞ दौराने नमाज़ सत्र खुल जाना और इसी ह़ालत में कोई रुक्न अदा करना या तीन बार سُبْحٰنَ اللہ कहने की मिक़्दार वक़्फ़ा गुज़र जाना।[3]

(10) ☞ मा'मूली सा भी खाना या पीना मसलन तिल बिग़ैर चबाए निगल लिया या क़तरा मुंह में गिरा और निगल लिया।[4]

(5) सुन्नतें व आदाब ﴾इयादत के फ़ज़ाइल व त़रीक़ा﴿

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस ने अच्छे त़रीक़े से वुज़ू किया और सवाब की उम्मीद पर अपने किसी मुसल्मान भाई की इयादत की उसे जहन्नम से सत्तर साल के फ़ासिले तक दूर कर दिया जाएगा।[5]

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब भी किसी मरीज़ की इयादत के लिये जाना हो तो मरीज़ से अपने लिये दुआ़ लाज़िमी करवानी चाहिये कि मरीज़ की दुआ़ रद नहीं होती चुनान्चे

1 ...درمختار، كتاب الصلاة، باب ما يفسد الصلاة وما يكره فيها، 464/2

2 ...غنية المتملي، كتاب الصلاة، فصل فيما يفسد الصلاة، ص452

3 ...درمختار، كتاب الصلاة، باب ما يفسد الصلاة وما يكره فيها، 467/2

4 ...درالمختار مع ردالمحتار، كتاب الصلاة، باب ما يفسد الصلاة... الخ، مطلب المواضع التي لا يجب... الخ، 462/2

5 ...ابو داود، كتاب الجنائز، باب في فضل العيادة، ص500، حديث: 3097

हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मरीज़ जब तक तन्दुरुस्त न हो जाए उस की कोई दुआ रद नहीं होती।[1]

हज़रते उमर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबिय्ये रहमत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जब तुम किसी मरीज़ के पास आओ तो उस से अपने लिये दुआ की दरख़्वास्त करो क्यूं कि उस की दुआ फ़िरिश्तों की दुआ की त़रह़ होती है।"[2]

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब किसी मरीज़ की इयादत को जाएं तो मरीज़ के लिये भी दुआ करें। एक दुआ ह़दीसे मुबारका में ता'लीम फ़रमाई गई है, हो सके तो येह दुआ ही पढ़ लें। हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस ने किसी ऐसे मरीज़ की इयादत की जिस की मौत का वक़्त क़रीब न आया हो और सात मरतबा येह अल्फ़ाज़ कहे तो **अल्लाह** पाक उसे उस मरज़ से शिफ़ा अ़ता फ़रमाएगा : **اَسْئَلُ اللّٰہَ الْعَظِیْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ اَنْ یَّشْفِیَکَ** **तरजमा :** मैं अ़ज़मत वाले, अ़र्शे अ़ज़ीम के मालिक **अल्लाह** पाक से तेरे लिये शिफ़ा का सुवाल करता हूं।[3]

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि इयादत की सुन्नत येह है कि मरीज़ के पास थोड़ी देर बैठा जाए और शोर कम किया जाए।[4]

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि बीमार की इयादत बस इतनी देर होनी चाहिये जितनी देर ऊंटनी को दो मरतबा दोहने के दरमियानी वक़्फ़े में लगती है (या'नी थोड़ी सी देर)। इसी त़रह़ सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया कि अफ़्ज़ल तरीन इयादत वोह है जिस में बीमार पुरसी करने वाला जल्दी उठ कर चला जाए।[5]

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : **अल्लाह** पाक उस पर रह़म फ़रमाए जो सुब्ह़ की नमाज़

1 ...شعب الایمان، باب فی الصبر علی المصائب، 210/7، حدیث: 10029

2 ...ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی عیادۃ المریض، ص234، حدیث: 1441

3 ...ابو داود، کتاب الجنائز، باب الدعا للمریض عند العیادۃ، ص502، حدیث: 3106

4 ...مشکاۃ، کتاب الجنائز، باب عیادۃ المریض و ثواب المرض، 303/1، حدیث: 1589

5 ...شعب الایمان، باب فی عیادۃ المریض، 543/6، حدیث: 9221

पढ़ कर **अल्लाह** की रिज़ा व ख़ुशनूदी और आख़िरत के (बेहतरीन अन्जाम और सवाब) के हुसूल के लिये किसी मरीज़ की इयादत करने के लिये जाए तो **अल्लाह** पाक उस के लिये हर क़दम के बदले एक नेकी लिख देता है, एक गुनाह मुआफ़ फ़रमा देता है और जब वोह मरीज़ के पास बैठता है तो अज्रो सवाब (के समुन्दर) में ग़र्क़ हो जाता है।[1]

हज़रते सलमान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह इर्शाद नक़्ल फ़रमाते हैं : जिस ने मरीज़ को वोह चीज़ खिलाई जिस की उसे ख़्वाहिश थी, **अल्लाह** पाक उसे जन्नत के फल खिलाएगा।[2]

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** पाक ! हमें इयादत की सुन्नत पर भी अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(6) इस्लाहे आ'माल «बा जमाअ़त नमाज़ की अहम्मिय्यत»

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपनी किताब "फ़ैज़ाने नमाज़" में लिखते हैं कि अ़ल्लामा सय्यिद महमूद अहमद रज़वी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हर आ़क़िल, बालिग़, हुर (या'नी आज़ाद) और क़ादिर (या'नी जो क़ुदरत रखता हो) मुसल्मान (मर्द) पर जमाअ़त से नमाज़ पढ़ना वाजिब है और बिला उ़ज़्र (या'नी बिग़ैर किसी मजबूरी के) एक बार भी जमाअ़त छोड़ने वाला गुनहगार है और कई बार तर्क फ़िस्क़ है बल्कि एक जमाअ़ते उ़लमा जिन में इमाम अहमद बिन हम्बल رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ भी शामिल हैं, वोह जमाअ़त को फ़र्ज़े ऐन क़रार देते हैं। अगर फ़र्ज़े ऐन न माना जाए तो इस के वाजिब व ज़रूरी होने में तो शुबा ही नहीं है। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का उ़मूमी अ़मल येह ही था कि आप फ़र्ज़ नमाज़ें बा जमाअ़त अदा फ़रमाते इल्ला (या'नी मगर) येह कि कोई मजबूरी पेश आ जाती।[3]

हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान करते हैं कि **अल्लाह** पाक के आख़िरी रसूल صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब बन्दा बा जमाअ़त नमाज़ पढ़े फिर **अल्लाह** पाक से

1 ...شعب الایمان، باب فی عیادۃ المریض، 6/533، حدیث: 9178

2 ...معجم کبیر، 3/569، حدیث: 5983

3 ... फ़ुयूज़ुल बारी, 3/297 ब तग़य्युरे क़लील

अपनी ह़ाजत (या'नी ज़रूरत) का सुवाल करे तो **अल्लाह** पाक इस बात से ह़या फ़रमाता है कि बन्दा ह़ाजत पूरी होने से पहले वापस लौट जाए।"[1]

ऐ आ़शिक़ाने नमाज़ ! बेशक ह़ाजत पूरी होने के लिये सलातुल ह़ाजत पढ़ना और दीगर अवरादो वज़ाइफ़ करना बहुत अच्छी बात है मगर जमाअ़त से फ़र्ज़ नमाज़ अदा कर के अपनी ह़ाजत के लिये दुआ़ मांगना येह बेहतरीन अ़मल है।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : मर्द की नमाज़ मस्जिद में जमाअ़त के साथ, घर में और बाज़ार में पढ़ने से पच्चीस (25) दरजे ज़ाइद है।[2]

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا से रिवायत है, ताजदारे मदीना صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "नमाज़े बा जमाअ़त तन्हा पढ़ने से सत्ताईस (27) दरजे बढ़ कर है।"[3]

ह़ज़रत इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के दोनों अ़ज़ीम शागिर्द ह़ज़रते इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ व ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के शागिर्दे रशीद ह़ज़रते मुह़म्मद बिन समाआ़ رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने एक सो तीन (103) बरस की उ़म्र पाई, आप रोज़ाना दो सो (200) रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल पढ़ा करते थे।[4] और नमाज़े बा जमाअ़त के जज़्बे का येह आ़लम था कि आप फ़रमाते हैं : मुसल्सल चालीस बरस तक मेरी एक मरतबा के इ़लावा कभी तक्बीरे ऊला फ़ौत नहीं हुई। मेरी वालिदा का इन्तिक़ाल जिस दिन हुवा उस दिन एक वक़्त की जमाअ़त छूट गई तो मैं ने इस ख़याल से कि जमाअ़त की नमाज़ का पच्चीस (25) गुना सवाब मिलता है वोही नमाज़ मैं ने अकेले पच्चीस (25) मरतबा पढ़ी, फिर मुझे कुछ गुनूदगी (या'नी ऊंघ) आ गई तो किसी ने ख़्वाब में आ कर कहा : "पच्चीस नमाज़ें तो तुम ने पढ़ लीं मगर फ़िरिश्तों की आमीन का क्या करोगे ?"[5]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب!   صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

1 ...حلیۃ الاولیاء، مسعر بن کدام، 299/7، رقم: 10591

2 ...بخاری، کتاب الاذان، باب فضل صلاۃ الجماعۃ، ص224، حدیث: 647

3 ...بخاری، کتاب الاذان، باب فضل صلاۃ الجماعۃ، ص223، حدیث: 645

4 ...تاریخ بغداد، رقم 921، محمد بن سماعۃ، 404/2

5 ...تہذیب التہذیب، 581/4

सबक़ नम्बर 27

मौज़ूआत

1	मदनी क़ाइदा : सूरतुल्लहब	2	अज़्कारे नमाज़ : दुआए क़ुनूत
3	तफ़्सीरे क़ुरआन : तौबा की बरकात	4	नमाज़ के अह़काम : नमाज़ के मुफ़्सिदात
5	सुन्नतें व आदाब : अंगूठी के मुतअ़ल्लिक़ मदनी फूल	6	इस्लाहे आ'माल : नमाज़ की बरकात

(1) मदनी क़ाइदा ﴿सूरतुल्लहब : आयत 1 ता 3﴾

मदनी क़ाइदे के अस्बाक़ में पढ़े गए क़वाइद का इजरा व दुरुस्त मख़ारिज के साथ पढ़ने की मश्क़ करें।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह़रबान, रह़मत वाला है।

تَبَّتْ يَدَاۤ اَبِیْ لَهَبٍ وَّ تَبَّؕ ﴿۱﴾ مَاۤ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَ مَا كَسَبَؕ ﴿۲﴾
سَیَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍۚۖ ﴿۳﴾

अबू लहब के दोनों हाथ तबाह हो जाएं और वोह तबाह हो ही गया। उस का माल और उस की कमाई उस के कुछ काम न आई। अब वोह शो'लों वाली आग में दाख़िल होगा।

(2) अज़्कारे नमाज़ ﴿दुआए क़ुनूत﴾

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَ نَسْتَغْفِرُكَ وَ نُؤْمِنُ بِكَ
وَ نَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَ نُثْنِيْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ ط

ऐ **अल्लाह** पाक! हम तुझ से मदद चाहते हैं और तुझ से बख़्शिश मांगते हैं और तुझ पर ईमान लाते हैं। और तुझ पर भरोसा रखते हैं और तेरी बहुत अच्छी ता'रीफ़ करते हैं।

(3) तफ़्सीरे कुरआन ﴾तौबा की बरकात﴿

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۝۱۰ۙ
(پ29، النوح:10)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो मैं ने कहा : (ऐ लोगो !) अपने रब से मुआफ़ी मांगो, बेशक वोह बड़ा मुआफ़ फ़रमाने वाला है।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 10, सफ़हा 365 पर है कि यहां से येह बताया गया है कि हज़रते नूह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम को तरग़ीब दिला कर भी **अल्लाह** करीम की बारगाह में कुफ़्रो शिर्क से तौबा करने की दा'वत दी, चुनान्चे इस आयत और इस के बा'द वाली दो आयात का खुलासा येह है कि हज़रते नूह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम लम्बे अ़र्से तक आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को झुटलाती रही तो **अल्लाह** पाक ने उन से बारिश रोक दी और चालीस साल तक उन की औ़रतों को बांझ कर दिया, उन के माल हलाक हो गए और जानवर मर गए, जब उन का येह ह़ाल हुवा तो हज़रते नूह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन से फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम अपने रब्बे करीम के साथ कुफ़्रो शिर्क करने पर उस से मुआफ़ी मांगो और **अल्लाह** पाक पर ईमान ला कर उस से मग़्फ़िरत त़लब करो ताकि **अल्लाह** पाक तुम पर अपनी रह़मतों के दरवाज़े खोल दे क्यूं कि **अल्लाह** पाक की इत़ाअ़त और इ़बादत में मश्ग़ूल होना ख़ैरो बरकत और वुस्अ़ते रिज़्क़ का सबब होता है और कुफ़्र से दुन्या भी बरबाद हो जाती है, बेशक **अल्लाह** पाक उसे बड़ा मुआफ़ फ़रमाने वाला है जो (सच्चे दिल से) उस की बारगाह में रुजूअ़ करे, अगर तुम तौबा कर लोगे और **अल्लाह** पाक की वह़दानिय्यत का इक़रार कर के सिर्फ़ उसी की इ़बादत करोगे तो वोह तुम पर मूस्लाधार बारिश भेजेगा और माल और बेटों में इज़ाफ़े से तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे लिये बाग़ात बना देगा और तुम्हारे लिये नहरें बनाएगा ताकि उन से तुम अपने बाग़ात और खेतियों को सैराब करो।"[1]

इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** पाक की बारगाह में इस्तिग़्फ़ार करने और अपने गुनाहों से तौबा करने से बे शुमार दीनी और दुन्यवी फ़वाइद ह़ासिल होते हैं। इस्तिग़्फ़ार करने के बारे में एक और मक़ाम पर **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है :

1 ...تفسیر طبری، پ29، نوح، تحت الآیۃ:10، 247/12

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۱۰﴾
(پ5، النسآء:110)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो कोई बुरा काम करे या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर **अल्लाह** से मग़्फ़िरत त़लब करे तो **अल्लाह** पाक को बख़्शने वाला मेहरबान पाएगा।

और इर्शाद फ़रमाया :

وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿۳۳﴾
(پ9، الانفال:33)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और **अल्लाह** उन्हें अ़ज़ाब देने वाला नहीं जब कि वोह बख़्शिश मांग रहे हैं।

और इर्शाद फ़रमाया :

وَّ اَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى (پ11، ھود:3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और येह कि अपने रब से मुआ़फ़ी मांगो फिर उस की त़रफ़ तौबा करो तो वोह तुम्हें एक मुक़र्ररा मुद्दत तक बहुत अच्छा फ़ाएदा देगा।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने इस्तिग़फ़ार को अपने लिये ज़रूरी क़रार दिया तो **अल्लाह** पाक उसे हर ग़म और तक्लीफ़ से नजात देगा और उसे ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा जहां से उसे वह्मो गुमान भी न होगा।[1]

(4) नमाज़ के अह़काम «नमाज़ के मुफ़्सिदात»

(1) ☞ नमाज़ शुरूअ़ करने से पहले ही कोई चीज़ दांतों में मौजूद थी उसे निगल लिया तो अगर वोह चने के बराबर या उस से ज़ियादा थी तो नमाज़ फ़ासिद हो गई और अगर चने से कम थी तो मक्रूह।[2]

(2) ☞ नमाज़ से क़ब्ल कोई मीठी चीज़ खाई अब उस के अज्ज़ा मुंह में बाक़ी नहीं सिर्फ़ लुआ़बे

1 ...ابن ماجہ، کتاب الادب، باب الاستغفار، ص612، حدیث:3819

2 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب السابع فیما یفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا، الفصل الاول، 113/1

दहन में कुछ असर रह गया है उस के निगलने से नमाज़ फ़ासिद न होगी।[1]

(3) ☞ मुंह में शकर वग़ैरा हो कि घुल कर ह़ल्क़ में पहुंचती है, नमाज़ फ़ासिद हो गई।[2]

(4) ☞ दांतों से ख़ून निकला अगर थूक ग़ालिब है तो निगलने से नमाज़ फ़ासिद न होगी। और ख़ून ग़ालिब है तो नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी।[3] (ग़लबे की अ़लामत येह है कि ह़ल्क़ में ज़ाएक़ा मह़सूस हुवा तो नमाज़ फ़ासिद हो गई। नमाज़ तोड़ने में ज़ाएक़े का और वुज़ू टूटने में रंग का ए'तिबार है। वुज़ू उस वक़्त टूटता है जब थूक सुर्ख़ हो जाए।)[4]

(5) ☞ बिग़ैर किसी उ़ज़्र के सीने को सम्ते क़िब्ला से 45 दरजा या इस से ज़ियादा फेरना नमाज़ को तोड़ देगा, अगर कोई उ़ज़्र है तो नमाज़ नहीं टूटेगी। जैसे वुज़ू टूट जाने का गुमान हुवा और मुंह फेरा ही था कि गुमान का ग़लत़ होना ज़ाहिर हुवा तो अगर मस्जिद से ख़ारिज न हुवा हो तो नमाज़ नहीं टूटेगी।[5]

(6) ☞ सांप, बिच्छू को मारने से नमाज़ नहीं टूटती जब कि न 3 क़दम चलना पड़े न 3 ज़र्ब की ह़ाजत हो वरना नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी।[6]

(7) ☞ पै दर पै तीन बाल उखेड़े या तीन जूएं मारीं या एक ही जूं को तीन बार मारा नमाज़ जाती रही और अगर पै दर पै न हो तो नमाज़ फ़ासिद न हुई मगर मक्रूह है।[7]

(8) ☞ एक रुक्न (क़ियाम, रुकूअ़, सज्दा वग़ैरा) में 3 बार खुजाने से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है या'नी यूं कि खुजाया फिर हाथ हटा लिया फिर खुजाया फिर हटा लिया येह दो बार हुवा अगर अब इसी त़रह़ तीसरी बार किया तो नमाज़ जाती रही। अगर एक बार हाथ रख कर

1 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب السابع فیما یفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا، الفصل الاول، 113/1

2 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب السابع فیما یفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا، الفصل الاول، 113/1

3 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب السابع فیما یفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا، الفصل الاول، 113/1

4 ... बहारे शरीअ़त, 1/610, हिस्सा : 3

5 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب ما یفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا ص86

6 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب السابع فیما یفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا، الفصل الاول، 114/1

7 ...غنیۃ المتملی، مفسدات الصلاۃ، ص448

चन्द बार ह़रकत दी तो येह एक ही मरतबा ख़ुजाना कहा जाएगा ।[1]

(9) ☞ तक्बीराते इन्तिक़ालात में **अल्लाहु अक्बर** के अलिफ़ को दराज़ (लम्बा) किया या'नी **आल्लाहु** या **आक्बर** कहा या "ب" के बा'द अलिफ़ बढ़ाया "**अक्बार**" कहा तो नमाज़ फ़ासिद हो गई और अगर तक्बीरे तह़रीमा में ऐसा हुवा तो नमाज़ शुरूअ़ ही न हुई ।[2]

(10) ☞ क़िराअत या अज़्कारे नमाज़ में ऐसी ग़लती जिस से मा'ना फ़ासिद हो जाएं नमाज़ फ़ासिद हो जाती है ।[3]

(5) सुन्नतें व आदाब «अंगूठी के मुतअ़ल्लिक़ मदनी फूल»

(1) ☞ मर्द को सोने की अंगूठी पहनना ह़राम है । सुल्ताने दो जहान, रह़मते आलमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (मर्द को) सोने की अंगूठी पहनने से मन्अ़ फ़रमाया ।[4]

(2) ☞ (ना बालिग़) लड़के को सोने चांदी का ज़ेवर पहनाना ह़राम है और जिस ने पहनाया वोह गुनहगार होगा ।[5]

(3) ☞ लोहे की अंगूठी जहन्नमियों का ज़ेवर है ।[6]

(4) ☞ मर्द के लिये वोही अंगूठी जाइज़ है जो मर्दों की अंगूठी की त़रह़ हो या'नी सिर्फ़ एक नगीने की हो और अगर उस में (एक से ज़ियादा या) कई नगीने हों तो अगर्चे वोह चांदी ही की हो, मर्द के लिये ना जाइज़ है ।[7]

(5) ☞ (मर्द को) बिग़ैर नगीने की अंगूठी पहनना ना जाइज़ है कि येह अंगूठी नहीं छल्ला है ।

(6) ☞ हुरूफ़े मुक़त्तआ़त की अंगूठी पहनना जाइज़ है मगर हुरूफ़े मुक़त्तआ़त वाली अंगूठी बिग़ैर वुज़ू पहनना और छूना या मुसाफ़ह़े के वक़्त हाथ मिलाने वाले का उस अंगूठी को बे वुज़ू छू जाना जाइज़ नहीं ।

1 ...غنية المتملی، مفسدات الصلاة، ص448

2 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاة، باب ما یفسد الصلاة ویکره فیها، مطلب: فی مشی الصلاة، 473/2

3 ... बहारे शरीअ़त, 1/614, हिस्सा : 3

4 ...بخاری، کتاب اللباس، باب خواتیم الذهب، ص1475، حدیث: 5863

5 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة، فصل فی اللبس، 598/9

6 ...ترمذی، کتاب اللباس، باب ماجاء فی الخاتم الحدید، ص445، حدیث: 1785 ماخوذًا

7 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة، فصل فی اللبس، 897/9

(7) ☞ इसी त़रह़ मर्दों के लिये एक से ज़ियादा (जाइज़ वाली) अंगूठी पहनना या (एक या ज़ियादा) छल्ले पहनना भी ना जाइज़ है कि येह (छल्ला) अंगूठी नहीं। औ़रतें छल्ले पहन सकती हैं।[1]

(8) ☞ (मर्द को) चांदी की एक अंगूठी एक नगीने वाली जिस का वज़्न साढ़े चार माशे (या'नी चार ग्राम 374 मिली ग्राम) से कम हो, पहनना जाइज़ है।[2]

(9) ☞ ई़दैन में अंगूठी पहनना मुस्तह़ब है।[3]

(6) इस्लाहे़ आ'माल ﴾नमाज़ की बरकात﴿

नमाज़ की नक़्ल करने वाले डाकू गिरिफ़्तारी से बच गए

कहा जाता है : एक मरतबा डाकूओं की एक टीम किसी मालदार आदमी के मकान में डाका डालने की ग़रज़ से जा घुसी, इत्तिफ़ाक़न मालदार आदमी की आंख खुल गई, उस ने शोर मचा दिया, अहले मह़ल्ला जाग पड़े और डाकू घबरा कर भाग पड़े, मह़ल्ले वालों ने उन का पीछा किया, डाकू आगे आगे भाग रहे थे और पीछे पीछे लोग आ रहे थे। रास्ते में डाकूओं को एक मस्जिद नज़र आई, फ़ौरन मस्जिद में दाख़िल हो गए और झूटमूट नमाज़ पढ़ने लगे! लोग भी उन को तलाश करते हुए मस्जिद तक आए, देखा कि चन्द आदमी नमाज़ में मसरूफ़ हैं, इन के इ़लावा मस्जिद में कोई नहीं, कहने लगे कि अफ़्सोस! डाकू कहीं निकल गए। चुनान्चे वोह लोग नाकाम वापस लौट गए। येह देख कर डाकूओं का सरदार अपने डाकू साथियों से बोला : अगर आज हम झूटमूट नमाज़ की सूरत न बनाते तो ज़रूर पकड़ लिये जाते, सिर्फ़ झूटमूट नमाज़ की सूरत इख़्तियार करने की येह बरकत है कि हम ज़िल्लतो रुस्वाई से बच गए, अगर हम ह़क़ीक़त में नमाज़ को दुरुस्त त़ौर पर अपना लें तो **अल्लाह** पाक हमें दोज़ख़ की मुसीबत से भी बचा लेगा, इस लिये मैं तो आज से लूटमार से तौबा करता हूं और **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी की आ़दत छोड़ता हूं। उस के साथी कहने लगे : ऐ हमारे सरदार! जब आप ने तौबा कर ली तो फिर हम भी क्यूं पीछे रहें! हम भी आप के साथ तौबा में शरीक हो जाते हैं। चुनान्चे तमाम डाकूओं ने सच्चे दिल से तौबा की और उन का शुमार परहेज़ गार लोगों में होने लगा।[4]

1... बहारे शरीअ़त, 3/428, ह़िस्सा : 16

2... درمختار مع ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة، فصل فی اللبس، 896/9

3... فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب السابع عشر فی صلاۃ العیدین، 165/1

4... फ़ैज़ाने नमाज़, स. 46

आशिके़ मजाज़ी की अ़जीब ह़िकायत

''नमाज़ बुराइयों से बचाती है'' के बारे में ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान सफ़्फ़ौरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه एक अ़जीबो ग़रीब ह़िकायत बयान फ़रमाते हैं जिस का खुलासा येह है : एक शख़्स किसी औ़रत पर आ़शिक़ हो गया, आख़िर कार हिम्मत कर के उस ने एक ख़त़ में उस औ़रत पर अपने इ़श्क़ का इज़्हार कर दिया। वोह ख़ातून निहायत शरीफ़ ख़ानदान से तअ़ल्लुक़ रखती थी, ख़त़ पा कर परेशान हो गई चूंकि शादी शुदा भी थी, कुछ सोच समझ कर वोह ख़त़ अपने शौहर की ख़िदमत में पेश कर दिया। उस का शौहर एक मस्जिद का इमाम था और निहायत परहेज़ गार होने के साथ साथ काफ़ी समझदार भी था, उसे अपनी ज़ौजा पर पूरा ए'तिमाद (या'नी भरोसा) था। लिहाज़ा उस ख़त़ के जवाब में अपनी ज़ौजा ही की मा'रिफ़त उस ने येह जवाब दिलवाया कि ''फ़ुलां मस्जिद में फ़ुलां इमाम के पीछे बिला नाग़ा चालीस (40) दिन पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त अदा करो, फिर आगे देखा जाएगा।'' उस ''आ़शिक़'' ने पाबन्दी से नमाज़े बा जमाअ़त शुरूअ़ कर दी। जूं जूं दिन गुज़रते गए नमाज़ की बरकतें उस पर ज़ाहिर होती चली गईं। जब चालीस (40) दिन गुज़र गए तो उस के दिल की दुन्या ही बदल चुकी थी चुनान्चे उस ने येह पैग़ाम भेज दिया : (मोह़तरमा ! नमाज़ की बरकत से मेरी आंख खुल गई है, मैं مَعَاذَالله ह़राम कारी के ख़्वाब देखता था लेकिन **अल्लाह** करीम का करोड़हा करोड़ शुक्र कि उस ने मुझे तेरी मह़ब्बत से छुटकारा इनायत फ़रमा दिया है। (اَلْحَمْدُلِلّٰه) मैं ने अपनी बद निय्यती से तौबा कर ली है और तुझ से भी मुआ़फ़ी का त़लब गार हूं। जब उस नेक ख़ातून ने अपने शौहर को येह पैग़ाम सुनाया तो उस की ज़बान से बे साख़्ता (या'नी एक दम) येह जारी हो गया : صَدَقَ اللهُ الْعَظِيْمُ فِیْ قَوْلِه (या'नी रब्बे अ़ज़ीम ने अपने इर्शाद में बिल्कुल सच फ़रमाया) :

اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ (پ21، العنکبوت:45)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक नमाज़ बे ह़याई और बुरी बातों से रोकती है।[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

[1] ...نزہۃ المجالس، 133/1

सबक़ नम्बर 28

मौज़ूआत

1	मदनी क़ाइदा : सूरतुल्लहब	2	अज़्कारे नमाज़ : दुआए कुनूत
3	तफ़्सीरे कुरआन : तौबा के फ़ज़ाइल	4	नमाज़ के अह़काम : नमाज़ के मक्रूहाते तह़रीमिया
5	सुन्नतें व आदाब : अंगूठी के मुतअ़ल्लिक़ मदनी फूल	6	इस्लाहे़ आ'माल : नमाज़ से गुनाह मुआफ़ होते हैं

(1) मदनी क़ाइदा ﴾सूरतुल्लहब : आयत 1 ता 5﴿

मदनी क़ाइदे के अस्बाक़ में पढ़े गए क़वाइद का इजरा व दुरुस्त मख़ारिज के साथ पढ़ने की मश्क़ करें।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान, रह़मत वाला है।

تَبَّتْ يَدَاۤ اَبِیْ لَهَبٍ وَّتَبَّؕ ۝۱ مَاۤ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَؕ ۝۲ سَيَصْلٰى نَارًا
ذَاتَ لَهَبٍ ۝۳ وَّامْرَاَتُهٗؕ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝۴ فِیْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝۵

अबू लहब के दोनों हाथ तबाह हो जाएं और वोह तबाह हो ही गया। उस का माल और उस की कमाई उस के कुछ काम न आई। अब वोह शो'लों वाली आग में दाख़िल होगा। और उस की बीवी लकड़ियों का गठ्ठा उठाने वाली है। उस के गले में खजूर की छाल की रस्सी है।

(2) अज़्कारे नमाज़ ﴾दुआए कुनूत﴿

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَ نَسْتَغْفِرُكَ وَ نُؤْمِنُ بِكَ وَ نَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِیْ
عَلَيْكَ الْخَيْرَ ط وَ نَشْكُرُكَ وَ لَا نَكْفُرُكَ وَ نَخْلَعُ وَ نَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ ط اَللّٰهُمَّ
اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ لَكَ نُصَلِّیْ

ऐ **अल्लाह** पाक ! हम तुझ से मदद चाहते हैं और तुझ से बख़्शिश मांगते हैं और तुझ पर ईमान लाते हैं और तुझ पर भरोसा रखते हैं और तेरी बहुत अच्छी ता'रीफ़ करते हैं। तेरा शुक्र करते हैं और तेरी नाशुक्री नहीं करते और अलग करते और छोड़ते हैं उस शख़्स को जो तेरी ना फ़रमानी करे। ऐ **अल्लाह** पाक ! हम तेरी ही इ़बादत करते और तेरे ही लिये नमाज़ पढ़ते हैं।

(3) तफ़्सीरे क़ुरआन ﴾तौबा के फ़ज़ाइल﴿

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا (پ28، التحریم:8)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** की त़रफ़ ऐसी तौबा करो जिस के बा'द गुनाह की त़रफ़ लौटना न हो।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 10, सफ़हा 255 पर है या'नी ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** करीम की बारगाह में ऐसी सच्ची तौबा करो जिस का असर तौबा करने वाले के आ'माल में ज़ाहिर हो और उस की ज़िन्दगी इ़बादात और नेक कामों से भर जाए और वोह गुनाहों से बचता रहे। ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने और दूसरे अस्ह़ाब ने फ़रमाया : "तौबए नसूह़ येह है कि तौबा के बा'द आदमी फिर गुनाह की त़रफ़ न लौटे जैसा कि निकला हुवा दूध फिर थन में वापस नहीं होता।"[1]

फ़ी ज़माना ह़ालात ऐसे पुर फ़ितन हैं कि गुनाह का इरतिकाब करना बेह़द आसान जब कि गुनाह से बचना बेह़द दुश्वार और नेकी करना बहुत मुश्किल हो चुका है, लिहाज़ा हर मुसल्मान को चाहिये कि गुनाहों से बचने और नेक काम करने की भरपूर कोशिश करे और जो गुनाह उस से सरज़द हो चुके हैं उन से सच्ची तौबा करे क्यूं कि सच्ची तौबा ऐसी चीज़ है जो इन्सान के नामए आ'माल से उस के गुनाह मिटा देती है, चुनान्चे **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है : وَهُوَ الَّذِیْ یَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَ یَعْفُوْا عَنِ السَّیِّاٰتِ وَ یَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۲۵﴾ (پ25، الشوریٰ:25) **तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** और वोही है जो अपने बन्दों से तौबा क़बूल फ़रमाता है और गुनाहों से दरगुज़र फ़रमाता है और जानता है जो कुछ तुम करते हो।

1 ...تفسیر خازن، پ28، التحریم، تحت الآیۃ: 8، 317/4

हज़रते अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे वोह शख़्स जिस का कोई गुनाह न हो ।[1] और हज़रते अनस رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब बन्दा अपने गुनाहों से तौबा करता है तो **अल्लाह** करीम आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों को उस के गुनाह भुला देता है, उस के आ'ज़ा को भी भुला देता है और उस के ज़मीन पर निशानात भी मिटा डालता है यहां तक कि जब वोह क़ियामत के दिन **अल्लाह** पाक से मिलेगा तो उस के गुनाह पर कोई गवाह न होगा ।[2]

अल्लाह पाक हमें साबिक़ा गुनाहों से सच्ची तौबा करने और आइन्दा गुनाहों से बचते रहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(4) नमाज़ के अह़काम ﴾नमाज़ के मक्रूहाते तह़रीमिया﴿

﴾1﴿ ☞ दाढ़ी, लिबास या बदन से खेलना ।[3]

﴾2﴿ ☞ कपड़ा समेटना जैसा कि आज कल बा'ज़ लोग सज्दे में जाते वक़्त पाजामा (शल्वार) वग़ैरा आगे या पीछे से उठा लेते हैं ।[4]

﴾3﴿ ☞ सदल या'नी कपड़ा लटकाना, मसलन सर या कन्धे पर इस त़रह़ से चादर या रूमाल वग़ैरा डालना कि दोनों कनारे लटक्ते हों, हां ! अगर एक कनारा दूसरे कन्धे पर डाल दिया और दूसरा लटक रहा है तो ह़रज नहीं ।[5]

﴾4﴿ ☞ आज कल बा'ज़ लोग एक कन्धे पर इस त़रह़ रूमाल रखते हैं कि उस का एक सिरा पेट पर लटक रहा होता है और दूसरा पीठ पर, इस त़रह़ नमाज़ पढ़ना मक्रूहे तह़रीमी है ।[6]

1 ... ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب ذکر التوبۃ، ص689، حدیث: 4250

2 ... الترغیب والترھیب، کتاب التوبۃ والزھد، الترغیب فی التوبۃ والمبادرۃ ... الخ، ص987، حدیث: 17

3 ... فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب السابع فیما یفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا، الفصل الثانی، 117/1

4 ... فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب السابع فیما یفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا، الفصل الثانی، 117/1

5 ... درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب ما یفسد الصلاۃ ... الخ، مطلب فی الکراھیۃ ... الخ، 2/488-489

6 ... درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب ما یفسد الصلاۃ ... الخ، مطلب فی الکراھیۃ ... الخ، 2/488

﴾5﴿ ☞ दोनों आस्तीनों में से अगर एक आस्तीन भी आधी कलाई से ज़ियादा चढ़ी हुई हो तो नमाज़ मक्रूहे तह़रीमी होगी ।[1]

﴾6﴿ ☞ पेशाब, पाख़ाना या रीह़ की शिद्दत होना । नमाज़ शुरूअ़ करने से पहले वक़्त हो तो इस ह़ालत में नमाज़ शुरूअ़ करना गुनाह है । अगर ऐसा है कि फ़राग़त और वुज़ू के बा'द नमाज़ का वक़्त ख़त्म हो जाएगा तो नमाज़ पढ़ ले । और अगर नमाज़ के दौरान येह ह़ालत पेश हुई और वक़्त भी इतना है कि वुज़ू कर के नमाज़ दोबारा पढ़ सकता है तो नमाज़ तोड़ना वाजिब है, अगर इसी ह़ालत में पढ़ी तो गुनाहगार होंगे ।[2]

﴾7﴿ ☞ दौराने नमाज़ कंकरियां हटाना मक्रूहे तह़रीमी है ।[3]

﴾8﴿ ☞ अगर बिग़ैर हटाए सज्दा न होता हो तो हटाना वाजिब है ।[4]

﴾9﴿ ☞ नमाज़ में उंग्लियां चटख़ाना ।[5]

(5) सुन्नतें व आदाब ﴾अंगूठी पहनने की सुन्नतें व आदाब﴿

﴾1﴿ ☞ अंगूठी उन्हीं के लिये सुन्नत है जिन को मोहर करने (या'नी स्टेम्प Stamp लगाने) की ह़ाजत होती है, जैसे सुल्त़ान व क़ाज़ी और वोह उ़लमा जो फ़तवे पर (अंगूठी से) मोहर करते (या'नी स्टेम्प लगाते) हैं, इन के इ़लावा दूसरों के लिये जिन को मोहर करने की ह़ाजत न हो सुन्नत नहीं अलबत्ता पहनना जाइज़ है ।[6] फ़ी ज़माना अंगूठी से मोहर करने का उ़र्फ़ (या'नी मा'मूल व रवाज) नहीं रहा, बल्कि इस काम के लिये "स्टेम्प" बनवाई जाती है, लिहाज़ा जिन को मोहर न लगानी हो उन क़ाज़ी वग़ैरा के लिये भी अंगूठी पहनना सुन्नत न रहा ।[7]

1 ... درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب ما یفسد الصلاۃ... الخ، مطلب فی الکراھیۃ... الخ، 490/2

2 ... درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب ما یفسد الصلاۃ... الخ، مطلب فی الخشوع، 490/2

3 ... درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب ما یفسد الصلاۃ... الخ، مطلب فی الکراھیۃ... الخ، 493/2

4 ... درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب ما یفسد الصلاۃ... الخ، مطلب فی الکراھیۃ... الخ، 493/2

5 ... درمختار، کتاب الصلاۃ، باب ما یفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا، اذا تردد الحکم... الخ، 493/2

6 ... فتاوی ھندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب العاشر فی استعمال الذھب والفضۃ، 335/5

7 ... 163 मदनी फूल, स. 31

(2) ☞ मर्द को चाहिये कि अंगूठी का नगीना हथेली की जानिब और औ़रत नगीना हाथ की पुश्त (या'नी हाथ की पीठ) की त़रफ़ रखे ।[1]

(3) ☞ चांदी का छल्ला ख़ास लिबासे ज़नान (या'नी औ़रतों का पहनावा) है, मर्दों को मक्रूहे (तह़रीमी, ना जाइज़ व गुनाह है) ।[2]

(4) ☞ औ़रत सोने चांदी की जितनी चाहे अंगूठियां और छल्ले पहन सकती है, इस में वज़्न और नगीने की ता'दाद की कोई क़ैद नहीं ।[3]

(5) ☞ लोहे की अंगूठी पर चांदी का ख़ौल चढ़ा दया कि लोहा बिल्कुल न दिखाई देता हो, इस अंगूठी के पहनने की (मर्द औ़रत किसी को भी) मुमानअ़त नहीं ।[4]

(6) ☞ दोनों में से किसी भी एक हाथ में अंगूठी पहन सकते हैं और छुंगल्या या'नी सब से छोटी उंगली में पहनी जाए ।[5]

(7) ☞ मन्नत का या दम किया हुवा धात (Metal) का कड़ा भी मर्द को पहनना ना जाइज़ व गुनाह है ।

(8) ☞ इसी त़रह़ मदीनए मुनव्वरह या अजमेर शरीफ़ के चांदी या किसी भी धात के छल्ले और स्टील की अंगूठी भी जाइज़ नहीं ।

(9) ☞ बवासीर व दीगर बीमारियों के लिये दम किये हुए चांदी या किसी भी धात के छल्ले भी मर्दों के लिये जाइज़ नहीं । अगर किसी इस्लामी भाई ने धात का कड़ा या धात का छल्ला, ना जाइज़ अंगूठी, या धात की ज़न्जीर (Bracelet Chain) पहनी है तो अभी अभी उतार कर तौबा कर लीजिये और आइन्दा न पहनने का अ़ह्द कीजिये ।[6]

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** पाक ! हमें अपने मदनी ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा । اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

1... 163 मदनी फूल, स. 31
2... फ़तावा रज़विय्या, 22/130
3... 163 मदनी फूल, स. 31
4... فتاوی ھندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب العاشر فی إستعمال الذھب والفضۃ، 5/335
5... درمختار مع ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی اللبس، 9/596
6... 163 मदनी फूल, स. 31

(6) इस्लाहे आ'माल ﴾नमाज़ से गुनाह मुआफ़ होते हैं﴿

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते ह़ारिस رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ रिवायत करते हैं कि ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ एक दिन तशरीफ़ फ़रमा थे और हम भी बैठे थे कि मुअज़्ज़िन साहिब आ गए, ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने पानी मंगवा कर वुज़ू किया, फिर फ़रमाया कि मैं ने ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इसी त़रह़ वुज़ू करते देखा है और मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते हुए भी सुना कि जो शख़्स मेरे इस वुज़ू की त़रह़ वुज़ू करे फिर वोह ज़ोहर की नमाज़ पढ़ ले तो **अल्लाह** पाक उस के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा देता है या'नी वोह गुनाह जो फ़ज्र की नमाज़ और इस ज़ोहर की नमाज़ के दरमियान हुए हों, फिर जब अ़स्र की नमाज़ पढ़ता है तो ज़ोहर व अ़स्र के माबैन (या'नी बीच) के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा देता है, फिर जब मग़रिब की नमाज़ पढ़ता है तो अ़स्र व मग़रिब के दरमियान के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा देता है, फिर इ़शा की नमाज़ पढ़ता है तो उस के और मग़रिब के दरमियान के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा देता है, फिर हो सकता है कि रात भर वोह लैट कर ही गुज़ार दे और फिर जब उठ कर वुज़ू करे और फ़ज्र की नमाज़ पढ़े तो इ़शा व फ़ज्र के दरमियान के गुनाहों की बख़्शिश हो जाती है और येही वोह नेकियां हैं जो बुराइयों को दूर कर देती हैं।[1]

ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : सरकारे दो जहान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : अगर तुम में से किसी के सह़्न में नहर हो, वोह उस में हर रोज़ पांच बार ग़ुस्ल करे तो क्या उस पर कुछ मैल रह जाएगा ? लोगों ने अ़र्ज़ किया : जी नहीं । आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''नमाज़ गुनाहों को ऐसे ही धो देती है जैसा कि पानी मैल को धोता है।''[2]

ह़ज़रते ईसा रूहुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام एक बार समुन्दर के कनारे कनारे तशरीफ़ लिये जा रहे थे। आप عَلَیْہِ السَّلَام ने एक परिन्दा देखा जो कि समुन्दर के कीचड़ में लोटपोट हो रहा था और इस सबब से उस का बदन मैला हो गया। फिर वोह वहां से निकल कर समुन्दर में नहाने लगा जिस से वोह

1 ... الاحادیث المختارۃ، مسند عثمان بن عفان، 441/1، حدیث:317

2 ... ابن ماجہ، کتاب الطب، باب الکحل بالاثمد، ص566، حدیث:3497

फिर साफ़ हो गया, येही अ़मल उस ने पांच मरतबा किया। ह़ज़रते ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام को इस काम से तअ़ज्जुब हुवा, ह़ज़रते जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ने आप को ह़ैरत ज़दा देख कर कहा : येह जो आप को दिखाया गया है येह ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के नमाज़ियों की मिसाल और येह कीचड़ उन के गुनाहों की मिसाल और समुन्दर में नहाना पांच नमाज़ों की मिसाल है।[1]

या'नी जिस त़रह़ येह कीचड़ में लोटा और नहा कर पाको साफ़ हो गया इसी त़रह़ ह़ज़रत मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के गुनाहगार इन पांच नमाज़ों की वज्ह से अपने गुनाहों से पाको साफ़ हो जाएंगे।

ऐ आ़शिक़ाने नमाज़ ! हमारी किस क़दर ख़ुश क़िस्मती है कि **अल्लाह** करीम ने हम पर नमाज़ फ़र्ज़ फ़रमाई और बहुत सारा सवाब अ़त़ा करने के साथ साथ येह भी एह़सान फ़रमाया कि वोह नमाज़ की बरकत से हमारे गुनाह भी मुआ़फ़ फ़रमा दिया करता है। **अल्लाह** पाक की रह़मत के इस ख़ज़ाने को जो न लूटे वोह किस क़दर मह़रूम व बद नसीब है। येह याद रहे कि नमाज़ों से जहां जहां गुनाह मुआ़फ़ होने का तज़्किरा है इस से मुराद सग़ीरा (या'नी छोटे) गुनाह हैं, कबीरा (या'नी बड़े) गुनाह तौबा से मुआ़फ़ होते हैं।[2]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 29

मौज़ूआ़त

1	मदनी क़ाइदा : सूरतुन्नस्र	2	अज़्कारे नमाज़ : दुआ़ए क़ुनूत
3	तफ़्सीरे क़ुरआन : कामिल ईमान वालों के औसाफ़	4	नमाज़ के अह़काम : नमाज़ के मक्रूहाते तह़रीमिया
5	सुन्नतें व आदाब : जिस्म से ग़ैर ज़रूरी बाल को साफ़ करने से मुतअ़ल्लिक़ सुन्नतें व आदाब	6	इस्लाहे़ आ'माल : सच्ची तौबा और उस की शराइत़

1 ...نزهة المجالس، 139/1

2 ... फ़ैज़ाने नमाज़, स. 73

www.dawateislamiindia.org

(1) मदनी क़ाइदा ﴾सूरतुन्नस्र : आयत 1 ता 2﴿

मदनी क़ाइदे के अस्बाक़ में पढ़े गए क़वाइद का इजरा व दुरुस्त मख़ारिज के साथ पढ़ने की मश्क़ करें।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान, रह़मत वाला है।

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَ الْفَتْحُ ۙ﴿۱﴾ وَ رَاَیْتَ النَّاسَ یَدْخُلُوْنَ فِیْ دِیْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۙ﴿۲﴾

जब **अल्लाह** की मदद और फ़त्ह़ आएगी। और तुम लोगों को देखो कि **अल्लाह** के दीन में फ़ौज दर फ़ौज दाख़िल हो रहे हैं।

(2) अज़्कारे नमाज़ ﴾दुआ़ए क़ुनूत﴿

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَ نَسْتَغْفِرُكَ وَ نُؤْمِنُ بِكَ وَ نَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِيْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ ط وَ نَشْكُرُكَ وَ لَا نَكْفُرُكَ وَ نَخْلَعُ وَ نَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ ط اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ لَكَ نُصَلِّيْ وَنَسْجُدُ وَ اِلَيْكَ نَسْعٰى وَ نَحْفِدُ وَ نَرْجُوْا رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ ۝

ऐ **अल्लाह** पाक! हम तुझ से मदद चाहते हैं और तुझ से बख़्शिश मांगते हैं और तुझ पर ईमान लाते हैं और तुझ पर भरोसा रखते हैं और तेरी बहुत अच्छी ता'रीफ़ करते हैं और तेरा शुक्र करते हैं और तेरी नाशुक्री नहीं करते और अलग करते और छोड़ते हैं उस शख़्स को जो तेरी ना फ़रमानी करे। ऐ **अल्लाह**! हम तेरी ही इ़बादत करते और तेरे ही लिये नमाज़ पढ़ते और सज्दा करते हैं और तेरी ही त़रफ़ दौड़ते और ख़िदमत के लिये ह़ाज़िर होते हैं और तेरी रह़मत के उम्मीद वार हैं और तेरे अ़ज़ाब से डरते हैं। बेशक तेरा अ़ज़ाब काफ़िरों को मिलने वाला है।

(3) तफ़्सीरे कुरआन ﴾कामिल ईमान वालों के औसाफ़﴿

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِیْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَ اِذَا تُلِیَتْ عَلَیْهِمْ اٰیٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِیْمَانًا وَّ عَلٰى رَبِّهِمْ یَتَوَكَّلُوْنَۚۖ۝۲
(پ9، الانفال:2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ईमान वाले वोही हैं कि जब **अल्लाह** को याद किया जाए तो उन के दिल डर जाते हैं और जब उन पर उस की आयात की तिलावत की जाती है तो उन के ईमान में इज़ाफ़ा हो जाता है और वोह अपने रब पर ही भरोसा करते हैं ।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 3, सफ़हा 519 पर है कि इस से पहली आयत में **अल्लाह** पाक ने ईमान की शर्त के साथ अपनी और अपने हबीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इताअत का हुक्म दिया क्यूं कि कामिल ईमान, कामिल इताअत के साथ ही पाया जाता है । जब कि इस आयत में **अल्लाह** पाक ने कामिल ईमान वालों के तीन औसाफ़ बयान फ़रमाए हैं ।[1]

कामिल ईमान वालों के तीन औसाफ़

इस आयत में अपने ईमान में सच्चे और कामिल लोगों का पहला वस्फ़ येह बयान हुवा कि जब **अल्लाह** पाक को याद किया जाए तो उन के दिल डर जाते हैं । **अल्लाह** पाक का ख़ौफ़ दो तरह का होता है : (1) अज़ाब के ख़ौफ़ से गुनाहों को तर्क कर देना । (2) **अल्लाह** पाक के जलाल, उस की अज़मत और उस की बे नियाज़ी से डरना ।

पहली क़िस्म का ख़ौफ़ आम मुसल्मानों में से परहेज़ गारों को होता है । दूसरी क़िस्म का ख़ौफ़ अम्बियाओ मुरसलीन, औलियाए कामिलीन और मुक़र्रब फ़िरिश्तों को होता है और जिस का **अल्लाह** पाक से जितना ज़ियादा कुर्ब होता है उसे उतना ही ज़ियादा ख़ौफ़ होता है ।[2] जैसा कि उम्मुल मुअमिनीन हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रिवायत है, सरकारे दो आलम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मैं तुम सब से ज़ियादा **अल्लाह** पाक से डरने वाला हूं और तुम सब से ज़ियादा **अल्लाह** पाक की मा'रिफ़त रखने वाला हूं ।''[3]

1 ...تفسیر خازن، پ9، الانفال، تحت الآیۃ: 2، 2/290
2 ...تفسیر کبیر، پ9، الانفال، تحت الآیۃ: 2، 5/450 ملتقطاً
3 ...بخاری، کتاب الایمان، باب قول النبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم: انا اعلمکم باللہ، 1/18، حدیث: 20

ख़ौफ़े ख़ुदा से मुतअ़ल्लिक़ आसार

हज़रते ह़सन رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने एक मरतबा दरख़्त पर परिन्दे को बैठे हुए देखा तो फ़रमाया : ऐ परिन्दे ! तेरे लिये कितनी भलाई है कि तू फल खाता और दरख़्त पर बैठता है काश ! मैं भी एक फल होता जिसे परिन्दे खा लेते ।[1]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ عَنْہ को देखा कि आप ने ज़मीन से एक तिन्का उठा कर फ़रमाया : काश ! मैं एक तिन्का होता । काश ! मैं कुछ भी न होता । काश ! मैं पैदा न हुवा होता । काश ! मैं भूला बिसरा (या'नी ऐसा शख़्स जिस को कोई न जानता) होता ।[2]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है, सरकारे रिसालत صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस मोमिन बन्दे की आंख से **अल्लाह** पाक के ख़ौफ़ से आंसू निकले, ख़्वाह वोह मच्छर के सर जितना हो, फिर वोह आंसू रुख़्सार के सामने के ह़िस्से को मस करे तो **अल्लाह** पाक उस पर दोज़ख़ की आग ह़राम कर देता है ।[3]

(4) नमाज़ के अह़काम «नमाज़ के मक्रूहाते तह़रीमिया»

(1) ☞ नमाज़ के दौरान आस्मान की त़रफ़ देखना ।[4]

(2) ☞ इधर उधर मुंह फेर कर देखना, चाहे मुंह थोड़ा फिरा हो या ज़ियादा । मुंह फेरे बिग़ैर सिर्फ़ आंखें फिरा कर इधर उधर बिला ज़रूरत देखना मक्रूहे तन्ज़ीही है और ज़रूरतन हो तो ह़रज नहीं ।[5]

(3) ☞ मर्द का सज्दे में कलाइयां बिछाना ।[6]

1 ...الزھدلابن مبارک، باب تعظیم ذکر اللہ عزّوجل، ص106، رقم: 240

2 ...الزھدلابن مبارک، باب تعظیم ذکر اللہ عزّوجل، ص105، رقم: 234

3 ...ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب الحزن و البکاء، ص681، حدیث: 4197

4 .. बहारे शरीअ़त, 1/626, ह़िस्सा : 3

5 ... बहारे शरीअ़त, 1/626, ह़िस्सा : 3

6 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب ما یفسد الصلاۃ... إلخ، مطلب اذا تردد الحکم... الخ، 496/2

(4) ☞ किसी शख़्स के मुंह के सामने नमाज़ पढ़ना। एक शख़्स बैठा है, दूसरा उस के चेहरे की तरफ़ रुख़ कर के नमाज़ शुरूअ़ कर दे, येह नमाज़ शुरूअ़ करने वाला गुनाहगार है और इस पर ही कराहत आई वरना चेहरा करने वाले पर गुनाह व कराहत है।[1]

(5) ☞ नमाज़ में नाक और मुंह छुपाना।[2]

(6) ☞ क़स्दन जमाही लेना।[3]

(7) ☞ बिला ज़रूरत खन्कारना (या'नी बल्ग़म वग़ैरा) निकालना।[4]

(8) ☞ उलटा क़ुरआने मजीद पढ़ना।[5] (मसलन पहली रक्अ़त में ''सूरतुल इख़्लास'' दूसरी में ''सूरतुल काफ़िरून'')

(5) सुन्नतें व आदाब

﴾ग़ैर ज़रूरी बाल साफ़ करने से मुतअ़ल्लिक़ सुन्नतें व आदाब﴿

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे सरकार, मदनी ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सफ़ाई को बेहद पसन्द फ़रमाते हैं, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **''اَلطُّهُوْرُ نِصْفُ الْاِيْمَانِ''** या'नी सफ़ाई आधा ईमान है।[6] चुनान्चे हर मुसल्मान को चाहिये कि अपने ज़ाहिरो बातिन दोनों की सफ़ाई का ख़याल रखे। ज़ाहिर की सफ़ाई का जहां तक तअ़ल्लुक़ है तो वोह येह है कि अपना जिस्म और लिबास वग़ैरा नजासत से पाक रखने के साथ साथ मैल कुचैल वग़ैरा से भी साफ़ रखना चाहिये। नीज़ अपने सर और दाढ़ी के बालों को भी दुरुस्त रखें। बग़ल व ज़ेरे नाफ़ के बाल भी साफ़ करते रहना चाहिये।

1 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب ما یفسد الصلاۃ... إلخ، مطلب اذا تردد الحکم... الخ، 496/2

2 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب السابع فیما یفسد الصلاۃ ومایکرہ، الفصل الثانی، 118/1

3 ...مراقی الفلاح شرح نور الایضاح، کتاب الصلاۃ، باب ما یفسد الصلاۃ، فصل فی مکروھات الصلاۃ، ص79

4 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب السابع فیما یفسد الصلاۃ ومایکرہ، الفصل الثانی، 118/1

5 ... बहारे शरीअ़त, 1/626, हिस्सा : 3

6 ...ترمذی، کتاب الدعوات، 89-باب، ص806، حدیث: 3519

(1) ☞ चालीस दिन के अन्दर अन्दर इन कामों को ज़रूर कर लें : मूंछें और नाखुन तराश्ना, बग़ल के बाल उखाड़ना और मूए ज़ेरे नाफ़ मूंडना। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मूंछें और नाखुन तरश्वाने और बग़ल के बाल उखाड़ने और मूए ज़ेरे नाफ़ मूंडने में हमारे लिये येह वक़्त मुक़र्रर किया गया है कि चालीस दिन से ज़ियादा न छोड़ें ।[1]

(2) ☞ हफ़्ते में एक बार नहाना और बदन को साफ़ सुथरा रखना और मूए ज़ेरे नाफ़ दूर करना मुस्तह़ब है। पन्दरहवें रोज़ करना भी जाइज़ है और चालीस रोज़ से ज़ियादा गुज़ार देना मक्रूह व मम्नूअ़ है।[2]

(3) ☞ बग़ल के बालों का उखाड़ना सुन्नत है और मूंडना भी जाइज़ है।[3]

(4) ☞ नाक के बाल न उखाड़ें कि इस से मरज़े आकिला पैदा हो जाने का ख़ौफ़ है।[4]

(5) ☞ गरदन के बाल मूंडना मक्रूह है।[5] या'नी जब कि सर के बाल न मुंडाएं सिर्फ़ गरदन ही के मुंडाएं। हां अगर पूरे सर के बाल मुंडाएं तो इस के साथ गरदन के भी मुंडा दें। नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़जामत के सिवा गरदन के बाल मुंडाने से मन्अ़ फ़रमाया।[6]

(6) ☞ सीना और पीठ के बाल काटना या मूंडना अच्छा नहीं।[7]

(7) ☞ मूंछों के दोनों कनारों के बाल बड़े बड़े हों तो ह़रज नहीं।[8]

(8) ☞ मर्द को चाहिये कि मूए ज़ेरे नाफ़ उस्तरे वग़ैरा से मूंड दे।

(9) ☞ मूए ज़ेरे नाफ़ को नाफ़ के ऐन नीचे से मूंडना शुरूअ़ करें।[9]

1 ...مسلم، کتاب الطہارۃ، باب خصال الفطرۃ، ص115، حدیث:257

2 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب التاسع عشر فی الختان...الخ، 437/5

3 ... बहारे शरीअ़त, 3/585, हिस्सा : 16

4 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب التاسع عشر فی الختان...الخ، 438/5

5 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب التاسع عشر فی الختان...الخ، 437/5

6 ...معجم اوسط، 187/5، حدیث:6969

7 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب التاسع عشر فی الختان...الخ، 438/5

8 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب التاسع عشر فی الختان...الخ، 438/5

9 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب التاسع عشر فی الختان...الخ، 438/5

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** ! हमें अपने ज़ाहिरो बातिन दोनों को साफ़ रखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और इस मुआ़मले में जो जो सुन्नतें हैं उन तमाम सुन्नतों पर ख़ुशदिली से अ़मल करने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ मर्हमत फ़रमा ।[1] اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(6) इस्लाहे आ'माल ﴾सच्ची तौबा और इस की शराइत﴿

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये कि ठन्डी आंहें भरने...या...अपने गालों पर चपत मारने...या...अपने नाक और कानों को हाथ लगाने...या...अपनी ज़बान दांतों तले दबा लेने...या...सर हिलाते हुए "तौबा, तौबा, तौबा" की गरदान करने का नाम तौबा नहीं है बल्कि सच्ची तौबा से मुराद येह है कि बन्दा किसी गुनाह को **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी जान कर उस पर नादिम होते हुए दिल से मुआ़फ़ी त़लब करे और आइन्दा के लिये उस गुनाह से बचने का पुख़्ता इरादा करते हुए उस गुनाह के इज़ाले के लिये कोशिश करे, या'नी नमाज़ क़ज़ा की थी तो अब अदा भी करे, चोरी की थी या रिश्वत ली थी तो तौबा के बा'द वोह माल अस्ल मालिक या उस के वुरसा को वापस करे या मुआ़फ़ करवा ले और इन दोनों (या'नी अस्ल मालिक या वुरसा) के न मिलने की सूरत में अस्ल मालिक की त़रफ़ से राहे ख़ुदा में सदक़ा कर दे ।[2] ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि क़ियामत के दिन कई तौबा करने वाले ऐसे होंगे जिन को गुमान होगा कि वोह तौबा करने वाले हैं, ह़ालां कि वोह तौबा करने वाले नहीं हैं । या'नी तौबा का त़रीक़ा इख़्तियार नहीं किया, नदामत नहीं हुई, गुनाहों से रुक जाने का अ़ज़्म नहीं किया, जिन पर ज़ुल्म किया है उन से मुआ़फ़ नहीं कराया और न उन को ह़क़ दिया ह़ालां कि मुम्किन भी था, अलबत्ता ! जिस ने कोशिश की और नाकामी की सूरत में अहले ह़ुक़ूक़ के लिये इस्तिग़फ़ार किया तो उम्मीद है कि **अल्लाह** पाक अहले ह़ुक़ूक़ को राज़ी कर के उसे छुड़ा लेगा ।[3]

तौबा की शराइत़

मशाइख़े उ़ज़्ज़ाम ने फ़रमाया कि तौबा के तीन अरकान हैं : (1) माज़ी पर नदामत (2) ह़ाल में उस गुनाह को छोड़ देना और (3) मुस्तक़्बिल में उस की त़रफ़ न लौटने का पुख़्ता इरादा । येह

1... सुन्नतें और आदाब, स. 63, 68 मुल्तक़त़न

2... फ़तावा रज़विय्या, 21/121

3...مکاشفۃ القلوب، الباب السابع عشر فی بیان الامانۃ والتوبۃ، ص 84

शराइत़ उस वक़्त होंगी कि जब येह तौबा ऐसे गुनाहों से हो कि जो तौबा करने वाले और **अल्लाह** पाक के दरमियान हों जैसे शराब पीना। और अगर **अल्लाह** पाक के हुक़ूक़ की अदाएगी में कमी पर तौबा की है जैसे नमाज़, रोज़े और ज़कात तो इन की तौबा येह है कि अव्वलन इन में कमी पर नादिम व शरमिन्दा हो फिर इस बात का पक्का इरादा करे कि आइन्दा इन्हें फ़ौत न करेगा अगर्चे नमाज़ को उस के वक़्त से मुअख़्ख़र करने के साथ हो या फिर तमाम फ़ौत शुदा को क़ज़ा करे عَلٰی ھٰذَا الْقِیَاس ।[1]

तौबा की क़बूलिय्यत कैसे मा'लूम हो ?

ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ लिखते हैं कि एक आ़लिम से पूछा गया : एक आदमी तौबा करे, तो क्या उसे मा'लूम हो सकता है कि उस की तौबा क़बूल हुई है या नहीं ? फ़रमाया : इस में हुक्म तो नहीं दिया जा सकता, अलबत्ता इस की अ़लामत है, अगर अपने आप को आइन्दा गुनाह से बचता देखे और येह देखे कि दिल ख़ुशी से ख़ाली है और रब्बे करीम के सामने नेक लोगों से क़रीब हो, बुरों से दूर रहे थोड़ी दुन्या को बहुत समझे और आख़िरत के बहुत अ़मल को थोड़ा जाने, दिल हर वक़्त **अल्लाह** पाक के फ़राइज़ में मुन्हमिक रहे, ज़बान की ह़िफ़ाज़त करे, हर वक़्त ग़ौरो फ़िक्र करे, जो गुनाह कर चुका है उस पर ग़मो ग़ुस्सा और शरमिन्दगी मह़सूस करे (तो समझ लो कि तौबा क़बूल हो गई) ।[2]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 30

मौज़ूआ़त

1	मदनी क़ाइदा : सूरतुन्नस्र	2	अज़्कारे नमाज़ : तस्बीह़े फ़ात़िमा
3	तफ़्सीरे क़ुरआन : शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त की फ़ज़ीलत	4	नमाज़ के अह़काम : नमाज़ के मक्रूहाते तह़रीमिया
5	सुन्नतें व आदाब : मुसाफ़ह़ा व मुआ़नक़ा की सुन्नतें व आदाब	6	इस्लाह़े आ'माल : सह़ाबिये रसूल का अदबे रसूल

1... फ़तावा रज़विय्या, 21/121

2... مکاشفۃ القلوب، الباب الثامن فی التوبۃ، ص39

(1) मदनी क़ाइदा «सूरतुन्नस्र : 1 ता 3»

मदनी क़ाइदे के अस्बाक़ में पढ़े गए क़वाइद का इजरा व दुरुस्त मख़ारिज के साथ पढ़ने की मश्क़ करें।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान, रहमत वाला है।

اِذَا جَآءَ نَصۡرُ اللّٰہِ وَ الۡفَتۡحُ ۙ﴿۱﴾ وَ رَاَیۡتَ النَّاسَ یَدۡخُلُوۡنَ فِیۡ دِیۡنِ اللّٰہِ اَفۡوَاجًا ۙ﴿۲﴾
فَسَبِّحۡ بِحَمۡدِ رَبِّکَ وَ اسۡتَغۡفِرۡہُ ؕؔ اِنَّہٗ کَانَ تَوَّابًا ﴿۳﴾

जब **अल्लाह** की मदद और फ़त्ह़ आएगी। और तुम लोगों को देखो कि **अल्लाह** के दीन में फ़ौज दर फ़ौज दाख़िल हो रहे हैं। तो अपने रब की ता'रीफ़ करते हुए उस की पाकी बयान करो और उस से बख़्शिश चाहो, बेशक वोह बहुत तौबा क़बूल करने वाला है।

(2) अज़्कारे नमाज़ «तस्बीहे फ़ातिमा»

33 बार "سُبْحَانَ اللّٰہ" और 33 बार "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" और 34 बार "اَللّٰہُ اَکْبَر" पढ़ना तस्बीहे फ़ातिमा कहलाता है।

(3) तफ़्सीरे क़ुरआन «शर्मगाह की हिफ़ाज़त की फ़ज़ीलत»

وَ الَّذِیۡنَ ہُمۡ لِفُرُوۡجِہِمۡ حٰفِظُوۡنَ ۙ﴿۵﴾
(پ18، المومنون:5)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 6, सफ़्ह़ा 503 पर है कि इस आयत से काम्याबी ह़ासिल करने वाले अहले ईमान का चौथा वस्फ़ बयान किया गया है, चुनान्चे इस आयत और इस के बा'द वाली आयत का ख़ुलासा येह है कि ईमान वाले ज़िना और ज़िना के अस्बाब व लवाज़िमात वग़ैरा ह़राम कामों से अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करते हैं अलबत्ता अगर वोह अपनी बीवियों और शरई बांदियों के साथ जाइज़ त़रीक़े से सोह़बत करें तो इस में उन पर कोई मलामत नहीं।[1]

1 ...تفسیر خازن، پ18، المومنون، تحت الآیۃ:5، 3/320-321ملتقطاً

शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त करने की फ़ज़ीलत

ह़दीसे पाक में ज़बान और शर्मगाह को ह़राम और मम्नूअ़ कामों से बचाने पर जन्नत का वा'दा किया गया है, चुनान्चे ह़ज़रते सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स मेरे लिये उस चीज़ का ज़ामिन हो जाए जो उस के जबड़ों के दरमियान में है या'नी ज़बान का और उस का जो उस के दोनों टांगों के दरमियान में है या'नी शर्मगाह का, मैं उस के लिये जन्नत का ज़ामिन हूं।"[1]

सरकारे नामदार صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में अ़र्ज़ किया गया कि हम अपनी शर्मगाहों की कहां तक ह़िफ़ाज़त करें ? इर्शाद फ़रमाया : "ज़ौजा और कनीज़ के सिवा किसी पर ज़ाहिर न होने दो।" अ़र्ज़ किया गया : "अगर तन्हाई में हों तो ?" इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** पाक का ज़ियादा ह़क़ है कि उस से ह़या की जाए।"[2]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ عَنْہ से मरवी है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा गया कि कौन सी चीज़ सब से ज़ियादा लोगों को जहन्नम में दाख़िल करेगी ? आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **اَلْفَمُ وَالْفَرْجُ** या'नी ज़बान और शर्मगाह।[3]

(4) नमाज़ के अह़काम ﴿नमाज़ के मक्रूहाते तह़रीमिया﴾

(1) ☞ किसी पहचान वाले के आने की ख़ातिर इमाम का नमाज़ को लम्बा करना।

(2) ☞ ऐसी ज़मीन जिस पर क़ब्ज़ा किया हो या पराया (किसी दूसरे का) खेत जिस में ज़राअ़त (फ़स्ल) मौजूद है उस में नमाज़ पढ़ना।[4]

(3) ☞ क़ब्र के सामने नमाज़ पढ़ना जब कि नमाज़ी और क़ब्र के दरमियान कोई चीज़ न हो।[5]

1 ...بخاری، کتاب الرقاق، باب حفظ اللسان، ص1591، حدیث:6474

2 ...ابو داود، کتاب الحمام، باب ما جاء فی التعری، ص633، حدیث:4017ملخصًا

3 ...ترمذی، کتاب البر و الصلة، باب ما جاء فی حسن الخلق، ص486، حدیث:2004

4 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاة، باب فیما یفسد الصلاة وما یکرہ، الفصل الثانی، 1/120

5 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الکراھیة، الباب الخامس فی آداب المسجد وقبلہ...الخ، 5/399

(4) ☞ कुफ़्फ़ार के इबादत ख़ानों में नमाज़ पढ़ना ।[1]

(5) ☞ कुरते वग़ैरा (शर्ट या क़मीज़) के बटन खुले हों जिस से सीना खुला रहे मक्रूहे तह़रीमी है, अगर नीचे कोई और कपड़ा पहना है तो फिर मक्रूहे तन्ज़ीही होगा ।

(6) ☞ जानदार (जैसे इन्सान, जानवर) की तस्वीर वाला लिबास पहन कर नमाज़ पढ़ना मक्रूहे तह़रीमी है ।[2]

(7) ☞ नमाज़ी के सर पर छत या सज्दे की जगह पर या आगे या दाएं या बाएं जानदार की तस्वीर लगाना मक्रूहे तह़रीमी है ।[3]

(5) सुन्नतें व आदाब ﴾मुसाफ़ह़ा व मुआ़नक़ा की सुन्नतें व आदाब﴿

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब दो इस्लामी भाई आपस में मिलें तो पहले सलाम करें और फिर दोनों हाथ मिलाएं कि ब वक़्ते मुलाक़ात मुसाफ़ह़ा करना सुन्नते सह़ाबा बल्कि सुन्नते रसूल है ।[4] ह़ज़रते अबू ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया कि मैं ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से अ़र्ज़ किया कि मुसाफ़ह़ा (हाथ मिलाना) ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में राइज था ? आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : "हां ।"[5]

(1) ☞ आपस में हाथ मिलाने से कीना ख़त्म होता है और एक दूसरे को तोह़फ़ा देने से मह़ब्बत बढ़ती और अ़दावत दूर होती है जैसा कि ह़ज़रते अ़ता ख़ुरासानी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "एक दूसरे के साथ मुसाफ़ह़ा करो, इस से कीना जाता रहता है और हदिय्या (तोह़फ़ा) भेजो आपस में मह़ब्बत होगी और दुश्मनी जाती रहेगी ।"[6]

1 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب تکرہ الصلاۃ فی الکنیسۃ، 53/2

2 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب ما یفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا، 502/2

3 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب ما یفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا، 503/2

4 ... मिरआतुल मनाजीह़, 6/355

5 ...بخاری، کتاب الاستئذان، باب المصافحۃ، ص1549، حدیث: 6263

6 ...موطا امام مالك، کتاب حسن الخلق، باب فی المھاجرۃ، ص483، حدیث: 1731

(2) ☞ मुलाक़ात के वक़्त मुसाफ़हा करने वालों के लिये दुआ की क़बूलिय्यत और हाथ जुदा होने से क़ब्ल ही मग़्फ़िरत की बिशारत है। चुनान्चे हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब दो मुसल्मानों ने मुलाक़ात की और एक दूसरे का हाथ पकड़ लिया (या'नी मुसाफ़हा किया) तो **अल्लाह** पाक के ज़िम्मए करम पर है कि उन की दुआ को हाज़िर कर दे (या'नी क़बूल फ़रमा ले) और हाथ जुदा न होने पाएंगे कि उन की मग़्फ़िरत हो जाएगी। और जो लोग जम्अ़ हो कर **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करते हैं और **अल्लाह** पाक को राज़ी करने के इ़लावा उन का कोई मक़्सद नहीं तो आस्मान से मुनादी निदा देता है कि खड़े हो जाओ ! तुम्हारी मग़्फ़िरत हो गई, तुम्हारे गुनाहों को नेकियों से बदल दिया गया।"[1]

(3) ☞ इस्लामी भाइयों के आपस में मुसाफ़हा करने की बरकत से दोनों के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मुसल्मान जब अपने मुसल्मान भाई से मिले और हाथ पकड़े (या'नी मुसाफ़हा करे) तो उन दोनों के गुनाह ऐसे गिरते हैं जैसे तेज़ आंधी के दिन में ख़ुश्क दरख़्त के पत्ते। और उन के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर हों।[2] रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब दो दोस्त आपस में मिलते हैं और मुसाफ़हा करते हैं और नबी (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं तो उन दोनों के जुदा होने से पहले पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।[3]

(4) ☞ सब से पहले यमन के रहने वालों ने सरकारे पुर वक़ार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुसाफ़हा करने (हाथ मिलाने) का शरफ़ हासिल किया। चुनान्चे हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه फ़रमाते हैं कि जब अहले यमन मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में हाज़िर हुए तो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम्हारे पास अहले यमन आए हैं और वोह पहले आदमी हैं जिन्हों ने आ कर मुसाफ़हा किया।"[4]

1 ... كنز العمال، كتاب الصحبة، باب المصافحة والمعانقة من الاكمال، جز5، 56/9، حديث: 25356

2 ... شعب الايمان، باب في مقاربة ومودة اهل الدين، 473/6، حديث: 8950

3 ... شعب الايمان، باب في مقاربة ومودة اهل الدين، 471/6، حديث: 8944

4 ... ابو داود، كتاب الادب، باب في المصافحة، ص812، حديث: 5213

(6) इस्लाहे आ'माल ﴾सहाबिये रसूल का अदबे रसूल﴿

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मदीनए मुनव्वरह में हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मेज़बानी (Hospitality) का शरफ़ हासिल करने वाले सब से पहले खुश नसीब हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللهُ عَنْه थे । आप का अस्ल नाम ख़ालिद बिन ज़ैद था जब कि कुन्यत अबू अय्यूब थी । हिजरत से क़ब्ल नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथ पर बैअ़त करने वाले तक़रीबन 70 खुश नसीब हज़रात में आप भी शामिल थे ।[1]

हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللهُ عَنْه अपने हर अन्दाज़ से प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये बे पनाह अदबो एहतिराम और अक़ीदत व जां निसारी का मुज़ाहरा करते, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये आप ने पहले पहल ऊपर की मन्ज़िल पेश की मगर ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (मुलाक़ातियों की आसानी का लिहाज़ फ़रमाते हुए) नीचे की मन्ज़िल को पसन्द फ़रमाया । एक मरतबा मकान के ऊपर की मन्ज़िल पर पानी का घड़ा टूटा तो फ़ौरन अपना लिहाफ़ डाल कर सारा पानी उस में खुश्क कर लिया घर में एक ही लिहाफ़ मौजूद था जो कि अब गीला हो चुका था मगर येह गवारा न किया कि पानी बह कर नीचे की मन्ज़िल में चला जाए और रहमते आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कुछ तक्लीफ़ पहुंचे ।[2]

हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللهُ عَنْه बयान करते हैं कि सरकारे दो आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के हां (बतौरे मेहमान) निचली मन्ज़िल में ठहरे और हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللهُ عَنْه ऊपर की मन्ज़िल में थे, हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللهُ عَنْه के दिल में एक रात ख़याल आया कि हम **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सरे अन्वर के ऊपर (छत पर) चल रहे हैं, येह ख़याल आते ही आप एक जानिब हट कर सो गए, फिर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की । आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''निचली मन्ज़िल में ज़ियादा सुहूलत है ।'' हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللهُ عَنْه ने अ़र्ज़ की : मैं उस छत पर नहीं रह सकता जिस के नीचे आप तशरीफ़ फ़रमा हों । तब आक़ाए दो आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऊपर की मन्ज़िल पर तशरीफ़ ले आए और हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللهُ عَنْه निचली मन्ज़िल में आ गए ।

1 ...طبقات ابن سعد، رقم 151، خالد بن زید، 3/368-369 ملتقطاً

2 ...السیرۃ النبویۃ، ھجرۃ رسول اللہ، مقام رسول فی دار ابی ایوب، 1/110

हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ खाना भेजते और जब बरतन वापस आते तो पूछते कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक उंग्लियां किस जगह से लगी हैं ? बरकत ह़ासिल करने के लिये पाकीज़ा उंग्लियां लगी हुई जगह से लुक़्मा उठाते और खाना खाते ।[1]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 31

मौज़ूआ़त

1	मदनी क़ाइदा : चौथी दोहराई	2	अज़्कारे नमाज़ : سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ
3	तफ़्सीरे कुरआन : ज़ियादा गुमान करने की मुमानअ़त	4	नमाज़ के अह़काम : नमाज़ के बक़िय्या मक्रूहाते तह़रीमिया
5	सुन्नतें व आदाब : मुसाफ़ह़ा व मुआ़नक़ा की सुन्नतें व आदाब	6	इस्लाहे़ आ'माल : अकेले नमाज़ पढ़ना

(1) मदनी क़ाइदा ﴾चौथी दोहराई﴿

- गुज़श्ता अस्बाक़ में (सूरतुन्नास, अल फ़लक़, अल्लहब, अन्नस्र) पढ़ी गई सूरतों की दोहराई की जाए ।
- ह़ुरूफ़े क़ल्क़ला, ह़ुरूफ़े मुस्ता'लिया व ह़ुरूफ़े ह़ल्क़ी की अदाएगी पर ख़ुसूसी तवज्जोह दें।

(2) अज़्कारे नमाज़ ﴾سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ﴿

जो शख़्स "سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ" रोज़ाना एक सो मरतबा पढ़ेगा उस के सारे गुनाह मिटा दिये जाएंगे । अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर हों ।[2]

(3) तफ़्सीरे कुरआन ﴾ज़ियादा गुमान करने की मुमानअ़त﴿

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِیْرًا مِّنَ الظَّنِّ٘-اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ (پ26، الحجرات:12)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! बहुत ज़ियादा गुमान करने से बचो बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है ।

1 ...مسلم، کتاب الاشربة، باب اباحة اکل الثوم...الخ، ص815، حدیث: 2053

2 ...بخاری، کتاب الدعوات، باب فضل التسبیح، ص1577، حدیث: 6405

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 9, सफ़्हा 433 पर है कि आयत के इस हिस्से में **अल्लाह** पाक ने अपने मोमिन बन्दों को बहुत ज़ियादा गुमान करने से मन्अ़ फ़रमाया क्यूं कि बा'ज़ गुनाह ऐसे हैं जो मह्ज़ गुनाह हैं लिहाज़ा एह्तियात् का तक़ाज़ा है कि गुमान की कसरत से बचा जाए।[1]

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (यहां आयत में गुमान करने से बचने का हुक्म दिया गया) क्यूं कि गुमान एक दूसरे को ऐब लगाने का सबब है, इस से बुरे काम सादिर होते हैं और इसी से ख़ुफ़्या दुश्मन ज़ाहिर होता है और कहने वाला जब इन मुआ़मलात से यक़ीनी तौ़र पर वाक़िफ़ होगा तो वोह इस बात पर बहुत कम यक़ीन करेगा कि किसी में ऐब है ताकि उसे ऐब लगाए, क्यूं कि कभी फे़'ल ब ज़ाहिर क़बीह़ (या'नी बुरा नज़र आ रहा) होता है लेकिन ह़क़ीक़त में ऐसा नहीं होता इस लिये कि मुम्किन है करने वाला उसे भूल कर कर रहा हो या देखने वाला ग़लती पर हो।[2]

अ़ल्लामा अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बैज़ावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : यहां आयत में गुमान की कसरत को मुब्हम (जो वाज़ेह़ न हो) रखा गया ताकि मुसल्मान हर गुमान के बारे में मोह़तात् हो जाए और ग़ौरो फ़िक्र करे यहां तक कि उसे मा'लूम हो जाए कि इस गुमान का तअ़ल्लुक़ किस सूरत से है क्यूं कि बा'ज़ गुमान वाजिब हैं, बा'ज़ ह़राम हैं और बा'ज़ मुबाह़ हैं।[3]

गुमान की अक़्साम और उन का शरई हुक्म

गुमान की कई अक़्साम हैं, उन में से चार येह हैं : (1) वाजिब, जैसे **अल्लाह** पाक के साथ अच्छा गुमान रखना। (2) मुस्तह़ब, जैसे नेक मुसल्मान के साथ नेक गुमान रखना। (3) मम्नूअ़ ह़राम। जैसे **अल्लाह** पाक के साथ बुरा गुमान करना और यूंही मोमिन के साथ बुरा गुमान करना। (4) जाइज़,जैसे फ़ासिक़े मो'लिन के साथ ऐसा गुमान करना जैसे काम वोह करता है।

1 ...تفسیر ابن کثیر، پ26، الحجرات، تحت الآیۃ:12، 138/4ملتقطًا

2 ...تفسیر کبیر، پ26، الحجرات، تحت الآیۃ:12، 110/10

3 ...تفسیر بیضاوی، پ26، الحجرات، تحت الآیۃ:12، 218/5ملخصًا

हज़रते सुफ्यान सौरी رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं : गुमान दो तरह का है, एक वोह कि दिल में आए और ज़बान से भी कह दिया जाए। येह अगर मुसल्मान पर बुराई के साथ है तो गुनाह है। दूसरा येह कि दिल में आए और ज़बान से न कहा जाए, येह अगर्चे गुनाह नहीं मगर इस से भी दिल को ख़ाली करना ज़रूरी है।[1] हज़रते अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : "अपने आप को बद गुमानी से बचाओ कि बद गुमानी बद तरीन झूट है, एक दूसरे के ज़ाहिरी और बातिनी ऐब मत तलाश करो, हिर्स न करो, हसद न करो, बुग्ज़ न करो, एक दूसरे से रू गर्दानी न करो (मुंह न मोड़ो) और ऐ **अल्लाह** के बन्दो ! भाई भाई हो जाओ।"[2]

अल्लाह पाक हमें एक दूसरे के बारे में बद गुमानी करने से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلی اللہ علیہ والہ وسلم

(4) नमाज़ के अह्काम «नमाज़ के मक्रूहाते तह्रीमिया»

(1) ☞ तश्बीक या'नी एक हाथ की उंग्लियां दूसरे हाथ की उंग्लियों में डालना।[3]

(2) ☞ नमाज़ में उंग्लियां चटख़ाना। नमाज़ के लिये जाते वक्त व इन्तिज़ार में भी येह दोनों चीज़ें (एक हाथ की उंग्लियां दूसरे हाथ में डालना और उंग्लियां चटख़ाना) मक्रूहे तह्रीमी हैं।[4]

(3) ☞ कमर पर हाथ रखना।[5] **अल्लाह** के महबूब صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : कमर पर हाथ रखना जहन्नमियों की राहत है।[6]

(4) ☞ किसी वाजिब को तर्क करना।[7]

1 ...تفسیر خازن، پ26، الحجرات، تحت الآیۃ:12، 182/4
2 ...مسلم، کتاب البر و الصلۃ والادب، باب تحریم الظن والتجسس، ص995، حدیث:2563
3 ...درمختار مع رد المحتار، کتاب الصلاۃ، باب ما یفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا، مطلب: اذا تردد الحکم بین سنۃ...الخ، 493/2
4 ...درمختار مع رد المحتار، کتاب الصلاۃ، باب ما یفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا، مطلب: اذا تردد الحکم بین سنۃ...الخ، 493/2
5 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب ما یفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا، 493/2
6 ...سنن کبریٰ للبیہقی، کتاب الصلاۃ، باب کراھیۃ التخصر فی الصلاۃ، 583/2، حدیث:3566
7 ...نور الایضاح مع مراقی الفلاح، کتاب الصلاۃ، فصل فی مکروھات الصلاۃ، ص178

﴾5﴿ ☞ क़ियाम के इलावा किसी और मौक़ए पर क़ुरआने पाक पढ़ना ।[1]

﴾6﴿ ☞ क़िराअत रुकूअ़ में पहुंच कर ख़त्म करना ।[2]

﴾7﴿ ☞ इमाम से पहले मुक़्तदी का रुकूअ़ व सुजूद वग़ैरा में चला जना या इस से पहले सर उठाना ।

﴾8﴿ ☞ दूसरा कपड़ा होने के बा वुजूद सिर्फ़ पाजामा या तहबन्द में नमाज़ पढ़ना ।[3]

(5) सुन्नतें व आदाब ﴾मुसाफ़ह़ा व मुआ़नक़ा की सुन्नतें व आदाब﴿

﴾1﴿ ☞ सलाम के साथ साथ मुसाफ़ह़ा करने से सलाम की तक्मील होती है । ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रिवायत है, सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मरीज़ की पूरी इ़यादत येह है कि उस की पेशानी पर हाथ रख कर पूछे कि मिज़ाज कैसा है ? और पूरी तह़िय्यत (सलाम करना) येह है कि मुसाफ़ह़ा भी किया जाए ।"[4]

﴾2﴿ ☞ ख़ुशी में किसी से गले मिलना सुन्नत हैं ।[5] ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا फ़रमाती हैं : ज़ैद बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ मदीना आए और ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे घर में थे, ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ वहां आए और दरवाज़ा खटखटाया । ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उठ कर कपड़ा खींचते हुए उन की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए, उन से मुआ़नक़ा किया और उन को बोसा दिया ।[6]

﴾3﴿ ☞ दोनों हाथों से मुसाफ़ह़ा करें ।[7]

﴾4﴿ ☞ जितनी बार मुलाक़ात हो हर बार मुसाफ़ह़ा करना मुस्तह़ब है ।[8]

1 ...غنیۃ المتملی، کراھیۃ الصلاۃ، ص357

2 ...غنیۃ المتملی، کراھیۃ الصلاۃ، ص352

3 ...غنیۃ المتملی، کراھیۃ الصلاۃ، ص349

4 ...ترمذی، کتاب الاستیذان والآدب، باب ماجاء فی المصافحۃ، ص641، حدیث: 2731

5... मिरआतुल मनाजीह़, 6/359

6 ...ترمذی، کتاب الاستیذان والآدب، باب ماجاء فی المعانقۃ والقبلۃ، ص641، حدیث: 2732

7 ...ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، باب الاستبراء وغیرہ، 629/9

8 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، باب الاستبراء وغیرہ، 628/9

(5) ☞ रुख़्सत होते वक़्त भी मुसाफ़ह़ा करें। ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِعَلَيْه लिखते हैं : "इस के मस्नून होने की तसरीह़ नज़रे फ़क़ीर से नहीं गुज़री मगर अस्ले मुसाफ़ह़ा का जवाज़ ह़दीस से साबित है तो इस को भी जाइज़ ही समझा जाएगा।"[1]

(6) ☞ फ़क़त् उंगलियों के छूने का नाम मुसाफ़ह़ा नहीं है सुन्नत येह है कि दोनों हाथों से मुसाफ़ह़ा किया जाए और दोनों के हाथों के माबैन कपड़ा वग़ैरा कोई चीज़ ह़ाइल न हो।[2]

(7) ☞ मुसाफ़ह़ा करते वक़्त सुन्नत येह है कि हाथ में रूमाल वग़ैरा ह़ाइल न हो, दोनों हथेलियां ख़ाली हों और हथेली से हथेली मिलनी चाहिये।[3]

(8) ☞ मुस्कुरा कर गर्म जोशी से मुसाफ़ह़ा करें। दुरूद शरीफ़ पढ़ें और हो सके तो येह दुआ़ भी पढ़ें : "يَغْفِرُاللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ" (या'नी **अल्लाह** पाक हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए)।

(9) ☞ हर नमाज़ के बा'द लोग आपस में मुसाफ़ह़ा करते हैं येह जाइज़ है।[4]

(10) ☞ गले मिलने को मुआ़नक़ा कहते हैं और येह भी सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित है।[5]

(6) इस्लाहे़ आ'माल ﴾अकेले नमाज़ पढ़ना﴿

ह़ज़रते ख़ालिद बिन मा'दान رَحْمَةُاللهِعَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने सुना है कि **अल्लाह** पाक तीन आदमियों के बारे में फ़िरिश्तों के सामने फ़ख़्र करता है : (1) एक वोह आदमी जो चट्यल (या'नी हमवार) मैदान में अज़ानो इक़ामत कह कर अकेला नमाज़ पढ़ता है, **अल्लाह** पाक फ़रमाता है : मेरे बन्दे को देखो ! जो तन्हा नमाज़ पढ़ रहा है, मेरे सिवा इसे कोई नहीं देख रहा, जाओ ! सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस के पीछे नमाज़ अदा करो। (2) दूसरे उस आदमी पर जो रात को उठ कर अकेले में नमाज़ पढ़ता है, सज्दे में जाए और इस ह़ालत में (अगर इत्तिफ़ाक़ से) नींद आ जाए तो **अल्लाह**

1... बहारे शरीअ़त, 3/471, ह़िस्सा : 16

2... ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، باب الاستبراء وغیرہ، 629/9

3... ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، باب الاستبراء وغیرہ، 629/9

4... ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، باب الاستبراء وغیرہ، 629/9

5... बहारे शरीअ़त, 3/471, ह़िस्सा : 16 माख़ूज़न

पाक फ़रमाता है : मेरे बन्दे को देखो ! इस की रूह मेरे पास और जिस्म मेरी बारगाह में सज्दे में है। (3) तीसरे उस आदमी पर जो ज़ोरों की जंग में साबित क़दम रहा यहां तक कि शहीद हो गया।[1]

ऐ आशिक़ाने नमाज़ ! इस ह़दीसे पाक से कोई येह न समझे कि अकेले नमाज़ पढ़ना जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने के मुक़ाबले में अफ़्ज़ल है, हरगिज़ ऐसा नहीं । येह फ़ज़ीलत तो ऐसे जंगल, बयाबान और पहाड़ वग़ैरा के लिये है कि जहां बन्दा तन्हा हो और कोई ऐसी मस्जिद भी नहीं कि जिस में जा कर बा जमाअ़त नमाज़ अदा कर सके, इस की ताईद में "सुनने अबू दावूद" की एक ह़दीसे मुबारका पेश की जाती है चुनान्चे ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ कहते हैं, ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम्हारा रब उस बकरी के चरवाहे से खुश होता है जो पहाड़ की चोटी पर हो, नमाज़ की अज़ानें दे और नमाज़ पढ़े । **अल्लाह** पाक फ़रमाता है कि मेरे इस बन्दे को देखो ! अज़ान देता है और नमाज़ क़ाइम करता है, और मुझ से डरता है, बेशक मैं ने अपने बन्दे को बख़्श दिया और इस को जन्नत में दाख़िल करूंगा।"[2]

शर्हे ह़दीस : ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ "मिरआत" जिल्द अव्वल, सफ़्ह़ा 415 पर फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि नमाज़े पंजगाना के लिये अज़ान बहर ह़ाल दे अगर्चे जंगल में अकेले नमाज़ पढ़े । "साह़िबे मिरक़ात" ने फ़रमाया कि अज़ान की बरकत से जिन्नात व फ़िरिश्ते भी उस के साथ नमाज़ पढ़ते हैं और उसे जमाअ़त का सवाब मिलता है । तक्बीर में इख़्तिलाफ़ है मगर ह़क़ येह है कि तक्बीर भी कहे क्यूं कि अज़ान व तक्बीर में नमाज़ की इत्तिलाअ़ के इ़लावा और बहुत से फ़ाएदे हैं । ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "**अल्लाह** पाक फ़रमाता है" के तह़्त लिखते हैं : (ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं :) (मत़लब येह कि) फ़िरिश्तों से अम्बिया व औलिया की रूहों से बल्कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से भी (**अल्लाह** पाक फ़रमाता है) । और इस ह़िस्से "मेरे इस बन्दे को देखो !" के तह़्त लिखते हैं : मा'लूम हुवा कि

1 ...تنبیہ الغافلین، باب فضل صلاۃ التطوع، ص307

2 ...ابو داود، کتاب صلاۃ المسافر، باب الاذان فی السفر، ص196، حدیث:1203

फ़िरिश्तों और नबियों वलियों की रूहों में येह ताक़त है कि एक जगह रह कर सारे आलम को देख लें कि परवर्दगार इन से फ़रमाता है : "इस पहाड़ पर छुपे बन्दे को देखो !"[1]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب!   صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 32

मौज़ूआत

1	मदनी क़ाइदा : सूरतुल काफ़िरून	2	अज़्कारे नमाज़ : दूसरी दोहराई
3	तफ़्सीरे क़ुरआन : मुसल्मानों के ऐब तलाश न करो	4	नमाज़ के अह्काम : सज्दए सह्व का त़रीक़ा व अह्काम
5	सुन्नतें व आदाब : सफ़र की सुन्नतें व आदाब	6	इस्लाहे आ'माल : बिला उ़ज़्र माहे रमज़ान का रोज़ा छोड़ना

(1) मदनी क़ाइदा ﴾सूरतुल काफ़िरून : आयत 1 ता 3﴿

मदनी क़ाइदे के अस्बाक़ में पढ़े गए क़वाइद का इजरा व दुरुस्त मख़ारिज के साथ पढ़ने की मश्क़ करें।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान, रह्मत वाला है।

قُلۡ یٰۤاَیُّہَا الۡکٰفِرُوۡنَ ۙ﴿۱﴾ لَاۤ اَعۡبُدُ مَا تَعۡبُدُوۡنَ ۙ﴿۲﴾ وَ لَاۤ اَنۡتُمۡ عٰبِدُوۡنَ مَاۤ اَعۡبُدُ ۚ﴿۳﴾

तुम फ़रमाओ : ऐ काफ़िरो ! मैं उन की इ़बादत नहीं करता जिन्हें तुम पूजते हो। और तुम उस की इ़बादत करने वाले नहीं जिस की मैं इ़बादत करता हूं।

(2) अज़्कारे नमाज़ ﴾दूसरी दोहराई﴿

- साबिक़ा अस्बाक़ (तशह्हुद, दुरूदे इब्राहीमी, दुआ़ए मासूरा, दुआ़ए क़ुनूत, तस्बीहे फ़ातिमा, سُبۡحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمۡدِہٖ) की दोहराई करवाई जाए।
- दोहराई में मख़ारिज व मदनी क़ाइदा में पढ़े गए क़वाइद का भी ख़याल रखें।

[1]... मिरआतुल मनाजीह, 1/415

(3) तफ़्सीरे कुरआन «मुसल्मानों के ऐ़ब तलाश न करो»

وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا یَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا **तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** और (पोशीदा बातों की) जुस्तजू न करो और एक दूसरे की ग़ीबत न करो। (پ26،الحجرات:12)

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 9, सफ़्हा 437 पर है कि इस आयत में दूसरा हुक्म येह दिया गया कि मुसल्मानों की ऐ़बजूई न करो और उन के पोशीदा (छुपे हुए) ह़ाल की जुस्तजू (तलाश) में न रहो जिसे **अल्लाह** पाक ने अपनी सत्तारी से छुपाया है।

मुसल्मानों के ऐ़ब तलाश करने की मुमानअ़त

इस आयत से मा'लूम हुवा कि मुसल्मानों के पोशीदा ऐ़ब तलाश करना और उन्हें बयान करना मन्अ़ है, यहां इसी से मुतअ़ल्लिक़ एक इ़ब्रत अंगेज़ ह़दीसे पाक मुलाह़ज़ा हो, चुनान्चे ह़ज़रते अबू बरज़ा अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ उन लोगों के गुरौह, जो ज़बान से ईमान लाए और ईमान उन के दिलों में दाख़िल नहीं हुवा, मुसल्मानों की ग़ीबत न करो और उन की छुपी हुई बातों की तलाश न करो, इस लिये कि जो शख़्स अपने मुसल्मान भाई की छुपी हुई चीज़ की तलाश करेगा, **अल्लाह** पाक उस की पोशीदा चीज़ की टटोल करेगा (या'नी उसे ज़ाहिर कर देगा) और जिस की **अल्लाह** पाक टटोल करेगा (या'नी ऐ़ब ज़ाहिर करेगा) उस को रुस्वा कर देगा, अगर्चे वोह अपने मकान के अन्दर हो।"[1]

इस से मा'लूम हुवा कि मुसल्मानों की ग़ीबत करना और उन के ऐ़ब तलाश करना मुनाफ़िक़ का शिआ़र (त़रीक़ा) है और ऐ़ब तलाश करने का अन्जाम ज़िल्लतो रुस्वाई है क्यूं कि जो शख़्स किसी दूसरे मुसल्मान के ऐ़ब तलाश कर रहा है, यक़ीनन उस में भी कोई न कोई ऐ़ब ज़रूर होगा और मुम्किन है कि वोह ऐ़ब ऐसा हो जिस के ज़ाहिर होने से वोह मुआ़शरे में ज़लीलो ख़्वार हो जाए लिहाज़ा ऐ़ब तलाश करने वालों को इस बात से डरना चाहिये कि उन की इस ह़रकत की

[1] ...ابو داود، کتاب الادب، باب فی الغیبة، ص765، حدیث: 4880

बिना पर कहीं **अल्लाह** पाक उन के वोह पोशीदा उ़यूब ज़ाहिर न फ़रमा दे जिस से वोह ज़िल्लतो रुस्वाई से दो चार हो जाएं।

ऐ़ब छुपाने के फ़ज़ाइल

यहां मौज़ूअ़ की मुनासबत से मुसल्मानों के ऐ़ब छुपाने के दो फ़ज़ाइल मुलाहज़ा हों : (1) हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने किसी मुसल्मान के ऐ़ब पर पर्दा रखा, **अल्लाह** पाक क़ियामत के दिन उस के उ़यूब पर पर्दा रखेगा।"[1] (2) हज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स ऐसी चीज़ देखे जिस को छुपाना चाहिये और उस ने पर्दा डाल दिया (या'नी छुपा दी) तो ऐसा है जैसे मौऊदा (या'नी ज़िन्दा ज़मीन में दबा दी जाने वाली बच्ची) को ज़िन्दा किया।"[2]

अल्लाह पाक हमें भी अपने मुसल्मान भाइयों के ऐ़ब छुपाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیۡن بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِیۡن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(4) नमाज़ के अह़काम «सज्दए सह्व के अह़काम»

(1) ☞ नमाज़ के वाजिबात में से अगर कोई वाजिब भूले से रह जाए या नमाज़ के फ़राइज़ और वाजिबात में भूले से ताख़ीर हो जाए तो सज्दए सह्व वाजिब हो जाता है।[3]

(2) ☞ सज्दए सह्व वाजिब होने के बा वुजूद न किया तो नमाज़ दोबारा पढ़ना वाजिब है।[4]

(3) ☞ जान बूझ कर वाजिब तर्क किया तो सज्दए सह्व काफ़ी नहीं, नमाज़ दोबारा पढ़ना होगी।[5]

(4) ☞ कोई ऐसा वाजिब तर्क हुवा जो नमाज़ के वाजिबात में से नहीं बल्कि उस का तअ़ल्लुक़ नमाज़ के वाजिबात के इ़लावा से है तो सज्दए सह्व वाजिब नहीं मसलन उलटा क़ुरआन

1 ...بخاری، کتاب المظالم و الغصب، باب لا یظلم المسلم المسلم ولا یسلمہ، ص630، حدیث: 2442

2 ...ابو داود، کتاب الادب، باب فی الستر علی المسلم، ص767، حدیث: 4891

3 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، 2/655-657 ملتقطًا

4 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، 2/655

5 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی عشر فی سجود السھو، 1/139

पढ़ना । इस का तअ़ल्लुक़ तिलावत के वाजिबात से है ।[1]

﴾5﴿ ☞ अगर कोई फ़र्ज़ रह गया तो नमाज़ दोबारा पढ़े ।[2]

﴾6﴿ ☞ नमाज़ में अगर दस (10) वाजिब भी भूले से रह गए, सह्व के दो (2) ही सज्दे ही काफ़ी हैं ।[3]

﴾7﴿ ☞ ता'दीले अरकान (मसलन रुकूअ़ के बा'द सीधा खड़ा होना या दो सज्दों के दरमियान एक बार سُبۡحٰنَ اللّٰه कहने की मिक्दार सीधा बैठना) भूल गए, सज्दए सह्व वाजिब है ।[4]

﴾8﴿ ☞ दुआए कुनूत या तक्बीरे कुनूत (दुआए कुनूत शुरूअ़ करने से पहले اَللّٰهُ اَكۡبَر कहना) भूल गए तो सज्दए सह्व वाजिब है ।[5]

﴾9﴿ ☞ क़िराअत वगै़रा किसी मौक़अ़ पर सोचने में तीन मरतबा سُبۡحٰنَ اللّٰه कहने का वक़्फ़ा गुज़र गया, सज्दए सह्व वाजिब हो जाएगा ।[6]

﴾10﴿ ☞ सज्दए सह्व के बा'द भी अत्तहिय्यात पढ़ना वाजिब है । अत्तहिय्यात पढ़ कर सलाम फेरिये और बेहतर येह है कि दोनों क़ा'दों (सज्दए सह्व से पहले और बा'द) में दुरूद शरीफ़ भी पढ़िये ।[7]

﴾11﴿ ☞ इमाम से सह्व हुवा और सज्दए सह्व किया तो मुक़्तदी पर भी सज्दा वाजिब है ।[8]

(5) सुन्नतें व आदाब ﴾सफ़र की सुन्नतें व आदाब﴿

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अक्सर हमें सफ़र की ज़रूरत पेश आती रहती है । लिहाज़ा हम कोशिश कर के सफ़र की भी कुछ न कुछ सुन्नतें और आदाब सीख लें ताकि इन पर अ़मल कर के हम अपने सफ़र को भी सवाब कमाने का ज़रीआ़ बना सकें ।

1 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، 655/2

2 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، 655/2

3 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، 655/2

4 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی عشر فی سجود السھو، 140/1

5 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی عشر فی سجود السھو، 141/1

6 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، 657/2

7 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی عشر فی سجود السھو، 139/1

8 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، 658/2

(1) ☞ मुम्किन हो तो जुमे'रात को सफ़र शुरूअ़ किया जाए कि जुमे'रात को सफ़र करना सुन्नत है।[1] ह़ज़रते का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللہُ عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए तबूक के लिये जुमे'रात के दिन रवाना हुए और आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जुमे'रात के दिन रवाना होना पसन्द फ़रमाते थे।[2]

(2) ☞ अगर सुहूलत हो तो रात को सफ़र किया जाए कि रात को ज़मीन लपेट दी जाती है और सफ़र तेज़ी से होता है, ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं, सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "रात को सफ़र किया करो, क्यूं कि रात को ज़मीन लपेट दी जाती है।"[3]

(3) ☞ अगर चन्द इस्लामी भाई मिल कर सफ़र करें तो किसी एक को राहनुमा बना लें। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ عَنْہ रिवायत करते हैं कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब तीन आदमी सफ़र पर रवाना हों तो वोह अपने में से एक को राहनुमा बना लें।"[4]

(4) ☞ चलते वक़्त अ़ज़ीज़ों, दोस्तों से क़ुसूर मुआ़फ़ करवाएं और जिन से मुआ़फ़ी त़लब की जाए उन पर लाज़िम है कि दिल से मुआ़फ़ कर दें।[5]

(5) ☞ लिबासे सफ़र पहन कर अगर वक़्ते मक्रूह न हो तो घर में चार रक्अ़त नफ़्ल "अल ह़म्द व क़ुल शरीफ़" से पढ़ कर बाहर निकलें, वोह रक्अ़तें वापसी तक अहलो माल की निगहबानी करेंगी। फिर अपनी मस्जिद से रुख़्सत हों। अगर वक़्ते मक्रूह न हो तो उस में भी दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़ लें।[6]

(6) ☞ हम जब भी सफ़र पर रवाना हों तो हमें चाहिये कि हम अपने अहलो माल को **अल्लाह** पाक के ह़वाले कर के जाएं। **अल्लाह** पाक ही सब से बेहतर ह़िफ़ाज़त करने वाला है

1 ...اشعۃ اللمعات، کتاب الجہاد، باب آداب السفر، 371/3

2 ...بخاری، کتاب الجہاد و السیر، باب من اراد غزوۃ فوری بغیرھا ..الخ، ص760، حدیث: 2950

3 ...ابو داود، کتاب الجہاد، باب فی الدلجۃ، ص411، حدیث: 2571

4 ...ابو داود، کتاب الجہاد، باب فی القوم یسافرون یؤمرون احدھم، ص415، حدیث: 2609

5 ... बहारे शरीअ़त, 1/1052, ह़िस्सा : 6

6 ... बहारे शरीअ़त, 1/1052, ह़िस्सा : 6

बल्कि हो सके तो अपने घर वालों को येह कलिमात कह कर सफ़र पर रवाना हों : اَسْتَوْدِعُكَ اللّٰهَ الَّذِىْ لَايُضِيْعُ وَدَائِعَهٗ **तरजमा :** मैं तुम को **अल्लाह** पाक के ह़वाले करता हूं जो सोंपी हुई अमानतों को ज़ाएअ़ नहीं करता ।[1]

(6) इस्लाहे़ आ'माल ﴾बिला उ़ज़्र माहे रमज़ान का रोज़ा छोड़ना﴿

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक की वह़दानिय्यत और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत का इक़रार करने और तमाम ज़रूरिय्याते दीन पर ईमान लाने के बा'द जिस त़रह़ हर मुसल्मान पर नमाज़ फ़र्ज़ क़रार दी गई है इसी त़रह़ रमज़ान शरीफ़ के रोज़े भी हर मुसल्मान मर्द व औ़रत आ़क़िल व बालिग़ पर फ़र्ज़ हैं । बिग़ैर किसी सह़ीह़ मजबूरी के एक रोज़ा भी छोड़ देना बहुत बड़ा गुनाह और जहन्नम में ले जाने वाला काम है । जो शख़्स बिला उ़ज़्रे शर्ई़ जान बूझ कर रोज़ा ज़ाएअ़ कर दे तो अब उ़म्र भर भी अगर रोज़े रखता रहे तब भी उस छोड़े हुए एक रोज़े की फ़ज़ीलत नहीं पा सकता । चुनान्चे

एक रोज़ा छोड़ने का नुक़्सान

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ से रिवायत है, सरकारे वाला तबार, दो जहां के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : ''जिस ने रमज़ान के एक दिन का रोज़ा बिग़ैर रुख़्सत व बिग़ैर मरज़ इफ़्त़ार किया (या'नी न रखा) तो ज़माने भर का रोज़ा भी उस की क़ज़ा नहीं हो सकता अगर्चे बा'द में रख भी ले ।''[2] या'नी वोह फ़ज़ीलत जो रमज़ानुल मुबारक में रोज़ा रखने की थी अब किसी त़रह़ नहीं पा सकता ।[3]

तीन बद बख़्त

ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से मरवी है, सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : ''जिस ने माहे रमज़ान को पाया और उस के रोज़े न रखे वोह

1 ... ابن ماجہ، کتاب الجھاد، باب تشییع الغزاۃ و وداعھم، ص458، حدیث: 2825

2 ... ترمذی، کتاب الصوم، باب ماجاء فی الافطار متعمدا، ص203، حدیث: 723

3 ... बहारे शरीअ़त, 1/985, ह़िस्सा : 5 मुलख़्ख़सन

शख़्स शक़ी (या'नी बद बख़्त) है, जिस ने अपने वालिदैन या किसी एक को पाया और उन के साथ अच्छा सुलूक न किया वोह भी शक़ी है और जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद न पढ़ा वोह भी शक़ी है।"[1]

टख़्नों की रगों से बंधे हुए लोग

जो लोग रोज़ा रख कर बिला उ़ज़्रे शरई तोड़ डालते हैं वोह भी **अल्लाह** पाक के क़हरो ग़ज़ब से डर जाएं। ह़ज़रते अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना : मैं सोया हुवा था तो ख़्वाब में दो शख़्स मेरे पास आए और मुझे एक दुश्वार गुज़ार पहाड़ पर ले गए। जब मैं पहाड़ के दरमियानी ह़िस्से पर पहुंचा तो वहां बड़ी सख़्त आवाज़ें आ रही थीं, मैं ने कहा : येह कैसी आवाज़ें हैं ? तो मुझे बताया गया कि येह जहन्नमियों की आवाज़ें हैं। फिर मुझे और आगे ले जाया गया तो मैं कुछ ऐसे लोगों के पास से गुज़रा कि उन को उन के टख़्नों की रगों में बांध कर (उलटा) लटकाया गया था और उन लोगों के जबड़े फाड़ दिये गए थे जिन से ख़ून बह रहा था तो मैं ने पूछा : येह कौन लोग हैं ? तो मुझे बताया गया कि येह लोग रोज़ा इफ़्त़ार करते थे क़ब्ल इस के कि रोज़ा इफ़्त़ार करना ह़लाल हो।[2]

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! रमज़ान का रोज़ा बिला इजाज़ते शरई तोड़ देना बहुत बड़ा गुनाह है। वक़्त से पहले इफ़्त़ार करने से मुराद येह है कि रोज़ा तो रख लिया मगर सूरज ग़ुरूब होने से पहले पहले जान बूझ कर किसी सह़ीह़ मजबूरी के बिग़ैर तोड़ डाला। इस ह़दीसे पाक में जो अ़ज़ाब बयान किया गया है वोह रोज़ा रख कर तोड़ देने वाले के लिये है और जो बिला उ़ज़्रे शरई रमज़ान का रोज़ा तर्क कर देता है वोह भी सख़्त गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है। **अल्लाह** पाक अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल हमें अपने क़हरो ग़ज़ब से बचाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

1 ...ابن حبان، کتاب الرقائق، باب ذکر رجاء دخول الجنان المصلی... الخ، ص348، حدیث:907 ماخوذاً

2 ... ابن حبان، کتاب اخبارہ عن مناقب الصحابۃ، باب صفۃ النار واھلھا، ص2006، حدیث: 7494

सबक़ नम्बर 33

मौज़ूआत

1	मदनी क़ाइदा : सूरतुल काफ़िरून	2	अज़्कारे नमाज़ : आयतुल कुरसी
3	तफ़्सीरे क़ुरआन : सच्चाई की फ़ज़ीलत व झूट की मज़म्मत	4	नमाज़ के अह़काम : सज्दए सह्व का त़रीक़ा व अह़काम
5	सुन्नतें व आदाब : सफ़र की सुन्नतें व आदाब	6	इस्लाहे़ आ'माल : शराब पीने की मज़म्मत

(1) मदनी क़ाइदा «सूरतुल काफ़िरून : आयत 1 ता 6»

मदनी क़ाइदे के अस्बाक़ में पढ़े गए क़वाइद का इजरा व दुरुस्त मख़ारिज के साथ पढ़ने की मश्क़ करें।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान, रह़मत वाला है।

قُلۡ يٰۤاَيُّهَا الۡكٰفِرُوۡنَ ۙ﴿۱﴾ لَاۤ اَعۡبُدُ مَا تَعۡبُدُوۡنَ ۙ﴿۲﴾ وَلَاۤ اَنۡتُمۡ عٰبِدُوۡنَ مَاۤ اَعۡبُدُ ۚ﴿۳﴾
وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدۡتُّمۡ ۙ﴿۴﴾ وَلَاۤ اَنۡتُمۡ عٰبِدُوۡنَ مَاۤ اَعۡبُدُ ؕ﴿۵﴾ لَكُمۡ دِيۡنُكُمۡ وَلِىَ دِيۡنِ ﴿۶﴾

तुम फ़रमाओ : ऐ काफ़िरो ! मैं उन की इ़बादत नहीं करता जिन्हें तुम पूजते हो। और तुम उस की इ़बादत करने वाले नहीं जिस की मैं इ़बादत करता हूं। और न मैं उस की इ़बादत करूंगा जिसे तुम ने पूजा। और न तुम उस की इ़बादत करने वाले हो जिस की मैं इ़बादत करता हूं। तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन है और मेरे लिये मेरा दीन है।

(2) अज़्कारे नमाज़ «आयतुल कुरसी»

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلۡحَىُّ الۡقَيُّوۡمُ ۚ لَا تَاۡخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوۡمٌ ؕ
لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ

अल्लाह वोह है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह ख़ुद ज़िन्दा है, दूसरों को क़ाइम रखने वाला है, उसे न ऊंघ आती है और न नींद, जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में सब उसी का है।

(3) तफ़्सीरे कुरआन ﴾सच्चाई की फ़ज़ीलत व झूट की मज़म्मत﴿

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ (پ11، التوبة:119)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो **अल्लाह** से डरो और सच्चों के साथ हो जाओ।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 4, सफ़हा 257 पर है या'नी उन लोगों के साथ हो जाओ जो ईमान में सच्चे हैं, मुख़्लिस हैं, रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इख़्लास के साथ तस्दीक़ करते हैं। ह़ज़रते सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللهُ عَنْه का क़ौल है कि सादिक़ीन से ह़ज़रते अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا मुराद हैं। इब्ने जुरैज कहते हैं कि इस से मुहाजिरीन मुराद हैं। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि इस से वोह लोग मुराद हैं जिन की निय्यतें सच्ची रहीं, उन के दिल और आ'माल सीधे रहे और वोह इख़्लास के साथ ग़ज़्वए तबूक में ह़ाज़िर हुए।[1]

सच्चाई की फ़ज़ीलत और झूट की मज़म्मत

इस आयत में **अल्लाह** पाक ने सच्चों के साथ रहने का हुक्म इर्शाद फ़रमाया, इस मुनासबत से यहां हम सच्चाई की फ़ज़ीलत और झूट की मज़म्मत पर दो अह़ादीस ज़िक्र करते हैं :

﴾1﴿ ☞ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक सच्चाई भलाई की त़रफ़ हिदायत देती है और भलाई जन्नत की त़रफ़ ले जाती है और आदमी बराबर सच बोलता रहता है यहां तक कि वोह सिद्दीक़ हो जाता है और झूट बदकारियों की त़रफ़ ले कर जाता है और बदकारियां जहन्नम में पहुंचाती हैं और आदमी बराबर झूट बोलता रहता है यहां तक कि वोह **अल्लाह** पाक के नज़्दीक कज़्ज़ाब लिख दिया जाता है।"[2]

﴾2﴿ ☞ ह़ज़रते समुरह बिन जुन्दुब رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने देखा कि दो शख़्स मेरे पास आ कर कहने लगे कि जिस शख़्स को आप ने

1 ...تفسیر خازن، پ11، التوبة، تحت الآية:119، 419/2

2 ...بخاری، کتاب الادب، باب قول الله تعالی: یا ایها الذین آمنوا اتقوا الله... الخ، ص1515، حدیث:6094

(शबे मे'राज) देखा कि उस के जबड़े चीरे जा रहे हैं वोह बहुत झूटा आदमी है, ऐसी बे पर की उड़ाता था (जिस का कोई सर पाउं न हो) कि उस का झूट अत्राफ़े आ़लम (तमाम अ़लाक़ों) में फैल जाता था, पस क़ियामत तक उस के साथ येही किया जाता रहेगा।''[1]

इस आयत से नेक लोगों की सोहबत में बैठने का भी सुबूत मिलता है। ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : ''पांच क़िस्म के आदमियों की सोह़बत इख़्तियार न करो : (1) बहुत झूट बोलने वाला शख़्स, क्यूं कि तुम उस से धोका खाओगे, वोह सराब (या'नी सह़रा में पानी नज़र आने वाली रेत) की त़रह़ है, वोह दूर वाले को तेरे क़रीब कर देगा और क़रीब वाले को दूर कर देगा। (2) बे वुक़ूफ़ आदमी, क्यूं कि उस से तुम्हें कुछ भी ह़ासिल न होगा, वोह तुम्हें नफ़्अ़ पहुंचाना चाहेगा लेकिन नुक़्सान पहुंचा बैठेगा। (3) बख़ील शख़्स, क्यूं कि जब तुम्हें उस की ज़ियादा ज़रूरत होगी तो वोह दोस्ती ख़त्म कर देगा। (4) बज़दिल शख़्स, क्यूं कि येह मुश्किल वक़्त में तुम्हें छोड़ कर भाग जाएगा। (5) फ़ासिक़ शख़्स, क्यूं कि वोह तुम्हें एक लुक़्मे या इस से भी कम क़ीमत में बेच देगा।'' किसी ने पूछा कि लुक़्मे से कम क्या है ? आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : ''लालच रखना और उसे न पाना।''[2]

(4) नमाज़ के अह़काम ﴾सज्दए सह्व का त़रीक़ा व अह़काम﴿

सज्दए सह्व का त़रीक़ा

अत्तह़िय्यात पढ़ कर बल्कि अफ़्ज़ल येह है कि दुरूद शरीफ़ भी पढ़ लें, सीधी त़रफ़ सलाम फेर कर दो सज्दे कीजिये, फिर तशह्हुद, दुरूद शरीफ़ और दुआ़ए मासूरा पढ़ कर सलाम फेर दीजिये।[3]

(1) ☞ वोह शख़्स जिस की चन्द रक्अ़तें रह गईं और फिर वोह जमाअ़त में शामिल हुवा। उस को इमाम के साथ सलाम फेरना जाइज़ नहीं, अगर जान बूझ कर सलाम फेरा तो नमाज़ दोबारा

1 ...بخاری، کتاب الادب، باب قول اللہ تعالی: یا ایھا الذین آمنوا اتقوا اللہ... الخ، ص1515، حدیث:6096
2 ...احیاء علوم الدین، کتاب آداب الالفۃ والاخوۃ... الخ، الباب الاول فی فضیلۃ الالفۃ والاخوۃ... الخ، 214/2
3 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی عشر فی سجود السھو، 139/1

पढ़ेगा और अगर भूल कर फेरा तो ह़रज नहीं है और अगर भूल कर इमाम के सलाम फेरने के कुछ देर बा'द भी फेरा तो फिर खड़ा हो जाए, अपनी नमाज़ पूरी करे और आख़िर में सज्दए सह्व कर ले ।[1]

(2) ☞ क़ा'दए ऊला में तशह्हुद के बा'द इतना पढ़ा : ''اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ'' तो सज्दए सह्व वाजिब है, इस की वज्ह येह नहीं कि दुरूद शरीफ़ पढ़ा बल्कि इस की वज्ह येह है कि तीसरी रक्अ़त के क़ियाम में ताख़ीर हुई । लिहाज़ा अगर इतनी देर ख़ामोश रहा जब भी सज्दा वाजिब है ।[2]

(3) ☞ किसी भी क़ा'दे में तशह्हुद से कुछ पढ़ना रह गया तो सज्दए सह्व वाजिब है ।[3]

(4) ☞ सज्दए सह्व करना था भूल गया, अगर मस्जिद से बाहर नहीं निकला तो कर ले ।[4] इस सूरत में सज्दए सह्व करने की इजाज़त उस वक़्त है जब तक नमाज़ तोड़ने वाला कोई काम न किया हो जैसे किसी से बातचीत करना वग़ैरा अगर बात कर ली तो नमाज़ दोबारा पढ़े ।[5]

(5) सुन्नतें व आदाब «सफ़र की सुन्नतें व आदाब»

(1) ☞ ट्रेन या बस वग़ैरा में بِسْمِ اللّٰه कहे फिर اَللّٰهُ اَكْبَرْ और سُبْحٰنَ اللّٰه तीन तीन बार, لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه एक बार, फिर कहे : سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ وَاِنَّا اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْن पाकी है उसे जिस ने इस सुवारी को हमारे बस में कर दिया और येह हमारे क़ाबू की न थी और बेशक हमें अपने रब की त़रफ़ पलटना है ।[6]

(2) ☞ जब कश्ती में सुवार हों तो येह दुआ़ पढ़ें, اِنْ شَآءَ اللّٰه डूबने से मह़फ़ूज़ रहेंगे ।

1 ... درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، 659/2

2 ... درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، 657/2

3 ... فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی عشر فی سجود السھو، 140/1

4 ... درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، 656/2

5 ... درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، 656/2

6 ... फ़तावा रज़विय्या, 10/728

بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖھَا وَ مُرْسٰھَا اِنَّ رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ

अल्लाह के नाम पर इस का चलना और इस का ठहरना बेशक मेरा रब ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है।[1]

(3) ☞ जब सीढ़ियों पर चढ़ें या ऊंची जगह की त़रफ़ चलें या हमारी बस वग़ैरा किसी ऐसी सड़क से गुज़रे जो ऊंचाई की त़रफ़ जा रही हो तो "اَللّٰهُ اَكْبَرُ" कहना सुन्नत है और जब सीढ़ियों से उतरें या ढलान की त़रफ़ चलें तो "سُبْحٰنَ اللّٰه" कहना सुन्नत है।[2]

(4) ☞ जब किसी मुश्किल में मदद की ज़रूरत पड़े तो ह़दीसे पाक में है इस त़रह़ तीन बार पुकारें : اَعِیْنُوْنِیْ یَا عِبَادَ اللّٰه **तरजमा :** ऐ **अल्लाह** पाक के बन्दो ! मेरी मदद करो।[3]

(5) ☞ सफ़र से वापसी पर घर वालों के लिये कोई तोह़फ़ा ले आएं कि येह सुन्नते मुबारका है। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब सफ़र से कोई वापस आए तो घर वालों के लिये कुछ न कुछ हदिय्या लाए, अगर्चे अपनी झोली में पथ्थर ही डाल लाए।[4]

(6) ☞ सफ़र से वापसी पर अपनी मस्जिद में दोगाना (या'नी दो रक्अ़त नफ़्ल) पढ़ना सुन्नत है। ह़ज़रते का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि ताजदारे मदीना, हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो पहले मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते और वहां बैठने से पहले दो रक्अ़त (नमाज़ नफ़्ल) अदा फ़रमाते।[5]

(6) इस्लाहे़ आ'माल «शराब पीने की मज़म्मत»

शराब पीना शैत़ानी काम है

एक बार ह़ज़रते इ़त्बान बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने मुसल्मानों को दा'वत दी और खाने में

1... फ़तावा रज़विय्या, 10/729

2... بخاری، کتاب الجهاد و السیر، باب التکبیر اذا علا شرفا، ص769، حدیث: 2994

3... الحصن الحصین، کتاب ادعیة السفر، ص82

4... کنز العمال، کتاب السفر، باب آداب السفر جز 3، 6/301، حدیث: 17502

5... بخاری، کتاب الجهاد و السیر، باب الصلاة اذا قدم من السفر، ص790، حدیث: 3088

उन्हों ने उन के लिये ऊंट का सर भूना, सब ने मिल कर उसे खाया और शराब भी पी यहां तक कि उन पर नशा त़ारी हो गया, फिर आपस में फ़ख़्र करने और बुरा भला कहने लगे और अश्आ़र पढ़ने लगे फिर किसी ने एक ऐसा क़सीदा पढ़ा जिस में अन्सार की हज्व थी और उस की क़ौम के लिये फ़ख़्र था तो एक अन्सारी ने ऊंट के जबड़े की हड्डी ली और एक सह़ाबी के सर पर दे मारी, वोह शदीद ज़ख़्मी हो गए और सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर उस अन्सारी की शिकायत की तो ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अ़र्ज़ की : **"या अल्लाह !** हमें शराब के मुतअ़ल्लिक़ वाज़ेह़ हुक्म अ़त़ा फ़रमा।" पस **अल्लाह** ने येह हुक्म नाज़िल फ़रमाया :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَ الْمَيْسِرُ وَ الْاَنْصَابُ وَ الْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۹۰﴾

(پ7، المآئدہ:90)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! शराब और जूआ और बुत और क़िस्मत मा'लूम करने के तीर नापाक शैत़ानी काम ही हैं तो इन से बचते रहो ताकि तुम फ़लाह़ पाओ।[1]

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस आयते मुबारका में जिन चार चीज़ों के नापाक और उन का शैत़ानी काम होने के बारे में बताया और उन से बचने का हुक्म दिया गया है उन में से एक शराब भी है। शराब का हुक्म बयान करते हुए ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : शराब पीना ह़राम है और इस की वज्ह से बहुत से गुनाह पैदा होते हैं, लिहाज़ा अगर इस को मआ़सी (या'नी गुनाहों) और बे ह़याइयों की अस्ल कहा जाए तो बजा (या'नी दुरुस्त) है।[2] ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "शराब हरगिज़ न पियो कि येह हर बदकारी की अस्ल है।"[3]

1 ...تفسیر بغوی، پ2، البقرۃ، تحت الآیۃ:219، 1/206

2 ... बहारे शरीअ़त, 2/385, ह़िस्सा : 9

3 ...مسند امام احمد، مسند الانصار، حدیث معاذ بن جبل، 8/249، حدیث: 22136

शराब पीने की वईदें

अहादीस में शराब पीने की इन्तिहाई सख़्त वईदें बयान की गई हैं, उन में से 2 अहादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1) ☞ हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने शराब के बारे में दस शख़्सों पर ला'नत की : (1) शराब बनाने वाले पर (2) शराब बनवाने वाले पर (3) शराब पीने वाले पर (4) शराब उठाने वाले पर (5) जिस के पास शराब उठा कर लाई गई उस पर (6) शराब पिलाने वाले पर (7) शराब बेचने वाले पर (8) शराब की क़ीमत खाने वाले पर (9) शराब ख़रीदने वाले पर (10) जिस के लिये शराब ख़रीदी गई उस पर ।[1]

(2) ☞ हज़रते अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत के कुछ लोग शराब पियेंगे और उस का नाम बदल कर कुछ और रखेंगे, उन के सरों पर बाजे बजाए जाएंगे और गाने वालियां गाएंगी । **अल्लाह** पाक उन्हें ज़मीन में धंसा देगा और उन में से कुछ लोगों को बन्दर और सुवर बना देगा ।"[2]

अल्लाह पाक हमें शराब की नुहूसत से महफ़ूज़ फ़रमाए । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 34

मौज़ूआत

1	मदनी क़ाइदा : सूरतुल कौसर	2	अज़्कारे नमाज़ : आयतुल कुरसी
3	तफ़्सीरे कुरआन : बा जमाअ़त नमाज़ के फ़ज़ाइल व अहम्मिय्यत	4	नमाज़ के अह़काम : तर्के जमाअ़त के आ'ज़ार
5	सुन्नतें व आदाब : ज़ेबो ज़ीनत के मुतअ़ल्लिक़ मदनी फूल	6	इस्लाहे आ'माल : चोरी की मज़म्मत

1 ... ترمذی، کتاب البیوع، باب النھی ان یتخذ الخمر خلا، ص335، حدیث: 1299

2 ... ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب العقوبات، ص649، حدیث: 4020

(1) मदनी क़ाइदा «सूरतुल कौसर»

मदनी क़ाइदे के अस्बाक़ में पढ़े गए क़वाइद का इजरा व दुरुस्त मख़ारिज के साथ पढ़ने की मश्क़ करें।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान, रहमत वाला है।

اِنَّاۤ اَعۡطَیۡنٰکَ الۡکَوۡثَرَ ؕ﴿۱﴾ فَصَلِّ لِرَبِّکَ وَ انۡحَرۡ ؕ﴿۲﴾ اِنَّ شَانِئَکَ ہُوَ الۡاَبۡتَرُ ٪﴿۳﴾

ऐ महबूब ! बेशक हम ने तुम्हें बे शुमार ख़ूबियां अ़ता फ़रमाईं। तो तुम अपने रब के लिये नमाज़ पढ़ो और क़ुरबानी करो। बेशक जो तुम्हारा दुश्मन है वोही हर ख़ैर से महरूम है।

(2) अज़्कारे नमाज़ «आयतुल कुरसी»

اَللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ہُوَ ۚ اَلۡحَیُّ الۡقَیُّوۡمُ ۬ۚ لَا تَاۡخُذُہٗ سِنَۃٌ وَّ لَا نَوۡمٌ ؕ لَہٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الۡاَرۡضِ ؕ مَنۡ ذَا الَّذِیۡ یَشۡفَعُ عِنۡدَہٗۤ اِلَّا بِاِذۡنِہٖ ؕ یَعۡلَمُ مَا بَیۡنَ اَیۡدِیۡہِمۡ وَ مَا خَلۡفَہُمۡ ۚ

अल्लाह वोह है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह ख़ुद ज़िन्दा है, दूसरों को क़ाइम रखने वाला है, उसे न ऊंघ आती है और न नींद, जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में सब उसी का है। कौन है जो उस के हां उस की इजाज़त के बिग़ैर सिफ़ारिश करे ? वोह जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे है और लोग उस के इ़ल्म में से इतना ही ह़ासिल कर सकते हैं जितना वोह चाहे।

(3) तफ़्सीरे क़ुरआन «बा जमाअ़त नमाज़ के फ़ज़ाइल व अहम्मिय्यत»

وَ اَقِیۡمُوا الصَّلٰوۃَ وَ اٰتُوا الزَّکٰوۃَ وَ ارۡکَعُوۡا مَعَ الرّٰکِعِیۡنَ ﴿۴۳﴾ (پ1، البقرۃ:43)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात अदा करो और रुकूअ़ करने वालों के साथ रुकूअ़ करो।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 1, सफ़्हा 125 पर है कि इस से पहली आयात में यहूदियों को ईमान लाने का हुक्म दिया गया, फिर उन्हें ह़क़ को बातिल के साथ मिलाने और नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत के दलाइल छुपाने से मन्अ़ किया गया, अब उन के सामने वोह शरई अहकाम बयान किये जा रहे हैं जो ईमान क़बूल करने के बा'द उन पर लाज़िम हैं, चुनान्चे फ़रमाया गया कि ऐ यहूदियो ! तुम ईमान क़बूल कर के मुसल्मानों की त़रह़ पांच नमाज़ें उन के हुक़ूक़ और शराइत के साथ अदा करो और जिस त़रह़ मुसल्मान अपने मालों की ज़कात अदा करते हैं इसी त़रह़ तुम भी अपने मालों की ज़कात दो और मेरे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और इन के सहाबा के साथ बा जमाअ़त नमाज़ अदा करो ।[1]

इस आयत में जमाअ़त के साथ नमाज़ अदा करने की तरग़ीब भी है और अह़ादीस में जमाअ़त के साथ नमाज़ अदा करने के कसीर फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, चुनान्चे

(1) ☞ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ना तन्हा पढ़ने से सत्ताईस दरजे ज़ियादा फ़ज़ीलत रखता है ।"[2]

(2) ☞ ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْه के ग़ुलाम ह़ज़रते हुमरान رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने कामिल वुज़ू किया, फिर फ़र्ज़ नमाज़ के लिये चला और इमाम के साथ नमाज़ पढ़ी, उस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे ।"[3]

(3) ☞ ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो अच्छी त़रह़ वुज़ू कर के मस्जिद को जाए और लोगों को इस ह़ालत में पाए कि वोह नमाज़ पढ़ चुके हैं तो **अल्लाह** पाक उसे भी जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने वालों की मिस्ल सवाब देगा और उन के सवाब से भी कुछ कमी न होगी ।"[4]

1 ...تفسیر خازن، پ1، البقرۃ، تحت الآیۃ:43، 49/1

2 ...بخاری، کتاب الاذان، باب فضل صلاۃ الجماعۃ، ص223، حدیث:645

3 ...شعب الایمان، باب فی الطہارۃ، 9/3، حدیث:2727

4 ...ابو داود، کتاب الصلاۃ، باب فیمن خرج یرید الصلاۃ فسبق بہا، ص103، حدیث:564

(4) ☞ ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुनाफ़िक़ीन पर सब से ज़ियादा भारी इ़शा और फ़ज्र की नमाज़ है और वोह जानते कि इस में क्या है तो घिसटते हुए आते और बेशक मैं ने इरादा किया कि नमाज़ क़ाइम करने का हुक्म दूं फिर किसी को हुक्म फ़रमाऊं कि लोगों को नमाज़ पढ़ाए और मैं अपने हमराह कुछ लोगों को जिन के पास लकड़ियों के गठ्ठे हों उन के पास ले कर जाऊं जो नमाज़ में ह़ाज़िर नहीं होते और उन के घर उन पर आग से जला दूं।"[1]

बा जमाअ़त नमाज़ की अहम्मिय्यत पर दो ह़िकायात

(1) ☞ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ عَنْہ अपने एक बाग़ की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए, जब वापस हुए तो लोग नमाज़े अ़स्र अदा कर चुके थे, येह देख कर आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ پढ़ा और इर्शाद फ़रमाया : "मेरी अ़स्र की जमाअ़त फ़ौत हो गई है, लिहाज़ा मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि मेरा बाग़ मसाकीन पर सदक़ा है ताकि येह इस काम का कफ़्फ़ारा हो जाए।"[2]

(2) ☞ ह़ज़रते ह़ातिमे असम رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा मेरी बा जमाअ़त नमाज़ फ़ौत हो गई तो ह़ज़रते अबू इस्ह़ाक़ बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के इ़लावा किसी ने मेरी ता'ज़ियत न की और अगर मेरा बच्चा फ़ौत हो जाता तो दस हज़ार (10,000) से ज़ियादा अफ़राद मुझ से ता'ज़ियत करते क्यूं कि लोगों के नज़्दीक दीनी नुक़्सान दुन्या के नुक़्सान से कमतर है।[3]

अल्लाह पाक सब मुसल्मानों को बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(4) नमाज़ के अह़काम ﴿तर्के जमाअ़त के आ'ज़ार﴾

मजबूरी के बाइ़स जमाअ़त के साथ नमाज़ न पढ़ने की शरीअ़त में रुख़्सत मौजूद है चुनान्चे तर्के जमाअ़त के क्या क्या आ'ज़ार हैं, आइये ! चन्द एक मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

1 ...مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاۃ، باب فضل صلاۃ الجماعۃ، ص236، حدیث: 651

2 ...الزواجر عن اقتراف الکبائر، باب صلاۃ الجماعۃ، الکبیرۃ الخامسۃ والثمانون، 1/271

3 ...احیاء العلوم الدین، کتاب اسرار الصلاۃ ومھماتھا، الباب الاول فی فضائل الصلاۃ والسجود، 1/203

﴾1﴿ मरीज़ जिस को मस्जिद तक जाने में तक्लीफ़ हो। ﴾2﴿ चलने फिरने से मा'ज़ूर शख़्स (अपाहज)। ﴾3﴿ जिस का पाउं कट गया हो। ﴾4﴿ जिस पर फ़ालिज गिरा हो। ﴾5﴿ इतना बूढ़ा कि मस्जिद न जा सके। ﴾6﴿ अन्धा अगर्चे उस को कोई मस्जिद तक पहुंचा दे। ﴾7﴿ बारिश या कीचड़ बहुत ज़ियादा हो। ﴾8﴿ सख़्त सर्दी या सख़्त अंधेरा या सख़्त आंधी हो। ﴾9﴿ माल या खाने के ज़ाएअ् होने का ख़तरा हो। ﴾10﴿ क़र्ज़ ख़्वाह का डर है जब कि इस नमाज़ी के पास क़र्ज़ अदा करने के लिये रक़म नहीं है तंगदस्त है। ﴾11﴿ ज़ालिम का ख़ौफ़ है। ﴾12﴿ रीह़ या ﴾13﴿ पाख़ाना या ﴾14﴿ पेशाब की शदीद ह़ाजत है। ﴾15﴿ भूक लगी है और खाना भी तय्यार है। ﴾16﴿ गाड़ी (ट्रेन, बस, हवाई जहाज़) छूट जाने का डर है। ﴾17﴿ मरीज़ की देखभाल कर रहा है, **अगर** नमाज़ के लिये जाएगा तो उस को तक्लीफ़ होगी या वोह घबराजाएगा।[1]

इन सब मजबूरियों में से कोई एक भी मजबूरी पाई गई तो जमाअ़त छोड़ सकता है और गुनाहगार भी नहीं होगा।

(5) सुन्नतें व आदाब ﴾ज़ेबो ज़ीनत के मुतअ़ल्लिक़ मदनी फूल﴿

﴾1﴿☞ लड़कियों के कान नाक छेदना (कानों में सूराख़ करना बालियां पहनने के लिये) जाइज़ है।[2]

﴾2﴿☞ बा'ज़ लोग लड़कों के भी कान छिदवाते हैं (सूराख़ करवाते हैं) और बाली वग़ैरा पहनाते हैं येह ना जाइज़ है। या'नी कान छिदवाना भी ना जाइज़ और उसे ज़ेवर पहनाना भी ना जाइज़।[3]

﴾3﴿☞ औ़रतों को हाथ पाउं में मेहंदी लगाना जाइज़ है। छोटे बच्चों के हाथ पाउं में मेहंदी लगाना ना जाइज़ है, बच्चियों को मेहंदी लगाने में ह़रज नहीं।[4] ह़ज़रते अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से मरवी है कि मदीने के ताजदार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم के पास एक मुख़न्नस (या'नी हीजड़ा) ह़ाज़िर किया गया जिस ने अपने हाथ और पाउं मेहंदी से रंगे हुए थे।

1 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الامامۃ، 2/347-349 ملتقطاً

2 ...ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی اللبس، 9/598

3 ...ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی اللبس، 9/598 ملخصاً

4 ...ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی اللبس، 9/598 ملخصاً

इर्शाद फ़रमाया : इस का क्या ह़ाल है ? (या'नी इस ने क्यूं मेहंदी लगाई है ?) लोगों ने अ़र्ज़ की : येह औ़रतों की नक़्ल करता है । हमारे मीठे मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया कि "इसे शह्‌र बदर कर दो ।" लिहाज़ा उस को शह्‌र बदर कर दिया गया, मदीनए मुनव्वरह से निकाल कर "नक़ीअ़" को भेज दिया गया ।[1]

(4) ☞ जानदार की तसावीर वाले लिबास हरगिज़ न पहना करें न ही जानवरों या इन्सानों की तसावीर वाले स्टीकर्ज़ अपने कपड़ों पर लगाएं, न ही घरों में लगाएं ।

(5) ☞ अपने बच्चों को ऐसे "बाबासूट" न पहनाएं जिन पर जानवरों और इन्सानों के फ़ोटो बने हुए होते हैं ।

(6) ☞ ख़वातीन अपने शौहर के लिये जाइज़ अश्या के ज़रीए, मगर घर की चार दीवारी में ज़ीनत करें लेकिन मेकअप कर के और बन संवर के घर से बाहर न निकला करें कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "औ़रत पूरी की पूरी औ़रत (या'नी छुपाने की चीज़) है, जब कोई औ़रत बाहर निकलती है तो शैत़ान उस को झांक झांक कर देखता है ।"[2]

(6) इस्लाहे़ आ'माल ﴾चोरी की मज़म्मत﴿

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! चोरी करना बहुत बड़ा गुनाह है, क़ुरआनो ह़दीस में चोर के बारे में बहुत सख़्त वई़दें बयान हुई हैं । चुनान्चे इर्शादे ख़ुदावन्दी है :

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْۤا اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۳۸﴾
(پ6، المائدۃ:38)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो मर्द या औ़रत चोर हो तो **अल्लाह** की त़रफ़ से सज़ा के त़ौर पर उन के अ़मल के बदले में उन के हाथ काट दो और **अल्लाह** ग़ालिब ह़िक्मत वाला है ।

याद रखिये ! ह़ुदूद व ता'ज़ीर के मसाइल में अ़वामुन्नास को क़ानून हाथ में लेने की शरअ़न इजाज़त नहीं ।[3]

1 ...ابوداود، کتاب الادب، باب فی الحکم فی المخنثین، ص772، حدیث: 4928

2 ...ترمذی، کتاب الرضاع، 18-باب، ص304، حدیث: 1173

3 ... तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह : 6, अल माइदह, तह़तल आयह : 38, 2/429

चोर की मज़म्मत में चन्द फ़रामीने मुस्तफ़ा

(1) ☞ ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है, सरकारे दो आलम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "चोर चोरी करते वक़्त मोमिन नहीं रहता।"[1]

(2) ☞ **अल्लाह** करीम चोर पर ला'नत फ़रमाए जो रस्सी चुराता है तो उस का हाथ काट दिया जाता है।[2]

(3) ☞ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर मुह़म्मद (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बेटी फ़ातिमा चोरी करती तो मैं ज़रूर उस का भी हाथ काट देता।[3]

(4) ☞ आगाह हो जाओ बिला शुबा (कबीरा गुनाह) चार हैं : (1) तुम **अल्लाह** पाक के साथ किसी को शरीक न ठहराओ (2) जिस जान को **अल्लाह** पाक ने ह़राम किया है उसे नाह़क़ क़त्ल न करो (3) ज़िना मत करो और (4) चोरी मत करो।[4]

(5) ☞ मैं ने जहन्नम में एक शख़्स को देखा जो अपनी टेढ़ी लाठी के ज़रीए़ ह़ाजियों की चीज़ें चुराता, जब लोग उसे चोरी करता देख लेते तो कहता : मैं चोर नहीं हूं, येह सामान मेरी टेढ़ी लाठी में अटक गया था। वोह आग में अपनी टेढ़ी लाठी पर टेक लगाए येह कह रहा था : मैं टेढ़ी लाठी वाला चोर हूं।[5]

चोर के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ अह़काम

किसी दूसरे का माल छुपा कर नाह़क़ ले लेने को चोरी कहते हैं।[6] चोरी करना गुनाहे कबीरा, ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।[7] चोरी से ह़ासिल किये हुए माल को ख़रीदो फ़रोख़्त वग़ैरा के किसी काम में लगाना ह़रामे क़त़्ई है।[8] इस को ह़ासिल करने वाला इस का

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان نقصان الایمان بالمعاصی...الخ، ص45، حدیث: 57

2 ...مسلم، کتاب الحدود، باب قطع السارق...الخ، ص668، حدیث: 1687

3 ...مسلم، کتاب الحدود، باب قطع السارق...الخ، ص668، حدیث: 1688

4 ...مسند امام احمد، مسند الکوفیین، 7/410، حدیث: 18586

5 ...جمع الجوامع، 3/27، حدیث: 7076

6... बहारे शरीअ़त, 2/413, हिस्सा : 19 मुलख़्ख़सन

7... जहन्नम के ख़त़रात, स. 38, ब तग़य्युरे क़लील

8... फ़तावा रज़विय्या, 23/551 माख़ूज़न

बिल्कुल मालिक नहीं बनता और इस माल के लिये शरअ़न फ़र्ज़ है कि जिस का है उसी को लौटा दिया जाए, वोह न रहा हो तो वारिसों को दे और उन का भी पता न चले तो बिला निय्यते सवाब (या'नी सवाब की निय्यत किये बिग़ैर) फ़क़ीर पर ख़ैरात कर दे।[1]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 35

मौज़ूआत

1	मदनी क़ाइदा : सूरतुल माऊ़न	2	अज़्कारे नमाज़ : आयतुल कुरसी
3	तफ़्सीरे कुरआन : नाम बिगाड़ना जाइज़ नहीं	4	नमाज़ के अह़काम : नमाज़ी के आगे से गुज़रने के अह़काम
5	सुन्नतें व आदाब : बैठने की सुन्नतें व आदाब	6	इस्लाहे आ'माल : खुदकुशी की मज़म्मत

(1) मदनी क़ाइदा ﴾सूरतुल माऊ़न : 1 ता 4﴿

मदनी क़ाइदे के अस्बाक़ में पढ़े गए क़वाइद का इजरा व दुरुस्त मख़ारिज के साथ पढ़ने की मश्क़ करें।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान, रह़मत वाला है।

اَرَءَیۡتَ الَّذِیۡ یُکَذِّبُ بِالدِّیۡنِ ؕ﴿۱﴾ فَذٰلِکَ الَّذِیۡ یَدُعُّ الۡیَتِیۡمَ ۙ﴿۲﴾ وَ لَا یَحُضُّ عَلٰی طَعَامِ الۡمِسۡکِیۡنِ ؕ﴿۳﴾ فَوَیۡلٌ لِّلۡمُصَلِّیۡنَ ۙ﴿۴﴾

क्या तुम ने उस शख़्स को देखा जो दीन को झुटलाता है। फिर वोह ऐसा है जो यतीम को धक्के देता है। और मिस्कीन को खाना देने की तरग़ीब नहीं देता। तो उन नमाज़ियों के लिये ख़राबी है।

1... फ़तावा रज़विय्या, 23/551 माख़ूज़न

(2) अज़्कारे नमाज़ ﴾आयतुल कुरसी﴿

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ۬ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ
وَ مَا فِی الْاَرْضِؕ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖؕ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ
وَ مَا خَلْفَهُمْۚ وَ لَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَۚ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ
وَ الْاَرْضَۚ وَ لَا یَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَاۚ وَ هُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ۝۲۵۵

अल्लाह वोह है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह खुद ज़िन्दा है, दूसरों को क़ाइम रखने वाला है, उसे न ऊंघ आती है और न नींद, जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में सब उसी का है। कौन है जो उस के हां उस की इजाज़त के बिग़ैर सिफ़ारिश करे ? वोह जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे है और लोग उस के इ़ल्म में से इतना ही ह़ासिल कर सकते हैं जितना वोह चाहे, उस की कुरसी आस्मान और ज़मीन को अपनी वुस्अ़त में लिये हुए है और इन की हि़फ़ाज़त उसे थका नहीं सकती और वोही बुलन्द शान वाला, अ़ज़मत वाला है।

(3) तफ़्सीरे कुरआन ﴾नाम बिगाड़ना जाइज़ नहीं﴿

وَ لَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِیْمَانِۚ (پ26، الحجرات:11)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो, मुसल्मान होने के बा'द फ़ासिक़ कहलाना क्या ही बुरा नाम है।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 9, सफ़्ह़ा 431 पर है कि बुरे नाम रखने से क्या मुराद है इस के बारे में मुफ़स्सिरीन के मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं, उन में से तीन क़ौल दर्जे ज़ैल हैं : (1) ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : "एक दूसरे के बुरे नाम रखने से मुराद येह है कि अगर किसी आदमी ने किसी बुराई से तौबा कर ली हो तो उसे तौबा के बा'द उस बुराई से आ़र दिलाई जाए (शरमिन्दा किया जाए।)" यहां आयत में इस चीज़ से मन्अ़ किया गया है। ह़दीसे पाक में इस अ़मल की वई़द भी बयान की गई है, जैसा कि ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस शख़्स ने अपने भाई को उस के

किसी गुनाह पर शरमिन्दा किया तो वोह शख़्स उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक कि वोह उस गुनाह का इरतिकाब न कर ले।"[1]

(2) बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया : "बुरे नाम रखने से मुराद किसी मुसल्मान को कुत्ता, या गधा या सुवर कहना है।"

(3) बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि इस से वोह अल्क़ाब मुराद हैं जिन से मुसल्मान की बुराई निकलती हो और उस को ना गवार हो (लेकिन ता'रीफ़ के अल्क़ाब जो सच्चे हों मम्नूअ़ नहीं, जैसे कि ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का लक़ब अ़तीक़ और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का फ़ारूक़ और ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का जुन्नूरैन और ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का अबू तुराब और ह़ज़रते ख़ालिद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का सैफ़ुल्लाह था) और जो अल्क़ाब गोया कि नाम बन गए और अल्क़ाब वाले को ना गवार नहीं वोह अल्क़ाब भी मम्नूअ़ नहीं, जैसे आ'मश और आ'रज वग़ैरा।[2]

﴿ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِیْمَانِ ﴾ इर्शाद फ़रमाया : मुसल्मान होने के बा'द फ़ासिक़ कहलाना क्या ही बुरा नाम है तो ऐ मुसल्मानो ! किसी मुसल्मान की हंसी बना कर (मज़ाक़ उड़ा कर) या उस को ऐब लगा कर या उस का नाम बिगाड़ कर अपने आप को फ़ासिक़ न कहलाओ और जो लोग इन तमाम अफ़आ़ल से तौबा न करें तो वोही ज़ालिम हैं।[3]

(4) नमाज़ के अह़काम «नमाज़ी के आगे से गुज़रने के अह़काम»

आक़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अगर कोई जानता कि अपने भाई के सामने नमाज़ में आड़े हो कर गुज़रने में क्या है तो सो बरस खड़ा रहना उस एक क़दम चलने से बेहतर समझता।[4] ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते का'बुल अह़बार رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का इर्शाद है : नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाला अगर जानता कि इस पर क्या गुनाह है तो ज़मीन में धंस जाने को गुज़रने से बेहतर जानता।[5]

1 ...ترمذی، ابواب صفۃ القیامۃ والرقائق والورع، 48-، ص592، حدیث:2505

2 ...تفسیر خازن، پ26، الحجرات، تحت الآیۃ:11، 181/4

3 ...تفسیر خازن، پ26، الحجرات، تحت الآیۃ:11، 181/4

4 ...ابن ماجہ، کتاب الاقامۃ والسنۃ فیھا، باب المرور بین یدی المصلی، ص157، حدیث:946

5 ...موطا امام مالک، کتاب قصر الصلاۃ، باب التشدید فی ان یمر بین یدی المصلی، ص97، حدیث:371

नमाज़ी के आगे से गुज़रने के मुतअ़ल्लिक़ चन्द अह़काम बयान किये जाते हैं, आइये ! मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

(1) ☞ नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाला बेशक गुनाहगार है मगर जिस नमाज़ी के आगे से गुज़रा उस नमाज़ी की नमाज़ पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा ।[1] येह जो मश्हूर है कि नमाज़ी के आगे से गुज़रने से नमाज़ टूट जाती है इस की कोई ह़क़ीक़त नहीं है ।

(2) ☞ मैदान और बड़ी मस्जिद में नमाज़ी के क़दम से ले कर क़ियाम की ह़ालत में सज्दे की जगह नज़र जमाए तो जितनी दूर तक नज़र जाएगी वहां तक उस के आगे से गुज़रना, ना जाइज़ है ।[2]

(3) ☞ सज्दे की जगह का अन्दाज़ा उस के क़दम से 3 गज़ तक है लिहाज़ा मैदान में नमाज़ी के क़दम के 3 गज़ के बा'द से नमाज़ी के सामने से भी गुज़र सकते हैं ।

(4) ☞ मकान और छोटी मस्जिद में नमाज़ी के आगे अगर सुतरा (कोई आड़) न हो तो गुज़रना जाइज़ नहीं ।[3]

(5) ☞ सुतरा कम अज़ कम एक हाथ (या'नी तक़रीबन आधा गज़) ऊंचा और उंगली बराबर मोटा हो और सुन्नत येह है कि नमाज़ी और सुतरे के दरमियान फ़ासिला ज़ियादा से ज़ियादा 3 हाथ हो ।[4]

(6) ☞ नमाज़ी के आगे अगर कपड़े का पर्दा या लकड़ी का एक उंगली से कम मोटाई का तख़्ता या प्लास्टिक शीट का सुतरा हो तो उस के आगे से गुज़र सकते हैं मज़्कूरा चीज़ें सुतरे का काम देंगी ।[5]

1... फ़तावा रज़विय्या, 5/350

2 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب السابع فیما یفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا، الفصل الاول، 115/1

3 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب السابع فیما یفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا، الفصل الاول، 115/1

4 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب ما یفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا، 484/2

5 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب ما یفسد الصلاۃ...الخ، مطلب اذا قرء قولہ–تعالٰی جدك...الخ، 483/2 ماخوذاً

नमाज़ी के आगे से गुज़रने का त़रीक़ा

दो शख़्स नमाज़ी के आगे से गुज़रना चाहते हैं इस का त़रीक़ा येह है कि उन में से एक शख़्स नमाज़ी के सामने पीठ कर के खड़ा हो जाए, अब इस को आड़ बना कर दूसरा गुज़र जाए। फिर दूसरा पहले की पीठ के पीछे नमाज़ी की त़रफ़ पीठ कर के खड़ा हो जाए, अब पहला गुज़र जाए फिर वोह दूसरा जिधर से आया था उसी त़रफ़ हट जाए।[1]

(5) सुन्नतें व आदाब ﴾बैठने की सुन्नतें व आदाब﴿

﴾1﴿ ☞ सुरीन ज़मीन पर रखें और दोनों घुटनों को खड़ा कर के दोनों हाथों से घेर लें और एक हाथ से दूसरे को पकड़ लें, इस त़रह़ बैठना सुन्नत है।[2] याद रखिये ! इस दौरान घुटनों पर कोई चादर वग़ैरा ओढ़ लेना बेहतर है।

﴾2﴿ ☞ चार ज़ानू (या'नी चोकड़ी मार कर) बैठना भी नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित है।

﴾3﴿ ☞ जहां कुछ धूप और कुछ छाउं हो वहां न बैठें। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि **अल्लाह** पाक के मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब तुम में से कोई साए में हो और उस पर से साया रुख़्सत हो जाए और वोह कुछ धूप कुछ छाउं में रह जाए तो उसे चाहिये कि वहां से उठ जाए।"[3]

﴾4﴿ ☞ क़िब्ला रुख़ हो कर बैठें।[4]

﴾5﴿ ☞ बुज़ुर्गों की निशस्त पर बैठना अदब के ख़िलाफ़ है। आ'ला ह़ज़रत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه लिखते हैं : पीर व उस्ताज़ की निशस्त पर उन की ग़ैबत (या'नी ग़ैर मौजूदगी) में भी न बैठे।[5]

﴾6﴿ ☞ कोशिश करें कि उठते बैठते वक़्त बुज़ुर्गाने दीन की त़रफ़ पीठ न होने पाए और पाउं तो इन की त़रफ़ न ही करें।

﴾7﴿ ☞ जब कभी इज्तिमाअ़ या मजलिस में आएं तो लोगों को फलांग कर आगे न जाएं, जहां जगह मिले वहीं बैठ जाएं।

1 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب السابع فیما یفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا، الفصل الاول، 116/1

2 ... मिरआतुल मनाजीह़, 6/378

3 ...ابوداود، کتاب الادب، باب فی الجلوس بین الظل والشمس، ص758، حدیث: 4821

4 ... सुन्नतें और आदाब, स. 100

5 ... फ़तावा रज़विय्या, 24/369

﴾8﴿ ☞ जब बैठें तो जूते उतार लें, आप के क़दम आराम पाएंगे।[1]

﴾9﴿ ☞ मजलिस से फ़ारिग़ हो कर येह दुआ़ तीन बार पढ़ लें तो गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे। और जो इस्लामी भाई मजलिसे ख़ैर व मजलिसे ज़िक्र में पढ़े तो उस के लिये उस ख़ैर पर मोहर लगा दी जाएगी। वोह दुआ़ येह है : ''سُبْحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُکَ وَاَتُوْبُ اِلَیْکَ''

तरजमा : तेरी ज़ात पाक है और ऐ **अल्लाह**! तेरे ही लिये तमाम ख़ूबियां हैं, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तुझ से बख़्शिश चाहता हूं और तेरी त़रफ़ तौबा करता हूं।[2]

﴾10﴿ ☞ जब कोई आ़लिमे बा अ़मल या मुत्तक़ी शख़्स या सय्यिद साहि़ब या वालिदैन आएं तो ता'ज़ीमन खड़े हो जाना सवाब है।[3]

ऐ **अल्लाह**! हमें उठने बैठने की सुन्नतें और आदाब पर अ़मल पैरा होने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(6) इस्लाहे़ आ'माल ﴾ख़ुदकुशी की मज़म्मत﴿

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है उन्हों ने कहा कि हम लोग **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ जंगे हुनैन में ह़ाज़िर थे तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक ऐसे शख़्स को जो मुसल्मान होने का दा'वा करता था येह कह दिया कि येह शख़्स जहन्नमी है। फिर जब हम लोग लड़ाई में ह़ाज़िर हुए तो उस शख़्स ने कुफ़्फ़ार के साथ बहुत सख़्त जंग की और उस को बहुत ज़ियादा ज़ख़्म लग गए तो किसी ने कहा कि **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह आदमी जिस को हु़ज़ूर ने जहन्नमी फ़रमा दिया है, उस ने तो आज कुफ़्फ़ार से बहुत सख़्त जंग की है और वोह मर गया है। तो हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि वोह जहन्नम में गया। येह सुन कर बहुत से लोग शक में पड़ गए तो इसी ह़ालत में अचानक किसी ने कहा कि वोह मरा नहीं था लेकिन उस को बहुत सख़्त ज़ख़्म लगा था तो रात में वोह सब्र न कर सका और ख़ुदकुशी कर ली। जब हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

1 ...جامع صغیر، ص40، حدیث: 544

2 ...ابوداود، کتاب الادب، باب فی کفارۃ المجلس، ص762، حدیث: 4857

3 ... मिरआतुल मनाजीह, 6/370

को इस की ख़बर दी गई तो आप ने फ़रमाया कि **अल्लाहु अक्बर !** मैं गवाही देता हूं कि मैं **अल्लाह** का रसूल और उस का बन्दा हूं। फिर हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते बिलाल رَضِیَ اللهُ عَنْه को हुक्म दिया कि वोह लोगों में येह ए'लान कर दें कि जन्नत में मुसल्मान के सिवा कोई दाख़िल न होगा और बेशक **अल्लाह** पाक इस दीन की मदद किसी बदकार आदमी के ज़रीए भी फ़रमा दिया करता है।[1]

ख़ुदकुशी का हुक्म

ख़ुदकुशी या'नी ख़ुद अपने हाथ से अपने को मार डालना हराम और गुनाहे कबीरा है। **अल्लाह** पाक ने ऐसे शख़्स पर जन्नत हराम फ़रमा दी है। इस बारे में येह चन्द हदीसें बहुत रिक़्क़त अंगेज़ व इब्रत ख़ैज़ हैं।[2]

ख़ुदकुशी की मज़म्मत में तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा

(1) ☞ तुम से पहले लोगों में एक शख़्स था जो ज़ख़्मी हो गया और वोह उस ज़ख़्म से घबरा गया, उस ने छुरी ले कर उस से अपना हाथ काट डाला मगर उस का ख़ून न थमा यहां तक कि उस ने दम तोड़ दिया। **अल्लाह** पाक ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरे बन्दे ने अपनी जान के साथ मुझ पर जल्दी की, मैं ने इस पर जन्नत को हराम कर दिया है।''[3]

(2) ☞ जो अपने आप को किसी लोहे (के हथियार) से क़त्ल करे तो वोह उस के हाथ में होगा और जहन्नम की आग में उसे अपने पेट में घोंपता रहेगा और हमेशा जहन्नम में रहेगा। जिस ने ज़हर पी कर ख़ुद को मार डाला तो उस का ज़हर उस के हाथ में होगा, वोह जहन्नम की आग में उसे पीता रहेगा और हमेशा जहन्नम में रहेगा। जिस ने अपने आप को पहाड़ से गिरा कर हलाक कर लिया, वोह जहन्नम की आग में (बुलन्दी से) गिरता रहेगा और वोह जहन्नम में हमेशा रहेगा।[4]

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب غلظ تحریم قتل الانسان نفسہ...الخ، ص60، حدیث:111

2... जहन्नम के ख़तरात, स. 124

3 ...مسلم، کتاب الایمان، باب غلظ تحریم قتل الانسان نفسہ...الخ، ص61، حدیث:113

4 ...مسلم، کتاب الایمان، باب غلظ تحریم قتل الانسان نفسہ...الخ، ص59، حدیث:109

(3) ☞ मोमिन को ला'नत करना उस को क़त्ल करने की तरह है और जो जिस चीज़ के ज़रीए ख़ुदकुशी करेगा **अल्लाह** पाक बरोज़े क़ियामत उसे उसी चीज़ के ज़रीए अ़ज़ाब देगा।[1]

अल्लाह पाक हमें ख़ुदकुशी की आफ़त से मह़फ़ूज़ फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 36

मौज़ूआत

1	मदनी क़ाइदा : सूरतुल माऊ़न	2	अज़्कारे नमाज़ : बालिग़ मर्द व औ़रत की नमाज़े जनाज़ा की दुआ़
3	तफ़्सीरे कुरआन : नमाज़े क़स्र का हुक्म व चन्द मसाइल	4	नमाज़ के अह़काम : नमाज़े जनाज़ा के अह़काम व त़रीक़ा
5	सुन्नतें व आदाब : मस्जिद के आदाब	6	इस्लाहे़ आ'माल : अज़ान व जवाबे अज़ान के फ़ज़ाइल

(1) मदनी क़ाइदा ﴾सूरतुल माऊ़न : 1 ता 7﴿

मदनी क़ाइदे के अस्बाक़ में पढ़े गए क़वाइद का इजरा व दुरुस्त मख़ारिज के साथ पढ़ने की मश्क़ करें।

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान, रह़मत वाला है।

اَرَءَیْتَ الَّذِیْ یُكَذِّبُ بِالدِّیْنِ ؕ﴿۱﴾ فَذٰلِكَ الَّذِیْ یَدُعُّ الْیَتِیْمَ ۙ﴿۲﴾ وَ لَا یَحُضُّ عَلٰی طَعَامِ الْمِسْكِیْنِ ؕ﴿۳﴾ فَوَیْلٌ لِّلْمُصَلِّیْنَ ۙ﴿۴﴾ الَّذِیْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۙ﴿۵﴾ الَّذِیْنَ هُمْ یُرَآءُوْنَ ۙ﴿۶﴾ وَ یَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۠﴿۷﴾

क्या तुम ने उस शख़्स को देखा जो दीन को झुटलाता है। फिर वोह ऐसा है जो यतीम को धक्के देता है। और मिस्कीन को खाना देने की तरग़ीब नहीं देता। तो उन नमाज़ियों के लिये ख़राबी है। जो अपनी नमाज़ से ग़ाफ़िल हैं। वोह जो दिखावा करते हैं। और बरतने की मा'मूली चीज़ें भी नहीं देते।

[1] ...مسلم، کتاب الایمان، باب غلظ تحریم قتل الانسان نفسہ...الخ، ص59، حدیث:110

(2) अज़्कारे नमाज़ «बालिग़ मर्द व औरत के नमाज़े जनाज़ा की दुआ»

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِحَیِّنَا وَمَیِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِیْرِنَا وَكَبِیْرِنَا وَ ذَكَرِنَا وَاُنْثٰنَا ط اَللّٰھُمَّ مَنْ اَحْیَیْتَهٗ مِنَّا فَاَحْیِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّیْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِیْمَانِ [1]

इलाही बख़्श दे हमारे हर ज़िन्दा को और हमारे हर फ़ौत शुदा को और हमारे हर हाज़िर को और हमारे हर ग़ाइब को और हमारे हर छोटे को और हमारे हर बड़े को और हमारे हर मर्द को और हमारी हर औरत को इलाही तू हम में से जिस को ज़िन्दा रखे तो उस को इस्लाम पर ज़िन्दा रख और हम में से जिस को मौत दे तो उस को ईमान पर मौत दे ।

(3) तफ़्सीरे कुरआन «नमाज़े क़स्र का हुक्म व चन्द मसाइल»

وَ اِذَا ضَرَبْتُمْ فِی الْاَرْضِ فَلَیْسَ عَلَیْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ ۗ

(پ5، النساء:101)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो तो तुम पर गुनाह नहीं कि बा'ज़ नमाज़ें क़स्र से पढ़ो ।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 2, सफ़हा 322 पर है कि इस आयत में नमाज़ को क़स्र करने का मस्अला बयान किया गया है या'नी सफ़र की हालत में ज़ोहर, अ़स्र और इशा में चार फ़र्ज़ों की बजाए दो पढ़ेंगे ।

नमाज़े क़स्र के बारे में 4 मसाइल

यहां आयत की मुनासबत से नमाज़े क़स्र (सफ़र के दौरान पढ़ी जाने वाली नमाज़) से मुतअ़ल्लिक़ 4 शरई मसाइल मुलाहज़ा हों :

(1) ☞ इस से येह मस्अला मा'लूम होता है कि सफ़र में चार रक्अ़त वाली नमाज़ को पूरा पढ़ना जाइज़ नहीं है ।

(2) ☞ काफ़िरों का ख़ौफ़ क़स्र के लिये शर्त़ नहीं, चुनान्चे ह़ज़रते या'ला बिन उमय्या رضی اللہ عنہ ने

[1] ...مستدرک، کتاب الجنائز، باب ادعیۃ صلاۃ الجنازۃ، 1/684، حدیث:1366

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से कहा कि हम तो अम्न में हैं (फिर हम क्यूं क़स्र करते हैं) ? आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : इस का मुझे भी तअ़ज्जुब हुवा था तो मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया । इस पर हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम्हारे लिये येह **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से सदक़ा है, तुम उस का सदक़ा क़बूल करो ।[1] आयत के नाज़िल होने के वक़्त चूंकि सफ़र ख़त़रात से ख़ाली न होते थे इस लिये आयत में इस का ज़िक्र हुवा है वरना ख़ौफ़ और ख़त़रात का होना कोई शर्त़ नहीं है, नीज़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم का भी येही अ़मल था कि अम्न के सफ़रों में भी क़स्र फ़रमाते जैसा कि ऊपर की ह़दीस से साबित होता है ।

(3) ☞ जिस सफ़र में क़स्र की जाती है उस की कम से कम मुद्दत तीन दिन तीन रात का फ़ासिला है जो ऊंट या पैदल की दरमियानी रफ़्तार से तै किया जाता है । हमारे ज़मीनी, मैदानी सफ़र के ए'तिबार से फ़ी ज़माना इस की मसाफ़त बानवे (92) किलो मीटर बनती है ।

(4) ☞ क़स्र (कमी) सिर्फ़ फ़र्ज़ों में है, सुन्नतों में नहीं और सफ़र में सुन्नतें पढ़नी चाहिएं । ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़र की नमाज़ और सफ़र की नमाज़ को फ़र्ज़ फ़रमाया तो हम ह़ज़र में फ़र्ज़ नमाज़ से पहले भी नमाज़ पढ़ा करते थे और बा'द में भी और सफ़र में फ़र्ज़ नमाज़ से पहले भी नमाज़ पढ़ा करते थे और बा'द में भी ।[2]

(4) नमाज़ के अह़काम ﴾नमाज़े जनाज़ा के अह़काम व त़रीक़ा﴿

नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़े किफ़ाया है या'नी पूरे अ़लाक़े में से कोई एक भी अदा कर ले तो सब की त़रफ़ से अदा हो गया वगर्ना जिन जिन को ख़बर पहुंची और न आए सब गुनाहगार होंगे ।[3] नमाज़े जनाज़ा की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार करना (या'नी येह कहना कि नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़ ही नहीं है) कुफ़्र है ।[4]

1 ...مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب صلاۃ المسافرین وقصرھا، ص250، حدیث: 686

2 ...ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ والسنۃ فیھا، باب التطوع، ص175، حدیث: 1072

3 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، باب فی الجنائز، 187/1

4 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، 120/3

नमाज़े जनाज़ा के रुक्न और सुन्नतें

नमाज़े जनाज़ा के दो रुक्न हैं : (1) चार बार "اَللّٰہُ اَکْبَرْ" कहना (2) क़ियाम । और तीन सुन्नते मुअक्कदा हैं : (1) सना (2) दुरूद शरीफ़ (3) मय्यित के लिये दुआ ।[1]

नमाज़े जनाज़ा का तरीक़ा (हनफ़ी)

मुक़्तदी इस तरह नियत करे : "मैं निय्यत करता हूं इस जनाज़े की नमाज़ की वासिते **अल्लाह** पाक के, दुआ इस मय्यित के लिये, पीछे इस इमाम के"[2] अब इमाम व मुक़्तदी पहले कानों तक हाथ उठाएं और "اَللّٰہُ اَکْبَرْ" कहते हुए फ़ौरन हस्बे मा'मूल नाफ़ के नीचे बांध लें और सना पढ़ें । इस में "**وَتَعَالٰی جَدُّکَ**" के बा'द "**وَجَلَّ ثَنَاؤُکَ وَلَا اِلٰہَ غَیْرُکَ**" पढ़ें फिर बिग़ैर हाथ उठाए "اَللّٰہُ اَکْبَرْ" कहें, फिर दुरूदे इब्राहीमी पढ़ें, फिर बिग़ैर हाथ उठाए "اَللّٰہُ اَکْبَرْ" कहें और दुआ पढ़ें (इमाम तक्बीरें बुलन्द आवाज़ से कहे और मुक़्तदी आहिस्ता । बाक़ी तमाम अज़्कार इमाम व मुक़्तदी सब आहिस्ता पढ़ें), दुआ के बा'द फिर "اَللّٰہُ اَکْبَرْ" कहें और हाथ लटका दें फिर दोनों तरफ़ सलाम फेर दें । सलाम में मय्यित और फ़िरिश्तों और हाज़िरीने नमाज़ की निय्यत करे, उसी तरह जैसे और नमाज़ों के सलाम में निय्यत की जाती है यहां इतनी बात ज़ियादा है कि मय्यित की भी निय्यत करे ।[3]

(5) सुन्नतें व आदाब ﴿मस्जिद के आदाब﴾

(1) ☞ मस्जिद में खाना खाना और सोना मो'तकिफ़ को जाइज़ है ग़ैरे मो'तकिफ़ के लिये मक्रूह है, अगर कोई शख़्स मस्जिद में खाना या सोना चाहता हो तो वोह ब निय्यते ए'तिकाफ़ मस्जिद में दाख़िल हो और ज़िक्र करे या नमाज़ पढ़े इस के बा'द वोह काम कर सकता है ।[4]

(2) ☞ मस्जिद को रास्ता न बनाया जाए, मसलन मस्जिद के दो दरवाज़े हैं और इस को कहीं जाना

1 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، 124/3

2 ...فتاوی تاتارخانیہ، کتاب الصلاۃ، الفصل الثانی والثلاثون فی الجنائز، 40/3

3 ...الجوھرۃ النیرۃ، کتاب الصلاۃ، باب الجنائز، ص137

4 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب الخامس فی آداب المسجد...الخ، 396/5

है, आसानी इस में है कि एक दरवाज़े से दाख़िल हो कर दूसरे से निकल जाए। ऐसा न करे।[1]

(3) ☞ जब मस्जिद में दाख़िल हो तो सलाम करे बशर्ते कि जो लोग वहां मौजूद हैं, ज़िक्रो दर्स में मशग़ूल न हों और अगर वहां कोई न हो या जो लोग हैं वोह मशग़ूल हैं तो यूं कहे : اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا مِنْ رَّبِّنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ ।

(4) ☞ वक़्ते मक्रूह न हो तो दो रक्अ़त तहिय्यतुल मस्जिद अदा करे।

(5) ☞ ख़रीदो फ़रोख़्त न करे।

(6) ☞ गुमशुदा चीज़ मस्जिद में न ढूंडे।

(7) ☞ ज़िक्र के सिवा आवाज़ बुलन्द न करे।

(8) ☞ दुन्या की बातें न करे।

(9) ☞ लोगों की गरदनें न फलांगे।

(10) ☞ जगह के मुतअ़ल्लिक़ किसी से झगड़ा न करे।

(11) ☞ इस त़रह़ न बैठे कि दूसरों के लिये जगह में तंगी हो।

(12) ☞ नमाज़ी के आगे से न गुज़रे।

(13) ☞ मस्जिद में थूक खन्कार न डाले।

(14) ☞ उंग्लियां न चटख़ाए।

(15) ☞ नजासत और बच्चों और पागलों से मस्जिद को बचाए।

(16) ☞ ज़िक्रे इलाही की कसरत करे।[2]

(6) इस्लाहे़ आ'माल ﴾अज़ान व जवाबे अज़ान के फ़ज़ाइल﴿

(1) ☞ शैत़ान जब नमाज़ के लिये अज़ान सुनता है, भागता हुवा रौह़ा पहुंच जाता है। रावी फ़रमाते हैं : रौह़ा मदीनए मुनव्वरह से 36 मील दूर है।[3]

1 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب الخامس فی آداب المسجد...الخ، 396/5

2 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب الخامس فی آداب المسجد...الخ، 397/5

3 ...مسلم، کتاب الصلاۃ. باب فضل الاذان وھرب الشیطان عند سماعہ، ص151، حدیث: 388

(2) ☞ जब अज़ान देने वाला अज़ान देता है आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और दुआ क़बूल होती है।[1]

(3) ☞ अज़ान की आवाज़ जहां तक पहुंचती है, उस के लिये मग़्फ़िरत कर दी जाती है और हर तर व ख़ुश्क जिस ने इस मुअज़्ज़िन की आवाज़ सुनी उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करती है।[2]

(4) ☞ जिस बस्ती में अज़ान दी जाए, **अल्लाह** पाक अपने अ़ज़ाब से उस दिन उसे अम्न देता है।[3]

(5) ☞ जब आदम عَلَیْهِ السَّلَام जन्नत से हिन्दूस्तान में उतरे, उन्हें घबराहट हुई तो जिब्रईल عَلَیْهِ السَّلَام ने उतर कर अज़ान दी।[4]

अज़ान का जवाब देने की फ़ज़ीलत

मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक बार फ़रमाया : ऐ औ़रतो ! जब तुम बिलाल को अज़ान व इक़ामत कहते सुनो तो जिस त़रह़ वोह कहता है तुम भी कहो कि **अल्लाह** पाक तुम्हारे लिये हर ह़र्फ़ के बदले एक लाख नेकियां लिखेगा और एक हज़ार दरजात बुलन्द फ़रमाएगा और एक हज़ार गुनाह मिटाएगा। ख़वातीन ने येह सुन कर अ़र्ज़ की : येह तो औ़रतों के लिये है, मर्दों के लिये क्या है ? फ़रमाया : मर्दों के लिये दुगना।[5]

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक की रह़मत पर कुरबान ! उस ने हमारे लिये नेकियां कमाना, अपने दरजात बढ़वाना और गुनाह बख़्शवाना किस क़दर आसान फ़रमा दिया है। मगर अफ़्सोस ! इतनी आसानियों के बा वुजूद भी हम ग़फ़्लत का शिकार रहते हैं। पेश कर्दा ह़दीसे मुबारक में जवाबे अज़ान की जो फ़ज़ीलत बयान हुई है उस की तफ़्सील मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : "اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ" येह दो कलिमात हैं, इस त़रह़ पूरी अज़ान में कुल 15 कलिमात हैं। अगर कोई

1 ...مستدرک، کتاب الدعاو التکبیر...الخ، باب اجابۃ الاذان و الدعا بعدہ، 243/2، حدیث:2048

2 ...مسند امام احمد، مسند عبد اللّٰہ بن عمر، 453/2، حدیث:6346

3 ...معجم کبیر، 199/1، حدیث:745

4 ...حلیۃ الاولیاء، عمرو بن قیس ملائی، 123/5، رقم:6566

5 ...تاریخ ابن عساکر، رقم 6892، محمد بن الغمر بن عثمان، 75/55

इस्लामी बहन एक अज़ान का जवाब दे या'नी मुअज़्ज़िन साहिब जो कहते जाएं इस्लामी बहन भी दोहराती जाए तो उस को 15 लाख नेकियां मिलेंगी, 15 हज़ार दरजात बुलन्द होंगे और 15 हज़ार गुनाह मुआफ़ होंगे और इस्लामी भाइयों के लिये येह सब दुगना है। फ़ज्र की अज़ान में दो मरतबा اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْم भी है तो यूं फ़ज्र की अज़ान में 17 कलिमात हो गए और इस तरह फ़ज्र की अज़ान के जवाब में 17 लाख नेकियां, 17 हज़ार दरजात की बुलन्दी और 17 हज़ार गुनाहों की मुआफ़ी मिली और इस्लामी भाइयों के लिये दुगना। इक़ामत में दो मरतबा قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوةُ भी है यूं इक़ामत में भी 17 कलिमात हुए तो इक़ामत के जवाब का सवाब भी फ़ज्र की अज़ान के जवाब जितना हुवा। अल हासिल अगर कोई इस्लामी बहन एहतिमाम के साथ रोज़ाना पांचों नमाज़ों की अज़ानों और पांचों इक़ामतों का जवाब देने में काम्याब हो जाए तो उसे रोज़ाना एक करोड़ बासठ लाख नेकियां मिलेंगी, एक लाख बासठ हज़ार दरजात बुलन्द होंगे और एक लाख बासठ हज़ार गुनाह मुआफ़ होंगे और इस्लामी भाई को दुगना या'नी 3 करोड़ 24 लाख नेकियां मिलेंगी, 3 लाख 24 हज़ार दरजात बुलन्द होंगे और 3 लाख 24 हज़ार गुनाह मुआफ़ होंगे।[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 37

मौज़ूआत

1	मदनी क़ाइदा : सूरतुल क़ुरैश	2	अज़्कारे नमाज़ : ना बालिग़ लड़के के जनाज़े की दुआ
3	तफ़्सीरे क़ुरआन : गुनाहों को नेकियों में बदलने वाले आ'माल	4	नमाज़ के अहकाम : मुसाफ़िर की नमाज़ के अहकाम
5	सुन्नतें व आदाब : ज़ियारते क़ुबूर के आदाब	6	इस्लाहे आ'माल : क़ब्र में आ'माल ही काम आएंगे

1... फ़ैज़ाने अज़ान, स. 6

(1) मदनी क़ाइदा «सूरए कुरैश : आयत 1 ता 4»

मदनी क़ाइदे के अस्बाक़ में पढ़े गए क़वाइद का इजरा व दुरुस्त मख़ारिज के साथ पढ़ने की मश्क़ करें।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान, रह्मत वाला है।

لِاِیۡلٰفِ قُرَیۡشٍ ۙ﴿۱﴾ اٖلٰفِهِمۡ رِحۡلَةَ الشِّتَآءِ وَ الصَّیۡفِ ۚ﴿۲﴾ فَلۡیَعۡبُدُوۡا رَبَّ هٰذَا الۡبَیۡتِ ۙ﴿۳﴾ الَّذِیۡۤ اَطۡعَمَهُمۡ مِّنۡ جُوۡعٍ ۬ۙ وَّ اٰمَنَهُمۡ مِّنۡ خَوۡفٍ ﴿۴﴾

कुरैश को मानूस करने की वज्ह से। इन्हें सर्दी और गर्मी दोनों के सफ़र से मानूस करने की वज्ह से। तो इन्हें इस घर के रब की इबादत करनी चाहिये। जिस ने इन्हें भूक में खाना दिया और इन्हें ख़ौफ़ से अम्न बख़्शा।

(2) अज़्कारे नमाज़ «ना बालिग़ लड़के के जनाज़े की दुआ»

اَللّٰھُمَّ اجۡعَلۡهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجۡعَلۡهُ لَنَاۤ اَجۡرًا وَّذُخۡرًا

وَّاجۡعَلۡهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا ط[1]

इलाही ! इस (लड़के) को हमारे लिये आगे पहुंच कर सामान करने वाला बना दे और इस को हमारे लिये अज्र (का मूजिब) और वक़्त पर काम आने वाला बना दे और इस को हमारी सिफ़ारिश करने वाला बना दे और वोह जिस की सिफ़ारिश मन्ज़ूर हो जाए।

(3) तफ़्सीरे कुरआन «गुनाहों को नेकियों में बदलने वाले आ'माल»

اِنَّ الۡحَسَنٰتِ یُذۡهِبۡنَ السَّیِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكۡرٰی لِلذّٰكِرِیۡنَ ﴿۱۱۴﴾ (پ12،ھود:114)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं, येह नसीह़त मानने वालों के लिये नसीह़त है।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 4, सफ़ह़ा नम्बर 512 पर है कि इस आयत से मा'लूम हुवा कि नेकियां सग़ीरा गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा होती हैं ख़्वाह वोह नेकियां नमाज़ हों या सदक़ा या

1 ...الجوھرۃ النیرۃ، کتاب الصلاۃ، باب الجنائز، ص138

ज़िक्रो इस्तिग़्फ़ार या और कुछ। अहादीस में मुतअ़द्दद ऐसे आ'माल का बयान है जो सग़ीरा गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा बनते हैं, यहां उन में से चन्द एक बयान किये जाते हैं :

(1) ☞ हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "पांचों नमाज़ें और जुमुआ़ दूसरे जुमुआ़ तक और रमज़ान दूसरे रमज़ान तक येह सब उन गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा हैं जो इन के दरमियान वाक़ेअ़ हों जब कि आदमी कबीरा गुनाहों से बचे।"[1]

(2) ☞ हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने रमज़ानुल मुबारक का रोज़ा रखा और उस की हुदूद को पहचाना और जिस चीज़ से बचना चाहिये उस से बचा तो जो पहले कर चुका है उस का कफ़्फ़ारा हो गया।"[2]

(3) ☞ हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उ़म्रह से उ़म्रह तक उन गुनाहों का कफ़्फ़ारा है जो दरमियान में हुए और हज्जे मबरूर का सवाब जन्नत ही है।"[3]

(4) ☞ हज़रते सिख़्बरह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने इ़ल्म तलाश किया तो येह तलाश उस के गुज़श्ता गुनाहों का कफ़्फ़ारा होगी।"[4]

(4) नमाज़ के अह़काम «मुसाफ़िर की नमाज़ के अह़काम»

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا रिवायत फ़रमाती हैं : नमाज़ दो रक्अ़त फ़र्ज़ की गई, फिर जब सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हिजरत फ़रमाई तो चार फ़र्ज़ की गई और सफ़र की नमाज़ उसी पहले फ़र्ज़ पर छोड़ी गई।[5]

1 ...مسلم، کتاب الطھارۃ، باب الصلوات الخمس والجمعۃ الی الجمعۃ ورمضان الی رمضان...الخ، ص108، حدیث: 233

2 ...شعب الایمان، الباب الثالث والعشرون من شعب الایمان، فضائل شھر رمضان، 310/2، حدیث: 3623

3 ...بخاری، کتاب العمرۃ، باب وجوب العمرۃ وفضلھا، ص475، حدیث: 1773

4 ...ترمذی، کتاب العلم، باب فضل طلب العلم، ص624، حدیث: 2648

5 ...بخاری، کتاب مناقب الانصار، باب التاریخ من این ارخوا التاریخ، ص990، حدیث: 3935

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا और हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़े सफ़र की दो रक्अ़तें मुक़र्रर फ़रमाईं और येह पूरी है, कम नहीं ।[1] या'नी अगर्चे ब ज़ाहिर दो रक्अ़तें कम हो गईं मगर सवाब में दो ही चार के बराबर हैं ।[2]

शरई सफ़र की मसाफ़त

शर्अ़न मुसाफ़िर वोह शख़्स है जो तीन दिन के फ़ासिले या'नी साढ़े सत्तावन मील (तक़्रीबन 92 किलो मीटर) तक जाने के इरादे से अपने शहर या गाउं से बाहर हो गया ।[3]

मुसाफ़िर कब होगा

सिर्फ़ सफ़र की निय्यत करने से मुसाफ़िर न होगा बल्कि मुसाफ़िर उस वक़्त कहलाएगा जब अपनी बस्ती या शहर में है तो शहर से या गाउं में है तो गाउं की आबादी से बाहर हो जाए और शहर वाले के लिये येह भी ज़रूरी है कि शहर के आस पास जो आबादी शहर से मिली है उस से भी बाहर आ जाए ।[4]

मुसाफ़िर बनने के लिये शर्त

सफ़र के लिये येह भी ज़रूरी है कि जहां से चला वहां से तीन दिन की राह (या'नी तक़्रीबन 92 किलो मीटर) की निय्यत हो तब मुसाफ़िर बनेगा और अगर दो दिन की राह (या'नी 92 किलो मीटर से कम) की निय्यत से निकला वहां पहुंच कर दूसरी जगह का इरादा हुवा कि वोह भी तीन दिन (92 किलो मीटर) से कम का रास्ता है यूंही सारी दुन्या घूम कर आए, मुसाफ़िर नहीं ।[5] येह भी शर्त है कि तीन दिन की राह के सफ़र का मुत्तसिल (या'नी पै दर पै, लगातार) इरादा हो, अगर यूं इरादा किया कि मसलन दो दिन की राह पर पहुंच कर कुछ काम करना है वोह कर के फिर एक

1 ...ابن ماجہ، کتاب الاقامۃ الصلاۃ و السنۃ فیھا، باب ماجاء فی الوتر فی السفر، ص193، حدیث:1194

2... बहारे शरीअ़त, 1/740, हिस्सा : 4

3... फ़तावा रज़विय्या, 8/243, मुलख़्ख़सन

4 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ المسافر، 2/722

5 ...غنیۃ المتملی، فصل فی صلاۃ المسافر، ص537

दिन की राह जाऊंगा तो येह तीन दिन की राह का मुत्तसिल (या'नी लगातार) इरादा न हुवा और न ही मुसाफ़िर हुवा।[1]

वत़न की क़िस्में

वत़न की दो क़िस्में हैं : (1) वत़ने अस्ली : वोह जगह जहां इस की पैदाइश हुई है या इस के घर के लोग वहां रहते हैं या वहां सुकूनत (या'नी रिहाइश इख़्तियार) कर ली और येह इरादा है कि यहां से न जाएगा। (2) वत़ने इक़ामत : या'नी वोह जगह कि मुसाफ़िर ने पन्दरह दिन या इस से ज़ियादा ठहरने का वहां इरादा किया हो।[2] वत़ने इक़ामत दूसरे वत़ने इक़ामत को बातिल कर देता है या'नी एक जगह पन्दरह दिन के इरादे से ठहरा फिर दूसरी जगह इतने ही दिन के इरादे से ठहरा तो पहली जगह अब वत़न न रही। दोनों के दरमियान मुसाफ़िर बनने की शरई मसाफ़त (फ़ासिला) हो या न हो।[3]

(5) सुन्नतें व आदाब ﴾ज़ियारते क़ुबूर की सुन्नतें व आदाब﴿

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "मैं ने तुम को ज़ियारते क़ुबूर से मन्अ़ किया था अब तुम क़ब्रों की ज़ियारत करो और मैं ने तुम को क़ुरबानी का गोश्त तीन दिन से ज़ियादा खाने की मुमानअ़त की थी अब जब तक तुम्हारी समझ में आए रख सकते हो।"[4]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मैं ने तुम को ज़ियारते क़ुबूर से मन्अ़ किया था अब तुम क़ब्रों की ज़ियारत करो, कि वोह दुन्या में बे रग़बती का सबब है और आख़िरत याद दिलाती है।"[5]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब कोई शख़्स ऐसे की क़ब्र पर गुज़रे जिसे दुन्या में पहचानता था और उस पर सलाम करे तो वोह मुर्दा उसे पहचानता है और उस के सलाम का जवाब देता है।[6]

1... फ़तावा रज़विय्या, 8/270

2 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الخامس عشر فی صلاۃ المسافر، 157/1

3 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ المسافر، مطلب فی الوطن الاصلی ووطن الاقامۃ، 739/2

4 ...مسلم، کتاب الجنائز، باب استئذان النبی ربہ فی زیارۃ قبر امہ، ص349، حدیث: 977

5 ...ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ماجاء زیارۃ القبور، ص252، حدیث: 1571

6 ...تاریخ بغداد، رقم 3175، ابراھیم بن عمران، 135/6

(1)☞ ज़ियारते क़ुबूर जाइज़ व मस्नून है। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शुहदाए उहुद की ज़ियारत को तशरीफ़ ले जाते और उन के लिये दुआ़ करते।[1]

(2)☞ क़ब्र की ज़ियारत को जाना चाहे तो मुस्तह़ब येह है कि पहले अपने मकान में दो रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल पढ़े, हर रक्अ़त में फ़ातिह़ा के बा'द आयतुल कुरसी एक बार और قُلْ هُوَ اللّٰه तीन बार पढ़े और इस नमाज़ का सवाब मय्यित को पहुंचाए, **अल्लाह** पाक मय्यित की क़ब्र में नूर पैदा करेगा और उस शख़्स को बहुत बड़ा सवाब अ़ता फ़रमाएगा, अब क़ब्रिस्तान को जाए, रास्ते में फ़ुज़ूल गुफ़्तगू न करे। जब क़ब्रिस्तान पहुंचे जूतियां उतार दे और क़ब्र के सामने इस त़रह़ खड़ा हो कि क़िब्ले को पीठ हो और मय्यित के चेहरे की त़रफ़ मुंह और इस के बा'द येह कहे : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ اَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ وَّنَحْنُ بِالْاَثَر और सूरए फ़ातिह़ा व आयतुल कुरसी व सूरए ज़िलज़ाल और सूरए तकासुर पढ़े, सूरए मुल्क और दूसरी सूरतें भी पढ़ सकता है।[2]

(3)☞ चार दिन ज़ियारत के लिये बेहतर हैं : पीर, जुमे'रात, जुमुआ़ और हफ़्ता। मुतबर्रक रातों में ज़ियारते क़ुबूर अफ़्ज़ल है, मसलन शबे बराअत, शबे क़द्र, इसी त़रह़ ईदैन के दिन और अ़शरए ज़िल ह़िज्जा में भी बेहतर है।[3]

(6) इस्लाह़े आ'माल ﴾क़ब्र में आ'माल ही काम आएंगे﴿

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا से मरवी है कि एक दिन नूर के पैकर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुम जानते हो कि तुम्हारी, तुम्हारे अहलो अ़याल, माल और आ'माल की मिसाल कैसी है ?" अ़र्ज़ की : "اَللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم" या'नी **अल्लाह** पाक और उस का रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं।" इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हारी, तुम्हारे अहलो अ़याल, माल और आ'माल की मिसाल उस शख़्स की त़रह़ है जिस के तीन भाई हों, जब उस

1 ...تفسیر درمنثور، پ13، الرعد، تحت الآیۃ:24، 640/4

2 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب السادس عشر فی زیارۃ القبور، 429/5

3 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب السادس عشر فی زیارۃ القبور، 429/5

की मौत का वक़्त क़रीब आए तो वोह अपने तीनों भाइयों को बुलाए और एक से कहे : "तुम मेरी ह़ालत देख रहे हो, येह बताओ कि तुम मेरे लिये क्या कर सकते हो ?" वोह जवाब दे : "मैं तुम्हारे लिये इतना कर सकता हूं कि फ़िलह़ाल तुम्हारी तीमार दारी करूं, तुम्हारे साथ रह कर तुम्हारी ह़ाजात व ज़रूरिय्यात को पूरा करूं फिर जब तुम्हारा इन्तिक़ाल हो जाए तो तुम्हें ग़ुस्ल दे कर कफ़न पहनाऊं और लोगों के साथ मिल कर तुम्हारा जनाज़ा उठाऊं कि कभी मैं कन्धा दूं तो कभी कोई और शख़्स, जब (तुम्हें दफ़्न कर के) वापस आऊं तो जो कोई तुम्हारे बारे में पूछे उस के सामने तुम्हारी भलाई ही बयान करूं।" येह भाई दर ह़क़ीक़त उस शख़्स के अहलो अ़याल हैं।" येह फ़रमाने के बा'द सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से पूछा : "इस के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है ?" अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम इस में कोई भलाई नहीं पाते।" आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कलाम जारी रखते हुए इर्शाद फ़रमाया : फिर वोह अपने दूसरे भाई से कहे : "तुम भी मेरी ह़ालत देख रहे हो, मेरे लिये क्या कर सकते हो ?" तो वोह जवाब में कहे : "मैं उस वक़्त तक तुम्हारा साथ दूंगा जब तक तुम ज़िन्दा हो, जूंही तुम दुन्या से रुख़्सत होगे हमारे रास्ते जुदा हो जाएंगे क्यूं कि तुम क़ब्र में पहुंच जाओगे और मैं यहीं दुन्या में रह जाऊंगा।" येह भाई अस्ल में उस शख़्स का माल है, इस के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है ? सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम इसे भी अच्छा नहीं समझते।" मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : फिर वोह शख़्स अपने तीसरे भाई से कहे : "यक़ीनन तुम भी मेरी ह़ालत देख रहे हो और तुम ने मेरे अहलो अ़याल और माल का जवाब भी सुन लिया है, बताओ तुम मेरे लिये क्या कर सकते हो ?" वोह उसे तसल्ली देते हुए कहे : "मेरे भाई ! मैं तो क़ब्र में भी तुम्हारे साथ रहूंगा और तुम्हें वह़शत से बचाऊंगा और जब यौमे ह़िसाब आएगा तो मैं तेरे मीज़ान में जा बैठूंगा और उसे वज़्न दार कर दूंगा।" येह उस का अ़मल है, इस के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है ? सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह !** येह तो बहुत अच्छा दोस्त है।" नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**اَلْاَمْرُ هٰكَذَا**" या'नी येही ह़क़ीक़त है।"[1]

1 ... کنز العمال، کتاب الموت، باب ذیل الموت، جز8، 318/15، حدیث: 42974

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि हमारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक आसान मिसाल के ज़रीए अ़मल की अहम्मिय्यत को बयान फ़रमाया । यक़ीनन माल, अहलो अ़याल और आ'माल में से हमारा सब से वफ़ादार दोस्त "अ़मल" है जो क़ब्रो ह़श्र में भी हमारा मददगार होगा ।[1]

अल्लाह पाक से दुआ़ है कि हमें कसरत से नेक आ'माल करने और गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

सबक़ नम्बर 38

मौज़ूआ़त

1	मदनी क़ाइदा : सूरतुल फ़ील	2	अज़्कारे नमाज़ : ना बालिग़ लड़की के जनाज़े की दुआ़
3	तफ़्सीरे कुरआन : 4 शैत़ानी काम	4	नमाज़ के अह़काम : मुसाफ़िर की नमाज़ के अह़काम
5	सुन्नतें व आदाब : ज़ुल्फ़ें रखने की सुन्नतें व आदाब	6	इस्लाहे़ आ'माल : दुन्यावी इ़ल्म सीखना और इ़ल्म को छुपाना

(1) मदनी क़ाइदा ﴾सूरतुल फ़ील : आयत 1 ता 5﴿

मदनी क़ाइदे के अस्बाक़ में पढ़े गए क़वाइद का इजरा व दुरुस्त मख़ारिज के साथ पढ़ने की मश्क़ करें ।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान, रह़मत वाला है ।

[1]... क़ब्र में आने वाला दोस्त, स. 11

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۟ؕ اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۟ۙ
وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۟ۙ تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۟ۙ فَجَعَلَهُمْ
كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۟ؒ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या तुम ने न देखा कि तुम्हारे रब ने उन हाथी वालों का क्या हाल किया ? क्या उस ने उन के मक्रो फ़रेब को तबाही में न डाला । और उन पर फ़ौज दर फ़ौज परिन्दे भेजे । जो उन्हें कंकर के पथ्थरों से मारते थे । तो उन्हें जानवरों के खाए हुए भूसे की त़रह़ कर दिया ।

(2) अज़्कारे नमाज़ ﴾ना बालिग़ लड़की के जनाज़े की दुआ﴿

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهَا لَنَآ اَجْرًا وَّذُخْرًا
وَّاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً ط[1]

इलाही ! इस (लड़की) को हमारे लिये आगे पहुंच कर सामान करने वाली बना दे और इस को हमारे लिये अज्र (की मूजिब) और वक़्त पर काम आने वाली बना दे और इस को हमारी सिफ़ारिश करने वाली बना दे और वोह जिस की सिफ़ारिश मन्ज़ूर हो जाए ।

(3) तफ़्सीरे क़ुरआन ﴾4 शैत़ानी काम﴿

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝۹۰
(پ5، المائدۃ:90)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! शराब और जूआ और बुत और क़िस्मत मा'लूम करने के तीर नापाक शैत़ानी काम ही हैं तो इन से बचते रहो ताकि तुम फ़लाह़ पाओ ।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 3, सफ़ह़ा 20 पर है कि इस आयते मुबारका में चार चीज़ों के नापाक और ख़बीस होने और उन के शैत़ानी काम होने के बारे में बयान फ़रमाया और उन से बचने का हुक्म दिया गया है। वोह चार चीज़ें येह हैं : (1) शराब (2) जूआ (3) अन्साब या'नी बुत (4) अज़्लाम या'नी पांसा डालना ।

[1] ...كنز الدقائق، كتاب الصلوة، باب الجنائز، ص199 بدون قول "ها"

शराब : हज़रते अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत के कुछ लोग शराब पियेंगे और उस का नाम बदल कर कुछ और रखेंगे, उन के सरों पर बाजे बजाए जाएंगे और गाने वालियां गाएंगी । **अल्लाह** पाक उन्हें ज़मीन में धंसा देगा और उन में से कुछ लोगों को बन्दर और सुवर बना देगा ।"[1]

जूआ : हज़रते अबू अ़ब्दुर्रहमान ख़तमी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स नर्द (जूए का एक खेल) खेलता है फिर नमाज़ पढ़ने उठता है, उस की मिसाल उस शख़्स की त़रह है जो पीप और सुवर के ख़ून से वुज़ू कर के नमाज़ पढ़ने खड़ा होता है ।"[2]

अन्साब : हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि इस से मुराद वोह पथ्थर हैं जिन के पास कुफ़्फ़ार अपने जानवर ज़ब्ह़ करते थे ।[3] इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद नसफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इस से मुराद बुत हैं क्यूं कि इन्हें नस्ब कर के इन की पूजा की जाती है ।[4] अ़ल्लामा अबू ह़य्यान मुह़म्मद बिन यूसुफ़ उन्दुलुसी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "अगर अन्साब से मुराद वोह पथ्थर हों जिन के पास कुफ़्फ़ार अपने जानवर ज़ब्ह़ या नह़्र करते थे तो उन पथ्थरों को नापाक इस लिये कहा गया ताकि कमज़ोर ईमान वाले मुसल्मानों के दिलों में अगर उन की कोई अ़ज़मत बाक़ी है तो वोह भी निकल जाए, और अगर अन्साब से मुराद वोह बुत हों जिन की **अल्लाह** पाक के इ़लावा इ़बादत की जाती है (उन के पास जानवर ज़ब्ह़ किये जाते हों या नहीं) तो उन्हें नापाक इस लिये कहा गया ताकि सब पर अच्छी त़रह़ वाज़ेह़ हो जाए कि जिस त़रह़ अस्नाम से बचना वाजिब है इसी त़रह़ अन्साब से बचना भी वाजिब है ।"[5]

अज़्लाम : ज़मानए जाहिलिय्यत में कुफ़्फ़ार ने तीन तीर बनाए हुए थे, उन में से एक पर लिखा था "हां" दूसरे पर लिखा था "नहीं" और तीसरा ख़ाली था । वोह लोग उन तीरों की बहुत

1 ...ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب العقوبات، ص649، حدیث:4020

2 ...سنن کبری للبیہقی، کتاب الشہادات، باب جماع ابواب من تجوز شہادتہ ومن لاتجوز، 404/10، حدیث:2293

3 ...تفسیر ابن کثیر، پ7، المائدۃ، تحت الآیۃ:90، 171/2

4 ...تفسیر مدارک، پ7، المائدۃ، تحت الآیۃ:90، 473/1

5 ...تفسیر البحر المحیط، پ7، المائدۃ، تحت الآیۃ:90، 20/4

ता'ज़ीम करते थे और येह तीर काहिनों के पास होते और का'बए मुअ़ज़्ज़मा में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के पास होते थे (जब उन्हें कोई सफ़र या अहम काम दरपेश होता तो वोह इन तीरों से पांसे डालते और जो उन पर लिखा होता उस के मुताबिक़ अ़मल करते थे)। परिन्दों से और वह़शी जानवरों से बुरा शुगून लेना और किताबों से फ़ाल निकालना वगै़रा भी इसी में दाख़िल है।[1] ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो किसी नुजूमी या काहिन के पास गया और उस के क़ौल की तस्दीक़ की तो गोया इस ने उस का इन्कार कर दिया जो (ह़ज़रत) मुह़म्मद صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर नाज़िल किया गया।"[2]

(4) नमाज़ के अह़काम ﴾मुसाफ़िर की नमाज़ के अह़काम﴿

﴾1﴿ ☞ मुसाफ़िर पर वाजिब है कि नमाज़ में क़स्र करे या'नी चार रक्अ़त वाले फ़र्ज़ को दो पढ़े इस के ह़क़ में दो ही रक्अ़तें पूरी नमाज़ है और जान बूझ कर चार पढ़ीं और दो पर क़ा'दा किया तो फ़र्ज़ अदा हो गए और पिछली दो रक्अ़तें नफ़्ल हो गईं मगर गुनाहगार व अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है कि वाजिब तर्क किया (छोड़ा) लिहाज़ा तौबा करे।[3]

﴾2﴿ ☞ मुसाफ़िर ने क़स्र के बजाए चार रक्अ़त फ़र्ज़ की निय्यत बांध ली फिर याद आने पर दो पर सलाम फेर दिया तो नमाज़ हो जाएगी।[4]

﴾3﴿ ☞ इमाम (अगर मुसाफ़िर हो तो उस) को चाहिये कि नमाज़ शुरूअ़ करते वक़्त अपना मुसाफ़िर होना बता दे, और शुरूअ़ में न कहा तो नमाज़ के बा'द (या'नी सलाम फेरने के बा'द) कह दे : मुक़ीम ह़ज़रात अपनी नमाज़ें पूरी कर लें क्यूं कि मैं मुसाफ़िर हूं।[5]

﴾4﴿ ☞ सुन्नतों में क़स्र नहीं बल्कि पूरी पढ़ी जाएंगी।[6]

1... تفسیر البحر المحیط، پ7، المائدۃ، تحت الآیۃ:90، 20/4

2... مستدرک، کتاب الایمان، التشدید فی اتیان الکاھن وتصدیقہ، 153/1، حدیث:15

3... बहारे शरीअ़त, 1/743, हिस्सा : 4

4... नमाज़ के अह़काम, स. 315

5... درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ المسافر، 735/2

6... فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الخامس عشر فی صلاۃ المسافر، 153/1

{5} ☞ अगर मुसाफ़िर क़स्र वाली नमाज़ की तीसरी रक्अ़त शुरूअ़ कर दे तो इस की दो सूरतें हैं : (1) आख़िरी क़ा'दे में तशह्हुद की मिक़्दार बैठ चुका था तो जब तक तीसरी रक्अ़त का सज्दा न किया हो लौट आए और सज्दए सह्व कर के सलाम फेर दे अगर न लौटे और खड़े खड़े सलाम फेर दे तो भी नमाज़ हो जाएगी मगर सुन्नत तर्क हुई । अगर तीसरी रक्अ़त का सज्दा कर लिया तो एक और रक्अ़त मिला कर सज्दए सह्व कर के नमाज़ मुकम्मल करे । (इब्तिदाई दो रक्अ़तें फ़र्ज़ और) येह आख़िरी दो रक्अ़तें नफ़्ल शुमार होंगी । (2) क़ा'दए अख़ीरा किये बिग़ैर खड़ा हो गया था तो जब तक तीसरी रक्अ़त का सज्दा न किया हो लौट आए और सज्दए सह्व कर के सलाम फेर दे अगर तीसरी रक्अ़त का सज्दा कर लिया फ़र्ज़ बातिल हो गए, अब एक और रक्अ़त मिला कर सज्दए सह्व कर के नमाज़ मुकम्मल करे चारों रक्अ़तें नफ़्ल शुमार होंगी ।[1] (दो रक्अ़त फ़र्ज़ अदा करने अभी ज़िम्मे बाक़ी हैं)

{6} ☞ ह़ालते इक़ामत में होने वाली क़ज़ा नमाज़ें सफ़र में भी पूरी पढ़नी होंगी और सफ़र में क़ज़ा होने वाली क़स्र नमाज़ें मुक़ीम होने के बा'द भी क़स्र ही पढ़ी जाएंगी ।[2]

{7} ☞ मुसाफ़िर किसी काम के लिये या साथियों के इन्तिज़ार में दो चार रोज़ या तेरह चौदह दिन की निय्यत से ठहरा, या येह इरादा है कि काम हो जाएगा तो चला जाएगा, दोनों सूरतों में अगर आज कल आज कल करते सालों गुज़र जाएं जब भी मुसाफ़िर ही है नमाज़ क़स्र पढ़े ।[3]

(5) सुन्नतें व आदाब ﴾ज़ुल्फ़ें रखने की सुन्नतें व आदाब﴿

हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नते करीमा है कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमेशा अपने सरे मुबारक के बाल शरीफ़ पूरे रखे । कभी निस्फ़ कान मुबारक तक

1 ...هداية، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، 87/1

2 ...فتاوى هنديه، كتاب الصلاة، الباب الحادى عشر فى قضاء الفوائت، 134/1

3 ...فتاوى هنديه، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر فى صلاة المسافر، 154/1

तो कभी कान मुबारक की लौ तक और बा'ज़ अवक़ात आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के गेसू शरीफ़ बढ़ जाते तो मुबारक शानों को झूम झूम कर चूमने लगते।

(1) ☞ चाहें तो आधे कानों तक ज़ुल्फ़ें रखें कि ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि मदीने वाले आक़ा, शब्बे अस्रा के दूल्हा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बाल मुबारक आधे मुबारक कानों तक थे।[1] चूंकि बाल बढ़ने वाली चीज़ है इस लिये जिस सह़ाबी رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने जैसा देखा वोही रिवायत कर दिया। चुनान्चे ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने निस्फ़ कानों तक देखा तो इसी को रिवायत किया और जिस ने इस से ज़ियादा बड़े देखे उस ने उसी मिक़्दार को रिवायत किया।[2]

(2) ☞ चाहें तो पूरे कानों तक ज़ुल्फ़ें रखें कि ह़ज़रते बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि सुल्त़ाने मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़दे मुबारक दरमियाना था, दोनों मुबारक शानों के दरमियान फ़ासिला था और आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के गेसू मुबारक मुक़द्दस कानों को चूमते थे।[3]

(3) ☞ चाहें तो शानों तक ज़ुल्फ़ें रखें कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मेरे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सरे अक़्दस पर जो बाल मुबारक होते वोह कान मुबारक की लौ से ज़रा नीचे होते और मुबारक शानों को चूमते।[4]

(4) ☞ सर के बीच में से मांग निकालिये कि सुन्नत है। जैसा कि ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ "बहारे शरीअ़त" में लिखते हैं : "बा'ज़ लोग दाह्ने या बाईं जानिब निकालते हैं, येह सुन्नत के ख़िलाफ़ है। सुन्नत येह है कि अगर सर पर बाल हों तो बीच में मांग निकाली जाए।"[5]

1... الشمائل المحمدیۃ، باب ماجاء فی شعر رسول اللہ، ص104، حدیث:24

2... सुन्नतें और आदाब, स. 70

3... الشمائل المحمدیۃ، باب ماجاء فی خلق رسول اللہ، ص33، حدیث:3

4... الشمائل المحمدیۃ، باب ماجاء فی خلق رسول اللہ، ص33، حدیث:3

5... बहारे शरीअ़त, 3/587, हिस्सा : 16

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** ! हम सब मुसल्मानों को ख़िलाफ़े सुन्नत बाल रखने और रखवाने की सोच से नजात दे कर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नत ज़ुल्फ़ें रखने वाली मज़्हबी सोच अ़ता फ़रमा । اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(6) इस्लाहे़ आ'माल ﴾दुन्यावी इल्म सीखना और इल्म को छुपाना﴿

दुन्यावी इल्म का हुसूल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! एक मुसल्मान होने के नाते़ हमारे हर अ़मल का मक़्सद रिज़ाए इलाही का हुसूल होना चाहिये । बन्दा जो भी काम करे उस से पहले येह सोच ले कि इस में सवाब मिलेगा या नहीं ? सवाब मिले तो करे, न मिले तो उस को सवाब का काम बनाने की कोई तरकीब सोचे । इस लिये कि मुबाह़ काम जिस में न सवाब हो न गुनाह उस में अच्छी निय्यतें करने से सवाब मिलता है और वोह मुबाह़ काम इ़बादत बन जाता है ।[1]

लिहाज़ा अगर कोई शख़्स दुन्या के उ़लूमो फ़ुनून ह़ासिल करना चाहता है तो उसे चाहिये कि अपनी निय्यत का क़िब्ला दुरुस्त करे, अपने पेशे नज़र कोई अच्छी व नेक निय्यत रखे । ऐसा न हो कि इन उ़लूमे दुन्यवी से सिर्फ़ दुन्या त़लबी और दुन्यवी मालो मताअ़ का हुसूल मक़्सूद हो बल्कि इन्सानी व दीनी ख़िदमत का भी अ़ज़्मे मुसम्मम हो तो उन्हें ह़ासिल करना जाइज़ है बशर्ते़ कि कोई शर्इ़ मुमानअ़त न हो । ''फ़तावा अज्मलिय्या'' में है : उ़लूमे दुन्यविया ग़ैर शर्इ़य्या में से जो उ़लूम, उ़लूमे दीनिया के लिये आलात हों या मबादी (बुन्याद) हों या उमूरे दुन्या में उन की त़रफ़ दुन्यवी या दीनी ह़ाजत हो और वोह हुस्ने निय्यत के साथ मक़्रून (मिले हुए) हों बा वुजूद इस के उन में कोई मह़ज़ूरे शर्इ़ लाज़िम न आता हो (या'नी शर्इ़ तौ़र पर मुमानअ़त लाज़िम न आती हो) तो ऐसे उ़लूमे दुन्यविया ग़ैर शर्इ़य्या का ता'लीमो तअ़ल्लुम बिला शुबा जाइज़ है ।[2]

हुस्ने निय्यत से दुन्यवी उ़लूम का हुसूल बाइ़से सवाब

पारह 4, सूरए आले इ़मरान की आयत नम्बर 190 में इर्शाद होता है :

[1] ...احیاء العلوم، کتاب النیۃ والاخلاص والصدق، الباب الاول فی النیۃ، 4/449ماخوذاً

[2] ... फ़तावा अज्मलिय्या, 1/351

اِنَّ فِیۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَاخۡتِلَافِ الَّیۡلِ وَالنَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الۡاَلۡبَابِ ﴿۱۹۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और रात और दिन की बाहम बदलियों में अक़्ल मन्दों के लिये निशानियां हैं।

मज़्कूरा आयते मुबारका के तह़्त तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, जिल्द 2 सफ़ह़ा 120 पर है : इस आयत से मा'लूम हुवा कि इल्मे जुग़राफ़िया और साइन्स ह़ासिल करना भी सवाब है जब कि अच्छी निय्यत हो जैसे इस्लाम और मुसल्मानों की ख़िदमत या **अल्लाह** पाक की अ़ज़मत का इल्म ह़ासिल करने के लिये, लेकिन येह शर्त़ है कि इस्लामी अ़क़ाइद के ख़िलाफ़ न हो।

इल्म छुपाना गुनाह है

अल्लाह करीम इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیۡنَ یَکۡتُمُوۡنَ مَاۤ اَنۡزَلۡنَا مِنَ الۡبَیِّنٰتِ وَالۡهُدٰی مِنۡۢ بَعۡدِ مَا بَیَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِی الۡکِتٰبِ ۙ اُولٰٓئِکَ یَلۡعَنُهُمُ اللّٰهُ وَیَلۡعَنُهُمُ اللّٰعِنُوۡنَ ﴿۱۵۹﴾

(پ2، البقرة:159)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग जो हमारी उतारी हुई रोशन बातों और हिदायत को छुपाते हैं ह़ालां कि हम ने उसे लोगों के लिये किताब में वाज़ेह़ फ़रमा दिया है तो उन पर **अल्लाह** ला'नत फ़रमाता है और ला'नत करने वाले उन पर ला'नत करते हैं।

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه फ़रमाते हैं : अगर्चे येह आयत अहले किताब (यहूदियों) के बारे में आई लेकिन इस के अल्फ़ाज़ आ़म हैं लिहाज़ा वोह सब लोग मुराद हैं जो दीन को छुपाएं। मज़ीद फ़रमाते हैं : दीन और दीनी इल्मों का ज़ाहिर करना फ़र्ज़ है, बर वक़्ते ज़रूरत इन का छुपाने वाला सख़्त गुनाहगार और ला'नत का मुस्तह़िक़ (है)।[1]

अह़ादीसे मुबारका में इल्म छुपाने की मज़म्मत

अल्लाह करीम के अह़कामात और दीनी मसाइल छुपाने के तअ़ल्लुक़ से अह़ादीसे मुबारका में बहुत सख़्त वई़द बयान हुई हैं चुनान्चे चन्द एक मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

1... तफ़्सीरे नईमी, पारह : 2, अल बक़रह, तह़तल आयह : 159, 2/109, 112 मुल्तक़तन

(1) ☞ जिस से इल्म की कोई बात पूछी गई और उस ने उसे छुपाया तो **अल्लाह** पाक क़ियामत के दिन उसे आग की लगाम पहनाएगा।[1]

(2) ☞ जो शख़्स किसी इल्म को ज़बानी याद करे और फिर उसे लोगों से छुपाए तो वोह क़ियामत के दिन आग की लगाम पहन कर आएगा।[2]

(3) ☞ इल्म ह़ासिल करने के बा'द उसे बयान न करने वाले की मिसाल उस शख़्स की त़रह़ है जो ख़ज़ाना जम्अ़ करता है फिर उस में से कुछ भी ख़र्च नहीं करता।[3]

(4) ☞ इल्म के मुआ़मले में एक दूसरे की ख़ैर ख़्वाही चाहो क्यूं कि तुम में से किसी का अपने इल्म में ख़ियानत करना अपने माल में ख़ियानत करने से ज़ियादा सख़्त है और **अल्लाह** पाक तुम से इस के बारे में ज़रूर पूछगछ फ़रमाएगा।[4]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب!　　صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

मआख़िज़ो मराजेअ़

القرآن الکریم	کلام باری تعالی	*****
ترجمہ قرآن و کتب تفسیر		
نام کتاب	**مصنف / مؤلف**	**مطبوعہ**
ترجمۂ کنز العرفان	مفتی محمد قاسم عطاری	مکتبۃ المدینہ
تفسیر طبری	امام ابو جعفر محمد بن جریر طبری، متوفی ۳۱۰ھ	دار الکتب العلمیۃ 2009ء
تفسیر بغوی	امام محی السنۃ ابو محمد حسین بن مسعود بغوی، متوفی ۵۱۶ھ	
تفسیر کبیر	امام فخر الدین محمد بن عمر بن حسین رازی، متوفی ۶۰۶ھ	دار احیاء التراث العربی ۱۴۲۹ھ
تفسیر قرطبی	ابو عبد اللہ محمد بن احمد انصاری قرطبی، متوفی ۶۷۱ھ	دار الفکر بیروت 2008ء
تفسیر بیضاوی	ناصر الدین عبد اللہ بن عمر بن محمد شیرازی، متوفی ۶۸۵ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
تفسیر مدارک	امام عبد اللہ بن احمد بن محمود نسفی، متوفی ۷۱۰ھ	دار ابن کثیر بیروت 2013ء

1 ... ابن ماجہ، ابواب الطہارۃ، باب من سئل من علم فکتمہ، ص56، حدیث: 264

2 ... ابن ماجہ، ابواب الطہارۃ، باب من سئل من علم فکتمہ، ص55، حدیث: 264

3 ... معجم اوسط، 204/1، حدیث: 689

4 ... معجم کبیر، 367/5، حدیث: 11536

تفسیر خازن	علاء الدین علی بن محمد بغدادی، متوفی ۷۴۱ھ	دار الکتب العلمیۃ 2008ء
تفسیر بحر محیط	ابو حیان محمد بن یوسف اندلسی، متوفی ۷۴۵ھ	دار احیاء التراث العربی
تفسیر الجلالین مع حاشیۃ انوار الحرمین	امام جلال الدین محلی الشافعی، متوفی ۸۶۴ھ / امام جلال الدین عبد الرحمن بن ابو بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	مکتبۃ المدینہ
الدر المنثور	امام جلال الدین عبد الرحمن بن ابو بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۳۲ھ
تفسیر ابی سعود	علامہ ابو سعود محمد بن مصطفی عمادی، متوفی ۹۸۲ھ	دار الکتب العلمیۃ 2010ء
تفسیر روح البیان	شیخ اسماعیل حقی بن مصطفی حنفی بروسی، متوفی ۱۱۳۷ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۳۰ھ
حاشیۃ الصاوی علی الجلالین	علامہ احمد بن محمد صاوی مالکی، متوفی ۱۲۴۱ھ	
خزائن العرفان	مفتی سید محمد نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ
تفسیر نعیمی	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	
صراط الجنان	مفتی محمد قاسم عطاری مد ظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ
	کتب حدیث	
مؤطا امام مالک	امام ابو عبد اللہ مالک بن انس بن مالک، متوفی ۱۷۹ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۳۳ھ
الزھد لابن المبارک	امام عبد اللہ بن المبارک مرزوی، متوفی ۱۸۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۵ھ
المسند	امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۹ھ
سنن دارمی	امام حافظ عبد اللہ بن عبد الرحمن دارمی، متوفی ۲۵۵ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
صحیح بخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۸ھ
صحیح مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دار الکتب العلمیۃ 2008ء
سنن ابن ماجۃ	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ	دار الکتب العلمیۃ 2009ء
سنن ابی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۸ھ
مسند البزار	امام ابو بکر احمد عمرو بن عبد الرزاق بزار، متوفی ۲۹۲ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۳۰ھ
سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۹۷ھ	دار الکتب العلمیۃ 2008ء

سنن نسائی	امام ابو عبد الرحمن احمد بن شعیب نسائی، متوفی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیۃ 2009ء
مسند ابی یعلی	حافظ ابو یعلی احمد بن علی تمیمی، متوفی ۳۰۷ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۲ھ
صحیح ابن خزیمہ	امام محمد بن اسحاق بن خزیمہ، متوفی ۳۱۱ھ	مکتبۃ الاعظمی الریاض ۱۴۳۰ھ
نوادر الاصول	امام ابو عبد اللہ محمد بن علی الحکیم ترمذی، متوفی ۳۲۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۳ھ
صحیح ابن حبان	امام ابو حاتم محمد بن حبان بن احمد تمیمی، متوفی ۳۵۴ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۵ھ
المعجم الاوسط	امام ابو قاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار الفکر عمان ۱۴۲۰ھ
المعجم الکبیر	امام ابو قاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیۃ 2007ء
المعجم الصغیر	امام ابو قاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۳۴ھ
المستدرک	امام ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ۴۰۵ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۷ھ
شعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۹ھ
السنن الکبری	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مسند الفردوس	ابو شجاع شیرویہ بن شہردار دیلمی، متوفی ۵۰۹ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۰۷ھ
شرح السنۃ	امام محی السنۃ ابو محمد حسین بن مسعود بغوی، متوفی ۵۱۶ھ	دار الفکر بیروت 2012ء
الترغیب والترہیب	امام زکی الدین عبد العظیم بن عبد القوی منذری، متوفی ۶۵۶ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۹ھ
مشکاۃ المصابیح	شیخ ولی الدین ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ تبریزی، متوفی ۷۴۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۸ھ
مجمع الزوائد	حافظ ابو الحسن نور الدین علی بن ابو بکر ہیثمی، متوفی ۸۰۷ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۲ھ
جامع صغیر	امام جلال الدین عبد الرحمن بن ابو بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۳۳ھ
جمع الجوامع	امام جلال الدین عبد الرحمن بن ابو بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
کنز العمال	علاء الدین علی متقی بن حسام الدین ہندی، متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۴ھ
کشف الخفاء	شیخ اسماعیل بن محمد عجلونی، متوفی ۱۱۶۲ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۲ھ
کتب شروح حدیث		
شرح النووی علی المسلم	امام محی الدین ابو زکریا یحیی بن شرف نووی، متوفی ۶۷۶ھ	دار السلام الریاض ۱۴۳۱ھ

عمدۃ القاری	علامہ بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد عینی، متوفی ۸۵۵ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۶ھ
مرقاۃ المفاتیح	شیخ ابو الحسن علی بن سلطان محمد قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	دار الکتب العلمیہ 2007ء
فیض القدیر	امام محمد عبد الرؤف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	دار الکتب العلمیۃ2006ء
اشعۃ اللمعات	شیخ محقق عبد الحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	
مرآۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	
نزہۃ القاری	مفتی محمد شریف الحق امجدی، متوفی ۱۴۲۰ھ	
فیوض الباری	علامہ سید محمود احمد رضوی	
کتب فقہ		
ہدایہ	برہان الدین علی بن ابی بکر مرغینانی، متوفی ۵۹۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
کنز الدقائق	امام ابو البرکات حافظ الدین عبد اللہ بن احمد نسفی، متوفی ۷۱۰ھ	
عنایہ	امام اکمل الدین محمد بن محمود بابرتی، متوفی ۷۸۶ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۳۸ھ
فتاوی تاتارخانیۃ	علامہ عالم بن علاء انصاری دہلوی، متوفی ۷۸۶ھ	الہند ۱۴۳۱
الجوہرۃ النیرۃ	علامہ ابو بکر بن علی حداد، متوفی ۸۰۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۷ھ
غنیۃ المتملی	علامہ ابراہیم بن محمد حلبی، متوفی ۹۵۶ھ	
البحر الرائق	علامہ ابن نجیم زین الدین بن ابراہیم، متوفی ۹۷۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۳۴ھ
نور الایضاح	حسن بن عمار علی الوفائی الشرنبلالی الحنفی، متوفی ۱۰۴۹ھ	مکتبۃ المدینہ
الدر المختار	محمد بن علی المعروف بعلاء الدین حصکفی، متوفی ۱۰۸۸ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۳ھ
فتاوی ہندیۃ	علامہ ہمام مولانا شیخ نظام و جماعۃ من علماء الہند، متوفی ۱۱۶۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
حاشیۃ الطحطاوی علی مراقی الفلاح	سید احمد بن محمد بن اسماعیل طحطاوی، متوفی ۱۲۳۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۸ھ
رد المحتار	محمد امین ابن عابدین شامی، متوفی ۱۲۵۲ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۸ھ
فتاوی رضویہ	اعلی حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن

بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ
سنی بہشتی زیور	مفتی محمد خلیل خان قادری برکاتی، متوفی ۱۴۰۵ھ	
فتاوی اجملیہ	مفتی محمد اجمل قادری رضوی، متوفی ۱۳۸۳ھ	
وضو کا طریقہ	امیر اہلسنّت ابوبِلال محمد الیاس عطّار قادِری	مکتبۃ المدینہ
فیضان اذان	امیر اہلسنّت ابوبِلال محمد الیاس عطّار قادِری	مکتبۃ المدینہ
نماز کے احکام	امیر اہلسنّت ابوبِلال محمد الیاس عطّار قادِری	مکتبۃ المدینہ
غسل کا طریقہ	امیر اہلسنّت ابوبِلال محمد الیاس عطّار قادِری	مکتبۃ المدینہ
	کتب تصوف	
قرۃ العیون	فقیہ ابو اللیث نصر بن محمد سمرقندی، متوفی ۳۷۳ھ	دار احیاء التراث العربی ۱۴۱۶ھ
تنبیہ الغافلین	فقیہ ابو اللیث نصر بن محمد سمرقندی، متوفی ۳۷۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۳۰ھ
احیاء العلوم	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی شافعی، متوفی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیۃ 2008ء
منہاج العابدین	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی شافعی، متوفی ۵۰۵ھ	
مکاشفۃ القلوب	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی شافعی، متوفی ۵۰۵ھ	
نزہۃ المجالس	علامہ عبد الرحمن بن عبد السلام الصفوری، متوفی ۸۹۴ھ	المکتب الثقافی ۱۴۲۵ھ
شواہد النبوۃ	امام عبد الرحمٰن بن احمد الجامی، متوفی ۸۹۸ھ	مکتبۃ الحقیقۃ ترکی ۱۴۳۱ھ
تنبیہ المغترین	عبد الوہاب بن احمد، متوفی ۹۷۳ھ	دار الکتب العلمیۃ 2003ء
الزواجر عن اقتراف الکبائر	شہاب الدین احمد بن محمد بن حجر ہیتمی، متوفی ۹۷۴ھ	دار الحدیث القاہرہ ۱۴۲۳ھ
الحدیقۃ الندیۃ	عارف باللہ سیدی عبد الغنی نابلسی، متوفی ۱۱۴۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۳۲ھ
بریقۃ محمدیۃ	ابو سعید محمد بن محمد بن مصطفٰی الخادمی، متوفی ۱۱۵۶ھ	
	کتب تاریخ، سیرت و رجال	
السیرۃ النبویۃ	ابو محمد عبد الملک بن ہشام، متوفی ۲۱۳ھ	دار الفجر للتراث القاہرہ ۱۴۲۵ھ
طبقات ابن سعد	امام محمد بن سعد البصری، متوفی ۲۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ 2012ء
الشمائل المحمدیۃ	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار الیسر السعودیہ ۱۴۲۸ھ

حلیۃ الاولیاء	امام ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی، متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ 2007ء
تاریخ بغداد	حافظ ابو بکر علی بن احمد خطیب بغدادی، متوفی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۷ھ
تاریخ ابن عساکر	ابو القاسم علی بن حسن ابن عساکر شافعی، متوفی ۵۷۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۷ھ
الخصائص الکبری	امام جلال الدین عبد الرحمٰن بن ابو بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ 2008ء
وسائل الوصول الی الشمائل الرسول	علامہ محمد یوسف بن اسماعیل نبہانی، متوفی ۱۳۵۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۲۰۰۹ھ
	متفرق	
کتاب العظمۃ	ابو محمد عبد اللہ بن محمد المعروف بابی الشیخ اصبہانی، متوفی ۳۶۹ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۴ھ
مفردات الفاظ القرآن	علامہ راغب اصفہانی، متوفی ۴۲۵ھ	المکتبۃ العصریۃ ۱۴۳۶ھ
المقدمۃ الجزریۃ	محمد بن محمد بن یوسف ابن الجزری، متوفی ۸۳۳ھ	دار نور جدۃ ۱۴۲۷
الحصن الحصین	ابو الخیر محمد بن محمد بن محمد الجزری، متوفی ۸۳۳ھ	المکتبۃ العصریۃ ۱۴۲۵ھ
المنح الفکریۃ شرح مقدمۃ الجزریۃ	شیخ ابو الحسن علی بن سلطان محمد قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	مطبعۃ مصطفی البابی الحلبی بمصر ۱۳۶۷
جہنم کے خطرات	شیخ الحدیث علامہ عبد المصطفی اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ
فیضانِ بسم اللہ	امیر اہلسنّت ابو بلال محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ
سنتیں اور آداب	امیر اہلسنّت ابو بلال محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ
فیضانِ نماز	امیر اہلسنّت ابو بلال محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ
163 مدنی پھول	امیر اہلسنّت ابو بلال محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ
بد شگونی	المدینۃ العلمیۃ شعبہ اصلاحی کتب	مکتبۃ المدینہ
اسلام کی بنیادی باتیں	المدینۃ العلمیۃ شعبہ اصلاحی کتب	مکتبۃ المدینہ
قبر میں آنے والا دوست	المدینۃ العلمیۃ شعبہ اصلاحی کتب	مکتبۃ المدینہ
تکبر	المدینۃ العلمیۃ شعبہ اصلاحی کتب	مکتبۃ المدینہ

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
इज्माली फ़ेह्‌रिस्त	5	कु़रआन ज़ियादा पढ़ने की कोशिश में ग़लत़ मत पढ़िये	21
किताब पढ़ने की निय्यतें	6	(4) सुन्नतें व आदाब	
अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का तआ़रुफ़	7	(सलाम करने की सुन्नतें व आदाब)	21
पहले इसे पढ़िये	9	(5) इस्लाहे़ आ'माल	
इज्तिमाई़ जाएज़े का त़रीक़ा (72 नेक आ'माल)	12	(बिस्मिल्लाह से मुतअ़ल्लिक़ अहम मा'लूमात)	22
यौमिय्या 56 नेक आ'माल	12	बिस्मिल्लाह शरीफ़ की बरकत	22
कुफ़्ले मदीना कारकर्दगी	13	बिस्मिल्लाह दुरुस्त पढ़िये	23
हफ़्तावार 9 दीनी काम	13	बिस्मिल्लाह कीजिये कहना मम्नूअ़ है	23
मद्रसतुल मदीना इस्लामी भाइयों के लिये टाइम टेबल	13	**सबक़ नम्बर 2**	24
तज्वीद की अहम्मिय्यत	14	(1) मदनी क़ाइ़दा (हु़रूफे़ लिसविय्यह का मख़रज)	24
इ़ल्मे तज्वीद की ता'रीफ़	14	हु़रूफे़ मुफ़्रिदात : हि़स्सए अव्वल	24
कु़रआने करीम दुरुस्त पढ़ने की अहम्मिय्यत	14	(2) तफ़्सीरे कु़रआन (बिस्मिल्लाह के मुतअ़ल्लिक़	
दुरुस्त कु़रआन पढ़ने पर मुश्तमिल		चन्द शरई़ अह़काम)	25
अह़ादीसे मुबारका	15	(3) नमाज़ के अह़काम	
इ़ल्मे तज्वीद के मुतअ़ल्लिक़ उ़लमा के अक़्वाल	15	(नमाज़ की फ़र्ज़िय्यत व अहम्मिय्यत)	26
कितनी तज्वीद सीखना फ़र्ज़ है ?	16	नमाज़ किस पर फ़र्ज़ है ?	26
कु़रआने करीम तज्वीद से न पढ़ने का नुक़्सान	16	नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ चन्द आयाते मुबारका	27
सबक़ नम्बर 1	18	नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ दो अह़ादीसे मुबारका	27
(1) मदनी क़ाइ़दा (हु़रूफे़ ह़ल्क़ी)	18	(4) सुन्नतें व आदाब	
(2) तफ़्सीरे कु़रआन		(सलाम करने की सुन्नतें व आदाब)	29
(तस्मिया की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत)	19	(5) इस्लाहे़ आ'माल	
(3) नमाज़ के अह़काम (नबिय्ये करीम की क़िराअत)	20	(नमाज़ छोड़ने की मज़म्मत)	29
प्यारे आक़ा की क़िराअत	21	तर्के नमाज़ की मज़म्मत पर अह़ादीसे मुबारका	30

सबक़ नम्बर 3	31	चोर भी अगर सहीह नमाज़ पढ़े तो सुधर सकता है	41
(1) मदनी क़ाइदा (हुरूफ़े सफ़ीरिया और हर्फ़े हाफ़िया के मख़ारिज)	31	(4) सुन्नतें व आदाब (बातचीत करने की सुन्नतें व आदाब)	42
हुरूफ़े मुफ़्रिदात : हिस्सए दुवुम	31	(5) इस्लाहे आ'माल (कुरआनो सुन्नत के ख़िलाफ़ फ़ैसला करना)	42
(2) तफ़्सीरे कुरआन (तिलावत के आदाब)	33		
तिलावते कुरआन के ज़ाहिरी आदाब	33	**सबक़ नम्बर 5**	43
(3) नमाज़ के अहकाम (नमाज़ के फ़ज़ाइल)	34	(1) मदनी क़ाइदा (मुरक्कबात का तआरुफ़ व पहचान)	44
नमाज़ जन्नत की चाबी है	34	(2) तफ़्सीरे कुरआन (वुज़ू के मुतअ़ल्लिक़ चन्द अहकाम)	45
नमाज़ नूर है	34	(3) नमाज़ के अहकाम (वुज़ू के मसाइल)	46
नमाज़ नूर होने का मतलब	34	वुज़ू के फ़राइज़	46
नमाज़ दीन का सुतून है	34	धोने की ता'रीफ़	46
(4) सुन्नतें व आदाब (बातचीत करने की सुन्नतें व आदाब)	35	वुज़ू में पानी का इसराफ़	46
		इसराफ़ की मज़म्मत में अहादीसे मुबारका	46
(5) इस्लाहे आ'माल (पाक दामन औरतों पर ज़िना की तोहमत)	35	(4) सुन्नतें व आदाब (घर में आने जाने की सुन्नतें व आदाब)	47
तोहमते ज़िना की सज़ा से मुतअ़ल्लिक़ चन्द शरई अहकाम	36	(5) इस्लाहे आ'माल (मर्द व औरत का एक दूसरे की मुशाबहत करना)	48
सबक़ नम्बर 4	**38**		
(1) मदनी क़ाइदा (हुरूफ़े लहविय्या और शफ़विय्या के मख़ारिज)	38	मर्दाना औरतें जन्नत में दाख़िल न होंगी	49
		ला'नत के मुस्तहिक़	49
हुरूफ़े मुफ़्रिदात : हिस्सए सिवुम	38	ज़नानी वज़्अ़ वाले को जला वतन कर दिया	49
(2) तफ़्सीरे कुरआन (फ़ज़ाइले नमाज़)	39	मर्दों का बाल बढ़ाना कैसा ?	50
(3) नमाज़ के अहकाम (नमाज़ बुरे कामों से रोकती है)	41	**सबक़ नम्बर 6**	50
सहीह नमाज़ ही बुराइयों से बचाती है	41	(1) मदनी क़ाइदा (हरकात का बयान)	51
नमाज़ी की इस्लाह हो ही गई	41	(2) तफ़्सीरे कुरआन (दूसरों के घरों में दाख़िले के अहकाम)	52

(3) नमाज़ के अह्काम (वुज़ू का त़रीक़ा और माए मुस्ता'मल)	53	**सबक़ नम्बर 8**	**66**
वुज़ू का त़रीक़ा (हनफ़ी)	53	(1) मदनी क़ाइदा (दोहराई अव्वल)	66
मुस्ता'मल पानी किसे कहते हैं ?	55	(2) तफ़्सीरे क़ुरआन	
मुस्ता'मल पानी का अहम मस्अला	55	(नापाकी की ह़ालत में नमाज़ के क़रीब न जाओ)	67
(4) सुन्नतें व आदाब (घर में आने जाने की सुन्नतें व आदाब)	55	नमाज़ के लिये पाकी ज़रूरी है	68
(5) इस्लाहे़ आ'माल (एह़सान जतलाने की मज़म्मत)	56	त़हारत की क़िस्में	68
जन्नत से मह़रूमी का सबब	57	जुनुबी शख़्स के अह़काम	68
नुक़्सान उठाने वाले अफ़राद	57	(3) नमाज़ के अह़काम (वुज़ू तोड़ने वाली चीज़ें)	69
सबक़ नम्बर 7	58	(4) सुन्नतें व आदाब	
(1) मदनी क़ाइदा (तन्वीन का बयान)	58	(तेल डालने व कंघा करने की सुन्नतें व आदाब)	71
(2) तफ़्सीरे क़ुरआन (**अल्लाह** पाक की		(5) इस्लाहे़ आ'माल	
तस्बीहो़ तह़मीद करने का बयान)	59	(लोगों के ऐब व ख़ुफ़्या बातें जानने की मज़म्मत)	72
अल्लाह की ह़म्दो सना और तस्बीह़ बयान करने के फ़ज़ाइल	60	मह़शर की रुस्वाई का सबब	72
नमाज़ के लिये येह पांच अवक़ात		कुत्तों की शक्ल में ह़श्र	73
मुक़र्रर फ़रमाए जाने की ह़िक्मत	61	कानों में पिघला हुवा सीसा	73
(3) नमाज़ के अह़काम (वुज़ू तोड़ने वाली चीज़ें)	61	मुसल्मान मुसल्मान का भाई है	73
(4) सुन्नतें व आदाब (सुरमा लगाने की सुन्नतें व आदाब)	63	**सबक़ नम्बर 9**	**74**
सोते वक़्त सुरमा डालना सुन्नत है	63	(1) मदनी क़ाइदा (ह़ुरूफ़े मद्दा)	74
सुरमा लगाने का त़रीक़ा	63	(2) तफ़्सीरे क़ुरआन (फ़ख़्रो रियाकारी की	
(5) इस्लाहे़ आ'माल		निय्यत से मस्जिदें ता'मीर करने की मज़म्मत)	75
(मुसल्मानों को अज़िय्यत देने की मज़म्मत)	64	(3) नमाज़ के अह़काम (ग़ुस्ल के फ़राइज़ व त़रीक़ा)	76
लोगों को तक्लीफ़ देने वाला मल्ऊ़न है	65	ग़ुस्ल के फ़राइज़	76
लोगों को तक्लीफ़ देने वाले का अ़ज़ाब	65	(1)... कुल्ली करना	76
ख़ारिश मुसल्लत़ कर दी जाएगी	66	(2)... नाक में पानी चढ़ाना	76

(3)... तमाम ज़ाहिरी बदन पर पानी बहाना	77
(4) सुन्नतें व आदाब (तेल डालने व कंघा करने की सुन्नतें व आदाब)	78
(5) इस्लाहे़ आ'माल (ला'नत भेजने की मज़म्मत)	79
सबक़ नम्बर 10	**80**
(1) मदनी क़ाइदा (हुरूफ़े लीन)	81
(2) अज़्कारे नमाज़ (सना)	81
(3) तफ़्सीरे क़ुरआन (तक़्वे की बुन्याद पर रखी गई मस्जिद के फ़ज़ाइल)	81
(4) नमाज़ के अह़काम (ग़ुस्ल का त़रीक़ा)	83
ग़ुस्ल की चन्द एह़तियातें	83
(5) सुन्नतें व आदाब (खाना खाने की सुन्नतें व आदाब)	84
(6) इस्लाहे़ आ'माल (निस्बत की बरकत)	85
बा कमाल रूमाल	85
सबक़ नम्बर 11	**86**
(1) मदनी क़ाइदा (खड़ी ह़रकात)	87
(2) अज़्कारे नमाज़ (तअ़व्वुज़ व तस्मिया)	88
(3) तफ़्सीरे क़ुरआन (त़हारत की अहम्मिय्यत)	88
अल्लाह पाक साफ़ सुथरे लोगों को पसन्द फ़रमाता है	88
इस्लाम में सफ़ाई की अहम्मिय्यत	88
(4) नमाज़ के अह़काम (ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने के अस्बाब)	89
ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने के मुतअ़ल्लिक़ ज़रूरी अह़काम	90
(5) सुन्नतें व आदाब (खाना खाने की सुन्नतें व आदाब)	90
(6) इस्लाहे़ आ'माल (बद शुगूनी का बयान)	91
मन्हूस कौन ?	91
क्या कोई शख़्स मन्हूस हो सकता है ?	93
सबक़ नम्बर 12	**94**
(1) मदनी क़ाइदा (जज़्म व सुकून)	94
(2) अज़्कारे नमाज़ (सूरतुल फ़ातिह़ा : आयत 1 ता 3)	95
(3) तफ़्सीरे क़ुरआन (तयम्मुम का बयान)	95
(4) नमाज़ के अह़काम (तयम्मुम के फ़राइज़ व त़रीक़ा)	96
(5) सुन्नतें व आदाब (जमाही के मदनी फूल)	97
(6) इस्लाहे़ आ'माल (अच्छे व बुरे शुगून का बयान)	98
शुगून किसे कहते हैं	98
शुगून की क़िस्में	98
अच्छे व बुरे शुगून की मिसालें	99
सबक़ नम्बर 13	**100**
(1) मदनी क़ाइदा (हुरूफ़े क़ल्क़ला)	100
(2) अज़्कारे नमाज़ (सूरतुल फ़ातिह़ा : आयत 1 ता 5)	100
(3) तफ़्सीरे क़ुरआन (नमाज़ पढ़ने का हुक्म)	100
नेकियां सग़ीरा गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा होती हैं	102
(4) नमाज़ के अह़काम (तयम्मुम के चन्द अहम मसाइल)	102

(5) सुन्नतें व आदाब (पानी पीने की सुन्नतें व आदाब)	104	(5) सुन्नतें व आदाब (जूता पहनने की सुन्नतें व आदाब)	116
		(6) इस्लाहे आ'माल (कीने के नुक़्सानात)	117
(6) इस्लाहे आ'माल (इस्लाम में बद शुगूनी नहीं)	104	**सबक़ नम्बर 16**	119
सबक़ नम्बर 14	106	(1) मदनी क़ाइदा (नून साकिन और तन्वीन इज़्हार, इख़्फ़ा)	119
(1) मदनी क़ाइदा (दोहराई सानी)	106		
(2) अज़्कारे नमाज़ (सूरतुल फ़ातिहा : आयत 1 ता 7)	107	(2) अज़्कारे नमाज़ (सूरतुल इख़्लास : आयत 1 ता 4)	120
(3) तफ़्सीरे कुरआन (नमाज़ों के अवक़ात)	108	(3) तफ़्सीरे कुरआन (दिखावे के लिये नमाज़ पढ़ना)	120
(4) नमाज़ के अह्काम (नमाज़ की शराइत़)	108	रियाकारी की ता'रीफ़ और इस की मज़म्मत	121
त़हारत	109	(4) नमाज़ के अह्काम (नमाज़ की शराइत़)	122
सत्रे औरत	109	निय्यत	122
(5) सुन्नतें व आदाब (लिबास पहनने की सुन्नतें व आदाब)	109	तक्बीरे तह़रीमा	123
		(5) सुन्नतें व आदाब (छींकने की सुन्नतें व आदाब)	123
(6) इस्लाहे आ'माल (कीने का बयान)	111	(6) इस्लाहे आ'माल (बुग़्ज़े सहाबा का अन्जाम)	125
कीना किसे कहते हैं ?	111	**सबक़ नम्बर 17**	126
कीने का शरई हुक्म	111	(1) मदनी क़ाइदा (नून साकिन और तन्वीन इदग़ाम, इक़्लाब)	126
सबक़ नम्बर 15	112		
(1) मदनी क़ाइदा (तश्दीद)	112	(2) अज़्कारे नमाज़ (तस्बीहाते रुकूअ़ व सुजूद)	127
(2) अज़्कारे नमाज़ (सूरतुल इख़्लास : आयत 1 ता 2)	113	(3) तफ़्सीरे कुरआन (मुसीबत के वक़्त क्या करना चाहिये ?)	128
(3) तफ़्सीरे कुरआन (तहज्जुद के फ़ज़ाइल)	113		
तहज्जुद के चार हुरूफ़ की निस्बत से 4 फ़ज़ाइल	114	(4) नमाज़ के अह्काम (नमाज़ के फ़राइज़)	130
(4) नमाज़ के अह्काम (नमाज़ की शराइत़)	115	तक्बीरे तह़रीमा	130
इस्तिक़्बाले क़िब्ला	115	क़ियाम	130
वक़्त	116	(5) सुन्नतें व आदाब (छींकने की सुन्नतें व आदाब)	131
तीन अवक़ाते मक्रूहा	116	(6) इस्लाहे आ'माल (अच्छा कौन और बुरा कौन ?)	132

सबक़ नम्बर 18	134	सर में ख़ुश्बू लगाना सुन्नत है	146
(1) मदनी क़ाइदा (मद्दात)	134	(6) इस्लाहे आ'माल (तकब्बुर के नुक़्सानात)	146
(2) अज़्कारे नमाज़ (दोहराई अव्वल)	134	**सबक़ नम्बर 20**	148
(3) तफ़्सीरे क़ुरआन (नमाज़ ह़िर्स से बचाती है)	134	(1) मदनी क़ाइदा (वक़्फ़)	148
ह़िर्स और हवस से बचने का ज़रीआ़	136	नून क़ुत्नी	149
(4) नमाज़ के अह़काम (नमाज़ के फ़राइज़)	136	(2) अज़्कारे नमाज़ (तशह्हुद ह़िस्सए दुवुम)	149
क़िराअत	136	(3) तफ़्सीरे क़ुरआन (नमाज़ में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़)	149
(5) सुन्नतें व आदाब (नाख़ुन तराशने की सुन्नतें व आदाब)	138	(4) नमाज़ के अह़काम (नमाज़ के फ़राइज़)	151
		क़ा'दए अख़ीरा	151
हाथों के नाख़ुन तराशने का त़रीक़ा	138	ख़ुरूजे बिसुन्इही	151
पाउं के नाख़ुन तराशने का त़रीक़ा	139	(5) सुन्नतें व आदाब (चलने की सुन्नतें व आदाब)	151
(6) इस्लाहे आ'माल (मैं इस से बेहतर हूं)	139	(6) इस्लाहे आ'माल (तकब्बुर का इ़लाज)	152
तकब्बुर की ता'रीफ़	140	**सबक़ नम्बर 21**	154
सबक़ नम्बर 19	141	(1) मदनी क़ाइदा (वक़्फ़)	155
(1) मदनी क़ाइदा (मद्दात)	141	(2) अज़्कारे नमाज़ (तशह्हुद)	155
(2) अज़्कारे नमाज़ (तशह्हुद ह़िस्सए अव्वल)	142	(3) तफ़्सीरे क़ुरआन (लह्वो लइ़ब से बचना मोमिन की ख़ूबी है)	156
(3) तफ़्सीरे क़ुरआन (क़ुरआने पाक को नापाकी की ह़ालत में न छूएं)	142	(4) नमाज़ के अह़काम (वाजिबाते नमाज़)	158
क़ुरआने पाक छूने से मुतअ़ल्लिक़ सात अह़काम	142	(5) सुन्नतें व आदाब (सोने जागने की सुन्नतें व आदाब)	159
(4) नमाज़ के अह़काम (नमाज़ के फ़राइज़)	144		
रुकूअ़	144	(6) इस्लाहे आ'माल (ज़कात न देना)	160
सुजूद	144	ज़कात न देना माल की बरबादी का सबब	160
(5) सुन्नतें व आदाब (ख़ुश्बू लगाने की सुन्नतें व आदाब)	145	ज़कात न देना इज्तिमाई नुक़्सान का सबब	161
		ज़कात न देना ला'नत का सबब	161

सबक़ नम्बर 22	161	(2) अज़्कारे नमाज़ (दुआए मासूरा,رب اجعلنی)	176
(1) मदनी क़ाइदा (दोहराई सिवुम)	162	(3) तफ़्सीरे क़ुरआन (रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहें)	176
(2) अज़्कारे नमाज़		(4) नमाज़ के अह्काम (नमाज़ के वाजिबात)	178
(दुरूदे इब्राहीमी हिस्सए अव्वल)	163	(5) सुन्नतें व आदाब (इमामे के फ़ज़ाइल व आदाब)	178
(3) तफ़्सीरे क़ुरआन (पहली सफ़ के फ़ज़ाइल)	163	इमामे के आदाब	179
पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ने के फ़ज़ाइल	164	(6) इस्लाहे आ'माल	
(4) नमाज़ के अह्काम (नमाज़ के वाजिबात)	165	(नसब में ता'न करने की मज़म्मत)	179
(5) सुन्नतें व आदाब		इज़्ज़त व फ़ज़ीलत का मदार परहेज़ गारी	181
(मेहमान नवाज़ी की सुन्नतें व आदाब)	166	**सबक़ नम्बर 25**	181
(6) इस्लाहे आ'माल (नज़र की हिफ़ाज़त)	167	(1) मदनी क़ाइदा (सूरतुल फ़लक़ : आयत 1 ता 3)	181
सबक़ नम्बर 23	169	(2) अज़्कारे नमाज़ (दुआए मासूरा,رب اجعلنی)	182
(1) मदनी क़ाइदा (सूरतुन्नास : आयत 1 ता 3)	169	(3) तफ़्सीरे क़ुरआन (अक़्ल मन्द लोगों के काम)	182
(2) अज़्कारे नमाज़ (दुरूदे इब्राहीमी हिस्सए दुवुम)	170	काएनात में तफ़क्कुर की ज़रूरत	183
(3) तफ़्सीरे क़ुरआन		(4) नमाज़ के अह्काम (नमाज़ के मुफ़्सिदात)	183
(क़ुरआने पाक ग़ौर और ख़ामोशी से सुना जाए)	170	(5) सुन्नतें व आदाब (मरीज़ की इयादत का सवाब)	184
(4) नमाज़ के अह्काम (नमाज़ के वाजिबात)	172	(6) इस्लाहे आ'माल	
(5) सुन्नतें व आदाब (इमामे के फ़ज़ाइल)	172	(नमाज़ दुरुस्त न पढ़ने वालों के बारे में वईदात)	185
इमामे के फ़ज़ाइल पर चन्द फ़रामीने मुस्तफ़ा	172	**सबक़ नम्बर 26**	187
(6) इस्लाहे आ'माल		(1) मदनी क़ाइदा (सूरतुल फ़लक़ : आयत 1 ता 3)	187
(काहिनों और नुजूमियों के पास जाने की मुमानअ़त)	173	(2) अज़्कारे नमाज़ (दुआए मासूरा)	188
नुजूमी के पास जाने की वईदात	173	(3) तफ़्सीरे क़ुरआन	
काहिन और नुजूमी कौन ?	174	(ज़िक्र की अक़्साम व फ़ज़ाइल)	188
सबक़ नम्बर 24	175	ज़िक्र की अक़्साम	188
(1) मदनी क़ाइदा (सूरतुन्नास : आयत 1 ता 6)	175	(4) नमाज़ के अह्काम (नमाज़ के मुफ़्सिदात)	190

(5) सुन्नतें व आदाब (इयादत के फ़ज़ाइल व तरीक़ा)	191	(3) तफ़्सीरे क़ुरआन (कामिल ईमान वालों के औसाफ़)	210
(6) इस्लाहे आ'माल		कामिल ईमान वालों के तीन औसाफ़	210
(बा जमाअत नमाज़ की अहम्मिय्यत)	193	ख़ौफ़े ख़ुदा से मुतअ़ल्लिक़ आसार	211
सबक़ नम्बर 27	195	(4) नमाज़ के अह़काम	
(1) मदनी क़ाइदा (सूरतुल्लहब : आयत 1 ता 3)	195	(नमाज़ के मक्रूहाते तह़रीमिया)	211
(2) अज़्कारे नमाज़ (दुआए क़ुनूत)	195	(5) सुन्नतें व आदाब (ग़ैर ज़रूरी बाल	
(3) तफ़्सीरे क़ुरआन (तौबा की बरकात)	196	साफ़ करने से मुतअ़ल्लिक़ सुन्नतें व आदाब)	212
(4) नमाज़ के अह़काम (नमाज़ के मुफ़्सिदात)	197	(6) इस्लाहे आ'माल	
(5) सुन्नतें व आदाब		(सच्ची तौबा और इस की शराइत़)	214
(अंगूठी के मुतअ़ल्लिक़ मदनी फूल)	199	तौबा की शराइत़	214
(6) इस्लाहे आ'माल (नमाज़ की बरकात)	200	तौबा की क़बूलिय्यत कैसे मा'लूम हो ?	215
नमाज़ की नक़्ल करने वाले डाकू गिरिफ़्तारी से बच गए	200	**सबक़ नम्बर 30**	215
आ़शिक़े मजाज़ी की अ़जीब हिकायत	201	(1) मदनी क़ाइदा (सूरतुन्नस्र : 1 ता 3)	216
सबक़ नम्बर 28	202	(2) अज़्कारे नमाज़ (तस्बीहे फ़ातिमा)	216
(1) मदनी क़ाइदा (सूरतुल्लहब : आयत 1 ता 5)	202	(3) तफ़्सीरे क़ुरआन	
(2) अज़्कारे नमाज़ (दुआए क़ुनूत)	202	(शर्मगाह की हिफ़ाज़त की फ़ज़ीलत)	216
(3) तफ़्सीरे क़ुरआन (तौबा के फ़ज़ाइल)	203	शर्मगाह की हिफ़ाज़त करने की फ़ज़ीलत	217
(4) नमाज़ के अह़काम		(4) नमाज़ के अह़काम (नमाज़ के मक्रूहाते तह़रीमिया)	217
(नमाज़ के मक्रूहाते तह़रीमिया)	204	(5) सुन्नतें व आदाब	
(5) सुन्नतें व आदाब (अंगूठी पहनने की सुन्नतें व आदाब)	205	(मुसाफ़ह़ा व मुआ़नक़ा की सुन्नतें व आदाब)	218
(6) इस्लाहे आ'माल (नमाज़ से गुनाह मुआफ़ होते हैं)	207	(6) इस्लाहे आ'माल (सह़ाबिये रसूल का अदबे रसूल)	220
सबक़ नम्बर 29	208	**सबक़ नम्बर 31**	221
(1) मदनी क़ाइदा (सूरतुन्नस्र : आयत 1 ता 2)	209	(1) मदनी क़ाइदा (चौथी दोहराई)	221
(2) अज़्कारे नमाज़ (दुआए क़ुनूत)	209	(2) अज़्कारे नमाज़ (سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ)	221

(3) तफ़्सीरे कुरआन (ज़ियादा गुमान करने की मुमानअ़त)	221	(2) अज़्कारे नमाज़ (आयतुल कुरसी)	234
गुमान की अक़्साम और उन का शरई हुक्म	222	(3) तफ़्सीरे कुरआन (सच्चाई की फ़ज़ीलत व झूट की मज़म्मत)	235
(4) नमाज़ के अह़काम (नमाज़ के मक्रूहाते तह़रीमिया)	223	सच्चाई की फ़ज़ीलत और झूट की मज़म्मत	235
(5) सुन्नतें व आदाब (मुसाफ़ह़ा व मुआ़नक़ा की सुन्नतें व आदाब)	224	(4) नमाज़ के अह़काम (सज्दए सह्व का त़रीक़ा व अह़काम)	236
(6) इस्लाहे़ आ'माल (अकेले नमाज़ पढ़ना)	225	सज्दए सह्व का त़रीक़ा	236
सबक़ नम्बर 32	227	(5) सुन्नतें व आदाब (सफ़र की सुन्नतें व आदाब)	237
(1) मदनी क़ाइदा (सूरतुल काफ़िरून : आयत 1 ता 3)	227	(6) इस्लाहे़ आ'माल (शराब पीने की मज़म्मत)	238
(2) अज़्कारे नमाज़ (दूसरी दोहराई)	227	**सबक़ नम्बर 34**	240
(3) तफ़्सीरे कुरआन (मुसल्मानों के ऐ़ब तलाश न करो)	228	(1) मदनी क़ाइदा (सूरतुल कौसर)	241
मुसल्मानों के ऐ़ब तलाश करने की मुमानअ़त	228	(2) अज़्कारे नमाज़ (आयतुल कुरसी)	241
ऐ़ब छुपाने के फ़ज़ाइल	229	(3) तफ़्सीरे कुरआन (बा जमाअ़त नमाज़ के फ़ज़ाइल व अहम्मिय्यत)	241
(4) नमाज़ के अह़काम (सज्दए सह्व के अह़काम)	229	(4) नमाज़ के अह़काम (तर्के जमाअ़त के आ'ज़ार)	243
(5) सुन्नतें व आदाब (सफ़र की सुन्नतें व आदाब)	230	(5) सुन्नतें व आदाब (ज़ेबो ज़ीनत के मुतअ़ल्लिक़ मदनी फूल)	244
(6) इस्लाहे़ आ'माल (बिला उ़ज़्र माहे रमज़ान का रोज़ा छोड़ना)	232	(6) इस्लाहे़ आ'माल (चोरी की मज़म्मत)	245
एक रोज़ा छोड़ने का नुक़्सान	232	चोर की मज़म्मत में चन्द फ़रामीने मुस्त़फ़ा	246
तीन बद बख़्त	232	चोर के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ अह़काम	246
टख़्नों की रगों से बंधे हुए लोग	233	**सबक़ नम्बर 35**	247
सबक़ नम्बर 33	234	(1) मदनी क़ाइदा (सूरतुल माऊ़न : 1 ता 4)	247
		(2) अज़्कारे नमाज़ (आयतुल कुरसी)	248
(1) मदनी क़ाइदा (सूरतुल काफ़िरून : आयत 1 ता 6)	234	(3) तफ़्सीरे कुरआन (नाम बिगाड़ना जाइज़ नहीं)	248

(4) नमाज़ के अहकाम (नमाज़ी के आगे से गुज़रने के अहकाम)	249	(4) नमाज़ के अहकाम (मुसाफ़िर की नमाज़ के अहकाम)	262
नमाज़ी के आगे से गुज़रने का त़रीक़ा	251	शरई सफ़र की मसाफ़त	263
(5) सुन्नतें व आदाब (बैठने की सुन्नतें व आदाब)	251	मुसाफ़िर कब होगा	263
(6) इस्लाहे आ'माल (ख़ुदकुशी की मज़म्मत)	252	मुसाफ़िर बनने के लिये शर्त	263
सबक़ नम्बर 36	254	वत़न की क़िस्में	264
(1) मदनी क़ाइदा (सूरतुल माऊ़न : 1 ता 7)	254	(5) सुन्नतें व आदाब (ज़ियारते क़ुबूर की सुन्नतें व आदाब)	264
(2) अज़्कारे नमाज़ (बालिग़ मर्द व औ़रत की नमाज़े जनाज़ा की दुआ़)	255	(6) इस्लाहे आ'माल (क़ब्र में आ'माल ही काम आएंगे)	265
(3) तफ़्सीरे क़ुरआन (नमाज़े क़स्र का हुक्म व चन्द मसाइल)	255	**सबक़ नम्बर 38**	267
		(1) मदनी क़ाइदा (सूरतुल फ़ील : आयत 1 ता 5)	267
नमाज़े क़स्र के बारे में 4 मसाइल	255	(2) अज़्कारे नमाज़ (ना बालिग़ लड़की के जनाज़े की दुआ़)	268
(4) नमाज़ के अहकाम (नमाज़े जनाज़ा के अहकाम व त़रीक़ा)	256		
नमाज़े जनाज़ा के रुक्न और सुन्नतें	257	(3) तफ़्सीरे क़ुरआन (4 शैत़ानी काम)	268
नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा (हनफ़ी)	257	(4) नमाज़ के अहकाम (मुसाफ़िर की नमाज़ के अहकाम)	270
(5) सुन्नतें व आदाब (मस्जिद के आदाब)	257		
(6) इस्लाहे आ'माल (अज़ान व जवाबे अज़ान के फ़ज़ाइल)	258	(5) सुन्नतें व आदाब (ज़ुल्फ़ें रखने की सुन्नतें व आदाब)	271
		(6) इस्लाहे आ'माल (दुन्यावी इ़ल्म सीखना और इ़ल्म को छुपाना)	273
अज़ान का जवाब देने की फ़ज़ीलत	259		
सबक़ नम्बर 37	260	दुन्यावी इ़ल्म का हुसूल	273
(1) मदनी क़ाइदा (सूरए क़ुरैश : आयत 1 ता 4)	261	हुस्ने निय्यत से दुन्यवी उ़लूम का हुसूल बाइ़से सवाब	273
(2) अज़्कारे नमाज़ (ना बालिग़ लड़के के जनाज़े की दुआ़)	261	इ़ल्म छुपाना गुनाह है	274
		अहादीसे मुबारका में इ़ल्म छुपाने की मज़म्मत	274
(3) तफ़्सीरे क़ुरआन (गुनाहों को नेकियों में बदलने वाले आ'माल)	261	मआख़िज़ो मराजेअ़	275
		तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	281

आदाबे मस्जिद के 41 मदनी फूल

ऐने मस्जिद की ता'रीफ़ : ज़मीन का वोह हिस्सा जो नमाज़ के लिये वक़्फ़ किया गया हो मस्जिद के हक़ीक़ी मा'ना येही हैं।[1]

फ़िनाए मस्जिद की ता'रीफ़ : सदरुश्शरीअ़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी साहिब رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं : फ़िनाए मस्जिद जो जगह मस्जिद से बाहर उस से मुल्ह़िक़, ज़रूरिय्याते मस्जिद के लिये है मसलन जूता उतारने की जगह और ग़ुस्ल ख़ाना वग़ैरा, उन में जाने से ए'तिकाफ़ नहीं टूटेगा।[2] फ़िनाए मस्जिद से मुराद वोह जगहें हैं जो इहातए मस्जिद (उ़र्फ़े आ़म में जिस को मस्जिद कहा जाता है) में वाक़ेअ़ हों और मस्जिद की मसालेह़ या'नी ज़रूरिय्याते मस्जिद के लिये हों, जैसे मनारा वुज़ूख़ाना, इस्तिन्जा ख़ाना, ग़ुस्ल ख़ाना, मस्जिद से मुत्तसिल मद्रसा, मस्जिद से मुल्ह़िक़ इमाम व मुअज़्ज़िन वग़ैरा के हुजरे, जूते उतारने की जगह वग़ैरा।[3]

मस्जिद और फ़िनाए मस्जिद के आदाब : ① मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद की कोई चीज़ इस्ति'माल करने के लिये घर नहीं ले जा सकते। ② पानी ठन्डा करने वाला कूलर ऐने मस्जिद में नहीं रख सकते। ③ ऐने मस्जिद में हर किसी को कपड़े धोना, सुखाना, लटकाना मन्अ़ है। ④ मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में बिला इजाज़ते शर्ई किसी क़िस्म की तोड़फ़ोड़ नहीं कर सकते। ⑤ मस्जिद में बिग़ैर निय्यते ए'तिकाफ़ खाना पीना सोना मन्अ़ है। ⑥ ऐसी अश्या जिन से इन्क़िताए सफ़ हो (मसलन जूतों के डिब्बे, स्पीकर, डेस्क) वग़ैरा सफ़ में नहीं रख सकते इसी तरह सफ़ के आख़िर में भी नहीं रख सकते कि इत्मामे सफ़ में ख़लल अन्दाज़ होगी। ⑦ ऐने मस्जिद में मस्जिद का स्टोर नहीं बना सकते। ⑧ कच्चा प्याज़, कच्चा लहसन, सिगरेट वग़ैरा बदबूदार अश्या मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में खाना पीना या खाने पीने के बा'द जब तक बू मुंह में हो मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में जाना ना जाइज़ व ह़राम है। ⑨ मस्जिद के इतना क़रीब इस्तिन्जा ख़ाने बनाना कि बदबू मस्जिद में पहुंचे ना जाइज़ व ह़राम है। ⑩ ऐने मस्जिद में कोई भी मुस्तक़िल रिहाइश नहीं रख सकता। बा'दे तमाम मस्जिदिय्यत ऐने मस्जिद में (या मस्जिद के ऊपर या नीचे) इमाम साहिब की रिहाइश के लिये भी कमरा नहीं बना सकते। ⑪ मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में उन की ज़रूरत के बिग़ैर कोई वायरिंग नहीं कर सकते। ⑫ मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में मद्रसे (वोह मद्रसा जो मस्जिद का न हो) का सामान मसलन डेस्क, फ़ाइलें, फ़ोर्म्ज़, वग़ैरा नहीं रख सकते। ⑬ मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में मुस्तक़िल ता'वीज़ात, दारुस्सुन्नह, नेक आ'माल का बस्ता नहीं रख सकते। ⑭ मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में तन्ज़ीमी शो'बाजात (मसलन मदनी क़ाफ़िला, नेक आ'माल, और ता'वीज़ात वग़ैरा) के बोर्ड्ज़ मुस्तक़िल नहीं रख सकते। ⑮ मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में अ़लाक़े का तन्ज़ीमी सामान मुस्तक़िल नहीं रख सकते। ⑯ इज्तिमाअ़

[1]... फ़तावा रज़विय्या, 28/136 [2]... फ़तावा अम्जदिय्या, 1/399 [3]... फ़ैज़ाने सुन्नत, फ़ैज़ाने ए'तिकाफ़, स. 1227

के इस्ति'माल के लिये लगाए गए साउन्ड के स्पीकर जो मस्जिद के न हों, उन्हें बा'दे इज्तिमाअ् फ़ौरन उठाना होंगे। ⑰ मस्जिद में बदबूदार रीह ख़ारिज करना मो'तकिफ़ व ग़ैरे मो'तकिफ़ सब को ह़राम है और ग़ैर मो'तकिफ़ को मस्जिद में ग़ैरे बदबू वाली रीह ख़ारिज करना मक्रूह है। ⑱ मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद को बदबू से बचाना वाजिब है। ⑲ दुन्या की मुबाह़ बातें बिला ज़रूरते शरइय्या करने को मस्जिद में बैठना ह़राम है। ⑳ मस्जिद मुस्तह़कम व पाएदार हो तो उस को तोड़ कर नई बनाना जाइज़ नहीं। ㉑ मस्जिद की आमदनी मद्रसे में लगाना जाइज़ नहीं। ㉒ मस्जिद की चटाइयां ईदगाह वग़ैरा में नमाज़ वग़ैरा के लिये ले कर जाना जाइज़ नहीं। ㉓ मस्जिद में ना समझ बच्चों को लाना, पागलों को लाना, झगड़े और आवाज़ बुलन्द करना मन्अ् है। ㉔ मस्जिद में अपने लिये सुवाल मन्अ् है। ㉕ बिला इजाज़ते शरई एक मस्जिद का सामान दूसरी मस्जिद में लगाना ना जाइज़ है। ㉖ उ़लमा ने उस कूड़े की भी ता'ज़ीम का हुक्म दिया है जो मस्जिद से झाड़ कर फेंका जाता है। ㉗ मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में FGN चैनल / वीडियो इज्तिमाअ् मुन्अ़क़िद करना मन्अ् है। ㉘ मस्जिद के मीटर्ज़ (बिजली, गेस) का किसी (जामिआ़, मद्रसा, पड़ोसी वग़ैरा) को कनेक्शन नहीं दे सकते। ㉙ ऐ़ने मस्जिद में ता'मीराती सामान (सीमेन्ट, लकड़ी के तख़्ते, मिस्त्री के औज़ार वग़ैरा) मुस्तक़िल नहीं रख सकते अगर्चे मस्जिद का हो। ㉚ मस्जिद में किसी चीज़ का ख़रीदना, बेचना ना जाइज़ है मगर मो'तकिफ़ को अपनी ज़रूरत की चीज़ मोल लेनी वोह भी जब कि मबीअ् मस्जिद से बाहर ही रहे मगर ऐसी ख़फ़ीफ़ व नज़ीफ़ व क़लील शै जिस के सबब न मस्जिद में जगह रुके न उस के अदब के ख़िलाफ़ हो उसी वक़्त उसे अपने इफ़्तार या सह़री के लिये दरकार हो, और तिजारत के लिये बैओ़ शिरा की मो'तकिफ़ को भी इजाज़त नहीं। ㉛ फ़िनाए मस्जिद में भी ख़रीदो फ़रोख़्त करने की इजाज़त नहीं, हां ! जिस सूरत में मस्जिद में करने की इजाज़त है उस सूरत में कर सकते हैं। ㉜ मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में (बा'दे तमामे मस्जिदिय्यत) दूकान बनाना जाइज़ नहीं। ㉝ मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में शोरो गुल करने की इजाज़त नहीं। ㉞ फ़िनाए मस्जिद में मसालेहे मस्जिद के कमरे (इमाम का हुजरा, मस्जिद का स्टोर) के इ़लावा कोई कमरा नहीं बना सकते। ㉟ फ़िनाए मस्जिद में सामाने मस्जिद के इ़लावा (तन्ज़ीमी, जामिआ़, मद्रसा, मीलाद की सजावट वग़ैरा का) सामान नहीं रख सकते। उ़श्र वग़ैरा की बोरियां नहीं रख सकते। ㊱ मस्जिद में वाक़ेअ् कुरआने पाक रखने की अल्मारी में बस मस्जिद के कुरआने पाक ही रख सकते हैं, इस के इ़लावा दीगर सामान (मसलन मद्रसे की फ़ाइलें, तन्ज़ीमी कारकर्दगी फ़ोर्म, रसाइल वग़ैरा) इस अल्मारी के न अन्दर रख सकते हैं और न उस के ऊपर। ㊲ कुरआने पाक की अल्मारी के ऊपर कोई चीज़ नहीं रख सकते। ㊳ वक़्फ़ अश्या पर उ़र्फ़ के इ़लावा तह़रीर नहीं कर सकते। ㊴ मस्जिद की छत भी मस्जिद के हुक्म में है। इस के तमाम आदाब मिस्ले फ़र्शे मस्जिद हैं, बल्कि मस्जिद की छत पर तो बिला इजाज़ते शरई जाना भी मन्अ् है। ㊵ मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद की छत पर FGN चैनल का डिश एन्टिना नहीं रख सकते । ㊶ फ़िनाए मस्जिद का अदब भी मस्जिद ही की मानिन्द है।